छत्तीसगढ़ में गाँधीजी

रविशंकर विश्वविद्यालय
रायपुर

गांधी जी

जिनकी १९२० और १९३३ की यात्राओं ने छत्तीसगढ़ के जनमानस को झकझोर कर एक नवीन सन्देश और अभिनव-चेतना प्रदान की।

(नवभारत के सौजन्य से)

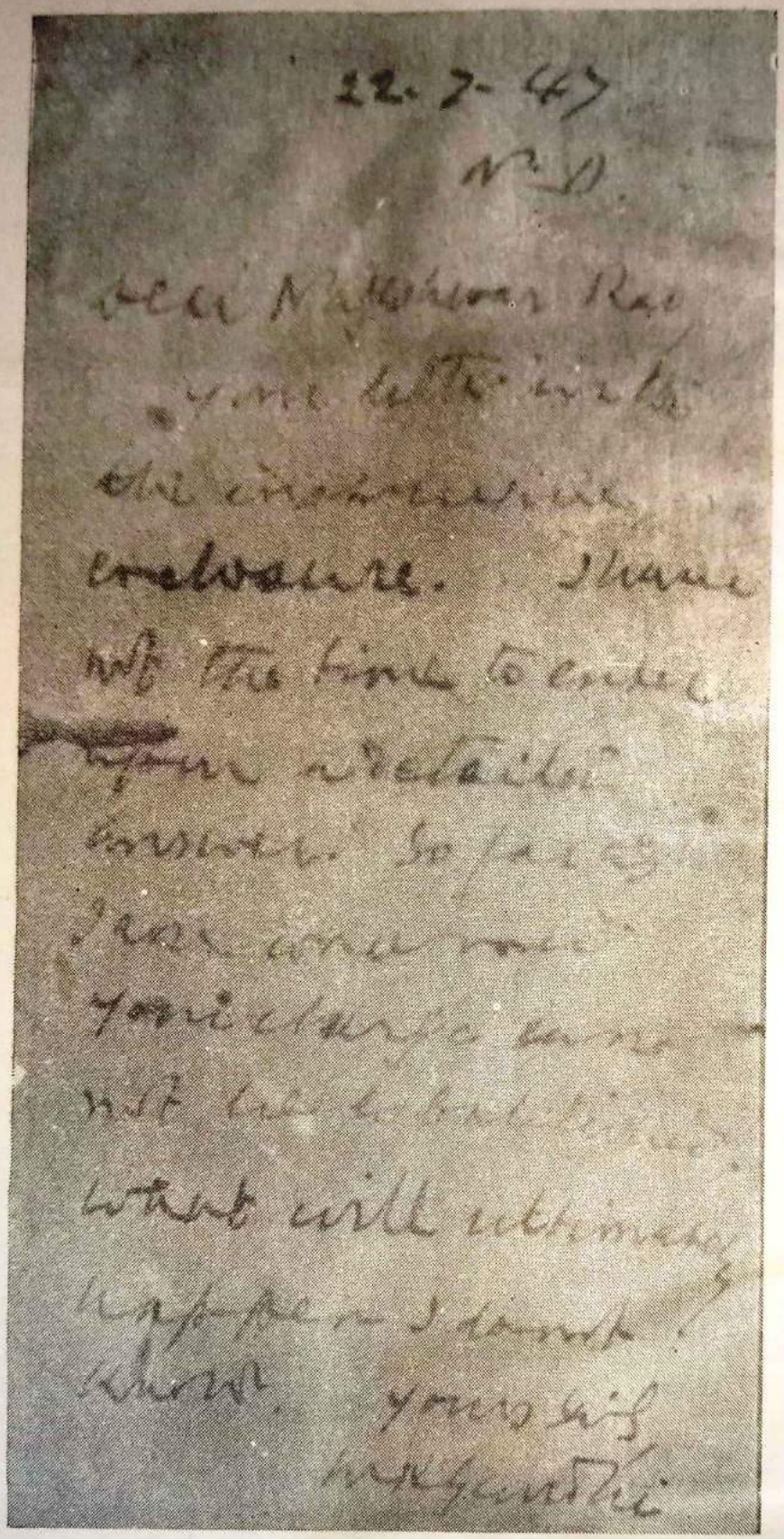

बिलासपुर के स्व. ई. राघवेंद्र राव जी को लिखा गया महात्मागांधी जी का एक अन्य पत्र (श्री ई. नागेश्वर राव के सौजन्य से)

छत्तीसगढ़ में गाँधी जी

सम्पादक

डॉ० ठा० भा० नायक

गांधी शताब्दी समारोह समिति
रविशंकर विश्वविद्यालय,
रायपुर
१९७०

प्रकाशक :

गांधी शताब्दी समारोह समिति,
रविशंकर विश्वविद्यालय
रायपुर (म०प्र०)

मूल्य— 15

मुद्रक :

ललित प्रिंटर्स,
नहरपारा
रायपुर (म०प्र०)

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ संख्या
प्रस्तावना		
सम्पादकीय		क
गांधी शताब्दी समारोह समिति परिचय		घ
छत्तीसगढ़—एक परिचय		च

राजनीतिक खंड

१. छत्तीसगढ़ पर गांधी जी के व्यक्तित्व का प्रभाव	श्री हरि ठाकुर, रायपुर	१
२. १४ छत्तीसगढ़ का किसान आन्दोलन	श्री कैयूर भूषण मिश्र, रायपुर	७
३. कंडेल गांव का नहर सत्याग्रह	डॉ० शोभाराम देवांगन, धमतरी	११
४. छत्तीसगढ़ में गांधीवाद	श्री हरिप्रसाद अवधिया, रायपुर	१३

संस्मरण खंड

५. युग-पुरुष-मेरी स्मृति में	डा० बल्देव प्रसाद मिश्र, राजनांद गांव	१५
६. गांधी की नजर में हिंदी	श्री घनश्याम सिंह गुप्त, दुर्ग	१७
७. बापू के सारथी	प्रेषक डॉ० शोभाराम देवांगन, धमतरी	२०
८. और लायसेंस रद्द हो गया	श्री अब्बास भाई, बिलासपुर	२३
९. गांधी जी की डाँट	श्री गणपत राव जी दानी	२३
१०. गांधी जी बिलासपुर में	श्री यदुनंदन प्रसाद श्रीवास्तव, बिलासपुर	२४
११. कस्तूरबा को दंड	श्रीमती इंदिरा बाई लाखे, रायपुर	२६
१२. तीसरा दर्जा देखो ...	श्री प्रभुलाल काबरा अकलतरा	२६
१३. महात्मा गांधी के साथ ६ दिन	श्रीयती यतन लाल जी महासमुन्द	२८
१४. मैं बनिया हूं	श्री कन्हैया लाल वर्मा, रायपुर	२९
१५. जब ताले का आँतक भी विफल हो गया	श्री राम शरण तम्बोली, जांजगीर	३१
१६. एक कट्टर बनिया	श्री मुकुट धर पांडेय, रायगढ़	३२
१७. जब कुलीन वर्ग की प्रतिष्ठा उपेक्षित	श्री राज वैद्य जी, रायपुर	३३
१८. मेहतर से तकली मास्टर	श्री जयदेव सतपथी, सरईपाली	३४
१९. धन्य मेरे भाग्य	श्री कुबेरनाई, रायपुर	३४
२०. लोक गीतों का नायक	श्री अद्वैत गिरीजी रायपुर	३५

२१. कीचड़ भरे रास्ते की कसौटी	श्री धनीराम वर्मा, रायपुर	३६
२२. वक्ता से रिपोर्टर	श्री मालवीय प्रसाद श्रीवास्तव, रायपुर	३७
२३. वे सारा मामला समझ गये	महन्त लक्ष्मी नारायण दास, रायपुर	३८
२४. धमतरी में गांधी जी	डॉ० शोभाराम देवांगन, धमतरी	४१

लोक साहित्य खंड

२५. लोकगीतों में गांधी जी	श्री नारायणलाल परमार, धमतरी	४५
२६. बस्तर के बनवासी गोतों में गांधी जी	डॉ० हीरालाल शुक्ल, रायपुर	४७
२७. छत्तीसगढ़ी लोकगीतें में गांधी दर्शन	श्री कृष्ण कुमार भट्ट "पथिक" बिलासपुर	५७
२८. गांधी जी एक साहित्यकार की स्मृति में	बन्दे अली फातमी, रायगढ़	६०
२९. ग्राम्यगीतों में गांधी	श्री फूलचन्द श्रीवास्तव रायगढ़	६३
३०. गांधी देवता	श्री नारायण लाल परमार, धमतरी	६८
३१. सुराज के गीत	पं० द्वारिका प्रसाद तिवारी, बिप्र बिलासपुर	६९
३२. धमतरी सुराज आन्दालन में गांधी दर्शन	श्री शंकरलाल सेन, धमतरी	७५
३३. गांधी गऊरा	स्व०कुंजविहारी लाल चौबे,	८१
३४. श्रद्धांजलि	पं० रामदेव शर्मा, रायपुर	८२

विविध लेख

३५. मेरी राष्ट्रीय चेतना के प्रणेता गांधी जी	श्रीमती प्रकाशवती मिश्र, रायपुर	८३
३६. गांधीवाद	स्व० रामदयाल तिवारी, रायपुर	९१

परिशिष्ट

गांधी जी के रायपुर आगमन पर वितरित परचा	९८
गांधी जी को प्रदत्त दो अभिनन्दन पत्र	९९

प्रस्तावना

विश्ववंद्य महात्मा गांधी ने भ्रमित मानव-समाज को स्नेह, सहानुभूति, करुणा और आत्मबल का ऐसा मार्ग दिखाया है, जो चिरंतन आनंद का पर्यायवाची बन गया है। आज गांधी-शताब्दी के अवसर पर कल्पनातीत साहित्य प्रकाशित हो रहा है, किंतु गांधी का व्यक्तित्व अब भी रहस्यमय बना हुआ है। महान् वैज्ञानिक आइंस्टीन ने एक बार कहा था 'आने वाली पीढ़ियां मुश्किल से ही विश्वास करेंगी कि कभी कोई रक्त-मांस का ऐसा व्यक्ति भी इस धरती पर चलता-फिरता था।' इस प्रकार अपने लौकिक कर्मों को भी अलौकिकता प्रदान करने के सामर्थ्य से युक्त गांधी का चरित छत्तीसगढ़वासियों की प्रेरणा का स्रोत क्यों न बने ?

इस क्षेत्र में गांधीजी की सन् १९२० व १९३३ ई. की यात्राओं ने सचमुच यहां के जनमानस को झकझोर सा दिया है। "छत्तीसगढ़ में गांधीजी"—स्मारिका इस तथ्य को प्रकट करती है कि महात्मा गांधी का चरित यहां के निवासियों के लिये प्रेरणास्रोत रहा है और आज भी बना हुआ है।

स्मारिका का प्रथम वृत्त राजनीतिक चेतना के परिप्रेक्ष में छत्तीसगढ़ में गांधीवाद को प्रतिष्ठापित करता है। द्वितीय वृत्त संस्मरणात्मक है, जिससे धर्म, जाति, सम्प्रदाय व भाषा व वर्गचेतना से ऊपर उठकर मानव को सहज और स्नेहिल लोक में सांस लेने की प्रेरणा मिलती है। संस्मरण-लेखकों ने महात्माजी के लक्ष्य को यथार्थ रूप में स्वीकारा है और उसके अनुरूप अपनी प्रतिक्रियायें भी व्यक्त की हैं। तृतीय वृत्त से यह परिलक्षित होता है कि छत्तीसगढ़ के लोकगीतकारों ने भी गांधीजी को युगनायक और युगपुरुष के रूप में देखा है और उनसे प्रेरणायें प्राप्त की हैं। विविध लेखों के अन्तर्गत गांधीजी के व्यक्तित्व का अनुकरणीय पक्ष पुनः उभर कर आया है।

महात्माजी के सिद्धान्तों के प्रति सभी चिन्तकों के समर्थन की एकमेव भावना न तो संभव है और न स्वाभाविक। मेरा निवेदन है कि गांधीजी का अध्ययन परम्परित लोक से थोड़ा अलग होकर नये परिपार्श्व में होना चाहिये। अपेक्षा इस बात की है कि उसे अधिक उदार और व्यापक बनाकर आज की परिवर्तित परिस्थिति में उसका मूल्यांकन किया जाय। मेरा विचार है कि 'छत्तीसगढ़ में गांधीजी' के विविध स्तरीय अध्येताओं के लिये यह स्मारिका सहायक सिद्ध होगी।

प्रस्तुत स्मारिका के विविध वृत्तों के निमित्त गांधीनिष्ठ व्यक्तियों ने अपने लेखों के माध्यम से गांधीजी के पाठकों के समक्ष जो सामग्री प्रस्तुत की है, वह छत्तीसगढ़ की जनता की ओर से गांधीजी को अर्पित श्रद्धा-सुमनांजलि है।

रायपुर,
गांधी पुण्यश्लोकतिथि, १९७०

बशीलाल पाँडे
कुलपति,
रविशंकर विश्वविद्यालय

सम्पादकीय

२ अक्टूबर १९६९ से सम्पूर्ण देश में और विश्व में राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी की जन्मशताब्दी मनाई जा रही है। भारत के प्रत्येक अंचल में, चाहे वह शहरी हो या ग्रामीण, शासकीय और अशासकीय स्तर पर गांधी शताब्दी समारोहों का आयोजन उत्साह एवं लगन के साथ किया जा रहा है।

गांधी शताब्दी समारोह के अन्तर्गत भारत की अनेक शैक्षणिक और अन्य संस्थाओं की ओर से गांधी स्मृति अंक का प्रकाशन वृहत् अथवा लघु रूप में अखिल भारतीय स्तर, राज्यीय स्तर और क्षेत्रीय स्तर पर किया जा रहा है। इस गांधी स्मृति अंक के प्रकाशन के पृष्ठ में मूल भावना यही है कि भारत की उस पीढ़ी को जो स्वाधीनता के पश्चात् वयस्क हुई है, महात्मा गांधी के आविर्भाव और उनके प्रभाव तथा उनकी अलौकिक शक्ति का परिचय मिल सके और उन्हें गांधीजी के समकालीन भारत की सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों का भी बोध हो सके। नई पीढ़ी को यह ज्ञात हो सके कि सादगी से परिपूर्ण इस महान् सन्त ने किस तरह अहिंसा के माध्यम से सुप्त राष्ट्र में नवजागरण का संचार किया था।

रविशंकर विश्वविद्यालय ने अपने कार्य क्षेत्र "छत्तीसगढ़" में गांधीजी के आगमन और विचारों का क्या प्रभाव पड़ा है, इसे दिखाने के लिये इस स्मृतिग्रंथ का प्रकाशन किया है। "छत्तीसगढ़ में गांधीजी" शीर्षक इस बात का द्योतक है कि इस स्मृति ग्रंथ में केवल वही सामग्री सम्मिलित है जिसका संबंध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गांधीजी और छत्तीसगढ़ के निवासियों से रहा है। यहां पर यह उल्लेखनीय है कि गांधीजी ने छत्तीसगढ़ की दो बार यात्रायें की हैं। उनकी प्रथम यात्रा सन् १९२० में तथा द्वितीय यात्रा सन् १९३३ में हरिजनोद्धार के संदर्भ में हुई थी। गांधीजी की इन यात्राओं के बारे में विस्तृत जानकारी पाठकों को स्मृतिग्रंथ में प्रकाशित सामग्री से प्राप्त होगी।

रविशंकर विश्वविद्यालय की गांधी शताब्दी समारोह समिति द्वारा स्मृति ग्रन्थ की सामग्री के लिये छत्तीसगढ़ के उन समस्त महानुभावों से, जो किसी न किसी प्रकार से महात्मा गांधी के संपर्क में आये थे, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से संपर्क स्थापित कर गांधीजी और छत्तीसगढ़ के संदर्भ में संस्मरण, लेख, फोटो ग्राफ्स, पत्र तथा अन्य जानकारी उपलब्ध कराने के लिये अकथनीय प्रयास किये। बहुतों ने काफी मदद की, कुछ क्षेत्रों से उनके कार्याधिक्य के कारण हमें समुचित जानकारी और सामग्री प्राप्त नहीं हो सकी।

स्मृति ग्रंथ में कुल तीन खंड हैं। प्रथम खण्ड राजनीतिक, द्वितीय खंड संस्मरणात्मक और तृतीय खंड लोक साहित्य व गीतों से सम्बन्धित है। कुछ लेख और संस्मरण विलम्ब से प्राप्त हुए, अतः उन्हें संबंधित खंड

में स्थान प्राप्त नहीं हो सका। उन्हें विविध लेखों के अन्तर्गत लिया गया है।

प्रस्तुत ग्रंथ के लिये जो लेख, संस्मरण व गीत प्राप्त हुए हैं, उन्हें यथासंभव मूल रूप में ही प्रकाशित किया जा रहा है। इन संस्मरणों व लेखों में जो अभिव्यक्ति एवं विचार हैं, वे लेखकों के अपने हैं। इनमें संशोधन इसलिये नहीं किया गया कि एक सुदूर के अंचल ने गांधीजी का प्रभाव और उनके नेतृत्व को किस प्रकार झेला है तथा उसकी क्या प्रतिक्रिया हुई है, वह वैसा का वैसा व्यक्ति अध्ययन के रूप में जानना आवश्यक है।

गांधीजी के जीवन तथा उनके कार्य क्षेत्र के जो अज्ञात क्षेत्र हैं उनका इस ग्रंथ में प्रथमबार दिग्दर्शन होता है। गांधीजी के तथा राजनैतिक इतिहास के कुछ अलिखित अंश यहां पर प्रथमबार उद्धरित हो रहे हैं। बारडोली का सत्याग्रह जो भारत भर में प्रसिद्ध हुआ था, वैसा ही छत्तीसगढ़ में धमतरी का कंडेल सत्याग्रह रहा है, यह अभी तक बहुत कम लोगों को ज्ञात था। इस ग्रंथ के माध्यम से वह राजनीतिक और सामाजिक इतिहासकारों को ज्ञात हो सकेगा।

समाज शास्त्रीय दृष्टिकोण से किसी भी प्रदेशांचल की सामाजिक गतिविधियां तथा उसकी उत्प्रेरक शक्तियां महत्व के विषय हैं। सन् १९१० से १९४८ तक गांधीजी-प्रेरित कर्म-बाहुल्य क्षेत्र "छत्तीसगढ़" किसी भी समय समाजशास्त्री के लिये मूल्यवान सिद्ध होगा यह इस ग्रंथ में निहित विभिन्न लेखकों की कलम से ज्ञात हो सकता है। स्मृति ग्रंथ में प्रकाशित लेखों का महत्व इसलिये भी अधिक है कि भविष्य में ये छत्तीसगढ़ के सामाजिक इतिहास के अनुसंधान में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

यहां पर यह भी उल्लेख करना आवश्यक हो जाता है कि कुछ सामग्री जो हमारे पास एकत्रित है, वह स्थानाभाव के कारण यहां प्रकाशित नहीं हो पाई है। तदर्थ हम गांधीजी के उन भाषणों को भी प्रकाशित नहीं कर पा रहे हैं जो उन्होंने अपनी छत्तीसगढ़ की सभाओं के अवसर पर विभिन्न स्थानों और विभिन्न अवसरों पर दिये थ । उनके ये भाषण वैसे अन्यत्र भी प्रकाशित हो चुके हैं। फिर भी हम गांधीजी के इन भाषणों को ग्रंथ में स्थानाभाव के कारण प्रकाशित न होने वाली अन्य सामग्री के साथ भविष्य में सुविधानुसार प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे।

प्रस्तुत स्मृतिग्रंथ में हमें गांधीजी के कुछ अविस्मरणीय छाया चित्र व पत्र भी उपलब्धहुए हैं जो गांधीजी की छत्तीसगढ़ की यात्राओं और व्यक्तियों से संबंधित हैं। ये प्रथम बार प्रकाशित किये जा रहे हैं।

प्रस्तुत ग्रंथ के लिये हमें जिन लेखकों और महानुभावों से लेख, संस्मरण, छायाचित्र एवं अन्य महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई हैं–हम उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। श्री ई. नागेश्वर राव ने स्मृति ग्रन्थ के प्रकाशन और सामग्री उपलब्ध कराने में विशेष रूप से जो रुचि और उत्साह व्यक्त किया है उसके लिये हम उनके बड़े कृतज्ञ हैं। इसी तरह श्री मथुरा प्रसाद दुबे ने समय-समय पर स्मृति ग्रन्थ को रूपरेखा संवारने के लिये जो उपयोगी सुझाव दिये हैं उसके लिये हम उनके प्रति हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करते हैं।

गांधी शताब्दी समारोह समिति के अध्यक्ष श्री घनश्याम सिंह गुप्त ने अपनी वृद्धावस्था के बावजूद

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में जो मार्गदर्शन दिया है उससे हम उनके चिरऋणी बन गये हैं। डा. बल्देव प्रसाद मिश्र ने गांधी स्मृतिग्रन्थ की सामग्री का अवलोकन कर यथास्थान उसमें संशोधन करने के लिये जो सुझाव दिये हैं, उनके लिये हम उनके भी चिर कृतज्ञ हैं।

हम रविशंकर विश्वविद्यालय के कुलपति श्रद्धेय श्री बंशीलाल पांडे के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। इनकी ही प्रेरणा, पथनिर्देश और नेतृत्व के फलस्वरूप ही गांधी शताब्दी समिति अस्तित्व में आई और उनके ही कारण समिति ने सब कार्य पूरे किये। उन्होंने इस स्मृतिग्रन्थ के प्रकाशन के लिये जो सुविधाएं उपलब्ध करायीं और प्रस्तावना के माध्यम से आशीर्वचन लिखकर हमें उपकृत किया है, उसके लिये भी हम समिति की ओर से उन्हें धन्यवाद देते हैं।

रविशंकर विश्वविद्यालय के कुल सचिव श्री कौशल प्रसाद चौबे ने इस कार्य में हमेशा उत्साहपूर्ण सहयोग दिया है, जिसकी वजह से यह ग्रन्थ प्रकाशित हो पाया है। उनके भी हम कृतज्ञ हैं। सर्वश्री गुरुदेवशरण, रामानन्द दुबे, किशोरी मोहन त्रिपाठी, डा. नरेन्द्र वर्मा, डा. हीरालाल शुक्ल, हजारीलाल जैन के प्रति भी हम धन्यवाद व्यक्त करते हैं जिन्होंने समय-समय पर हमें बहुमूल्य सुझाव व सामग्री देकर हमारा मार्गदर्शन किया। श्रीमती प्रकाशवती मिश्र के प्रति भी हम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जिनके माध्यम से हमें गांधीजी के कुछ अप्राप्त छायाचित्र व सामग्री प्राप्त हुई है।

श्रीसरोज वाजपेयी, डिमान्स्ट्रेटर नृतत्व शास्त्र विभाग, रविशंकर विश्वविद्यालय, ने इस ग्रंथ के लिये सामग्री एकत्रित करने से लेकर उसको ग्रन्थाकार में मुद्रित करने तक रात और दिन जो अथक परिश्रम किया है तथा सहसम्पादक के अनौपचारिक रूप में केवल गांधी-विचार-धारा के प्रति लगाव होने के कारण जो कार्य किया है उसके लिये हम उनके आभारी हैं।

अन्त में हम ललित मुद्रण प्रेस, रायपुर के व्यवस्थापकों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जिन्होंने अल्प समय में ग्रंथ के प्रकाशन कार्य में हमारी सहायता की और इनके ही कारण यह ग्रन्थ इतने सुघड़ रूप में यथासमय निकल पाया।

रायपुर
३० जनवरी १९७०

ठा.भा. नायक

रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर
गांधी शताब्दी समारोह समिति

अध्यक्ष :

श्री घनश्यामसिंह गुप्त

सदस्य :

डा० बल्देव प्रसाद मिश्र
(संयोजक– गांधी काव्य ग्रन्थ)

डा० ठा० भा० नायक
(संयोजक– गांधी स्मृति ग्रन्थ)

श्रीमती प्रकाशवती मिश्र
श्री गुरुदेव शरण
श्री मथुराप्रसाद दुबे
श्री रामानन्द दुबे
श्री किशोरी मोहन त्रिपाठी
श्री यतीयतन लाल
श्री ई० नागेश्वर राव
(सदस्य– गांधी स्मृति ग्रन्थ उप समिति)

छत्तीसगढ़ : एक परिचय

वर्त्तमान छत्तीसगढ़ क्षेत्र दो संभागों रायपुर और बिलासपुर में विभाजित है। रायपुर संभाग के अन्तर्गत तीन जिले बस्तर, दुर्ग और रायपुर और उनकी १९ तहसीलें और बिलासपुर संभाग के अन्तर्गत सरगुजा, रायगढ़ तथा बिलासपुर जिले और उनकी १७ तहसीलें आती हैं। इस प्रकार संपूर्ण छत्तीसगढ़ ३६ तहसीलों में विभाजित है।

पुरातन अवशेषों के आधार पर यह अनुमान लगाया गया है कि छत्तीसगढ़ के इस क्षेत्र में पूर्व पाषेण युग से मानव जाति का निवास है। रायगढ़ के निकट सिंघनपुर की गुफा में गहरे लाल रंग की चित्रकारी के माध्यम से आदिम मानव समाज अपने स्मृति चिह्न छोड़ गया है।

ऋग वैदिक आर्य मध्यप्रदेश तक नहीं पहुंचे थे। उत्तर वैदिक संहिताओं, ब्राह्मण आरण्यकों में मध्यप्रदेश के संबंध में कुछ सूचनायें मिलती हैं। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार इस मध्यवर्त्ती वनाच्छादित प्रान्त को पहले महाकान्तार कहते थे। महाभारत में कान्तारकों के राज्य का जो स्थान निर्दिष्ट किया गया है उसे डा. के. पी. जायसवाल ने छत्तीसगढ़ कांकेर बस्तर राज्य माना है । चतुर्थ शताब्दी के लगभग यह भूखंड दक्षिण महाकोशल के नाम से जाना जाता था। गुप्त वंश के उद्‌भव के साथ सम्राट समुद्रगुप्त ने इस क्षेत्र पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। प्रयाग के किले में समुद्रगुप्त द्वारा उत्तीर्ण प्रस्तर स्तम्भ में यह बात कही गई है। छठवीं शताब्दि में भीमसेन महाकोशल का राजा था। सातवीं शताब्दी में यह प्रान्त बौद्ध भीम राजा के हाथ में चला गया। उसने जिला चांदा में मांडक (भद्रावती) को अपनी राजधानी बनाई थी। प्रसिद्ध चीनीयात्री हुएन सांग ने सन् ६३९ में अपनी यात्रा वर्णन में इस राजधानी नगरी का वर्णन किया हैं। इसी मांडक वंश की एक शाखा ने रायपुर जिले में महानदी के तट पर सिरपुर को अपनी राजधानी बनाई। इस राज्य का विस्तार बिलासपुर से खरियार तक और रायपुर से सारंगढ़ तक था। इस प्रदेश को वास्तविक प्रसिद्धि कलचुरी राजवंश और हैहयवंशी राजाओं के शासनकाल में ही प्राप्त हुई। कलचुरी राजाओं ने यहां आधिपत्य स्थापित किया परन्तु इसके पूर्व वे चेदिदेश पर राज्य करते थे। यह चेदिराज्य चंबल नदी से बांदा चित्रकूट तक और अमरकंटक से हसदो नदी तक फैला हुआ था। सन् ८७५ में रतनपुर में चेदिवंश का राजा कल्लोल राज्य करता था। यहीं से हैहयवंशी नरेशों का राज्य प्रारंभ होता है। "क्षोणी दक्षिण कोसलों जनपद वाहुब्दये नार्जित" से प्रमाणित होता है कि यह प्रान्त दक्षिण कोसल कहलाता था। हैहयवंशी राजाओं ने अपने आपको "सकल कोसलाधि तथा सकल कोसल मंडन श्री आदि उपाधियों से विभूषित किया था।

छत्तीसगढ़ शब्द की उत्पत्ति के विषय पर भिन्न-भिन्न मत हैं। बताया जाता है कि छत्तीसगढ़ शब्द की उत्पत्ति चेदिस वंशी राजाओं के काल कार्य में ही हुई है। मध्य प्रान्त के विद्वान राय बहादुर डा० हीरालाल ने छत्तीसगढ़ को चेदिशगढ़ का ही एक रूप माना है।

छत्तीसगढ़ शब्द के साथ अठारागढ़ रतनपुर और अठारागढ़ रायपुर शब्द की संप्तति अवश्य ही विचारणीय है। प्रसिद्ध संक्षोभ के ताम्रपत्र के अष्टादश अटवीं राज्य" से एसा संकेत मिलता है कि इस ओर अठारह राज्यों के समूह की परम्परा छठी शताब्दि से चली आ रही है। रतनपुर और रायपुर राज्य १८ गढ़ों के कहे जाते हैं और दोनों मिलकर छत्तीसगढ़ कहलाते हैं।

लाला प्रद्युम्न सिंह न अपनी पुस्तक नागवंश के पृष्ठ २ में लिखा है कि प्राचीनकाल में छत्तीसगढ़ विभाग में छत्तीस राजा राज्य करते थे। इसमें छत्तीस राजधानियां थीं और प्रत्येक राजधानी में एक गढ़ था। छत्तीसगढ़ होने के कारण इस भूभाग का नाम छत्तीसगढ़ पड़ा।

छत्तीसगढ़ शब्द की उत्पत्ति का संबंध उन छत्तीस कुटियों से भी जोड़ा जाता है जिनका संकेत रतनपुर निवासी कवि गोपालचन्द्र मिश्र "खूब तमाशा" तथा कवि रेवाराम कृत "विक्रम विलास" में प्राप्त होता है। श्री गोपाल चन्द्र मिश्र ने लिखा है--बसै छत्तीस कुटी सब दिन के सब वासी सब सबके। कवि रेवाराम ने भी "विक्रम विलास" में लिखा है:--"बसंत नगर सोभा की सानि, चारि वदन निज कर्म निदान और कुरी छत्तीस है वहां, रूपराशि गुन पूरन जहां।" यहां पर कुटी का अर्थ कुल से होता है। संभव है कि कलचुरीय हैहयवंशी राजाओं ने इस प्रान्त को जीतने और अपना राज्य स्थापित करने के उद्देश्य से उत्तर भारत से अपने क्षत्रियों कुलों को समय-समय पर बुलाया होगा और कालान्तर ये क्षत्रिय कुल यहीं पर बस गये।

छत्तीसगढ़ शब्द के संदर्भ में श्री लोचन प्रसाद पांडेय का यह विचार है कि मध्य युग में किसी राज्य की समर विजित शक्ति और महत्ता बतलाने के लिये उनका मान गढ़ों से बतलाया जाता था। उनका कथन है कि इस प्रदेश को छत्तीसगढ़ रतनपुर कहते थे। कालान्तर में रतनपुर शब्द का लोप हो गया और छत्तीसगढ़ विद्यमान रहा। देवार जाति द्वारा गाये जाने वाले गोपल्ला गीत में वर्णित गढ़ों से भी इस मत की पुष्टि होती है कि रतनपुर और रायपुर राज्यों के अन्तर्गत १८-१८ गढ़ विद्यमान थे।

छत्तीसगढ़ शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कवि गोपालचन्द्र मिश्र ने हीअपने "खूब तमाशा" नामक ग्रंथ में किया है जो इस प्रकार है:--

"छत्तीसगढ़ गाढ़े जहां बड़े गढ़ोई जानि
सेवा स्वामिन को रहे सकै एंन को मानि।"

उपरोक्त पंक्तियों से यह प्रमाणित हो जाता है कि संवत् १७४६ में जो कि इस काव्य ग्रंथ का निर्माण काल है, छत्तीसगढ़ शब्द प्रचलित हुआ। अतः यह निष्कर्ष निकालना उचित होगा कि छत्तीसगढ़ शब्द संवत् १७४६ के पूर्व का है, बाद का नहीं हो सकता।

१७४०-४१ में हैहयवंशी राजा रघुनाथ सिंह मराठा सेनापति भाष्कर पन्त से परास्त हो गये और रतनपुर पर भोंसलों का अधिकार हो गया। छत्तीसगढ़ क्षेत्र पर भोंसलों का आधिपत्य सन् १८१८ तक बना रहा और १८१८ से १८५३ तक वह ब्रिटिश सरकार के संरक्षण में रहा और अन्त में१८५३में यह संपूर्ण क्षेत्र ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत चला गया।

छत्तीसगढ़ के खालसा विभाग में रायपुर, बिलासपुर और संबलपुर जिले थे सन् १९०६ में दुर्ग जिला इसमें मिला लिया गया। पंडरिया, कवर्धा, सहसपुरा, पेंड्रा, मातिन, उपरोड़ा, केंडा, धुरी, कोरबा, चाम्पा, लाफा आदि छत्तीसगढ़ की जमींदारियां धीरे-धीरे इसके अधीन आ गयीं। इसके बाद खैरागढ़, नांदगांव, छुईखदान, गंडई, सिलहरी, बरबसपुर, लोहारा, ठाकुरटोला आदि खलौटी जमींदारियां इसके अन्तर्गत आ गई। तदन्तर रायगढ़, बरगढ़, सक्ति सारंगढ़, फुलझर, बोरासामर, खरियार, विन्द्रानवागढ़ आदि गढ़जात स्टेट भी इसमें आ गयीं। बाद मे भटगांव, बिलाईगढ़, कटंगी, कोरिया, पुरचोरी, सुअरमार नदी, देवरी, फिंगेश्वर, गुंडरदेही, खुज्जी, मदनपुर आदि गोंड़वान जमींदारियां छत्तीसगढ़ में आ गई। कालान्तर में कांकेर और बस्तर भी सम्मिलित हो गये। अन्त में खालसा और जमींदारियों के एक बन जाने पर यह छत्तीसगढ़ कमिश्नरी बन गई थी। पर थोड़े ही वर्षों बाद छत्तीसगढ़ का सम्बलपुर तथा खरियार जिला उड़ीसा राज्य के अन्तर्गत चला गया।

भौगोलिक स्थिति:-वर्त्तमान छत्तीसगढ़ का परिक्षेत्र १८-२४ उत्तर आक्षांश तक तथा ८०-८४ पूर्वी देशांश तक विस्तृत

है। इसका कुल क्षेत्रफल ५२, २१६ वर्गमील है जो कि संपूर्ण मध्यप्रदेश के क्षेत्रफल का एक तिहाई भाग होता है।

नदियां:—छत्तीसगढ़ की प्रमुख नदियों में महानदी, शिवनाथ नदी, इन्द्रावती, हसदो और अरपा नदियां हैं। महानदी छत्तीसगढ़ की प्रायः अधिकांश नदियों के पानी को अपने सम्मिलित कर उसे बंगाल की खाड़ी में ले जाती है।

जलवायु और वर्षा:— छत्तीसगढ़ की जलवायु सामान्य रूप से गर्म और आर्द्रतायुक्त है। बस्तर और रायगढ़ जिले की जशपुर तहसील और बिलासपुर जिले का अमरकंटक स्थान की जलवायु ग्रीष्म ऋतु में भी ठंडी रहती है। शेष स्थानों की जलवायु ग्रीष्म के प्रारंभ में कुछ शीतल रहती है और ग्रीष्म ऋतु में अत्यधिक उष्ण हो जाती है। जनवरी का तापमान छत्तीसगढ़ में १८ से २८सेन्टीग्रेड तक मिलता है। वार्षिक औसत तापमान १८ से २५ सेन्टीग्रेड तक पाया जाता है। वर्षा सामान्य रूप से ४०" से ५५" तक होती है।

वानस्पतिक विवरण:—छत्तीसगढ़ का लगभग दो तिहाई भाग वनों से आच्छादित है। विशेषकर बस्तर, सरगुजा व रायगढ़ जिले का अधिकांश भाग वनों से आच्छादित रहता है। इसी तरह रायपुर जिले का दक्षिणी भाग जिसके अन्तर्गत धमतरी, बिन्द्रानवागढ़ की जमींदारी का क्षेत्र और उत्तर में महासमुन्द और बालोद बाजार की तहसीलों का एक बड़ा भाग वनों से आच्छादित है। इसी तरह बिलासपुर का अमरकंटक पेंड्रारोड आदि क्षेत्र भी सघन वनों से आच्छादित है।

छत्तीसगढ़ के जंगलों में प्रमुख रूप से मानसूनी पर्णपाती वन पाये जाते हैं। इन्हें पतझड़ के भी वन कहते हैं। वनों की ऊंचाई सामान्य रूप से १० से २० मीटर की होती है। इन वनों के अन्तर्गत सागौन, बीजा, शाल, शीशम, हरड़, बाहेड़ा, आवला, बेंत, बांस, लाल चन्दन, शहतूत, बौंस कत्था, सरई, तेन्दू, महुआ, खैर तथा आम व जामून आदि के वृक्ष पाये जाते हे। इसके अतिरिक्त फूल बहारी की घास भी सरगुजा और बस्तर के जंगलों में पाई जाती है।

बस्तर जिले का दंडक का वन किसी समय में छत्तीसगढ़ का सर्वाधिक सघन वन क्षेत्र था। यद्यपि आज भी छत्तीसगढ़ के अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा दंडक का वन क्षेत्र अभी भी अपनी सघनता का परिचय देता है।

जामून, इमली, आम के वृक्ष सामान्यतः मार्ग के किनारे दिखाई देते हैं। इसके अतिरिक्त छत्तीसगढ़ के ग्रामों में नीम, पीपर और बरगद, पलास, बबूल के भी पेड़ बहुतायत में हैं।

पशुधन:—छत्तीसगढ़ में दो प्रकार के पशु जंगली और पालतू पाये जाते हैं। जंगली पशुओं के अन्तर्गत छत्तीसगढ़ में शेर, तेन्दुआ माड़िया और बाइसन भैंसे और अन्य जंगली भैंसें पाये जते हैं। इसके अतिरिक्त काले और लालमुंह के बन्दर, सियार, लोमड़ी और कहीं कहीं पर रीछ भी पाये जाते हैं। नीलगाय, सांभर, हिरण, बारहसिंगा और जंगली कुत्ते भी मिलते हैं।

जनसंख्या— छत्तीसगढ़ की जनसंख्या निम्नानुसार है। मध्यप्रदेश तथा भारत की जनसंख्या के तुलनात्मक आंकड़े भी उल्लेखित है:—

जिला	क्षेत्रफल वर्गमील	जनसंख्या हजार में	साक्षरता
बस्तर	१५१२४	११६८	६.७
दुर्ग	७५७६	१८८६	१८.१
रायपुर	८२१४	२००३	१८.३
बिलासपुर	७६१५	२०२२	१८.०
रायगढ़	५०६४	१०४२	१४.८
सरगुजा	८६२३	१०३७	६.०
सम्पूर्ण छत्तीसगढ़	५२२१६	६१५८	१४.१५
सम्पूर्ण मध्यप्रदेश	१७१,२१०	३२३६४	१६.६
सम्पूर्ण भारत	१२,५६,७६७	४३६७८१४२६	२३.७

धर्म :– हिंदू धर्म को संस्कृतिकरण की प्रक्रिया ने छत्तीसगढ़ के आचार विचार और रीति-रिवाज को कुछ अधिक प्रभावित किया है। आदिवासी क्षेत्रों के ग्रामीण देवी-देवता वैदिक देवताओं से भिन्न होते है तथापि आदिवासी अपनी उत्पत्ति भी हिंदू पौरनवर वंश से बताते हैं। संभवतः वे अपना संबंध महाभारतकालीन राजाओं से जोड़ते हैं।

संपूर्ण छत्तीसगढ़ में हिंदू धर्म के आचार विचार का पालन किया जाता है और हिंदू धर्म के नियम का पालन किया जाता है लेकिन यहां के धार्मिक अनुष्ठान वैदिक अनुष्ठान से भिन्न होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक धर्म के अनुष्ठान में स्थानीय परम्परागत रीति रिवाज सम्मिलित कर दिये गये हैं।

हिंदू धर्म अपनाने के बाद भी छत्तीसगढ़ की संस्कृति उत्तर या दक्षिण भारतीय संस्कृति से पृथक दिखाई देती है–जो उनके रीति रिवाज, अनुष्ठान, खानपान और पोशाक से स्पष्ट होती है। इस दृष्टि से छत्तीसगढ़ के अधिकांश निवासी हिंदू धर्म के अंग होते हुए भी विशेष संस्कृति का पालन करते है। इसे हम छत्तीसगढ़ की प्रारंभिक संस्कृति कह सकते हैं।

छत्तीसगढ़ में वैदिक देवताओं के अतिरिक्त स्थानीय देवी देवताओं की भी अनुष्ठानपूर्वक उपासना की जाती है। ग्रामीण देवी देवताओं में देवी को विशेष महत्व का स्थान प्राप्त है जिसे आद्यशक्ति का अवतार कहा जाता है।

यहां के धार्मिक जीवन में तंत्र मंत्र और झाड़ फूंक का भी विशेष महत्व है। स्थानीय देवी देवताओं की पूजा में बैगा या गुनिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और बलि का काम भी वे स्वयं सम्पन्न करते हैं।

सत्यनारायण और भागवत की कथा, गायत्री यज्ञ, रामायण पाठ, रामलीला और कृष्णलीला जैसे आयोजन छत्तीसगढ़ में लोकप्रिय हैं। साथ ही महामारी और देवी देवताओं की विपत्तियों के अवसर पर स्थानीय देवी देवताओं की भी उपासना की जाती है।

हिंदुओं के तीज त्योहार छत्तीसगढ़ में भी मनाये जाते है। फसल की कटाई के बाद मड़ई आयोजित की जाती है। छेरछेरा पुन्नी का उत्सव प्रसिद्ध है।

देश की पवित्र नदियों में यहां की महानदी को भी स्थान प्राप्त है। शिवरात्रि के अवसर पर राजिम का मेला आयोजित किया जाता है। इस अवसर पर महानदी में स्नान करना पवित्र माना जाता है। जो व्यक्ति संगम में अस्थि प्रवाह नहीं कर पाते वे महानदी में अस्थि प्रवाह करते हैं।

संस्कृतिकरण के कारण यहां के जो आदिवासी हिंदू जाति व्यवस्था में शामिल हो गये है उन्हें सामान्यतः शुद्र या अस्पृश्य की श्रेणी में रखा जाता है। राजगोंड़ संस्कृत धार्मिक ग्रंथों के रीति रिवाज और आचार का विचार का पालन करते है और अपने को राजपूत मानते है लेकिन ऊंची जाति के लोग उन्हें यह स्थान नहीं देते।

छत्तीसगढ़ में कुछ सुधारवादी आन्दोलन भी हुए हैं। सतनामियों का प्रथम सम्प्रदाय ही बन चुका है। जिनके अलग से ब्राह्मण और पुरोहित होते हैं। अन्य पिछड़ी जातियों के लोग कबीर या पलटूपंथ के अनुयायी हैं। आदिवासी क्षेत्रों में भी सुधारवादी आन्दोलन हुए हैं। ईसाई धर्म प्रचारकों के कारण आदिवासी बड़ी संख्या में ईसाई हो गये जिसके प्रत्युत्तर में आर्य समाजियों ने शुद्धिकरण आन्दोलन शुरू किया है। इन आन्दोलनों के कारण जाति व्यवस्था प्रभावित नहीं हुई लेकिन एक महत्वपूर्ण परिणाम यह सामने आया कि इन जातियों में वर्णात्मक एकता की भावना आई है, उनका जाति संगठन सुदृढ़ हुआ है और सुधारवादी विचारों के कारण उनमें संस्कृतिकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई

इस क्षेत्र में यद्यपि अस्पृश्य जातियां पाई जाती हैं लेकिन उत्तर या दक्षिण भारत की तरह सामाजिक नियंत्रण अधिक कठोर नहीं है।

साक्षरता और भाषा:–छत्तीसगढ़ में साक्षरता का प्रतिशत १४.१५ है जब कि मध्यप्रदेश का प्रतिशत१६.९ और अखिल भारतीय मान २३.७ प्रतिशत है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र की प्रमुख भाषा हिंदी है। इसके साथ ही छत्तीसगढ़ी बोली का भी ग्रामीण क्षेत्रों में बहुलता से प्रयोग किया जाता है। आदिवासी क्षेत्रों में हलबी गोंड़ी आदि बोलियां प्रचलित हैं ।

सामाजिक जनजीवन:– छत्तीसगढ़ में पिछड़े वर्गों और आदिवासियों की बाहुलता है। बाहर से आये उच्च वर्ग के हिंदुओं जैसे ब्राह्मणों, वैश्य और ठाकुरों ने यहां की मूल संस्कृति को प्रभावित किया है। फलस्वरूप छत्तीसगढ़ का परिक्षेत्र संस्कृति सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से तीन वर्गों में विभक्त हो गया है। पहला वर्ग हिंदू संस्कृति को मानने वाले सवर्ण हिंदुओं का है दूसरा वर्ग उन मूल निवासी आदिवासियों का है जो इस क्षेत्र के बीहड़ जंगलों में आज भी आदिम अवस्था में हैं और आदिम संस्कृति के अवशेषों को सुरक्षित रखे हुए हैं। तीसरा वर्ग उन लोगों का है जो हिंदू संस्कृति के प्रभाव में आ गये और उन्होंने अपनी बहुत सी मूल सामाजिक परम्पराओं और रीति रिवाजों को त्यागकर हिंदू संस्कृति को अपना लिया। ऐसा वर्ग उन आदिवासियों और पिछड़े हुए वर्गों का हैं जोशहरी परिक्षेत्र के समीप ही निवास करते हैं अथवा जहां पर औद्योगिक करण का प्रभाव पड़ा है।

छत्तीसगढ़ में विभिन्न प्रकार की सामाजिक परम्पराओं के दिग्दर्शन होते हैं। छत्तीसगढ़ में एक ओर जहां हमें बाल विवाह, दहेज प्रथा एक पत्नी विवाह की परम्परायें देखने को मिलती हैं वहीं दूसरी ओर वयस्क विवाह, सेवा ।विवाह अपहरण विवाह तथा वधू मूल्य दिये जाने की प्रथाओं कीभी जानकारी प्राप्त होती है। उदाहरण के लिये बस्तर की गोंड़ जन जाति में युवा विवाह प्रचलित है। जब कि हिंदुओं में सामान्यतः बाल विवाह की प्रथा है। गोंड़ों में ममेरे-फुफेरे भाई बहिनों में विवाह श्रेष्ठ समझा जाता है वहीं हिंदुओं में इसका निषेध है। गोंड़ों में वधू मूल्य दिया जाता है। जब कि हिंदुओं में वधू से दहेज प्राप्त किया जाता है। गोंड़ों में लमसेना विवाह (सेवा विवाह) की प्रथा है। गोंड़ों में ममेरे-फुफेरे या माता पिता द्वारा निश्चित किये गये विवाहों को सामान्य श्रेणी के अन्तर्गत रखा जाता है, द्वितीय श्रेणी के अन्तर्गत विधवा विवाह अपहरण विवाह या बलात विवाह को रखा जाता है।

बस्तर की ही तरह सरगुजा जिले में भी लोगों का जनजीवन विविधताओं से परिपूर्ण है। आदिम जातियों में बस्तर की ही तरह युवा-विवाह प्रचलित है जब कि अन्य जातियों में बाल विवाह की प्रथा प्रचलित है। जंगली जातियां अत्यधिक गरीब व कष्टमय जीवन व्यतीत करती हैं जब कि मैदानी क्षेत्रों में रहने वाली जातियां सम्पन्न हैं। इस क्षेत्र के लोग अत्यधिक स्वच्छंदताप्रिय हैं तथा उनके प्रत्येक कार्यकलाप सौष्ठव वसुघड़ता से युक्त होते हैं।तमाखू प्रमुख विलास है, चावल प्रमुख भोजन।

सरगुजा जिले की ही एक अन्य रियासत उदयपुर में पिता ही विवाह करता है। वैवाहिक कार्यक्रमों में पंडितों की आवश्यकता नहीं होती है। विवाह का शुभ मुहूर्त्त गांवों की पंचायतों की माध्यम से निश्चित किया जाता है। पंडित के स्थान पर सात औरतें भांवरें डालने का कार्य सम्पन्न कराती हैं। इन औरतों को पारिश्रमिक के रूप में साड़ियां दी जाती हैं। विधवा विवाह प्रचलित है। पर उनमें किसी भी प्रकार की तड़क-भड़क नहीं होती। जाति पंचायत के सामने विधवा अपने भावी पति के द्वारा दी गई चूड़ियां व साड़ी पहन लेती है।

रायगढ़ जिले की जशपुर तहसील के आदिवासी ओरांव जो कि अब ईसाई-करण के प्रभाव में आ गये हैं, में यद्यपि विवाह का प्रस्ताव माता-पिता के माध्यम से ही आता है परन्तु उनमें वर-वधू की स्वीकृति आवश्यक है। विवाह छत्तीसगढ़ के अन्य आदिवासी जातियों की तरह पूर्ण युवावस्था में ही होता है। विवाह के बन्धन शिथिल होते हैं। यदि पति विवाह की राशि (वधू मूल्य) अदा नहीं करता तो वैवाहिक संबंध तोड़ दिये जाते हैं। यहां पर लमसेना प्रथा नहीं है।

औरांव जातियों में वर का छोटा भाई वधू के माथे पर सिंदूर लगाकर उसे अपनी भाभी बना लेता है। यदि कोई विधवा पुनर्विवाह करती है तो उसकी छोटी बहिन सिंदूर पोंछ देती है। दूसरा पति सिंदूर लगा देता है।
भूमि:—छतीसगढ़ में मुख्यतः चार प्रकार की भूमि पाई जाती है। १—कन्हार-काली व मटासी भूमि जो रबी फसल के लिए अधिक उपयुक्त होती है। २— मटासी-पीली मिट्टी, ३— डोरसा जो कन्हार और मटासी के बीच की होती है जो कि प्रायः सभी फसल के लिये उपयुक्त होती है। ४— जो कि कम उपजाऊ होती है और उसमें कोदो कुटकी आदि होती है।
खनिज:—खनिज सम्पदा के अन्तर्गत मुख्य रूप से चूने का पत्थर, डोलोमाइट, लोह खनिज, डल्ली राजहरा..,झरनदल्ली और बेलाडीला में खनिज लोहा का तथा चिरमिरी क्षेत्र में कोयले और लोहे का भंडार उपलब्ध है ।
अर्थ व्यवस्था:—छतीसगढ़ मुख्य रूप से कृषि प्रधान क्षेत्र है। चावल यहां की मुख्य फसल है। ८१ प्र.श. आबादी इसी पर निर्भर है इनमें ६५ प्र. श. किसान और २१ प्रतिशत खेतिहर मजदूर, ६ प्र. श. उद्योग, २ प्र. श. व्यवसाय और ६ प्र. श. आबादी विभिन्न उद्योगों में लगी है।

खेती का क्षेत्रफल ४३ प्रतिशत है। ३४ प्रतिशत वनभूमि है। चावल प्रमुख फसल है। इसके अलावा दाल, कोदो, कुटकी और फलों की भी खेती की जाती है। कहीं कहीं गेहूं और तिलहन की भी खेती की जाती है। आदिवासी क्षेत्रों में कपास और जूट का भी उत्पादन होता है।

उद्योग:—कृषि उद्योग छतीसगढ़ में अधिक पाये जाते है।—धान प्रोसेसिंग का काम होता है। कुछ तेल की मीलें हैं। इसके अलावा इमारती लकड़ी, लाख और टसर संबंधी उद्योग कार्य कर रहे हैं। तेंदू पत्ते के कारण बीड़ी कारखानें भी हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के कुछ बड़े कारखाने भी हैं। जैसे:——भिलाई इस्पात कारखाना, बैलाडीला खनिज लौह उत्खनन प्रोजेक्ट, कोरबा में थर्मल एवं अल्यूमीनियम प्लान्ट का कार्य प्रारम्भ है। मांढर में सीमेंट का कारखाना, कांपा में वैगन रिपेयरिंग वर्कशाप आदि ।

बड़े-बड़े शहरों के पास डेयरी उद्योग भी है । राजनांदगांव में सूती मिल रायगढ़ में जूट मिल और बिलासपुर में स्पिनिंग मिल। इसके अलावा हैण्डलूम मीलें भी हैं। कोसा उद्योग भी महत्वपूर्ण है। अल्यूमीनियम वर्त्तनों का निर्माण कारखाना भी है।

परिवहन व्यवस्था:—ब्रिटिश शासनकाल के पूर्व परम्परागत आवागमन के साधनों का उपयोग किया जाता था। मुख्य रेल लाईन है नागपुर कलकत्ता, बिलासपुर कटनी रायपुर, वाल्टेयर। रायपुर धमतरी, रायपुर, राजिम, भिलाई राजहरा, और बैलाडीला कोट्टा वालसा। इसके अतिरिक्त पक्की सड़क और राष्ट्रीय मार्ग भी हैं। भीतरी क्षेत्रों में आने-जाने के लिये यात्री बसें भी हैं। लेकिन दूरंदराज के गांवों में आने जाने के लिये अभी भी बैलगाड़ी का उपयोग किया जाता है।

ग्रामीण व्यवस्थाऔर जागृति:—गांवों की आन्तरिक व्यवस्था और स्वशासन पर यहां किसी भी राजसत्ता ने हस्तक्षेप नहीं किया।प्राचीनकाल के ग्रामीण,बाद में मुखिया परिवार के वृद्धजनों के सहयोग से गाँव की व्यवस्था के लिये उत्तरदायी हुआ करते थे। आगे चलकर यहीं से सुव्यवस्थित पंचायत व्यवस्था का विकास हुआ। जब तक पंचायतें स्वाधीन रहीं तब तक गांवों की जनता संतुष्ट और स्वावलम्बी रही। सत्ता के केन्द्रीकरण के कारण पंचायतों का महत्व समाप्त हुआ और शासकीय हस्तक्षेप के कारण लोगों में निराशा. भय और अविश्वास की भावना उपजी। पहले गांव के गोटियां, कोटवार, पटवारी सत्ता के प्रतिनिधि हुआ करते थ। लेकिन वे गांवों की परम्परागत व्यवस्था में दखल नहीं देते थे। मौर्यकाल से लेकर मराठों तक हमारे यहां पंचायतों का कार्य अबाधित गति से जारी रहा। जब तक देश में शान्ति रही, आवागमन निरापद रहा, तब तक ये गांव स्वावलम्बी के रूप में राष्ट्रीय जीवन को योग देते रहे। वैदेशिक आक्रमण और आधिपत्य, अपरिचित रीतिरिवाज और नए जीवन के मूल्य के कारण हमारे राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक जीवन के परम्प-

रागत ढांचे को एक धक्का लगा। धार्मिक कट्टरता, जातीय मदान्धता और छुआछूत की भावना से जकड़ा हुआ हमारा समाज इस प्रहार से लड़खड़ा गया।। चारों तरफ अराजकता और सामाजिक संघर्ष का परिणाम यह हुआ कि हम अन्तर्मुखी, भीरू, संकोची और कूप-मंडूक होते चले गये। वाह्य संपर्क टूटता गया, अज्ञानता बढ़ती गयी और छत्तीसगढ़ के गांव विकास और प्रगति की दौड़ में कोसों पीछे रह गये ।

१९२० के आसपास मृत पंचायतों में प्राण फूंकने की अधूरी कोशिश की गई। एक पंचायत अधिनियम द्वारा गांव को कुछ जिम्मेदारियां सौंपी गयीं लेकिन, ग्रामीणों में उत्साह का अभाव था। अतः अगले २५ वर्षों में केवल ११०० पंचायतें पूरे राज्य में स्थापित हो सकीं, जब कि उस समय पुराने मध्यप्रदेश में गांवों की संख्या ४८ हजार थी। तहसील स्तर पर लोकल बोर्ड और जिले स्तर पर डिस्ट्रिक्ट कौंसिल कार्य कर रही थी। किन्तु उसका विज्ञापक कार्य शिक्षा तक ही सीमित था। जो गांव मालगुजारी के अन्तर्गत आते थे वहां तो स्थिति और भी निराशाजनक थी। किसानों को कुछ भी कहने सुनने का अधिकार नहीं था।

कांग्रेस में गांधीजी के प्रवेश के साथ ही पार्टी ने राजनैतिक कार्यक्रम के अलावा "गांव चलो" का नारा बुलन्द किया। इन्होंने खादी और कुटीर उद्योग को स्वाधीनता संग्राम का अचूक अस्त्र घोषित किया।

स्वाधीनता के बाद नया पंचायत अधिनियम बना, जिसके अधीन गांवों की उन्नति के सारे कार्य पंचायतों को सौंप दिये गये। सन् १९६५ में पंचायती राज कानून पास हुआ और पंचायतों को व्यापक अधिकार और सत्ता के विकेन्द्रीकरण की व्यवस्था की गई।

१९५१ में मालगुजारी प्रथा का अन्त होने से न केवल गांवों का आर्थिक पुनरुत्थान हुआ बल्कि किसानों का आत्मविश्वास लौट आया है। उन्होंने लोकतंत्रीय समाज में कर्त्तव्य बोध के लिये समाजशिक्षण योजना का सूत्रपात किया। आर्थिक विकास के लिये सामुदायिक विकास कार्यक्रम आरम्भ किये गये। साक्षरता का प्रचार कर गांवों में बौद्धिक नवजागरण लाया गया और सामूदायिक विकास के जरिये किसानों के सामने आर्थिक सम्भावनाओं के द्वार खोल दिये गये। गांवों में जागृति लाने और उनकी राजनैतिक जागरूकता को बढ़ाने, राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करने, अन्याय का प्रतिकार करने, समस्त सुविधाओं का अवसर की मांग के लिये संगठित होने तथा अपने अधिकारों की रक्षा के लिये संघर्ष करने की प्रेरणा गांवों को राजनैतिक दलों से प्राप्त हुई है। आम चुनावों तथा स्थानीय चुनावों से ग्रामीण जनता को अपनी संगठित शक्ति का आभास मिला।

एक शताब्दी के पूर्व छत्तीसगढ़ में अज्ञान और अन्धविश्वास का अंधकार फैला हुआ था। रायपुर में केवल एक नार्मल स्कूल था ताकि कुछ पढ़ेलिखे व्यक्तियों घरेलू शिक्षा देने की व्यवस्था की जा सके। शिक्षा का अभाव था। परन्तु अब छत्तीसगढ़ के प्रत्येक प्रमुख कस्बे में हाई स्कूल व उच्च शिक्षा हेतु ३५ से अधिक विभिन्न महाविद्यालय एवं एक विश्वविद्यालय हैं ।

SEGAON WARDHA

10-6-38

Dear Raghavendra Rao ——

I have your letter of 6th inst. Mahadev has already asked you to send a copy of your first letter. I want to work at it without in any way disclosing your name. All I wish to say at this stage is that you should send facts & figures to support your conclusions.

Yours sincerely,
M. Gandhi

१९३३ में गांधी जी का रायपुर आगमन - हरिजन उद्धार हेतु। चित्र में गांधी जी, स्व. रविशंकर जी शुक्ल, श्री ईश्वरी चरण शुक्ल, स्व. भगवती चरण शुक्ल, श्री प्रभू लाल लखोटिया आदि दिखाई दे रहे हैं। श्री हजारी लाल जैन कार चालक है। (नवभारत के सौजन्य से)

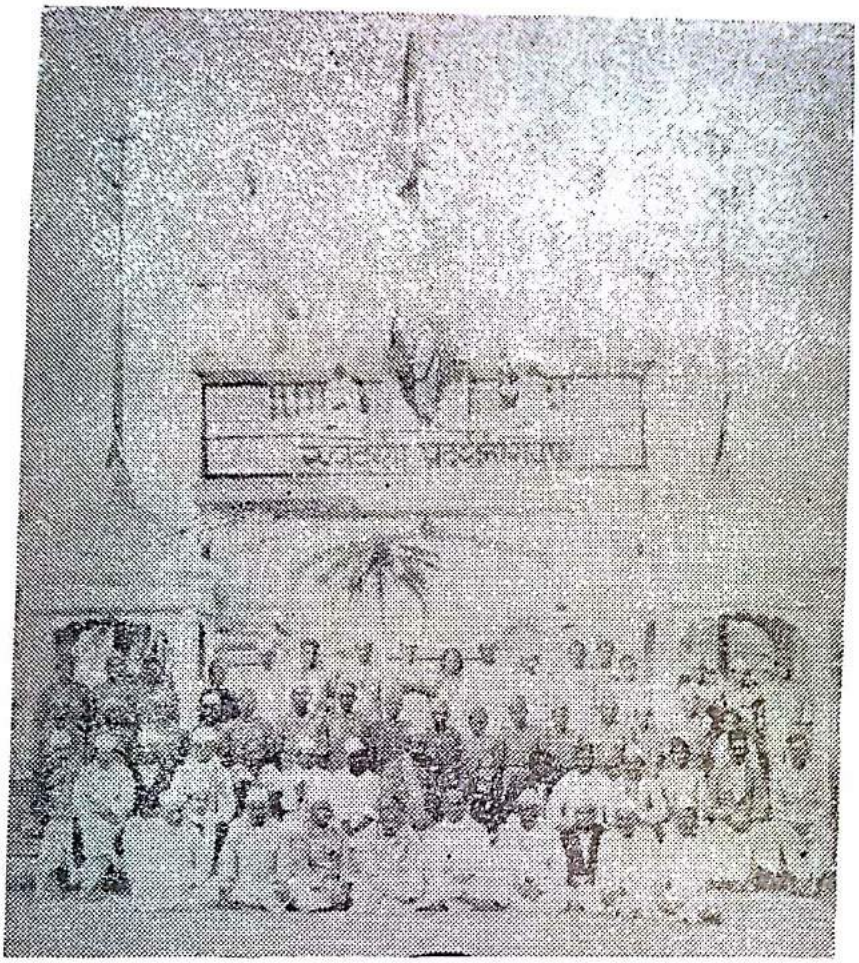

महात्मा गांधी जी के द्वारा १९३३ में उद घाटित स्वदेशी प्रदर्शनी - आयोजनकर्त्ताओं के चित्र। चित्र में अध्यक्ष स्व. पं रविशंकर जी शुक्ल, स्व. डा. राधा बाई, अब्दुल रऊफ, महन्त लक्ष्मीनारायण दास, नन्दकुमार दानी, और वामनराव लाखे, आदि दिखाई दे रहे हैं। चित्र श्रीमती प्रकाशवती मिश्र के सौजन्य से

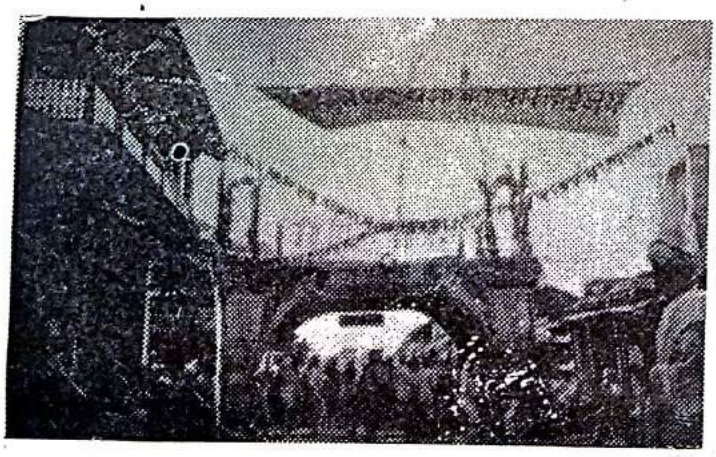

भाटापारा में १९३३ में गांधी जी के स्वागतार्थ बनाया गया, स्वागत द्वार, छायांकन श्री अब्बास भाई।

राजनीतिक खंड

छत्तीसगढ़ पर गांधी जी के व्यक्तित्व का प्रभाव

–श्री हरि ठाकुर

सन् १८५७ के विद्रोह के पश्चात् अनेक वर्षों तक अंग्रेजी सत्ता द्वारा भारतीय जनता पर दमन चक्र चलता रहा। राष्ट्रीय चेतना को प्रज्वलित रखने के लिए सर्वाधिक कार्य लोकमान्य तिलक ने किया। किन्तु तिलक युग तक अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध जो भी आन्दोलन हुए वे मुख्यतः बौद्धिक स्तर पर हुए और इन आन्दोलन का नेतृत्व कुछ बुद्धजीवी लोगों के हाथों में ही रहा।

सन् १९२० के कुछ पूर्व गांधीजी ने भारतीय राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा उन्होंने भारतीय जनता को ऐसे नये कार्यक्रम दिये जिनकी ओर सर्व साधारण जनता का ध्यानाकर्षित हुआ।सन् १९१९में रोलेट एक्ट पास हुआ जिसके खिलाफ सारे देश में गांधीजी ने आवाज बुलन्द की और यही वह समय था जब देश का नेतृत्व तिलक के हाथों से गांधीजी के हाथों में आया। इस एक्ट के विरुद्ध गांधीजी ने सत्याग्रह की घोषणा की और उसी माह इतिहास प्रसिद्ध जलियाना वाला बाग की घटना घटी। जलियाना वाला बाग हत्या कांड से सारे देश में अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध आक्रोश की भावना में वृद्धि हुई और इसका लाभ गांधीजी ने उठाया।

देश को गांधीजी ने सर्वप्रथम सत्याग्रह का मार्ग सुझाया। आगे चलकर सत्याग्रह भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन का अमोघ अस्त्र साबित हुआ। सन् १९२० के मध्य में छत्तीसगढ़ में भी सत्याग्रह आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। जुलाई माह में धमतरी तहसील के कन्डेल नामक ग्राम में नहर सत्याग्रह आरम्भ हुआ। इस सत्याग्रह के सूत्रधार थे पं. सुन्दरलाल शर्मा, नारायण राव मेघावाले तथा छोटेलाल बाबू। सत्याग्रह छिड़ने के निम्नलिखित मुख्य कारण थे:––

१– नहर विभाग द्वारा इस गांव के निवासियों पर चोरी का झूठा आरोप लगाया जाना।
२– नहर विभाग द्वारा गांव के निवासियों से जबरन व नाजायज ढंग से जुर्माने की रकम वसूल करना।
३– जुर्माने की रकम वसूल करने के लिये ग्रामवासियों पर अत्याचार करना।

नहर विभाग के अत्याचारों का विरोध करने के लिये जुलाई माह में इसी गांव में एक सभा हुई जिसे पं. सुन्दरलाल शर्मा, नारायण राव मेघावाले तथा छोटेलाल बाबू ने संबोधित किया। इसी सभा में अंग्रेजी नौकरशाहीके अत्याचारों के विरुद्ध सत्याग्रह करने की घोषणा की गई।" और यह भी निर्णय लिया गया कि गांव में कोई भी व्यक्ति जुर्माने की रकम शासन को न दे। फलस्वरूप गांववालों की मवेशियां कुर्क कर ली गई। जब ये मवेशियां बाजारों में नीलाम करने के लिए ले जायी जातीं तब वहां सरकारी कर्मचारी को कोई बोली बोलने वाला नहीं मिलता। इस प्रकार यह सत्याग्रह दिसम्बर माह तक चलता रहा। साथ ही अंग्रेजों का दमन चक्र भी बढ़ता गया।

अन्त में इस सत्याग्रह के नेताओं ने गांधीजी से पत्र-व्यवहार किया। और गांधीजी ने इस सत्याग्रह का मार्ग-

दर्शन करना स्वीकार किया। गांधीजी उस समय बंगाल का दौरा कर रहे थे। उन्हें बुलाने के लिये पं. सुन्दरलाल शर्मा गये।

२० दिसम्बर सन् १९२० को महात्मा गांधी का प्रथम बार रायपुर आगमन हुआ। उसी दिन उन्होंने गांधी चौक में अपार जनसमूह को संबोधित किया। रायपुर से गांधीजी मोटर द्वारा धमतरी और कुरुद गये। मार्ग में स्थान-स्थान पर ग्रामवासियों ने उनका जोरदार स्वागत किया। गांधीजी के आगमन के साथ ही कंडेल सत्याग्रह स्थगित हो गया था। क्योंकि अंग्रेजी नौकरशाही ने सत्याग्रहियों के सामने अपने घुटने टेक दिये थे। इसलिये गांधीजी धमतरी से ही वापस लौट आये। धमतरी और कुरुद से वापस लौटने पर गांधीजी पुनः रायपुर में रुके और उन्होंने महिलाओं की एक विशाल सभा को सम्बोधित किया।महिलाओं से गांधीजी ने 'तिलक स्वराज्य' फण्ड के लिए मांग की और उन्हें तुरन्त दो हजार रु. के मूल्य के गहने प्राप्त हुए।

सन् १९२० में छत्तीसगढ़ के निवासियों पर गांधीजी के व्यक्तित्व का जो प्रभाव पड़ा उसकी एक झलक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री प्रभुलाल कावरा के शब्दों में इस प्रकार है:--'मैंने गांधीजी को रायपुर के प्लेटफार्म पर देखा। डाक गाड़ी से लोकमान्य तिलक, दादा साहेब खापड़े डा. मुंजे आदि कलकत्ता जा रहे थे। प्लेटफार्म पर ये सब नेता (फर्स्ट क्लास) प्रथम वर्ग या द्वितीय वर्ग से उतरे किन्तु उनमें एक गांधीजी नहीं थे। जनसमूह की आंखें गांधीजी को ढूंढ़ रही थीं। किसी ने बताया कि वे तृतीय वर्ग में बैठे हैं। जनता उधर दौड़ी तो उन्होंने देखा कि लुंगी और पट्टी वाला कुरता पहिने गांधीजी दोनों हाथ जोड़े हुए दरवाजे पर खड़े हैं। तब तक गाड़ी चलने लगी थी जनता के मुंह पर एक ही बात थी देखो गांधी तृतीय वर्ग में जा रहा है।' उनकी सादगी को देखकर अनेक लोग भावुकता में पड़े। लोगों को यह विश्वास हुआ कि गरीब और दलित भारतीय जनता का नेतृत्व गांधी ही कर सकता है। २६ दिसम्बर १९२० को नागपुर में विजय राघवाचार्य की अध्यक्षता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन हुआ।इसी अधिवेशन में गांधीजी ने सत्याग्रह की घोषणा की। इस सत्याग्रह की भूमिका गांधीजी ने छत्तीसगढ़ की जनता को रायपुर, धमतरी व कुरुद की सभाओं में २० दिसम्बर को ही समझा दी थी। इस अधिवेशन में भाग लेने के लिये छत्तीसगढ़ से पं. सुन्दरलाल शर्मा, ठा. प्यारेलाल सिंह सखाराम दुबे आदि नेता गये थे।

उपर्युक्त सत्याग्रह की निम्नलिखित रूपरेखा तैयार की गई थी:--

१- सरकारी लगान न पटाना।
२- सरकारी उपाधियों का त्याग।
३- अंग्रेजी शिक्षा का बहिष्कार तथा राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना।
४- विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार एवं स्वदेशी का प्रचार।
५- वकीलों द्वारा वकालत त्यागकर राष्ट्रीय पंचायतों की स्थापना।
६- कौंसिल का बहिष्कार
७- मद्य-निषेध का प्रचार।

इस सत्याग्रह की घोषणा के फलस्वरूप ठा. प्यारेलाल सिंह ने हमेशा के लिए वकालत छोड़ दी और सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया। रायपुर जिले में वकालत छोड़ने वाले वकील--पं. रामनारायण तिवारी। इसके साथ ही पं. यादवराव देशमुख ने जो उस समय जिला कौंसिल के सभासद थे, त्यागपत्र दे दिया। उपाधि त्यागने वालों में से प्रमुख थे, रायसाहेब वामन राव लाखे, रायसाहेब बैरिस्टर कल्याणजी मोरारजी थेकर, सेठ गोपीकिसन तथा खान साहेब काजी शमशेर खां। उपाधि त्याग के ही दिन पं. वामन राव लाखे का एक आम सभा में सार्वजनिक सम्मान किया गया

और जनता की ओर से 'लोकप्रिय' की उपाधि से विभूषित किया गया। बैरिस्टर 'थेकर' ने जो विधानसभा के चुनाव में उम्मीदवार थे उन्होंने चुनाव का बहिष्कार किया। श्री बाजीराव कृदत्त जो धमतरी-महासमुन्द क्षेत्र से निर्विरोध चुनकर आये थे, उन्होंने इस सत्याग्रह के समर्थन में तत्काल अपना त्यागपत्र भेज दिया। इस बीच दो बार चुनाव की घोषणा की गई व दोनों बार स्थगित कर दी गई।

तीसरी बार भी इस जिले से किसी उम्मीदवार ने चुनाव में भाग नहीं लिया। इस प्रकार छत्तीसगढ़ की जनता ने देशसेवा के सामने पदलिप्सा को ठुकराकर त्याग का अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस बीच गांव-गांव में सत्याग्रह के उद्देश्यों का प्रचार किया गया, सभायें की गई और जनमानस को तैयार करने के लिये साहित्य बांटा गया। उपर्युक्त कार्यक्रमों में गांधीजी ने मद्य-निषेध को अत्याधिक प्रमुखता दी। जब वे रायपुर के दौरे पर थे तब उन्हें रायपुर के राजकुमार कालेज में भाषण देने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने विद्यार्थियों के सामने अपने विचार प्रकट करते हुए अंग्रेज प्रिंसिपल की उपस्थिति में ही कहा था कि बच्चो–अंग्रेजों के संपर्क में आकर उनके सद्‌गुण तो जरूर लेना लेकिन मद्यपान व जुवा सरीखे उनके राष्ट्रीय दुर्गुणों से बाल-बाल बचने के लिए प्रयत्नशील रहना। उनके इस वाक्य में अंग्रेज जाति व उसके राष्ट्रीय चरित्र पर सीधे आक्षेप है।

सन् १९२० में ही अप्रैल माह में ठा. प्यारेलाल सिंह के नेतृत्व में राजनांदगांव के मील के मजदूरों ने ३० दिनों की लम्बी हड़ताल की। लोगों का कहना है कि देश के मजदूर आन्दोलन के इतिहास में यह सबसे पहली लम्बी हड़ताल थी। इस हड़ताल ने समूचे देश का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया तथा छत्तीसगढ़ के मजदूर आन्दोलनों और रियासतों में जनजागरण के संबंधों में गांधीजी ठाकुर प्यारेलाल सिंह जी से बराबर सम्पर्क बनाये रखते रहे। इस आन्दोलन के सिलसिले में ठाकुर साहब को राजनांदगांव स्टेट की सीमा से बाहर निकाले जाने का हुक्म दिया गया।

सन् १९२० का आन्दोलन समाप्त होते होते सन् १९२१ के आरम्भ में आन्दोलन पुनः जोर मारने लगा। अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के विरोध में सारे देश में राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना की गई। रायपुर में भी ५–२–१९२१ को सेठ गोपीकिसन , बाल किसन तथा रामकिसन की दानशीलता से राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना हुई। इस विद्यालय के संचालन समिति के मंत्री पं,. वामन राव लाखे चुने गये। उस समय इस विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या २४० थी। शिक्षा का माध्यम हिंदी था। साथ ही सूत कातना, कपड़ा बुनना, लोहारी, बढ़ईगिरी आदि की शिक्षा की भी व्यवस्था थी ताकि इस विद्यालय का विद्यार्थी विदेशी सत्ता के समक्ष नौकरी के लिये हाथ न फैलाए।

इसी समय धमतरी में छोटेलाल बाबू ने अपने घर में (धमतरी) खादी उत्पादन केन्द्र खोला तथा अंग्रेजी शिक्षा छोड़कर आने वाले विद्यार्थियों की शिक्षा की भी व्यवस्था की। छोटेलाल बाबू ने इस संस्था को सन् १९२४तक चलाया और इस बीच उन्हें २० हजार का घाटा उठाना पड़ा।

सन् १९२२ में वनविभाग की नादिरशाही के विरोध में सिहावा के आदिवासियों ने सत्याग्रह आरम्भ किया। इस सत्याग्रह के प्रणेता पं. सुन्दरलाल शर्मा थे। इस सत्याग्रह के पीछे मुख्य कारण था आदिवासियों को जंगल से उनका 'निस्तारी हक' दिलाना। इस सत्याग्रह में पं. सुन्दरलाल शर्मा, नारायण राव मेघावाले, श्यामलाल सोम, पं. गिरधारीलाल आदि नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। पं. सुन्दरलाल शर्मा को एक वर्ष की तथा मेघावाले को ८ माह की सजा दी गई। सन् १९२१ -२२ में केवल रायपुर नगर से ही गांधीजी को तिलक स्वराज्य फंड में १६६३४ रु० प्राप्त हुए। कृषकों में भी उत्साह कम नहीं था। हजारों किसानों ने नागर पीछे दो दो काठा धान दिया। मद्य-निषेध का कार्यक्रम भी जोरों से चलता रहा। सन् १९२१ में स्थिति यह थी कि शराब , गांजा और अफीम की नीलामी बोलने वाला कोई नहीं

मिला। धमतरी में कुछ ठेकेदारों ने लोकमत की उपेक्षा करके दो-एक दूकानें खोलीं किन्तु उनकी दूकानों के सामने लगातार धरना दिया गया और ये दूकानें ठप्प पड़ गईं।

अछूतोद्धार का कार्यक्रम भी इस क्षेत्र में सफलतापूर्वक संचालित होता रहा। यों तो पं. सुन्दरलाल शर्मा ने सतनामियों को जनेऊ-धारण करने की अनुमति देकर उनका सामाजिक दर्जा उठाने का कार्य अनेक वर्ष पूर्व ही आरम्भ कर दिया था, किन्तु सन् १९२० के आसपास सतनामी पंथ के गुरुओं ने भी इस प्रभाव में रुचि लेना आरम्भ कर दिया और गांधीजी की शिक्षा के प्रभाव में आकर महन्त नैनदास ने अहिंसा के पालन तथा गोवध-निषेध का प्रचार आरम्भ किया व महन्त नैनदास ने अपने समाज के लोगों को आदेश दिया कि वे शराब तथा अन्य मादक वस्तुओं का प्रयोग न करें। राजनांदगांव के पंडित छबीराम चौबे ने छुआछूत के विरोध में २१ दिनों का उपवास किया जो उल्लेखनीय है।

इन कार्यक्रमों के साथ सन् १९२१ में स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का भी खूब जोर रहा। हजारों लोगों ने विदेशी वस्तुओं की होली जलायी और खादी पहनना शुरु कर दिया। अनेक स्थानों पर खादी उत्पादन केन्द्र खोले गये। रायपुर नगर कांग्रेस समिति ने नगर में गरीबों को ४६० चरखे मुफ्त में बांटे। सूत कातने की प्रतियोगिता तथा खादी वस्त्रों की प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। रायपुर नगर में केवल दो व्यापारियों को छोड़कर शेष सभी ने विदेशी वस्त्र बिक्री न करने की प्रतिज्ञा ली। हजारों थान विदेशी वस्त्र गोदामों में पड़े सड़ते रहे। यही स्थिति छत्तीसगढ़ के अन्य प्रमुख नगरों और जिलों की भी थी। १९२१ में ही अदालतों का बहिष्कार करके राष्ट्रीय पंचायतों की स्थापना की गई।

सन् १९२३ में नागपुर में इतिहास प्रसिद्ध झण्डा सत्याग्रह आरम्भ हुआ। देश के कोने-कोने से इस सत्याग्रह में भाग लेने के लिये स्वयंसेवक आये। छत्तीसगढ़ से भी हजारों की तादाद में सत्याग्रही नागपुर गये और गिरफ्तार हुए। गांधीजी ने इस आन्दोलन में भाग लेने वालों को कहा था 'शेर का पेट इतना भर दो कि वह फूट जाय' और हुआ भी यही। इतनी अधिक मात्रा में गिरफ्तारियां हुई कि जेलों में इनकी व्यवस्था न हो सकी।

सन् १९३०–३२ में गांधीजी के आह्वान पर अनेक आन्दोलन तथा सत्याग्रह हुए। सन् १९२९ में लाहौर कांग्रेस में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव कांग्रेस ने पारित किया। २६ जनवरी १९३० के दिन पूर्ण स्वतन्त्रता की प्रतिज्ञा ली गई। उसी समय देश में सशस्त्र क्रांति का आन्दोलन भी अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका था। भगतसिंह और उसके साथियों को फांसी की सजा सुना दी गई थी। देश का वातावरण अत्यन्त उग्र था। इसी अवसर पर गांधीजी ने अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध संघर्ष की घोषणा की। छत्तीसगढ़ में भी नमक कानून तोड़ा गया। मादक द्रव्य बेचने वालो दूकानों के सामने धरना दिया गया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। श्री रविशंकर शुक्ल आन्दोलन के पहले ही जबलपुर में गिरफ्तार कर लिये गये थे। उस समय रायपुर जिले का नेतृत्व इन पांच नेताओं के कंधों पर था। वामन राव लाखे, ठा. प्यारेलाल सिंह, महंत लक्ष्मीनारायण दास, शिवदास डागा तथा मौलाना अब्दुल रऊफ। किसी अज्ञात कवि ने १९३१ में इस आन्दोलन का आंखों देखा सजीव वर्णन किया:—

भैया पांचों पाण्डव कहिये, जिनको नाम सुनाऊं,
लाखे वामन राव हमारे, धर्मराज को है अवतार।
भीमसेन अवतारी जानों, लक्ष्मीनारायण जिनको नाम,
डागा सहदेव नाम से जाहिर, रऊफ नकुल को है अवतार।
ठाकुर अर्जुन के अवतारी, योद्धा प्यारेलाल सरदार॥

सन् १९३० में ही कृषकों पर लगान बढ़ाये जाने के विरोध में ठाकुर प्यारेलाल सिंह के नेतृत्व में पट्टा मत लो आन्दोलन छेड़ा गया।

महासमुन्द के 'तमोरा' नामक स्थान में ग्रामीणों ने जंगल अधिकारियों ने नादिरशाही के विरुद्ध जंगल सत्याग्रह आरम्भ किया। शंकर राव गनौद वाले तथा यतियतन लालजी ने इसी आन्दोलन का नेतृत्व किया। हरिमर्दन गिरि इस आन्दोलन के डिक्टेटर नियुक्त किये गये। इस आन्दोलन में सैकड़ों सत्याग्रहियों के साथ शंकर राव गनौदवाले भी गिरफ्तार किये गये। लगभग एक माह तक यह आन्दोलन चला। इस आन्दोलन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने का भार ठाकुर प्यारेलाल सिंह पर सौंपा गया। इसी बीच 'तानवट नयापारा' में गोलीकांड हुआ तथा नवागांव में भी जंगल सत्याग्रह हुआ। जगह-जगह १४४ धारा लगी और सत्याग्रहियों ने उन्हें तोड़ा।

१९३० के आन्दोलन के विषय में पं. रामदयाल तिवारी ने लिखा है—सन् १९३० का सत्याग्रह इतना तीव्र था कि लार्ड इरविन को जो उस समय वायसराय थे, गांधीजी से समझौता करने के लिये झुकना पड़ा। यह आन्दोलन जनता के हृदय में राष्ट्रीय स्वाभिमान का एक व्यापक प्रभाव छोड़ गया।

सन् १९३१ को पुनः गांधीजी ने आन्दोलन की घोषणा की। रायपुर जिले में आन्दोलन के संचालन हेतु आठ डिक्टेटर नियुक्त किये गये। २६ जनवरी को ठाकुर साहब पहले गिरफ्तार हुए। बाद मेंपं. रविशंकर शुक्ल, शंकरराव गनौद-वाले, पं. सुन्दरलाल शर्मा, श्रीमती राधाबाई, माधव प्रसाद परघनिया, रामनारायण, हरशुल मिश्र,ब्रह्मदेव दुबे तथा लक्ष्मीप्रसाद तिवारी। १२–१–१९३२ को यतियतन लाल अपने दो साथी क्रांतिकुमार भारती तथा सत्यनारायणदास के साथ महासमुन्द गांव में गिरफ्तार कर लिये गये। अंधियारखोर वाले भगवती प्रसाद मिश्र भी उसी समय गिरफ्तार कर लिये गये। १५ फरवरी को पं. रविशंकर शुक्ल, महन्त लक्ष्मीनारायण दास, नन्दकुमार दानी, रऊफ, डा. खूबचन्द बघेल आदि नेता एक ही दिन गिरफ्तार कर लिये गये। इन गिरफ्तारियों के आन्दोलन का नेतृत्व शंकर राव गनौदवाले पर आ गया। २९ मार्च को गनोदवाले तथा डा. त्रेतानाथ तिवारी के साथ अन्य सत्याग्रही गिरफ्तार कर लिये गये।

उसी दिन कुछ महिलाओं ने कीकाभाई की दुकान पर धरना दिया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें पुलिस के अभद्र व्यवहार का शिकार होना पड़ा। कोतवाली तक उन्हें सड़क पर घसीटते हुए ले जाया गया।

२० अप्रैल को पं. सुन्दरलाल शर्मा के साथ श्यामलाल सोम आदि नेता गिरफ्तार किये गये। १३ जून को एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए श्रीमती राधाबाई भी गिरफ्तार हो गई। ३१ जुलाई को आपत्तिजनक पर्चा बांटने के जुर्म में रामनारायण हर्शल भी गिरफ्तार हो गये। ३१ दिसम्बर तक लगभग ४०० लोग गिरफ्तार हुए उनमें से १८ महिलायें थीं।

सन् १९४० के नवम्बर माह में गांधीजी के आदेशानुसार व्यक्तिगत सत्याग्रह आरम्भ हुआ। इस सत्याग्रह में श्री रविशंकर शुक्ल , महन्त लक्ष्मीनारायण दास, वैष्णवदास, नैनदास, शिवदास डागा, यतियतनलाल. अनन्तराम बरछिया, वामनराव लाखे, नन्दकुमार दानी, लक्ष्मी प्रसाद तिवारी आदि नेताओं की गिरफ्तारियां हुई। सैकड़ों की संख्या में लोग जेल गये। यह आन्दोलन शीघ्र ही समाप्त हो गया।

९ अगस्त सन् १९४२ को बम्बई में कांग्रेस ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने की अंतिम चेतावनी दी और गांधीजी ने देशवासियों को 'करो या मरो' का अंतिम मंत्र दिया। ९ अगस्त के प्रातःकाल ही देश के तमाम शीर्षस्थ नेता गिरफ्तार कर लिये गये। हड़तालों और प्रदर्शनों का स्थान-स्थान पर आयोजन किया गया, फलस्वरूप अंग्रेजी सत्ता का दमनचक्र भी तीव्रता के साथ आरम्भ हो गया। ठा. छेदीलाल बम्बई में ही गिरफ्तार कर लिये गये। पं. शुक्ल, महन्त लक्ष्मीनारा-यणदास, शिवदास डागा, आदि नेता बम्बई से नागपुर आते समय मार्ग में गिरफ्तार कर लिये गये तथा ९अगस्त को रायपुर में बड़ी उत्तेजना के साथ एक विराट जुलूस निकाला जो नगर के इतिहास में अभूतपूर्व था। कंकाली अस्पताल के पास जुलूस के पहुंचने पर रामानन्द दुबे, राजेन्द्रकुमार चौबे, मानिकलाल चतुर्वेदी आदि नेता गिरफ्तार कर लिये गये।

मांग में अन्य नेता भी गिरफ्तार कर लिये गये। इन गिरफ्तारियों के बावजूद भी जुलूस संयम के साथ आगे बढ़ता गया और गांधी चौक में आम-सभा के रूप में परिणित हुआ। उस दिन सभा की कार्यवाही डा. बेतानाथ तिवारी की अध्यक्षता में हुई। कुछ ही घंटों में ५६ लोगों को गिरफ्तार किया गया। दूसरे दिन स्कूल तथा कालेज के विद्यार्थियों ने जुलूस निकाला और प्रदर्शन किये। रणवीर शास्त्री उसी दिन गिरफ्तार हुए। उसके पश्चात नित्यप्रति कार्यक्रम चलता रहा। जुलूस निकलते रहे, प्रदर्शन होते रहे, गिरफ्तारियों का सिलसिला चलता रहा। नगर के प्राय: सभी प्रमुख नेता गिरफ्तार किये जा चुके थे। रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर आदि प्रमुख नगरों में आन्दोलन की ज्वाला फैल चुकी थी और सैकड़ों की तादाद में गिरफ्तारियां होती रहीं। इस आन्दोलन में छात्रों ने मुख्य भूमिका अदा की क्योंकि शीर्षस्थ नेताओं के जेल के भीतर चले ज ने से जनता नेतृत्वविहीन हो गई थी। इस आन्दोलन को विद्यार्थियों ने ही नेतृत्व प्रदान कर प्रगतिशील बनाये रखा। उस समय के प्रमुख नेताओं के रूप में काम करने वाले ठा. रामकृष्ण सिंह, वल्लभ गुप्ता, कमलनारायण शर्मा, सच्चिदानन्द सिंह आदि सितम्बर मास में गिरफ्तार कर लिये गये। सितम्बर मास तक रायपुर जिले में लगभग ४०० लोगों की गिरफ्तारियां हुई।

विद्यार्थियों ने इस स्वातंत्र्य आन्दोलन के प्रति अभूतपूर्व उत्साह देखा गया। कुछ उत्साही नौजवानों ने जोश में आकर तोड़-फोड़ तथा हिंसात्मक कार्यवाहियां की, जैसे टेलीफोन के तार काटना, रेल की पटरियां उखाड़ना, जेल की दीवारें तोड़ना आदि। जेल की दीवार तोड़ने के सिलसिले में जयनारायण पांडेय, नारायणदास राठौर, नागरदास बवरिया आदि पर मुकदमे भी चले। आन्दोलन जो कि तमाम देश में हिंसात्मक रूप अपनाता जा रहा था,छत्तीसगढ़ में पूर्णत: अहिंसात्मक रहा। इसका श्रेय उन नेताओं को है जो गिरफ्तार न होकर जेल नहीं गये और बाहर ही रही जनता और नौजवानों में स्फूर्ति भरते रहे। रायपुर जिले में महीनों यह आन्दोलन चलता रहा। क्योंकि ठा. प्यारेलाल सिंह तथा लक्ष्मणराव जी उद्‌गीरकर कुशलतापूर्वक इस आन्दोलन का संचालन करते रहे। कुछ स्थानों पर लाठी चार्ज तथा गोलियां भी चलीं।

इस जिले में शासन की ओर से हिंसात्मक कार्यवाही इसलिये नहीं हुई कि उस समय श्री आर. के. पाटिल डिप्टी कमिश्नर थे जो अंग्रेजी सत्ता की सेवा में रहते हुए भी अपनी राष्ट्रीय विचारधारा के लिये प्रसिद्ध थे। अंग्रेजों के नौकरी में रहते हुए भी आदतन खादी के कपड़े पहनते थे। अन्यथा इस जिले में भी अंग्रेजी नौकरशाही के सामने खुलकर हिंसात्मक कार्यवाही करने का पूरा अवसर था।

संक्षेप में छत्तीसगढ़ का यह क्षेत्र सन् १९२० से बराबर गांधीजी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर जनजागरण स्वातंत्र्य आन्दोलन तथा राष्ट्रीय चेतना में प्रमुख रूप से भाग लेता रहा। सभी जाति तथा सभी वर्ग के लोगों ने इस आन्दोलन में अपने सारे भेदभाव मिटाकर भाग लिया और जब जब गांधीजी ने आन्दोलन की घोषणा की हजारों की संख्या में इस क्षेत्र के लोग कूद पड़े। अनेक परिवार स्वातंत्र्य आन्दोलन में जूझते-जूझते आर्थिक दृष्टि से बरबाद हो गये। इस क्षेत्र में गांधीजी का दो बार आगमन हुआ और उन्होंने अपने व्यक्तित्व तथा विचारधारा से सर्वसाधारण को अत्यधिक प्रभावित किया। अनेक राष्ट्रीय सस्थाये तथा खादी एव ग्रामोद्योग केन्द्र खुले। उनके माध्यम से ना केवल जनता को स्वावलम्बन की शिक्षा मिली वरन् स्वातंत्र्य आन्दोलन के लिये तपे हुए निष्ठावान सैनिक भी मिले। गांधीजी ने अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध न केवल राष्ट्रीय चेतना को प्रज्वलित किया वरन् उन्होंने भौतिक बल को भी उतना ही महत्व दिया।

इस आन्दोलन के संदर्भ में हम उन लोगों को भी नहीं भूल सकते जो अंग्रेजी सत्ता के अंतिम क्षणों तक अंग्रेजों की चापलूसी और अपनी स्वार्थसिद्धि में लगे रहे किन्तु आजादी की घोषणा होते ही रातों रातों अपना चोला बदल लिया। ऐसे संदिग्ध चरित्र के व्यक्तियों के हाथों में नेतृत्व आ जाने के कारण ही इस क्षेत्र से गांधीजी के सिद्धान्तों तथा आदर्शों का पतन होता दिख रहा है। गांधीजी ने इस देश को एक नया जीवन दर्शन दिया था। उस जीवन दर्शन को आगे बढ़ाने के लिए जिस निष्ठावान नेतृत्व की आवश्यकता थी उसका अभाव होता गया।

छत्तीसगढ़ का किसान आंदोलन

–केयूर भूषण मिश्र

छत्तीसगढ़ पूर्णरूपेण एक कृषि प्रधान देश है। फलस्वरूप यहां की समस्या मूलतः किसानों की ही समस्या रही है। अंग्रेजों के शासनकाल के पूर्व यह क्षेत्र बाह्य शोषण से मुक्त था। क्षेत्र की आबादी कम और उत्पादन विपुल होने के कारण किसानों के समक्ष किसी प्रकार की कोई तात्कालिक समस्या नहीं थी। किसान राजा को नजराना देकर अपनी हल चलाने की क्षमतानुसार खेती करता था और भूमि पर गांवों का सामूहिक अधिकार रहता था। अंग्रेजी शासनकाल में पहली बार भूमि की व्यवस्था की गई और भूमि कराधान के अन्तर्गत लाई गई और सामान्ती शोषण के तरीके को राज्य की ओर से मान्यता प्राप्त हुई। किसानों का शोषण प्रारंभ हुआ। यह सब १८५७ के बाद की व्यवस्था थी।

इस तरह सामन्ती प्रथा के साथ ही साथ बेगारी प्रथा का भी जन्म हो गया और किसान बेगारी प्रथा का शिकार होने लगा। बेगारी प्रथा कई चरणों में ली जाती थी। किसानों से बेगारी मुकद्दम लेता था और मुकद्दम से बेगारी मालगुजार लेता था, मालगुजार से बेगारी जमींदार और जमींदारों से बेगारी अधिकारीगण लेते थे। इस तरह बेगारी के रूप में शोषण नीचे से ऊपर तक चलता था। ठीक इसी तरह रजवाड़ों में राजा जमींदारों से बेगार करवाता था और राजाओं से बेगार पोलीटिकल एजेंट लेता था।। इस बेगारी प्रथा के खिलाफ छत्तीसगढ़ के किसानों ने आवाज उठाई। राष्ट्रीय आन्दोलन के पहले भी बेगार प्रथा के खिलाफ आन्दोलन रजवाड़ों की जनता ने उठाया। राजनांदगांव इस दिशा में अग्रणी रहा। महन्त घासीदास १८७९ में अंग्रेजों की ओर से रूलिंग चीफ नियुक्त किये गये। राजनांदगांव नगर बना, और गांवों में बेगारी बढ़ी। किसान त्रस्त होने लगे। इस बेगार प्रथा के खिलाफ मेवता ठाकुर ने प्रथम बार बगावत की और सरगुजा स्टेट में बागुड़ बानियां और बिगड़ किसान ने विद्रोह किया। १९१०-११ में बस्तर राज्य के गुण्डा गोंड़ ने बगावत की थी, जिसका एकमात्र कारण कोर्ट आफ वार्ड में बस्तर के किसानों से ली जा रही बेगार प्रथा ही है।

छत्तीसगढ़ में किसानों की समस्या को ही आधार बनाकर कांग्रेस ने अपना आन्दोलन प्रारंभ किया और कांग्रेस का प्रारंभिक रूप जनता के समक्ष प्रस्तुत हुआ। स्व. पं. सुन्दरलालजी शर्मा, छोटेलाल बाबू,नत्थूजी जगताप, नारायणराव जी मेघावाले ने आगे आकर किसानों के आन्दोलन को एक नई दिशा दी। कन्डेल ग्राम का नहर पानी का सत्याग्रह किसानों का ही सत्याग्रह था। जिसका नेतृत्व किसानों के हाथों रहा। कन्डेल सत्याग्रह सन् १९१७ में प्रारंभ हुआ और १९२० में इस सत्याग्रह ने सफलता प्राप्त की। इस सत्याग्रह पर गांधीजी के चम्पारन सत्याग्रह का भी प्रभाव पड़ा क्योंकि किसानों ने इस सत्याग्रह के संचालन में अहिंसा को आधार बनाया था। नहर पानी का कर और जुर्माना न देने के कारण कन्डेल ग्राम के किसानों के मवेशियों को बलपूर्वक पकड़कर उन्हें नीलाम करने हेतु बड़े-बड़े शहरों में ले जाया जाता था। कंडेल के सत्याग्रही किसानों और अन्य स्वयंसेवकों के नैतिक प्रभाव और समझाने-बुझाने के कारण मवेशियों के लिये नीलामी की बोली नहीं बोली जाती थी अंततः शासन को झुकना पड़ा।

कंडेल नहर सत्याग्रह के बाद जो जंगल सत्याग्रह प्रारंभ हुआ उसके पीछे भी किसान जंगल में अपनी निस्तारी

हक प्राप्त करने के लिये लड़ रहे थे। किसान स्वराज्य के साथ, मालगुजारी प्रथा की समाप्ति, लगान माफी, भूमिहीनों को जमीन और महाजनों के शोषण से मुक्ति चाहते थे। इसीलिये स्वराज्य की लड़ाई में छत्तीसगढ़ का किसान आगे आया। इसका प्रभाव उस समय के किसान नेता मुंगेली निवासी श्री गणपतलाल बैस, लिखित साहित्य से जाना जा सकता है। उनका यह साहित्य पृथम आम चुनाव१९३७के पहले,को ध्यान में रखकर तैयार किया गया था। उन दिनों श्री गणपत-लालजी कांग्रेस के प्रमुख थ , साथ ही किसान संघ के मंत्री भी थे। किसान रामायण के मालगुजार कांड को देखिए:--

धनिक, मालगुजार, साहूकार,जमींदार अरू मालगुजारा हैं
जितने सरकारी चाकर, चपरासी. पटवारी. अफसर
जो हैं लिखे पढ़े बुधवन्ता, पंडित, साधु. गुरू महंता
इनमें बहु पाखंडी लोगा, दयाहीन रचारत रथ भोगा।
इसके आगे धूर्त्त मालगुजार के लक्षण बताते हैं:--
जब बेचे निज खेत किसाना, ले लेवें आधा नजराना,
खोटनी के सम खोटत रहना, अक गइय्या सम दुहत रहना,
अंगुल के नौ हाथ बनावैं, किसान की पूंजी झर्रावैं,
उपर खेती किसान बनावैं, लन्द फन्द कर उसे नगावैं,
कृषकन की बहू-बेटी, उन पर दृष्टि देत,
बात खुले तब पुलिस को, झट रुपिया भर देत।
काम बिगारी मुफ्त कराही, न करने पर व्यर्थ सताहीं,
गोचर जोत किसान सतावैं, व्यर्थ मवेशी कांजी लावैं।

इसी तरह साहूकार कांड, सरकारी चाकर कांड, वकील कांड, ठगे कांड, मेम्बर कांड। कांग्रेस में आगे चलकर घुसे हुए ठगों को भी नहीं छोड़ा गया है। इस संबंध में श्री गणपतलालजी ने स्वराज्य की रूपरेखा बताते हुए कहा है:-

अब स्वराज्य का रूप बताऊं, अल्पहि में सबको समझाऊं।
जाके कारण करत गोहारा, चित नहिं देवत कुछ सरकारा।
कृषक मांग जो उनहिं सुहाता, बरणों कुछ सुनिश्चित दे भ्राता।
कृषक भूमि के होवैं स्वामी, बन स्वतंत्र नसाय गुलामी।
मिले भूमि सबहीं कृषकन को, दुःखी, दीन अरू बहु श्रमिकन को।
कर्जमुक्त होवैं तत्काला, चहुंदिशि खोलहू उधम शाला।
मालगुजारी हक्क विनाशी, ग्राम-ग्राम विद्या पर काशी
कृषि आमद पर कर बैठारो, आमद कर समकर निरधारो
अन आवश्यक टैक्स बहु, एकदम होवैं दूर,
नमक टैक्स भी रद्द हो, पावें सुख भरपूर॥-॥

किसान आन्दोलन का संगठित रूप सन् १९३७ में डोंडी लोहारा और दुर्ग में दिखाई देता है। दुर्ग में किसान आन्दोलन का नेतृत्व सुप्रसिद्ध गांधीवादी नेता श्री नरसिंह प्रसाद अग्रवाल एडवोकेट दुर्ग तथा उनके छोटे भाई श्री सरयू प्रसाद अग्रवाल एडवोकेट ने किया । ये दोनों भ्रातागण सन् १९३२ के जेलयात्री सत्याग्रहियों में थे। छोटे भाई सरयू प्रसाद का उस समय विद्यार्थी जीवन था कांग्रेस के चुनाव प्रचार के बाद किसान आन्दोलन में फंस गये। ब मेतरा का चुनाव संचालन करने के उपरान्त जब बालोद आये तब यहां डोंडीलोहारा जमींदारी में श्री मनाराम

पांडेय दीवान का आतंक छाया हुआ था। किसानों में असंतोष अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका था। चरी-निस्तारी में अधिक अड़चनें और अत्यधिक बेदखली का बोलबाला था। किसानों की कोई आवाज नहीं थी। डोंडी लोहारा की रानी के प्रभाव से लाल फतेहसिंह के संबंधियों को अलग कर मनाराम दीवान ने अपना वर्चस्व रानी पर स्थापित कर लिया था। रानी मात्र दीवान की कठपुतली रह गई थीं। २८ अगस्त, १९३७ को डोंडी लोहारा जमींदारी के समस्त किसानों ने एकत्रित होकर मालीघोरी बाजार में आमसभा का आयोजन किया। इस आमसभा में मनाराम दीवान के खिलाफ दरख्वास्त भी दे दी गई परन्तु इसका कोई असर नहीं हुआ। फलस्वरूप कुछ प्रमुख किसान युवक श्री सरयू प्रसाद अग्रवाल की शरण में गये और उनसे नेतृत्व करने का आग्रह किया। किसानों की न्याय संगत मांग को देखकर श्री अग्रवालजी ने आन्दोलन का नेतृत्व करना स्वीकार कर लिया और सत्याग्रह की तैयारी प्रारंभ होने लगी। श्री सरयूप्रसाद अग्रवाल ने इस सत्याग्रह में अपने आप को झोंक दिया। वे लगातार तीन वर्ष तक पैदल, मोटर और बैलगाड़ी में घूमते रहे और भाषण देते रहे। यह आन्दोलन लोहारा जमींदारी तक ही सीमित नहीं रहा और पानाबारस और चौकी आदि जमींदारियों में भी फैल गया। दुर्ग के श्री वासुदेव देशमुख तथा श्री सरयूप्रसाद अग्रवाल के अग्रज श्री नरसिंह प्रसाद अग्रवाल का सहयोग भी उन्हें प्राप्त होने लगा। जनता की महान शक्ति के कारण, जमींदार समाज, पुलिस अधिकारीगण, बड़े-बड़े अन्य लोग और सरकारी अधिकारी परेशान रहने लगे। क्षेत्र का पुराना पटवारी श्री वली मोहम्मद जो नागपुर झंडा सत्याग्रह में भाग ले चुका था, डोंडी लोहारा में बस्ती के बाहर तम्बू तानकर बैठ गया।

सत्याग्रह प्रारंभ होते ही शीर्षस्थ कांग्रेसी नेताओं को कठिनाई अनुभव होने लगी क्योंकि इन दिनों प्रान्त में कांग्रेस मंत्रिमंडल था। इस सत्याग्रह में ९४ व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया और उन्हें रायपुर स्थित जेल में रखा गया। बालोद के दोनों अग्रवाल बन्धुओं को सिवनी जेल में रखा गया। इन सभी सत्याग्रहियों पर मनाराम दीवान की ओर से कम से कम एक हजार मामले दायर किय गये होंगे। ये मामले फौजदारी और दीवानी दोनों ही प्रकार के थे। चरी, निस्तारी, रवना और बंकर आदि के मामलों की संख्या अधिक थी। ये सभी मुकद्दमे धमतरी और रायपुर की अदालतों में चलाये गये। किसानों की ओर से रायपुर के वकील श्री त्रिवणीलाल श्रीवास्तव ने पैरवी की। नागपुर में बैरिस्टर श्री जकातदार ने किसानों का साथ दिया। दो अदालतों में किसानों की जीत हुई। परन्तु नेताओं की लगातार गिरफ्तारी से कारण नागपुर में मामले की ठीक से पैरवी न होने के कारण किसान मुकद्दमा हार गये। फल यह निकला कि मनाराम दीवान ने किसानों को खूब सताया। किसानों पर डिग्री लाई गई और उनकी सम्पत्ति कुर्क कर ली गई। आन्दोलन के अंतिम चरण के दौरान श्री आर. के. पाटिल. डिप्टी कलेक्टर थे। इनका दृष्टिकोण किसानों के प्रति उदारता एवं सहानुभूति का था। वे कलेक्टर होने के कारण, आन्दोलन में अपना सक्रिय और खुला सहयोग न दे सके। फिर भी उन्हीं की गवाही के कारण किसानों की दो अदालतों में विजय हुई।

जिस समय यह किसान आन्दोलन प्रारंभ हुआ था उस समय स्व. पं. रविशंकरजी शुक्ल, मध्यप्रदेश के शिक्षा मंत्री थे। पं. द्वारका प्रसादजी मिश्रा गृहमंत्री थे। इन दोनों महानुभावों ने किसानों के सत्याग्रह का विकराल रूप देखकर और किसानों के उत्साह को ध्यान में रखते हुए मध्यस्थता करने के उद्देश्य से अग्रवाल बन्धुओं को नागपुर बुलवाया। वहां पर मनाराम दीवान के साथ समझौता वार्त्ता प्रारंभ हुई। परन्तु समझौता नहीं हो सका। श्री द्वारका प्रसादजी मिश्रा, गृहमंत्री ने धमकी दी जिसे युवा नेता श्री सरयू प्रसाद अग्रवाल ने स्वीकार करते हुए सत्याग्रह प्रारंभ कर दिया। उन्होंने दिनांक ३ मई, १९३९ को डोंडी के पास गुडकट्टा नामक गांव में अनशन प्रारंभ कर दिया। ५ मई, १९३९ को कुसुमकसा नामक गांव में विराट सभा हुई। इस सभा में तीन दिनों तक चरी और निस्तारी की लकड़ी काटने का कार्यक्रम बनाया गया। श्री सरयूप्रसाद अग्रवाल को उपवास की ही स्थिति में कुसुमकसा ले जाया गया और वहां से लोहारा। लोहारा छोड़ते ही सत्याग्रह बन्द कर दिया गया।

उपरोक्त सत्याग्रह पूर्णरूपेण नियंत्रित और अनुशासन बद्ध था। यद्यपि इस सत्याग्रह में हजारों व्यक्तियों ने भाग लिया परन्तु सत्याग्रह की समाप्ति के पश्चात एक भी झाड़ नहीं काटा गया। श्री सरयू प्रसाद अग्रवाल ने ६ रोज तक उपवास किया। तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष श्री रत्नाकर झा ने किसानों की मांगें पूरी करने का आश्वासन दिया था परन्तु मांगें पूरी नहीं हो पाई और उसके स्थान पर जेल में स्थान दिया गया। श्री सरयू प्रसाद अग्रवाल की गिरफ्तारी के साथ ही उनके भाई श्री नरसिंह प्रसाद अग्रवाल उनके मुंशी तथा किसानों के नेता श्री वली मोहम्मद की गिरफ्तारी पानाबरस जमींदारी से लौटते समय पथराटोला गांव में हुई।

चूंकि उस समय कांग्रेस शासन था। कांग्रेस के बड़े नेता लोग भी इस आन्दोलन को तोड़ना चाहते थे। फलस्वरूप किसानों को भड़काया गया, गांवों में विशेष सशस्त्र पुलिस घूमती रही, और गांव गांव में विशेष अदालत लगती रही परन्तु किसी ने माफी के लिये याचना नहीं की। अंत में कांग्रेस मंत्रिमंडल के समाप्त होने के पूर्व ही किसान सत्याग्रहियों को भी जेल से मुक्त कर दिया गया। इसी बीच मानहानि के मामले का दंड का भुगतान न करने पर वकील साहब के घर का काफी सामान कुर्क कर लिया गया।

इस सत्याग्रह का एक बड़ा लाभ यह हुआ कि निस्तारी अधिकार कानून के निर्माण हेतु प्रयास किये गय और कानून बनाया गया। श्री व्ही. वाय तामस्कर जो उन दिनों विधायक थे, ने चरी और निस्तारी के लिये बिल लाया। इसके फलस्वरूप कमिश्नर श्री कामथ की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया। समिति ने समस्त जमींदारियों का दौरा करने के उपरान्त मध्यप्रदेश में निस्तारी के अधिकार पर ५०० सौ पृष्ठों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस रिपोर्ट के आधार पर कुछ सुधार किये गये। पूर्ण सुधार जमींदारी-उन्मूलन के बाद हुए।

किसान सत्याग्रह के नेता श्री सरयू प्रसाद अग्रवाल विद्यार्थी जीवन से राष्ट्रीय आन्दोलन में रहे। गांधीजी और वर्धा आश्रम से आपका घनिष्ठ संबंध था। तपस्वी सुन्दरलालजी के साथ आपने भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ अकथ कार्य किये। १९४२ के किसान आन्दोलन के अन्तर्गत किसानों पर चलाये जा रहे मुकदमों की पैरवी के लिये हाईकोर्ट जाना चाहते थ क्योंकि आपको पूरी आशा थी कि वे मुकद्मे जीत जायेंगे, परन्तु दीवान मनारामजी के प्रयत्नों के कारण आप गिरफ्तार कर लिये गये और उन्हें पूरी अवधि तक बिना मुकद्मा चलाये काल कोठरी में रखा गया। जेल यातना का आपके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ा और उनके स्वास्थ्य में खराबी आ गई और वे बीमार रहने लगे। बड़े भाई श्री नरसिंह प्रसाद अग्रवाल अकेले ही किसानों की समस्याओं के लिये संघर्षरत रहे।

तीसरा किसान सत्याग्रह स्वतंत्रता के पश्चात् सन् १९५३ में प्रारंभ हुआ। इस सत्याग्रह का नेतृत्व पुराने स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक श्री सुखराम नागे ने किया। श्री नागे ने जो बाद में समाजवादी दल के सदस्य हो गये थे, यह आन्दोलन भूमिहीनों के लिय भूमि की प्राप्ति के लिये किया था। इस आन्दोलन की शुरुवात सिहावा में ही प्रारंभ हुई जो राष्ट्रीय आन्दोलन के समय का एक प्रसिद्ध सत्याग्रह का रूप था।

जंगल की कृषि योग्य भूमि को भूमिहीन किसानों में बांटने के लिये यह आन्दोलन किया गया और सैकड़ों सत्याग्रही जेल गये। सुविख्यात समाजवादी नेता डा. राम मनोहर लोहिया भी इस आन्दोलन से प्रभावित होकर रायपुर आये। इसी आन्दोलन के दौरान एक आम सभा में भाषण करते हुए श्री सुखराम नागे का देहान्त हो गया। श्री नागे ने किसानों के हित के लिये जो आन्दोलन प्रारंभ किया था, वह आन्दोलन सफल रहा। आज हर जिले में किसानों को काबिल काश्त-भूमि दी जा रही है। वन विभाग द्वारा भी काबिल काश्त भूमि का वितरण किया जा रहा है। इसका श्रेय श्री सुखराम नागे को ही है। उनका यह आन्दोलन गांधीजी के द्वारा बताये गये अहिंसा के आदर्शों पर ही आधारित था।

धमतरी के कन्डेल गांव का नहर सत्याग्रह

—डा. शोभाराम देवांगन

यह बात एक निर्विवाद रूप से सत्य है कि कृषि कार्य को सम्पन्न करने में उसकी सिंचाई की समुचित व्यवस्था चाहे कृत्रिम अथवा अकृत्रिम हो, होना नितान्त आवश्यक है। केवल इस आधार पर ही मध्यप्रदेश तथा बरार के शासन ने रायपुर जिलान्तर्गत धमतरी तहसील के सांडमसिल्ली ग्राम के पास सन् १९१४ में सैलरिया नदी के जल को रोककर तथा वहां एक वृहत्त बांध बांधकर उसे एक वृहत्त जलाशय का रूप देने के पश्चात् इस संचित जल को महानदी में बहाकर, रुद्री ग्राम के पास एक और बांध महानदी में निर्माण कर तथा वहां से एक नहर निकालकर उसके द्वारा निकटवर्ती ग्रामों की खेती को सिंचाई के खातिर जल पहुंचाने का कार्य कुछ वर्षों से प्रारंभ किया गया था किन्तु नहर विभाग को इससे पर्याप्त आय नहीं हो सकती थी जिससे उनका कार्य समुचित रीति से संपन्न भी नहीं हो सकता था। इसलिये इस विभाग के कर्मचारी तथा अधिकारीगण दसवर्षीय नहर आबपासी नामक एक एग्रीमेंट के लिये गांव के कृषक समुदाय तथा मालगुजारों को किसी तरह समझा बुझाकर एवं एक झूठा प्रलोभन देकर तथा उनके भविष्य की उज्ज्वल रूपरेखा खींचकर उन्हें विवश कर अपने उद्देश्य की पूर्ति करने में ऐन केन प्रकारेण सफल हो ही जाते थे। इस तरह इस कार्य में इन्हें भीषण प्रयास करने पर भी संतोषप्रद लाभ होने की आशा नहीं भी हो सकती थी।इस नहर आबपासी नामक दस वर्षीय एग्रीमेंट में कृषकजनों को विशेष आपत्ति यह होती थी कि इसका प्रति एकड़ लगान व निस्वत काली जमीन के लगान के प्रति एकड़ अधिक द्रव्य निर्धारित किया गया था जिसे वे भविष्य में अपने लिये सहन करने में असमर्थ समझते थे।

इसके अतिरिक्त उनका यह तर्क भी न्यायसंगत तथा उपयुक्त जान पड़ता था कि इन दस वर्षों में सिंचाई के लिये जिस गांव की नहर आबपासी के लिये जो द्रव्य व्यय करना होगा उससे उस गांव में सिंचाई के लिये ही एक वृहत्त आबपासी का तालाब सदा के खातिर निर्मित हो सकता है। इस भावना से प्रेरित होकर अनेक गांवों के कृषकजन इस दस वर्षीय एग्रीमेंट के लिये सर्वथा उद्यत नहीं होते थे जिनमें श्री छोटेलाल बाबू का कंडेल नामक गांव भी एक था। इस अवधि में छोटेलाल बाबू तहसील के कांग्रेसी नेताओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर देश के उद्धार करने विषयक अनेक कार्यक्रमों में सदा अपना योग देने में परम कर्त्तव्य समझते थे। जैसा कि पूर्व उल्लेख किया गया है कि नहर विभाग को अपने अब तक के कार्य से संतोष नहीं हो सका था, तब इसके लिये इसे ऐन केन प्रकारेण प्रगति देना भी अनिवार्य हो गया था, इसलिये उसने सन् १९२० ई. के लगभग अगस्त माह में अपनी शक्ति का पता लगाने हेतु सर्व प्रथम कंडेल गांव में ही एक अन्याय तथा अनुचित कार्य करने का एक जाल बिछाने का संकल्प किया जिसका प्रधान कारण यह समझा गया था कि सम्प्रति में श्री छोटेलालजी बाबू ने इस तहसील में जन हितकारी तथा देशोद्धार कार्य में पूर्ण उत्साह से राजनैतिक मनीषियों के साथ सक्रिय योग देना प्रारंभ कर दिया था। यदि नहर विभाग इस कुत्सित दुर्भावनापूर्ण अनुचित कार्य में सफल हो जाता है तो इसका प्रभाव केवल श्री छोटेलाल पर ही नहीं होगा वरन् सम्पूर्ण तहसील पर ही पड़े बिना नहीं रहेगा। तब फिर बाबूजी को भविष्य में राजनीति से विरत एवं विमुख होने से विवश

होना ही पड़ेगा, जिसका परिणाम यह होगा कि नहर विभाग प्रान्तीय शासन का एक विशेष कृपा पात्र होने में सक्षम हुए बिना नहीं रह सकेगा। केवल इस प्रवल भावना से ही प्रेरित होकर इस विभाग ने अगस्त सन् १९२०में कंडेल गांव को जाने वाली शाखा नहर की नाली को काट कर उस गांव के संपूर्ण खेतों में देने की सोची जिससे उस गांव के प्राय: समस्त खेतों की सिचाई होना संभव हो सके। ऐसी परिस्थिति में उस गांव के किसानों पर चोरी से पानी (ले जाने का झूठा आरोप लगाकर पेनाल्टी सहित नहर पानी का लगान वसूल कर दस वर्षीय एग्रीमेंट के लिये भी मार्ग प्रशस्त हो जावेगा किन्तु इस विभाग के दुर्भाग्य से अथवा गांव वालों के सौभाग्य से उस रात्रि को ही वहां तथा समीपवर्त्ती गांवों में इतनी वर्षा हुई कि कोई कह नहीं सका कि इस भीषण वर्षा के बावजूद नहर की नाली काटकर गांव वालों को अपनी खेती की सिचाई करने की आवश्यकता हुई होगी जिसे एक साधारण व्यक्ति भी सरलतापूर्वक समझ सकता है किन्तु सूर्य के प्रकाश जैसे उज्जवल तथ्य को इस नहर विभाग के कर्मचारी तथा विचार करने में सर्वथा असमर्थ रहे और उस गांव के समूचे किसानों पर पानी ले जाने का मिथ्या अभियोग लगाकर ४३०४) रुपये (चार हजार तीन सौ चार रुपये) नहर पानी का लगान लगाने में अपनी दक्षता का परिचय देकर तत्क्षण उसकी वसूली के कार्यवाही का भी आदेश देने में अपनी इस कार्यपटुता पर नाज करने लगे। उसकी इस हास्यास्पद कार्य की सर्वत्र निन्दा होना अनिवार्य हो ही गया।

अब इस तहसील के राजनैतिक तथा सूझबूझ रखने वाले पुरुषों के लिये इस अविवेकपूर्ण तथा कुत्सित कार्य का विरोध करने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग एवँ साधन नहीं था। इसलिए वे सत्याग्रह करने का दृढ़ संकल्प कर उसका एक मानचित्र कंडेल नहर सत्याग्रह के रुप में चित्रित कर तहसील में सर्वत्र प्रचारात्मक कार्य करना प्रारंभ कर दिये। दूसरी ओर जब सीमावधि के भीतर द्रव्य पटाने विषयक शासन की सूचना पत्र की कोई चिन्ता उस गांव वालों ने नहीं की तब शासन के लिये उनकी चल सम्पत्तियों को कुर्क करने के अतिरिक्त कोई साधन नहीं रह गया था।इसलिये उसने गांव की समस्त मवेशियों, जिनमें वर्षा के दिनों में खेती कार्य अर्थात् ब्यासी का कार्य करने वाले जानवर सम्मिलित थे, कुर्क कर लिये गये। इसके अनन्तर इन्हें नीलाम करने के लिये सर्वप्रथम धमतरी के रविवासरीय बाजार में लाया गया किन्तु यहां के देशभक्त कर्मवीर व्यक्तियों के प्रचार तथा प्रयत्न से इन उपयोगी मवेशियों पर कोई बोली बोलना तो दूर रहा, प्रत्युत सर्वसाधारण जन भी उनके निकट जाने में अपने ऊपर एक महान कलंक लगने का दोष देखते थे, जिसका परिणाम यह हुआ कि शासकीय कर्मचारी खिन्न होकर इस वृहत्त बाजार की पूर्ण आशा त्याग कर तहसील के छोटे तथा बड़े बाजारों में जो धमतरी से १५–२० कोस की दूरी पर स्थित थे उन मवेशियों को नीलाम करने के लिये ले जाने में विवश हुए।

यद्यपि शासन के इस दुराग्रहपूर्ण कार्य का सामना सत्याग्रह द्वारा किया जा रहा है, यह संवाद तहसील में सर्वत्र विद्युत की नायीं फैल गया था, तथापि इसका प्रचार करने के हेतु तहसील के चहुं ओर देशभक्त तथा स्वयंसेवकों की टोलियां उन स्थानों में मवेशियों तथा शासकीय कर्मचारियों के पहुंचने के पूर्व ही पहुंच जाती थी इससे वहां भी इन शासकीय कर्मचारियों की वही गति होती थी जो गति धमतरी बाजार में हुई थी। रात दिन के आवागमन तथा उन मवेशियों के चारा तथा भूसे का कोई समुचित प्रवन्ध नहीं होने से अनेक मवेशी दुर्बल तथा रोगग्रस्त होकर अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए तो भी मदांध शासन को इसकी चिन्ता कैसे व्याप्त सकती है। उसे तो केवल चिन्ता शासकीय कोष में ऐन केन प्रकारेण द्रव्य संचय करने की थी। इस तरह शासन का यह क्रम वर्षा ऋतु के समाप्ति के पश्चात् भी चलता रहा। किन्तु इसमें भी उसे कोई लेशमात्र सफलता नहीं हुई।अंत में शासन को उस गांव के मालगुजार श्री छोटेलाल बाबू श्रीवास्तव तथा उनके चचेरे भाई श्री लालजी भाई तथा अन्य प्रमुख कृषक और तहसील के राष्ट्रीय नेताओं तथा स्वयंसेवकों को जो इस कार्य में एड़ी चोटी का जोर लगा रहे थे, सहसा गिरफ्तार करने की धुन सवार हो

(शेष पृष्ठ ~~८८~~ ९० पर)

छत्तीसगढ़ में गांधीवाद

-हरिप्रसाद अवधिया

छत्तीसगढ़ भारत का भू भाग है किन्तु प्रस्तुत लेख में भूमि के साथ साथ उन भारतीयों की ओर भी संकेत है जो उत्तर में सरगुजा से लेकर दक्षिण में बस्तर राज तक तथा पूर्व में प्रायः सम्बलपुर से पश्चिम में प्रायः गोंदिया तथा बालाघाट तक निवास करते हैं और विशेषतः सरगुजा, रायगढ़, बिलासपुर, रायपुर,दुर्ग, राजनांदगांव, खैरागढ़,डोंगरगढ़ तथा कांकेर बस्तर में "छत्तीसगढ़ी" कहलाते हैं। छत्तीसगढ़ में निवास करने वाले लगभग डेढ़ करोड़ व्यक्तियों पर "गांधी-वाद का प्रभाव पड़ा और स्वाधीनता-संग्राम में गांधीवाद के मार्ग-निर्देशन में छत्तीसगढ़ ब्रिटिश हुकूमत की कठोरता से लोहा लेता रहा। गांधीजी के नेतृत्व में संचालित आन्दोलन के युग में छत्तीसगढ़ का कोना-कोना "विजयी विश्व तिरंगा प्यारा , रण भेरी बज चुकी वीर वर पहनो केसरिया बाना" और:--

दक्षिण कोशल के वीरो,
आज तुम्हारा अवसर है।
सेनानी ने शंख बजाया,
सभी देश उठ आगे आया,
तुम भी कह दो दृढ़ स्वर से,
आज हमारा अवसर है"--

के राष्ट्र-गान से गूंज उठा। छत्तीसगढ़ ने द्रुत तथा तीव्र गति से गांधी मार्ग और गांधीवाद को अपनाया।

अपने आन्दोलन के सर्व प्रथम चरण में ही सन् १९२० में मौलाना शौकत अली को साथ लिये गांधीजी का रायपुर में आगमन हुआ। तभी से छत्तीसगढ़ में गांधीवाद का प्रारंभ होता है। उनके आगमन और आन्दोलन का छत्तीसगढ़ के जन-मानस पर अमिट प्रभाव पड़ा। लोगों ने सरकारी नौकरियां छोड़ दीं। शासकीय विद्यालयों से असहयोग कर संबंध विच्छेद कर लिया। उन विद्यार्थियों की शिक्षा का "स्वदेशी प्रबन्ध" करने के लिये छत्तीसगढ़ के केन्द्र रायपुर में "राष्ट्रीय विद्यालय" स्थापित किया गया जो गांधीवादी स्वातंत्र्य संग्राम के प्रसार तथा गांधीवाद के प्रचार का प्रमुख केन्द्र बना। गांधीवाद से पूर्णतया प्रभावित एवं अनुरंजित नेताओं ने गांधीजी के आन्दोलन को पूरे छत्तीसगढ़ में विस्तृत करने में कोई कोर कसर नहीं की और इस भू भाग ने गांधीवाद को ग्रहण कर उसके अनुरूप अपने जीवन को ढाला और छत्तीस-गढ़ में सत्य, अहिंसा, चर्खा, खादी तथा असहयोग लहराया। आन्दोलन तथा गांधी संदेश के प्रचार का मुख केन्द्र रायपुर बना जहां से आंतरिक अंचलों में उपकेन्द्र स्थापित कर गांधीवाद का अथक, गंभीर एवम् अमिट प्रचार-प्रसार किया गया जिसका समस्त छत्तीसगढ़ पर गहरा असर पड़ा और देश का यह उपेक्षित भू-खंड देश-भक्ति के क्षेत्र में इतने जोरों से आगे बढ़ा कि समय समय पर उच्च स्तरीय नेता आकृष्ट होकर उत्साह बढ़ाने के लिये यहां आते रहे और राष्ट्रीय क्षेत्र में गांधीवादी नेता पंडित रविशंकर शुक्ल का इतना उत्कर्ष हुआ कि वे मध्यप्रदेश तथा नव गठित मध्यप्रदेश के मुख्य-

मंत्री बने, राजनीति में अद्वितीय हुए (लोक-विश्वास तो यह भी है कि डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद पंडित रविशंकर शुक्ल को राजनीति में अपना गुरू मानते थे) और ए. आई. सी. सी. में अपना गहरा प्रभाव डाला। छत्तीसगढ़ के लोक हृदय पर पंडित रविशंकर शुक्ल के नेतृत्व की अमिट छाप पड़ी थी और उनके मार्ग दर्शन में छत्तीसगढ़ आगे बढ़ता जा रहा था। छत्तीसगढ़ के अन्य भागों में भी वहां के नेता गांधीवाद की जड़े जन-जन मन से जमा रहे थे।

ब्रिटिश शासन काल में "स्वराज्य" के पहले कदम के रूप में स्वायत्त शासन प्रदान किया गया था। छत्तीसगढ़ के कार्यकर्त्ताओं ने इससे भरपूर लाभ उठाया। नगर के लिये म्यूनिसिपलिटियों और ग्रामीण क्षेत्रों के लिये डिस्ट्रिक्ट कौंसिलों को यहां के नेताओं ने गांधीवाद का प्रसार करने के लिये चुना और उन पर अपना अधिकार कर लिया। दीर्घकाल तक पंडित रविशंकर शुक्ल रायपुर जिले के डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के चेयरमैन रहे और उस पद की सत्ता का उपयोग गांधीवाद के प्रसार के लिये किया। प्रभावपूर्ण प्रचार कार्य में शिक्षक प्रवीण होते हैं। इस तथ्य को शुक्लजी ने अपने समक्ष रखा। गांव-गांव में टूर्नामेंट के आयोजन कराये जिससे शिक्षक वर्ग स्वयं एकत्र होकर लोक-संगठन तथा गांधीवाद के प्रचार में लग गये और सर्वत्र गांधीवाद का संदेश पहुंचाया। गांधीवाद के प्रमुख सक्रिय प्रचारक नेता रायपुर में पंडित रविशंकर शुक्ल, ठाकुर प्यारेलाल सिंह, सेठ शिवदास डागा, महन्त लक्ष्मीनारायण दास, डाक्टर खूबचन्द बघेल, वामन बलीराम लाखे, जमनालाल चोपड़ा, यति यतनलाल, डा. राधाबाई, मौलाना रऊफ अब्दुल बी. एन. बनर्जी, नारायण राव मेघावाले, क्रांति कुमार, बिलासपुर में बैरिस्टर ठाकुर छेदीलाल, ई. राघवेन्द्र राव थे। (स्थानाभाव के कारण अन्य नामों का उल्लेख करना संभव नहीं है।) इनकी कार्य प्रणाली सुसंगठित इनके के भाषण,त्याग,तपस्या तथा देश-भक्ति अनुपम थी।नगर-केन्द्र बनाये गये। प्रमुख कस्बे उप-केन्द्र निर्धारित किये गये। गांव-गांव में चर्खा चलने लगा, सूत ने हृदयों को पावन किया, गांधी टोपी, सरल हृदय, त्याग तपस्या, तपी हुई देश-भक्ति, अहिंसा, असहयोग, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार और होली, सहनशीलता विलक्षण गति और रूप से छत्तीसगढ़ का शृंगार करने लगी। छत्तीसगढ़ गांधीवाद से इतना प्रभावित तथा अनुप्राणित हुआ कि उसने १९३० से १९४२ तक असहयोग आन्दोलन में उल्लेखनीय भाग लिया। सत्याग्रह, धरना, बायकाट, जेल यात्रा, कानून के उल्लंघन में यह भाग किसी से पिछड़ा नहीं रहा अपितु देश के महान नेताओं को आकृष्ट किया और समय-समय पर स्वयं महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल, आचार्य कृपलानी यहां आये और छत्तीसगढ़ में गांधीवादी नव जागरण का उल्लास लहराया।

रायपुर में महात्मा गांधी का दुबारा आगमन हुआ। नमक कानून तोड़ा गया और गांधीजी के कर कमलों से मंदिरों के द्वार हरिजनों के लिये खोले गये। छत्तीसगढ़ की एक बड़ी भारी विशेषता यह रही है कि गांधीजी के हरिजन आन्दोलन के पूर्व ही अछूत कहे जाने वाले लोगों को राजिम निवासी पंडित सुन्दरलाल शर्मा ने जनेऊ पहनाये और राजिव लोचन के मंदिर का द्वार उनके लिये खोलने का प्रयास किया। इससे उपयुक्त वातावरणका निर्माण हो चुका था जिससे छत्तीसगढ़ ने गांधीवाद को सरलता से सहज ही में अपना लिया। सन् १९३२ में उस समय के "('बेताज के बादशाह" पंडित जवाहरलाल नेहरू का रायपुर आगमन हुआ। लोगों में उत्साह उमड़ आया, नवीन बल का संचार हुआ और गांधीवाद पर आस्था दृढ़ होती गई।

सन् १९४२ में "भारत छोड़ो" प्रस्ताव के संदर्भ में रायपुर का आन्दोलन और उसका दमन अपने आप में बेजोड़ थे। भारत के प्रायः सभी प्रमुख नगरों में नौ अगस्त की क्रांति के समय गोलियां चलीं। विद्यार्थी शहीद हुए किन्तु रायपुर का शासकीय रुख कुछ गांधीवादी ही कहा जा सकता है क्योंकि वह अहिंसक था। इसका श्रेय तत्कालीन डिप्टी कलेक्टर श्री आर. के. पाटिल को है जिन्होंने यह आदेश दे रखा था कि आन्दोलनकारियों को पुलिस लारी में बैठाकर शहर के बाहर दस मील के अंतर्गत छोड़ दिया जावे। अंग्रेज शासकों को यह कब बर्दाश्त हो सकता था कि छत्तीसगढ़ के केन्द्र

(शेष पृष्ठ ८८ पर)

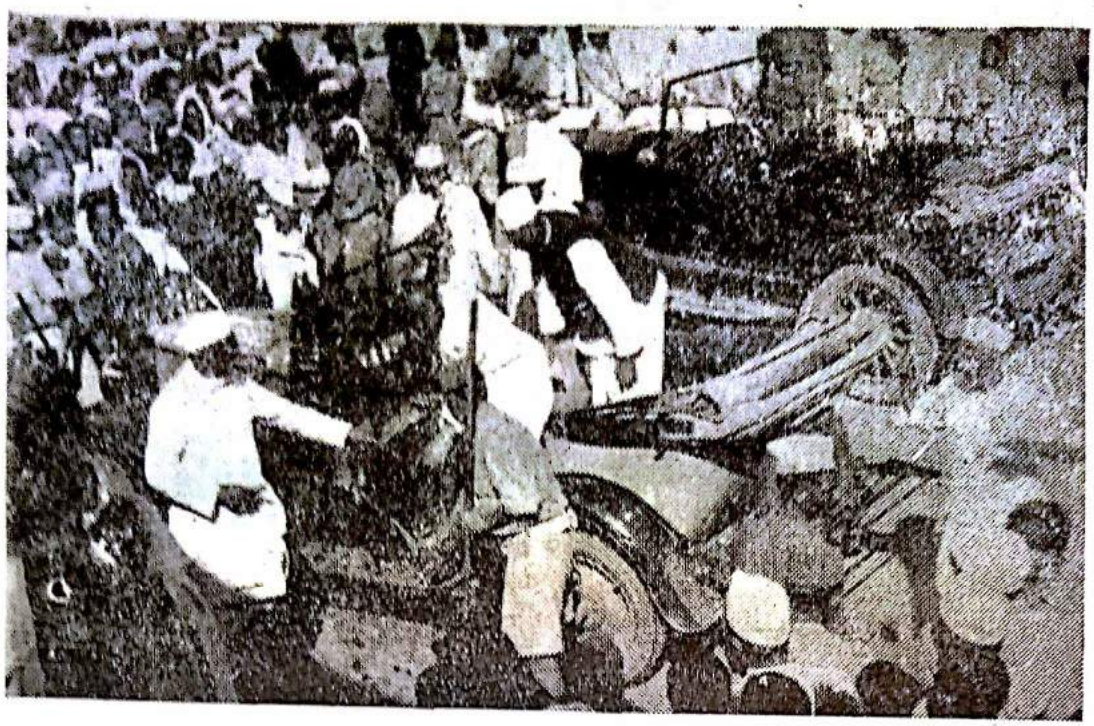

सन् १९३३ में गांधी जी ने अपने रायपुर प्रवास के समय सदरबाजार खादी भंडार को भेंट दी थीं। स्व. पं रविशंकर जी शुक्ल उनकी आगवानी कर रहें हैं। चित्र : श्रीमती प्रकाशवती मिश्र के सौजन्य से।

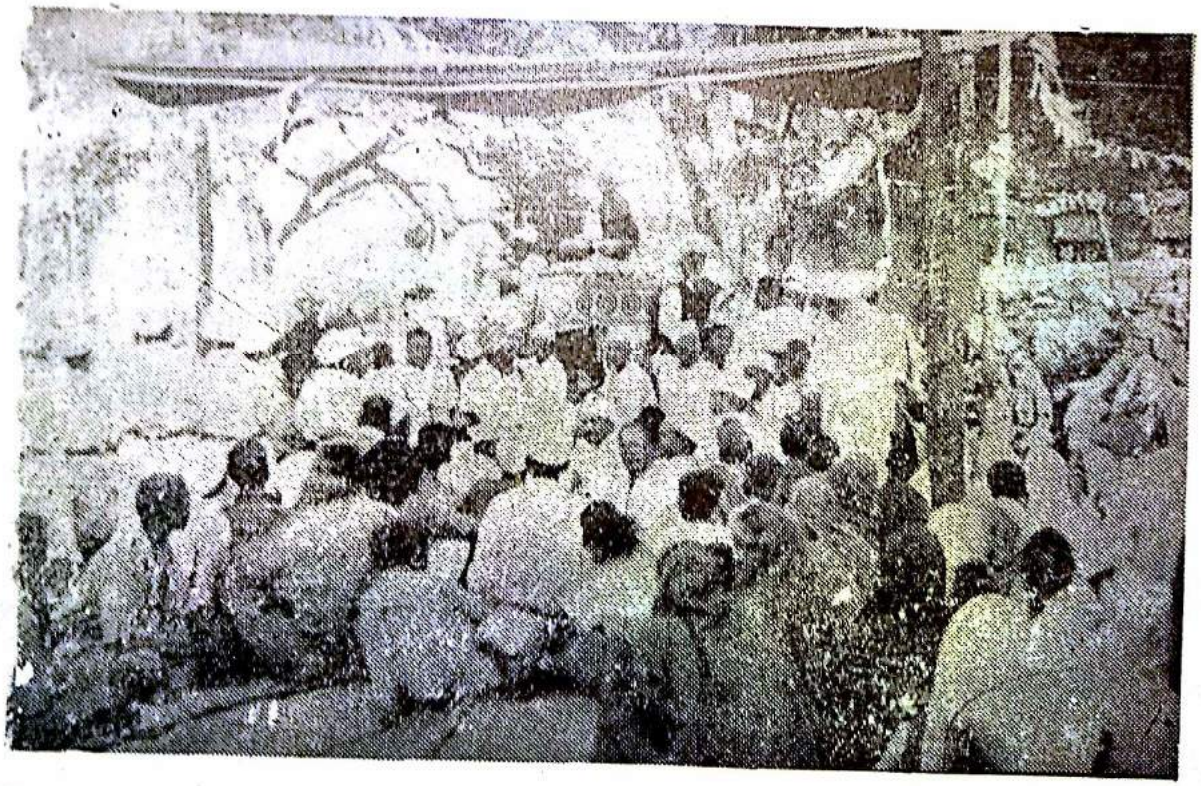

सन् १९३३ में रायपुर स्थित मोती बाग में आयोजित स्वदेशी प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए गांधी जी। चित्र में स्व. शुक्ल जी खड़े हुए दृष्टिगोचर हो रहें हैं। चित्र: श्रीमती प्रकाशवती मिश्र के सौजन्य से।

१९३३ में सप्रे हाई स्कूल में महिलाओं कीं एक सभा को सम्बोधित करते हुए महात्मा गांधीजी । स्व. पं. रविशंकरजी शुक्ल कमर पर हाथ रखे दृष्टिगोचर हो रहे हैं । पीछे श्री अम्बिकाचरण जी शुक्ल खड़े हुए हैं । चित्र : श्रीमती प्रकाशवती मिश्रा के सौजन्य से ।

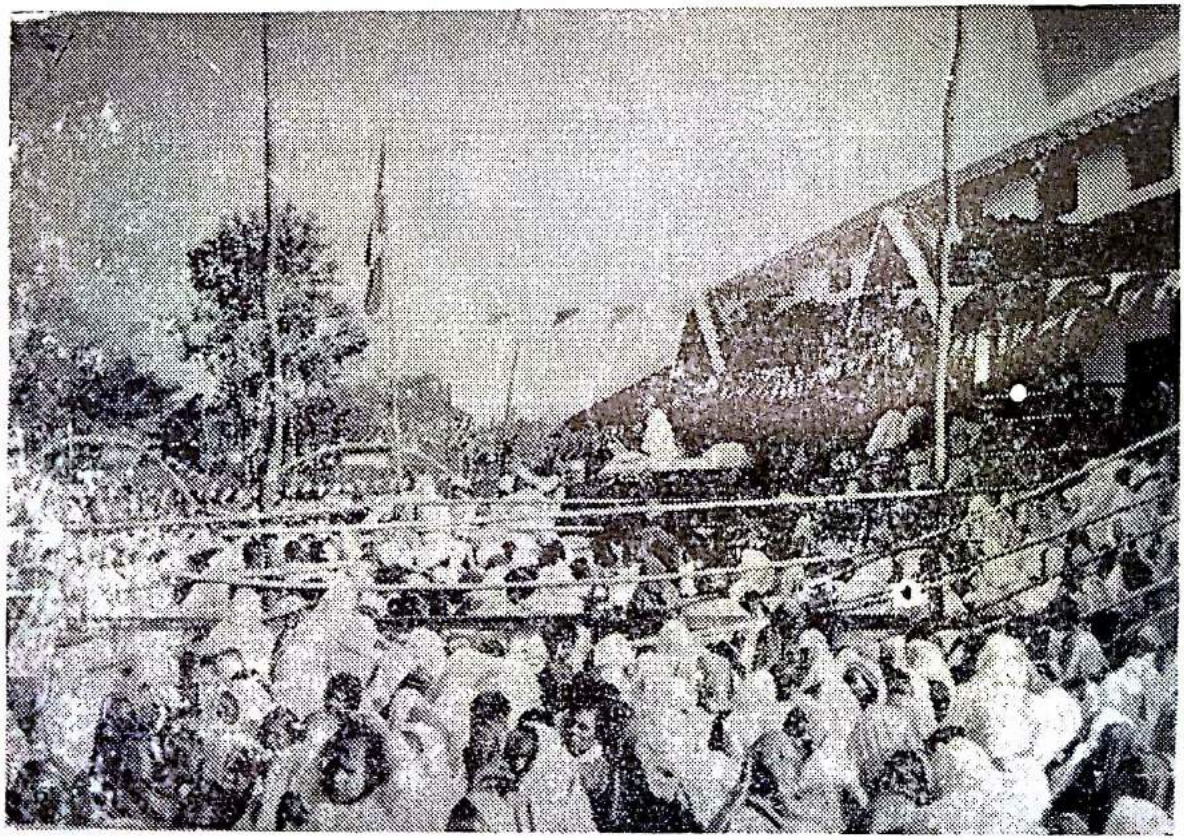

सन् १९३३ में सप्रे हाई स्कूल में आयोजित आमसभा को सम्बोधित करते हुए महात्मा गांधीजी । चित्र श्रीमती प्रकाशवती मिश्र के सौजन्य से ।

संस्मरण खंड

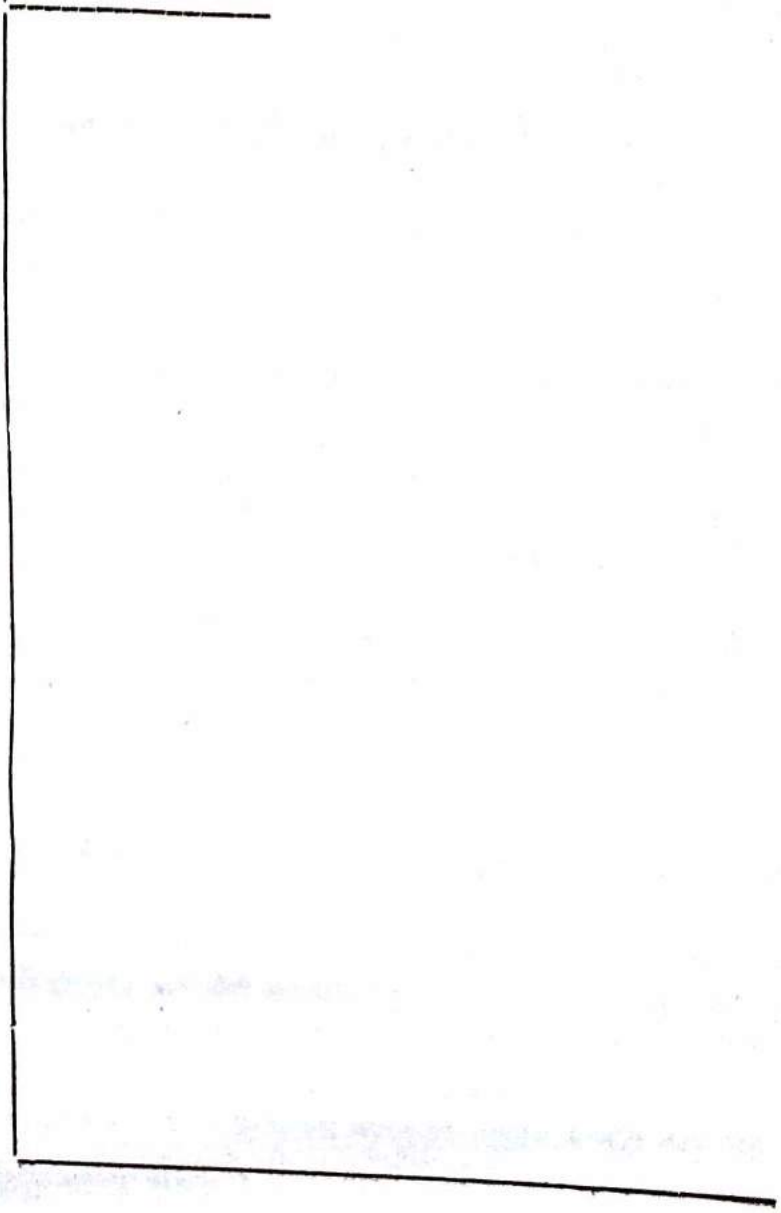

"युग पुरुष"—मेरी स्मृति में

—डा. बलदेव प्रसाद मिश्र

मैं महात्मा गांधी को युग प्रवर्त्तक महापुरुष मानता हूं और अपने को इस दृष्टि से सौभाग्यशाली समझता हूं कि कि मुझे न केवल उनके दर्शन ही हुए हैं किन्तु एकाधिक बार उनकी समीपता का भी लाभ मिला है, भले ही वह मेरे दुर्भाग्य से क्षणिक ही रहा हो। जो क्षण अपना अमिट प्रभाव छोड़ जाते हैं उन्हें क्षणिक भी तो नहीं कहा जा सकता।

महात्माजी के दर्शन सर्वप्रथम मुझे नागपुर कांग्रेस के समय आज से सैंतालीस अड़तालीस वर्षों पूर्व हुए थे। उस समय वे महात्मा नहीं किन्तु कर्मवीर कहलाते थे। असहयोग आन्दोलन का शंख फूंका जा चुका था। कांग्रेस अधिवेशन में उसे स्वीकृति दिलानी थी। श्री सी. आर. दास, श्री विपिन चन्द्रपाल, लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द प्रभृति नेतागण एकत्र हुए थे और लोगों की भीड़ इतनी हो गई थी कि जिसका पहिले से अन्दाजा ही नहीं लगाया जा सकता था। स्वागत समिति ने अपने विचार से सभास्थल का बड़ा विशाल प्रबन्ध कर रखा था और आवश्यकता से अधिक कुर्सियो आदि की पूरी व्यवस्था थी क्योंकि तब तक अधिवेशनों में कुर्सी टेबल के बदले फर्शी बैठक का प्रचलन नहीं हुआ था और न ऐसा प्रचलन सोचा ही जा सकता था। किंतु देखते ही देखते भीड़ ने वह दृश्य उपस्थित कर दिया कि वस्तुतः तिल रखने की भी जगह कहीं न बची और विश्व विजेता पहलवान राममूर्ति नायडू तक को मार्ग ही में दुबककर बैठ जाना पड़ा। भीड़ का रेला उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था। नेतागण किंकर्त्तव्य विमूढ़ थे। ठीक इसी समय सभास्थल पर गांधीजी का आगमन हुआ। मैं फाटक के पास ही था। मैंने देखा गांधीजी भी यह दृश्य देखकर दो क्षणों के लिये किंकर्त्तव्य विमूढ़ से हो गये। प्रवेश पत्र परीक्षण करने वाला कर्मचारी फाटक छोड़कर कब का खिसक चुका था। गांधीजी ने उसकी कुर्सी पर खड़े होकर मंच पर और उसके चारों ओर नजर दौड़ाई और तुरन्त ही आंखें मूंदकर एवं होठ हिलाते हुए पूरी गम्भीरता के साथ राम राम राम राम कहना प्रारंभ किया। एक मिनट भी न लगा होगा और उन्हें उपाय सूझ गया। वे तुरन्त सभास्थल से बाहर जाकर खुले मैदान में भाषण देने लगे। असहयोग आन्दोलन के पुरस्कर्त्ता के रूप में उनका नाम ही तो अपार जन-राशि का कौतूहल-केन्द्र था। अतएव देखते-देखते ही मंच के पास वाला सभास्थल खाली होने लगा और भीड़ खुले मैदान में गांधीजी के पास पहुंच गयी। अधिवेशन के प्रथम दिन की औपचारिकता में भी शान्ति बनी रही और दर्शनार्थियों की इच्छा भी पूरी हो गई। बात छोटी सी थी परन्तु अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण थी। पूरी गहराई से लिया हुआ परमात्मा का नाम किस प्रकार अप्रत्याशित रूप से कर्त्तव्य का दिशा निर्देश कर दिया करता है इसका मानो उस दिन मैंने प्रत्यक्ष साक्षात्कार ही किया। उस चित्र की रेखा मेरे मन में अभी तक वैसे ही चटकीले रंगों से अंकित है। दुलहा खुले मैदान में और बारात सभास्थल पर परन्तु क्या मजाल की सन्तुलन में कहीं कोई शैथिल्य आ जाय।

कई वर्षों बाद नागपुर में अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन, स्वनामधन्य देशरत्न बाबू राजेन्द्र प्रसादजी की अध्यक्षता में हुआ। उस समय राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर विचार विमर्श हेतु देश के प्रायः सभी कर्णधार एकत्र हुए थे। पं. जवाहरलाल नेहरू उस विशिष्ट समिति के अध्यक्ष थे। गांधीजी अन्य नेताओं के साथ पहिले से ही मंच पर बैठे हुए थे। पंडितजी के पधारते ही सबके साथ वे भी अभ्यर्थना हेतु खड़े हो गये। पंडितजी ने आते ही उनके

प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के भाव में कहा "कम से कम आपको तो खड़ा नहीं होना चाहिये था।"गांधीजी ने तुरन्त मुस्कराते हुए उत्तर दिया "यदि इसी बहाने उठने बैठने का थोड़ा व्यायाम हो जाय तो क्या बुरा"। सौभाग्य से मैं भी उस समय मंच पर ही था।अतएव जब सुझाव आया कि"समिति की कार्यवाही हिंदी या हिन्दुस्थानी में लिखी जाय",मैंने भाषण झाड़ दिया था। एक सुझाव एक सामान्य मुस्लिम नेता का श्री पं. नेहरूजी के द्वारा आया था और गांधीजी उसे स्वीकार कर लेने की मुद्रा में थे जिसका स्पष्ट अर्थ था कि राष्ट्रभाषा विषयक उस समिति की कार्यवाही चाहे देवनागरी लिपि और हिन्दी शैली में लिखी जाय चाहे फारसी लिपि और हिन्दुस्थानी (उर्दू) शैली में लिखी जाय। मेरे वक्तव्य का सार था कि जब भारत की राष्ट्रभाषा का "हिन्दी" नाम मुसलमानों ही की देन है तब अब उन्हें उसकी प्रतिस्पर्धा के लिये हिन्दुस्थानी नाम देकर एक विदेशी संस्कारों वाली भाषागढ़कर उसे बराबरी का दर्जा क्यों दिलाना चाहिये। मैंने देखा कि एक क्षण के लिये गांधीजी की मुख मुद्रा अत्यन्त गम्भीर हो गयी और उनकी आंखें कुछ ऐसी ध्यान अवस्था में अधमुंदी सी हो गयी मानो वे समस्या की तह पर जाकर सत्य के तुरन्त दर्शन कर लेना चाहते हों। दूसरे ही क्षण वे प्रकृतिस्थ होकर इस प्रकार मुस्कराने लगे मानो समस्या कुछ थी ही नहीं। वे मुझे संबोधित करते हुए बोले "अच्छा समिति की कार्यवाही हिन्दी याने हिन्दुस्थानी में लिखी जाय" ऐसा निर्णय कर देने में तो कोई आपत्ति नहीं रह जाती। मैं निरुत्तर हो गया।एक "ने" ने "या" के साथ जुड़कर सब विपक्षियों का मुंह बन्द कर दिया।

एक बार सेवाग्राम जाकर मैंने महात्माजी के दर्शन किये थे। एकदम नपी तुली दिनचर्या और एक-एक सेकण्ड का सदुपयोग। मैंने देखा वे दो कंधों पर अपनी हलकी देह का बोझ डालते हुए प्रातः भ्रमण के समय हवा में तैरते से बढ़ते चले जा रहे हैं और साथ ही पूर्व निश्चित आगन्तुक महानुभावों की समस्याओं को भी मौन भाव से सुनते जा रहे हैं। पति पत्नी के आपसी विवाद से लेकर ब्रिटिश सरकार के भाग्य विधायक क्रूर पंजों के उत्तर तक की समस्यायें उनके सामने उपस्थित रहती थीं और अपना हल पाकर बात की बात में ओझल हो जाया करती थी। यह उनका प्रायः नित्य का क्रम था।

ग्रामोद्योग के सिलसिले में महात्माजी ने नलवाड़ी वर्धा के चर्मोद्योग का दायित्व श्री बालुंजकरजी को सौंपा था। वे चाहते थे कि चर्मालय में ऐसे ही पशुओं के चर्म का उपयोग हो जो मारे गये नहीं किन्तु अपनी स्वाभाविक मृत्यु से मरे हों। उन्हें किसी तरह पता लगा कि कुछ रियासतें ऐसी हैं जहां गो जाति के पशुओं का वध एकदम निषिद्ध है और वहां के चमड़े के व्यापारी के पास से विश्वसनीय चर्म राशि दिलाई जा सकती है या मिल सकती है जो वध किये हुए पशुओं की न हो। मैं उस समय रायगढ़ रियासत का दीवान था और यह मेरा परम सौभाग्य था कि महात्माजी ने इस विश्वसनीय कार्य के लिये मुझे चुना और श्री बालुंजकरजी को मेरे पास भेजा।

रेल यात्रा के सिलसिले में उन्होंने कई बार रायगढ़ स्टेशन पार किया परन्तु जब-जब मैंने उन्हें देखा उन्हें ध्यानस्थ मुद्रा ही में पाया। डाक गाड़ी भी प्रायः दस मिनट रुकती थी किन्तु व खिड़की के पास बैठकर तटस्थ भाव से केवल मात्र अपना दाहिना हाथ प्रतिग्रह की परिपाटी में फैला दिया करते थे और इतने ही से दर्शनार्थियों की अपार भीड़ में प्रतिस्पर्धा सी होने लगती थी कि उस हथेली पर कौन कितना अधिक दे सकता है। जिनकी जेबें खाली रहती थीं व पुरुष हों तो हाथ की अंगूठियां और स्त्रियां हों तो गले का हार उतार-उतार कर महात्माजी के हाथ पर रख देने की भावना से भर उठती थीं। उन्हें केवल इस बात का पूर्ण विश्वास ही नहीं रहता था कि उनकी दी हुई एक-एक पाई का का परोपकार में पूरा-पूरा सदुपयोग होगा किन्तु वे इस बात के विचारों से अपना परम अहोभाग्य भी मान लेते थे कि विश्व का इतना बड़ा महात्मा उनके सामने हाथ फैला रहा है।

अनेक घटनायें उस महापुरुष के जीवन के संबंध की हैं जो अब कहानियों ही के रूप में शेष रह गई हैं। जन समाज उनसे प्रेरणा लेता रहा तो वह जीवन आज भी जीवित और जागृत ही समझना चाहिये।

गांधी की नजर में हिन्दी

–घनश्याम सिंह गुप्त

मेरा महात्मा गांधीजी से विशेष सम्पर्क था। वह बहुत कुछ मेरा आर्यसमाजी होने के कारण से था। किन्तु उसके अतिरिक्त भी कुछ थोड़ा सा मेरा सम्पर्क था। वे समय की अत्यन्त पाबन्दी रखते थे। इसके मुझे कई उदाहरण याद हैं किन्तु सभी को लिखकर इस लेख को लम्बा करना मैं नहीं चाहता।

मेरे लिए उनके द्वारा दिये हुए समय के लगभग दो मिनट पूर्व मैं सेवाग्राम में स्थित उनकी कुटी की एक खिड़की के पास लगभग आधा मिनट खड़ा हो जाता था ताकि वे मुझे देखते और जानते कि मैं यथा समय आ गया हूं।

एक दिन की बात है कि मैंने उक्त प्रकार से किया और महात्मा जी से कोई योरोपिय बहुत बड़े अधिकारी बातें कर रहे थे। मुझे देखते ही महात्माजी ने उन अधिकारी से अंग्रेजी में कुछ ऐसा कहा:––मैंने गुप्तजी को जो समय दिया है उसमें वे ठीक समय पर आ गये। आप कृपया थोड़ी देर बाद आवें ताकि मैं उनसे बातें कर सकूं।

एक दूसरी घटना यह हुई कि उन्हें किसी आवश्यक कार्य के लिये कोई सज्जन मोटर द्वारा कहीं ले जा रहे थे। मैं भी महात्माजी के साथ था। मार्ग में मोटर बिगड़ गई और ड्राइवर ने कुछ ऐसा कहा कि बस अभी ही तीन चार मिनट में मोटर सुधर जावेगी। उसके कहे अनुसार महात्माजी लगभग चार मिनट तक ठहरे। एक घड़ी वे सदा अपनी कमरबन्द रस्सी में लटकाये रहते थे। और जब मोटर नहीं सुधरी तब वे पैदल चलने लगे। ड्राइवर और मोटर के मालिक ने उन्हें रुकने के लिये बहुत कुछ कहा पर वे नहीं रुके और कुछ इस प्रकार कहे : "मोटर बन जावे तो लेते आना। हमें पहुंचा लेना उसमें चढ़ जावेंगे।"

हिन्दी में बोल

दिनांक २३–१२–१९३८ से दिनांक २७–१२–१९३८ तक स्वर्गीय बापूजी अणे की अध्यक्षता में शोलापुर में वृहत आर्य कांग्रेस हुआ जहां हैदराबाद शासन के विरुद्ध सत्याग्रह संबंधी विषय पर प्रस्ताव हुए। मैं उन दिनों सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान था। इसके थोड़े ही दिन पश्चात मैं और अणेजी महात्मा गांधी से मिलने सेवाग्राम गये ताकि उनको सभी बातों का ज्ञान हो जावे। बापूजी ने अणे उनसे अंग्रेजी में बातें की। उनके बोल लेने के पश्चात दुर्भाग्य से मैंने भी अंग्रेजी में ही महात्माजी से (शोलापुर संबंधी) बातें करना आरंभ किया। तब महात्माजी ने कुछ ऐसा कहा : तू तो हिंदी बहुत अच्छी तरह से बोल सकता है फिर विदेशी भाषा अंग्रेजी क्यों बोल रहा है। उस दिन से मैंने कान पकड़ा और मैंने कभी भी महात्माजी से अंग्रेजी में नहीं बोला। सदा हिंदी में ही बोलता रहा। यह था महात्माजी का अपने देश का प्रेम तथा देश की भाषा के प्रति प्रेम।

घूमती कुर्सी और गांधीजी

दिनांक २२–११–१९३३ को महात्मा गांधी जब दुर्ग आये और हमारे घर को पवित्र करते हुए हमारे यहां ही ठहरे। तब उन्होंने मुझसे पूछा कि दुर्ग में देखने लायक क्या स्थान है तब मैंने उन्हें कुछ इस प्रकार कहा:–कि दुर्ग में एक स्थान देखने के लायक है वह है हमारे द्वारा संचालित पाठशाला। अर्थात जब मैं दि.१३–५–१९३३ से दुर्ग नगरपालिका समिति का प्रधान हुआ था तब लगभग सन् १९२६ से लगातार हरिजन (मेहतर) बालक अन्य जाति वाले बालकों के साथ एक ही टाटापट्टी में घुलमिलकर बैठे हुए पढ़ते हैं। तब महात्माजी को बहुत संतोष हुआ और उनने कुछ इस प्रकार कहा। यह तेरा शुभ कार्य कदाचित संपूर्ण भारत में नहीं तो संपूर्ण मध्यप्रदेश में तो अवश्य प्रथम किया हुआ है। उसी दिन अर्थात २२–११–१९३३ के सायंकाल मोतीलाल बावली भूमि में एक वृहत सभा हुई जिसमें लगभग ५०००० (पचास हजार) नर-नारी उपस्थित थे। वहां महात्माजी का भाषण हुआ। उन दिनों लाउड स्पीकर यहां नहीं रहता था। अतः उनके भाषण को इतने बड़े जन समुदाय का सुन सकना असम्भव था। तब मैंने महात्माजी से कुछ इस प्रकार कहा– आपका भाषण सब सुन सकें यह तो सम्भव नहीं किन्तु सभी लोग आपका दर्शन कर सकें यह आवश्यक है तब उनने कुछ ऐसा कहा–मेरा मुंह तो एक ही ओर हो सकता है चारों ओर नहीं हो सकता। उन दिनों रिवालविंग चेअर नहीं होती थी। तब मैंने महात्माजी से कुछ ऐसा कहा–आपका दर्शन चारों ओर वाले कर सकें इसका प्रबन्ध मैंने पहिले से ही कर लिया है कि आप जिसमें बैठे हैं वह कुर्सी चक्की के समान घूम सकती है और मैं तुरन्त उसे अति धीरे-धीरे घुमाने लगा जिससे उनके भाषण देते हुए सारे समय सभी लोग उनका दर्शन कर लिये।

तब महात्माजी ने मुझसे कुछ ऐसा कहा:–तू तो बड़ा चतुर निकला। ऐसा तो अब तक किसी ने नहीं किया था। अब दूसरी जगहों में भी तेरी इस प्रणाली का उपयोग करने के लिये कहूंगा।

अब मैं तत्कालीन हैदराबाद शासन द्वारा हिंदुओं पर और विशेष करके आर्य समाजियों पर जो राक्षसी अत्याचार खुले आम किये जाते थे उसका कुछ वर्णन करना चाहता हूं विशेषकर उन घटनाओं का जिनसे महात्मा गांधीजी से सम्पर्क वाली बात थी।

गांधीजी चुप

देश के संपूर्ण आर्यों द्वारा उक्त शासन के विरुद्ध जो सफल शान्तिमय आन्दोलन किया गया था। उस संबंधमें महात्मा गांधीजी को जो गलत खबर बताई गई थी वह कुछ इस प्रकार की थी। कुमारी सुचेताजी ने तब वे सुचेता कृपलानी नहीं हुई थीं तथा एक और सज्जन ने जिनका नाम मैं भूल रहा हूं महात्माजी को यह गलत खबर दी कि आर्य समाज द्वारा संचालित सत्याग्रह पूर्णरूप से शान्तिमय नहीं है। दिनांक २७–७–३९ तथा दिनांक १–८–३९ को जब मैं महात्माजी से मिलने गया तब उनने मुझसे इस बात की जिक्र की। तब मैंने उन्हें कुछ इस प्रकार कहा:—महात्माजी मैं कांग्रेस का कार्यकर्त्ता हूं और आर्य समाज का भी। कांग्रेस सम्बन्धी सत्याग्रह करते हुए मैंने यह स्पष्ट अनुभव किया है कि आर्य समाज का सत्याग्रह कांग्रेस के उन सत्याग्रहों से कई गुना शान्तिमय है। इसके कुछ उदाहरण भी मैंने दिये जिससे महात्मा जी संतुष्ट हुए।

सिंध के तत्कालीन मुस्लिम लीगी शासन ने महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश का अपने प्रान्त में लाना या रखना इसलिये निषिद्ध किया था कि उसके १४ वें समुल्लास में इस्लाम धर्म के विरुद्ध अनुचित आक्षेप है। यह नवम्बर सन् १९४४ की बात है।

तब मैं दिनांक १६–११–१९४४ को महात्माजी से मिलने गया। उनसे मेरी कुछ इस प्रकार की बातें हुईं:—

मैं : बापूजी हमारे सत्याग्रह को आपका आशीर्वाद चाहिए। महात्माजी––मैं आशीर्वाद कैसे दे सकता हूं। सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें सम्मुल्लास में तो इस्लाम की बहुत कटु और नाजायज आलोचना की गई है जो अहिंसा की परिधि से कोसों दूर है। उस सम्मुल्लास को तो उस पुस्तक से निकाल देना चाहिए।मैं––बापूजी आप ठीक कहते हैं। आप अपनी आज की तराजू से तौल रहे हैं जिसमें मन बचन और कार्य से तौलना निहित है।

किन्तु १४ वीं सम्मुल्लास आपकी आज की भावना के अनुसार नहीं लिखा गया है। उसकी तुलना तो कुरान शरीफ में जो हिदुओं के प्रति उद्‌गार है उससे करना चाहिए। कुरान और हदीसों में कई ऐसे वाक्य हैं जिसमें काफिरों और गैरमुस्लिमों की हत्या करना न केवल जायज अपितु फर्ज कहा हुआ बतलाया जाता है।

महात्माजी––मैं तो चाहूंगा कि उक्त १४ वीं सम्मुल्लास आप लोग निकाल दें। मैं––बापूजी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान के नाते बिना सभा के प्रस्ताव के ही मैं उक्त १४ वां सम्मुल्लास को निकालने को तैयार हूं वशर्ते कि आप मुसलमान मुल्ला और मौलवियों को इस बात पर राजी कर लें कि वे कुरान शरीफ से भी उक्त आयतों को निकाल देंगे।

महात्माजी––तूने तो मुझे चुप करा दिया। बोल क्या चाहता है।

मैं––मैं तो आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप सिंध के मुख्यमंत्री को एक पत्र लिख दें कि जिससे उक्त १४ वां सम्मुल्लास पर लगाया हुआ प्रतिबन्ध निरस्त कर दिया जावे।

महात्माजी––अच्छा तो मैं लिख दूंगा। और प्रतिबन्ध हटा लिया गया।

भोपाल रियासत के तत्कालीन नवाब के शासन में भी सत्यार्थ-प्रकाश के १४ वां सम्मुल्लास पर उसी प्रकार प्रतिवन्ध लगाया गया था जिस प्रकार कि सिंध के उक्त मुस्लिम शासन द्वारा लगाया गया था।

जून सन्‌ १९४८ में सिहोर आर्य समाज पर उक्त प्रतिवन्ध लगाया गया था।

उन दिनों मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान था। उक्त शासन से मेरा पत्र व्यवहार होता रहा। मैंने उन्हें दिनांक ३१–७–४८ के पत्र पर सूचित किया कि यदि आप शान्तिमय रूपसे उक्त प्रतिबन्ध को नहीं हटावेंगे तो सत्याग्रह करना आवश्यक हो जायगा। उनने अपने पत्र दिनांक २६–९–४८ के द्वारा हमें सूचित किया कि उक्त प्रतिवन्ध हटा लिया गया।

ए रिमार्केंएबल रूलिंग

तत्कालीन मध्यप्रदेश और विदर्भ विधानसभा का अध्यक्ष दिनांक ३१–७–३७ से दि. १९–२–१९५२ तक मैं रहा।

सितम्बर अक्टूबर सन्‌ १९३७ में एक घटना हुई। स्वर्गीय बैरिस्टर छेदीलालजी ने विधानसभा में अपना भाषण हिंदी में दिया जब कि तत्कालीन विधान के अनुसार विधानसभा की भाषा अंग्रेजी थी। इसपर वहां होहल्ला मचा। कुछ सदस्यों ने आक्षेप किया कि छेदीलालजी बैरिस्टर हैं। विलायत में रह चुके हैं। अंग्रेजी अच्छी तरह बोल सकते हैं। फिर आपने अर्थात मैंने अध्यक्ष होते हुए उन्हें हिंदी में बोलने की अनुमति क्योंकर दी। इसपर बहुत विवाद हुए। समाचार पत्रों में भी इस मेरी व्यवस्था (रूलिंग) की टीका टिप्पणी होने लगी। महात्माजी के कानों तक यह बात पहुंची। महात्माजी ने सारी बातों को सोच समझकर मेरी उक्त व्यवस्था को बिल्कुल शुद्ध माना और अपने 'हरिजन' नामक अंग्रेजी समाचार पत्र दिनांक २ अक्टूबर सन्‌ १९३७ के अंश में उनने मेरी उस व्यवस्था को बिल्कुल ठीक कहते हुए एक लम्बा लेख अंग्रेजी में लिखा जिसका शीर्षक था "ए रिमार्केबल रूलिंग" और उसमें उनने यह भी लिखा:––

"माननीय श्री घ. सि. गुप्तजी ने एक रिमार्केबल व्यवस्था रूलिंग दी है जिसका अध्ययन और अनुसरण सभी तत्संबंधी लोगों को करना चाहिए।"

बापू के सारथी डा. हजारीलाल जैन

प्रेषक–डा. शोभाराम देवांगन

डा. हजारीलाल जैन के संस्मरण सुनाने के पहले मैं उनके व्यक्तित्व का परिचय करा देना चाहता हूं ताकि मालूम हो जावे कि यह स्वर्ण अवसर डाक्टर साहब को ही क्यों मिला।

डा. हजारीलाल जैन , जिनका निवास स्थान रायपुर जिला स्थित धमतरी नगर है महात्मा गांधी की द्वितीय छत्तीसगढ़ यात्रा के समय संपूर्ण यात्रा में उनके वाहन के चालक थे। वे गांधीजी के साथ दिनांक २२ नवम्बर से २८ नवम्बर, १९३३ तक एक सप्ताह छाया की तरह रहे। आपका जन्मराष्ट्रीय चेतना के युग में १५ फरवरी, सन् १९१० में हुआ।हम उम्र बालकों की टोली बना गांधीजी से सीखी नैतिक शिक्षा, निष्ठा को उन्हें सिखाते। बीड़ी नहीं पीना, किसी की चीज नहीं चुराना, सत्य बोलना, दूसरों की सहायता करना, नेताओं के साथ विदेशी वस्त्रों की होली जलाना, प्रतिदिन झंडा लेकर प्रभातफेरी निकालना।

रुद्री नवागांव गोली कांड (जिसमें मीदू नामक सत्याग्रही शहीद हुआ था) यह स्वयंसेवक झंडा लिये हुए जुलूस के आगे था। सन् १९३०–३२ के दो आन्दोलन में अनेकों बार वह पकड़ा गया, जेल भेज दिया गया या छोड़ दिया गया। कुल मिलाकर १४ माह की जेलयात्रा उनको हुई। साथ में ३००) रुपये का जुर्माना।

स्व. पं. रविशंकर शुक्ला का धमतरी क्षेत्र के आन्दोलन से घनिष्ठ संबंध था। वे युवक हजारीलाल से बहुत प्रभावित थे। छत्तीसगढ़ की यात्रा के समय महात्मा गांधीजी को उनके हाथों सुरक्षित समझ २३ वर्षीय युवक को बापू जी के वाहन चालन की जिम्मेवारी दी गई। श्री हजारीलालजी एक कुशल वाहन चालक भी थे। वे सन् १९३३ के पूर्व ही धमतरी तहसील कांग्रेस कमेटी के मंत्री रह चुके थे।

डा. हजारीलाल जैन के संस्मरण के मुताबिक महात्मा गांधीजी की यात्रा का प्रारंभ दुर्ग से हुआ। वे उनके दर्शन करने रायपुर से दुर्ग गये थे। रायपुर आगमन के समय उनकी निवास व्यवस्था पं. रविशंकर शुक्लाजी के यहां थी। उनके साथ यात्रा में कु. मीराबेन (अंग्रेज महिला), श्री ठक्कर बापा, श्री महादेव देसाई तथा स्व. जमुनालाल बजाज की पुत्री भी थीं। स्व. शुक्लजी पूरी यात्रा में उनके साथ रहे । स्वयंसेवकों में थे श्री प्रभूलाल खोटिया। श्री सीताराम खंडेलवाल, स्व. श्री भगवतीचरण शुक्ला, श्री नन्दकुमार दानी, श्री नारायणराव अरबोलकर तथा श्री अंबिका चरण शुक्ला।

म्यूनिसिपल गार्डेन में स्वदेशी मेला लगा था। जैनजी की कार में ही महात्मा गांधी बैठकर उद्घाटन करने गये। लोग गांधीजी के पैर तक नहीं पहुंच पाते थे तो मोटर के मडगार्ड को ही लोग छूकर प्रणाम कर लेते थे।

प्रथम दिन की यात्रा मौजा सारागांव, खरौरा, पल्लारी, कनकी होते हुए बलौदाबाजार तथा सिगमा होते हुए वापस रायपुर तक रही।

दूसरे दिन की यात्रा सिमगा, नांदघाट होते हुए बिलासपुर श्री जैन की ही गाड़ी में सभा मंच तक सम्पन्न हुई। वापसी में ट्रेन से रायपुर आये।

तीसरी यात्रा डूमरतराई, माना, अभनपुर मीथीडीह, मरौद, कुरुद होते हुए धमतरी। धमतरी में सुबह १०॥ बजे आम सभा हुई जिसमें लोकल बोर्ड तथा म्यूनिसिपल कमेटी की ओर से मानपत्र दिये गये। मानपत्रों में से एक श्री जैन ने ही आखरी बोली बोलकर १५) रुपये में खरीदा। करीब १ बजे श्री नत्थूजी जगताप के निवास स्थान में भोजन किये। गांधीजी के भोजन में उन दिनों केवल दूध और फल दिये गये थे और साथ में कुछ सूखे मेवे थे। वे भोजन के साथ अखबार पढ़ते जाते थे। उसमें पेंसिल से चिह्न भी अंकित करते थे। पत्रों का बंडल भी उसी समय आ गया। कई पत्रों के पते पर महात्मा गांधी को इंडिया लिखा देखकर आश्चर्य हुआ। कुछ पत्रों को देसाईजी देखते। बापू उन्हें पत्र का जवाब देने को भी कहते। वहां से कार द्वारा ही श्री छोटेलाल बाबू के निवास स्थान के सामने चौक में महिलाओं की सभा को संबोधित किये। उस सभा में महिलाओं को आगे आने तथा छुआछूत न मानने, सबको ईश्वर की संतान बता भेदभाव न करने का उपदेश दिये। वहां से हरिजन मुहल्ला गये। माताओं और बहनों ने उनकी आरती उतारी। चरण सतनामी नामक उनके मुखिया ने भोजन सामग्री लाई। बापूजी ने उसमें से फल लिया। (क्योंकि उन दिनों बापू ने अन्न त्याग दिया था।) उन्हें अपना स्तर ऊंचा उठाने का उपदेश दिये। गांधीजी हरिजन मुहल्ले के घरों की सफाई देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए।

बापूजी की यात्रा अब धमतरी से वापस होने लगी तो मकईबन्ध के पास चलती कार में किसी ने छोटी सी पोटली फेंक दी जो बापू की कनपटी को छूते हुए गिरी। बापू ने उस पोटली को देखने के लिये कहा। उसमें बन्धा था एक गांठ हल्दी, थोड़ा पीला चावल, दो कौड़ी, एक अधन्ना तथा कुछ फूल। बापू ने स्वयं देखा और बहुत प्रसन्न हुए। वे बोले यह किसी सच्चे गरीब की भेंट है, इसे ज्यों का त्यों बांध दो। इसकी नीलामी राजिम नवापारा में होगी। राजिम नवापारा में भाषण के बाद बापूजी ने उस गरीब की भेंट का संक्षिप्त विवरण बता नीलाम किये जिसे किसी ने १०१) रुपये में लिया। उन सभाओं में हरिजन फंड के लिये चंदा जमा किया जाता था,जिसमें महिलाओं ने भी अपने आभूषण उतार कर दिये। वहां से वे रायपुर वापस आये।

रायपुर की सभा एक बार लारी स्कूल में हुई। वापस आते ही सभा मंच पर गये। दूसरी सभा गांधी चौक में हुई थी। चलती कार में रास्ते में ही श्री शुक्लाजी ने कहा बापू हम लोग दो दिन का कार्य एक ही दिन में कर लिये। बापू न जाने उस समय किस भावसागर में थे, बोले–मनुष्य अगर अपना कार्य इसी तरह निश्चित किये हुए समय के पहले कर ले तो एक जन्म में वह दोनों जन्म का कार्य पूरा कर लेगा।

गांधीजी नित्य चार बजे उठते थे। उनकी प्रार्थना में हम सब शरीक होते। बापू टाइम के इतने पाबन्द थे कि समय के साथ घड़ी देखते, जो समय का सूचक होता, एक मिनट का भी अन्तर नहीं पड़ता था। वे उठते और अपने कार्यक्रम में लग जाते। दूसरों को सावधान होना पड़ता। मैंने अपनी पूरी यात्रा में उन्हें इसी स्थिति में पाया।

डा० जैन नाई के चक्कर में

बापू एक समय मीरा बेन से बोले:–नापी बुला लो:–उन्होंने डा. हजारीलाल जैन से कहा नापी बुला लाओ जी। हीरालालजी चक्कर में पड़ गये। नापी कौन है, जिसे बुलाऊं। सोचे बापू की टोली में कोई नापी नाम के सज्जन होंगे,

जिन्हें बापू बुला रहे हैं। दौड़ के ठक्कर बापा के पास गये और कहा गांधीजी नापी को बुला रहे हैं। किसका नाम है नापी ? बापा हंस पड़े और हीरालालजी से बोले नाई को बुला लाओ जी। देखना साफ सुथरा हो।

हीरालालजी को तब अपने माखन नाई की याद आई जो ब्राह्मणपारा में रहते थे तथा बड़े ही साफ सुथरे नाई थे। दौड़ते हुए सायकिल पर नाई के घर पहुंचे। दरवाजे से ही चिल्ला कर पुकारने लगे:–माखन जल्दी चलो:– गांधीजी की हजामत बनाना है:–। राम के लिये केवट की पुकार की तरह यह आवाज लगी।

नाई ने आते ही पहले गांधीजी को साष्टांग दण्डवत किया और थोड़ी देर बाद सावधान होकर हजामत बनाने की तैयारी करते हुए छत्तीसगढ़ी में हजारीलाल से बोलने लगा:– बने बलाए मालिक, जेखर दरसन बर लाखों मनखे तरस थे तेखर देह ल मे आज छुए हवों:–औजार गरम पानी से धोया। साबुन का उपयोग बापू नहीं करते थे। खाली पानी से उनकी हजामत बनी। आइने के बारे में बापू ने बताया कि उन्होंने १९ वर्षों से आइना देखना बन्द कर दिये हैं।

बापूजी हजामत बना लेने के बाद जैन से बोले नाई को १।)निछावर कर दो। जैन को निछावर निकालते देख माखन नाई बापू के सामने फिर दंडवत पड़ गया और पैर छू कर बार बार बिनती करनेलगा, मैं निछावरनहीं लूंगा, महाराज मुझे माफ कर दो, निछावर मिल गयी। इसपर बापू ने हजारीलाल जैन को कहा कि हरी घास लेकर गाय को डाल दो। हजारीलाल ने पोलिस कोतवाली के पास से घास खरीदकर गायों को खिला दिया। रामायण में राम केवट प्रेम की तरह यह बापू-नाई प्रेम का दृश्य था। जिसके दर्शन का लाभ केवल हजारीलालजी को ही मिल पाया।

बापूजी अपने से बहुत छोटी उम्र वालों से भी समानता तथा आदर का व्यवहार करते थे।

एक बार एक प्रसंग बताते हुए डा. हजारीलाल जैन ने बताया कि:–फोटो ग्राफर डिकास्टा, जो गांधीजी को ही लक्ष्य कर फोटो खींचना चाहता था, उन्हें फोटो लेते तक के लिये थोड़ी देर गाड़ी रोक लेने के लिये राजी कर लिये थे। उसी समय बापू गाड़ी में आकर बैठे और गाड़ी को चलते न देख बोले:–जैन चलते क्यों नहीं:–। मैंने कहा बापूजी आपका फोटो खींच रहा है।। बापूजी कुछ आगे की ओर झुकते हुए हाथ के इशारे से मुझे इंगित कर फोटोग्राफर से बोले:–मेरी तो बहुत उतरी है, इनकी ले लो:–।बस डिकास्टाजी की बन आई और मौका मिलते ही, उसी क्षण केमरे की बटन दबा दी।

डा. हजारीलाल जैन जो अब धमतरी से ६ मील दूर गोपालपुरी नामक ग्राम में एक कृषक तथा वैद्य की हैसियत से जीवन बिताते हैं, सेवारत हैं। गांधीजी के सान्निध्य के संस्मरणों को अपने जीवन के लिये अमूल्य धरोहर मानते हैं। उसे अपने हृदय में प्राणों से भी अधिक संजोकर रखे हैं। उनके मस्तिष्क में आज भी उन दिनों की स्मृतिचल-चित्र की तरह अंकित होती रहती है।

और लायसेंस रद्द हो गया

—अब्बास भाई

सन् १९२० में हमारी मोटर बस सर्विस रायपुर से आरंग और महासमुन्द तक चलती थी।

सन् १९२० में नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन के संबंध में प्रस्ताव पास हुआ तबसे मुझे भी यह महसूस होने लगा कि हर भारतवासी के लिये यह जरूरी है कि विदेशियों को हटावे।

सन् १९२१ में महात्माजी और मौलाना शौकत अली का रायपुर में आगमन हुआ। उन्हें धमतरी जाना था परन्तु शासन और पुलिस के आतंक के कारण मोटर मिलना दुष्कर था।

पं. शुक्लजी के आह्वान पर मैं महात्माजी, मौलाना शौकत अली और उनकी पार्टी को अपनी मोटर बस में ले जाने के लिये तैयार हुआ। समय पर पुलिस वालों ने मेरे मोटर ड्राइवर को वहीं रोक लिया।

ईश्वर की कृपा थी कि मैं भी मोटर चला सकता था। मैं महात्माजी और मौलाना सहित पं. शुक्लजी और दूसरे नेतागण को रायपुर ब्राह्मणपारा में जो लाइब्रेरी है, वहां से बैठाकर धमतरी ले गया। रास्ते भर में आते-जाते अपार जन-समुदाय ने पूज्य बापू का अपार हर्ष से सम्मान किया। रायपुर मोटर बस सर्विस, रायपुर के नामसे सर्विस चलती थी तथा प्रोप्रायटर वली भाई एण्ड ब्रदर्स।

शासन की कुदृष्टि से हमें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और डिप्टी कमिश्नर श्री सी. ए. क्लार्क ने हमारी कंपनी का मोटर चलाने का लाइसेंस भी रद्द कर दिया। हमें पारावार नुकसान उठाना पड़ा परन्तु देश के कारण इसका हमें कुछ भी अफसोस नहीं हुआ।

गांधी जी की डांट

—गणपत राव जी दानी

कांग्रेस का सदस्य व कार्यकर्त्ता होने को नाते बूढ़ापारा के लोगों ने मुझसे गांधीजी के अपने घर पर बुलाने का आग्रह किया और कहा कि हम गांधीजी की बातें सुनना चाहते है। यह बात सन् १९३३ की है। मैंने बड़ी मुश्किल से उनसे समय मांगा और वे दोपहर को आने के लिये राजी हो गये। मैंने भी कुछ गिने चुने लोगों को आमंत्रित किया और ऊपर हाल में सब लोगों के बैठने का इंतजाम किया। करीब ३ बजे गांधीजी को लाने मोटर भेजी। जैसे ही वे मेरे घर आये, मेरे घर के पास करीब ३०० लोगों की भीड़ जमा थी। गांधीजी ने जैसे अंदर प्रवेश किया, मैंने व मेरे साथियों ने फाटक बन्द करने का प्रयास किया जिससे कि भीड़ अन्दर न आने पाये।

मेरे इस कार्य पर गांधीजी बड़े नाराज हुए और लगभग डांटते हुए बोले:—अरे ऐसा क्यों करते हो, बेचारों को आने दो:—और देखते ही देखते पूरा हाल (बैठक) खचाखच भर गया।

24 नवं 82/133

गांधी जी बिलासपुर में

—यदुनन्दन प्रसाद श्रीवास्तव

गांधीजी सन् १९३२-३३ में एक दिन के लिये बिलासपुर आये थे। वह दिन बिलासपुर के इतिहास में चिर-स्मरणीय रहेगा।

सारा बिलासपुर महात्मा के दर्शनों के लिये उमड़ पड़ा था। जिले के कोने-कोने से लोग आये थे। गांधीजी लगभग ८ बजे सुबह रायपुर से कार द्वारा जाने वाले थे किन्तु सात बजे से ही इतनी भीड़ एकत्रित हो गई कि मुख्य मार्ग पर चलना कठिन हो गया था।

बिलासपुर-रायपुर मुख्य मार्ग पर लगभग दो फर्लांग नगर से आगे बढ़कर हमलोगों ने गांधीजी का स्वागत किया। स्वागत गान की एक दो पंक्ति मुझे स्मरण है:——

जय जय गांधी महान,
निर्भय के हरि समान,
अविचल जिमि हेमवान,
भानु सो प्रतापवान,
शांतिरूप धारी॥

हर प्रसंग के लिये अलग अलग गाने और गीत तैयार किये गये थे। हरिजन मोहल्ला में प्रवेश द्वार पर लिखा था—

—:सुनेरी मैंने निर्बल के बल राम:——।

भीड़ देखकर प्रबंध यह किया गया था कि बापू के आते ही पैर छूने वाले दौड़ेंगे, अतः आते ही उनके चारों ओर स्वयंसेवकों का घेरा डाल दिया जावे। स्वयंसेवकों का संचालन भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री डाक्टर रामाचरण राय कर रहे थे। स्वागताध्यक्ष थे स्व. पं.कुंज बिहारीलाल अग्निहोत्री। उनके प्रमुख सहायक और रिपोर्टर की हैसियत से मुझे यह आदेश था कि मैं सदैव गांधीजी के आसपास ही रहूं।

कार के आते ही भीड़ का दबाव इतना बढ़ा कि स्वयंसेवकों पर आफत आ गई। स्वयंसेवकों के सरकने की जगह तक न थी। कहीं से उछलकर एक डेढ़ फुट की लकड़ी डाक्टर राय के पेट पर आई और उनके पेट को कोंचने लगी। डाक्टर साहब को यह भय हुआ कि यह कहीं उनके प्लीहा आदि किसी मार्मिक अंग को आघात न पहुंचा दे। पर लाचारी थी। जगह न मिल रही थी। अचानक कुछ धक्कों के बाद लकड़ी आपसे आप उचककर कहीं चली गई और खतरा टल गया।

लोग गांधीजी के ऊपर पैसे, रुपये, अठन्नी, चवन्नी फेंकते थे जो घेरे वालों की अर्थात् हमलोगों की खोपड़ी पर आकर आघात करती थीं, पर हम इसे चुपचाप सहने को बाध्य थे। लोग हमारी टांगों के बीच से तेजी से हाथ घुमाकर गांधीजी को स्पर्श करना चाहते थे। उन्हें स्पर्श तो वे न कर पाते थे किन्तु १००–२०० नाखूनों के आघातों से हमारी पिण्डलियां जरूर फट गई और उनमें काफी खरोंच आई।

भीड़ के कारण बापू की कार आगे नहीं बढ़ पा रही थी। अतः मैं घेरे से बाहर होकर रास्ता साफ करने लग गया। रास्ता मिलते ही ड्रायवर ने कार की रफ्तार कुछ तेज की। भीड़ हटी नहीं। वह भी आगे-आगे दौड़ने लगी और मैं भी दौड़ने पर मजबूर हुआ। निश्चय ही मैं कुचलकर वीरगति पाता, किन्तु भाग्य ने धोखा दिया। जमीन पर आने की जगह न थी। मैं ऊपर ही ऊपर धक्के खाता हुआ भीड़ के बाहर पहुंच गया। कार आगे बढ़ गई।

गांधीजी के ठहरने का प्रबन्ध स्वागताध्यक्ष अग्निहोत्रीजी के यहां किया गया था। मैं जब दौड़ता हांफता वहां पहुंचा तो मकान का लोहे का फाटक बंद था। घुसने का मार्ग भी अवरुद्ध था। किसी प्रकार फाटक तक पहुंचा। लोगों ने मुझे फाटक के कंगूरों पर चढ़ाया और मैं उन नुकीले कंगूरों पर किसी प्रकार पैर जमाकर भीतर कूद गया। कूदने के पहले एक दृश्य देखा। एक वयोवृद्ध सेठजी जो अछूतोद्धार के कारण कल तक गांधीजी को गालियां देते थे, आज उनके दर्शनों के लिये भीड़ में धक्के खा रहे थे। सेठजी की पगड़ी का एक छोर उनके हाथ में और दूसरे छोर पांच सात गज की दूरी पर किसी दूसरे के हाथ में था। पगड़ी के लिये दोनों ओर से रस्साकसी चली हुई थी। सेठजी उसे वापस चाहते थे, भीड़ उसे किनारे फेंकने की कोशिश में थी। निन्दक भी गांधीजी के दर्शन स्पर्श के लिये पागल हो उठते थे। गांधीजी का आकर्षण ऐसा ही था।

भोजन और कुछ विश्राम के बाद गांधीजी महिलाओं की सभा में जाने के लिये तैयार हुए। उसमें पुरुषों को जाने की व्यवस्था न थी। फाटक पर कुछ स्वयंसेवक जरूर खड़े कर दिये गये थे किन्तु मुझे तो जाना ही था–रिपोर्टिंग के लिये।

भीड़ बराबर डटी हुई थी अतः गांधीजी को पीछे के दरवाजे से बाहर निकाला गया। पर तब तक भीड़ को गंध मिल गई और लोग दौड़ पड़े। गांधीजी का एक पैर पायदान पर जा चुका था, दूसरे पैर को किसी ने पकड़ लिया। मुझे कोई उपाय न सूझा तो मैंने जूता सहित अपना पैर उनके हाथ पर रख दबाया। काम करना था, किन्तु गांधीजी का पैर छूट गया और हम लोग वहां से चल दिये।

महिलाओं की सभा में पहुंचते तक मैं इतना थक गया था कि मस्तिष्क ने शायद काम करना बन्द कर दिया। सभा में कई सम्भ्रान्त महिलायें थीं जिनसे मैं अच्छी तरह परिचित था, पर मैंने उन्हें पहिचाना नहीं और प्रश्नों का उत्तर भी ठीक से देना कठिन होता चला गया।

इस सभा से गांधीजी आम सभा में पहुंचे। उनके लिये एक ऊंचा मंच बनाया गया था और उसपर केवल ४–५ लोगों के बैठने की ही जगह थी। एक ओर मैं बैठा हुआ था, कुछ लिख रहा था, दूसरी ओर अग्निहोत्रीजी थे। सभा समाप्ति पर गांधीजी उठे और यहां भी दो बहुत ही सम्भ्रान्त किन्तु विरोधी सज्जनों ने गांधीजी के पैर पकड़ लिये। खतरा यह था कि गांधीजी को धक्का न लग जावे और वे गिर न जावें। मेरे कानों में आवाज आई:–यह क्या कर रहे हो? मैं लिखना छोड़कर उछला और बिना देखे उन दोनों परिचित सम्भ्रान्त सज्जनों को दम बीस धक्के–घूंसे लगाये। पैर छूट गया और गांधीजी स्टेशन चल दिये। मैं फिर भीड़ में फंसकर पिछड़ गया और आधा घंटे देर से स्टेशन पहुंचा।

स्टेशन पर भी वही हाल, वही भीड़। गाड़ी आने पर गांधीजी को डब्बे तक पहुंचाने के लिये फिर छोटा घेरा डालना पड़ा किन्तु हमें चलना न पड़ा। भीड़ के धक्कों ने हमें डिब्बे तक पहुंचा दिया। गाड़ी छूट जाने पर हमने राहत की सांस ली। कार्य सकुशल निपट चुका था।

मैं गांधीजी की अहिंसा पर विश्वास करने वालों में से हूं और स्वभाव से शान्त हूं। किन्तु उस दिन मालूम नहीं क्या हो गया था कि जीवन में प्रथम और शायद (अभी तक) अंतिम बार मैंने अहिंसा की प्रतिमूर्ति के सामने ही क्रूरता और मार तक कर दी। आज भी मुझे अपनी इस बदतमीजी की स्मृति अखरती है।

उस दिन का दृश्य भूला नहीं है। गांधीजी में क्या जादू और आकर्षण था? लोग पांगलों की तरह दौड़ते और कार्य करते थे।

इस स्मृति के साथ-साथ मुझे किसी अंग्रेजी दैनिक में निकले एक लेख की याद आ जाती है। बात सन् १९२३ की है:—लेख का शीर्षक था:—हू रुल्स इंडिया:—? भारत पर किसका राज्य है?

गांधीजी बम्बई पहुंचने वाले थे। इसके दो घंटे पूर्व वायसराय की स्पेशल ट्रेन आई। फौज, शासकीय अधिकारी, दरबारी, फूलमाले, पल्टन, बैंड, टीमटाम पूरा था, पर जनता गैर हाजिर थी।

दो घंटे के बाद जब उसी प्लेटफार्म पर अपने थर्ड क्लास के डिब्बे से गांधीजी उतरे तो २ लाख जनता एकत्रित थी और "गांधीजी की जय" के गगनभेदी नारे से स्टेशन की दीवारें हिल रही थीं। लेख का मन्तव्य शायद यही रहा होगा कि भारत पर आज (सन् १९२३) गांधी का राज्य है, अंग्रेजों का नहीं। वह तो लगभग उठ चुका है। इस निहत्थे मुट्ठी भर ढांचे का देश पर ऐसा ही चमत्कारिक प्रभाव था।

कस्तूरबा को दण्ड

—श्रीमती इंदिरा बाई लाखे

वर्धा के सेवाग्राम की बात है, वहां ऐसा नियम था कि रोज कस्तूरबा बच्चों को अपने हाथों से सब्जी परोसती। एक दिन की बात है बच्चे कतार में बैठे थे और कस्तूरबा अपने हाथ में बर्तन लेकर परोस रही थीं। प्रत्येक बालक को वह दो चम्मच सब्जी देते जा रही थीं, अचानक वह एक स्थान पर रुकीं और उस बालक को उन्होंने चार चम्मच सब्जी दे डाली। यह बालक और कोई नहीं उनका स्वयं का लड़का था। किन्तु गांधीजी ने इस बात को अपनी आंखों से देख लिया। उन्होंने फौरन कस्तूरबा को आश्रम खाली करने को कहा और कहा कि जब तक आश्रम में सब लोग उन्हें माफ नहीं करते, तब तक वे आश्रम में नहीं आ सकेंगीं। अब कस्तूरबा को काटो तो खून नहीं। वे आश्रम के सब व्यक्तियों के पास गईं और उन सब लोगों को अपना अपराध बताया और कहा कि जब तक आप लोग माफ नहीं करते तब तक बापू मुझे आश्रम में नहीं आने देंगे। सब लोगों को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ। वे सब लोग गांधीजी के पास गये और उनसे अनुरोध किया कि उन्होंने "ब'ा'को माफ कर दिया है और अब आप भी माफ कर दें, और उन्हें आश्रम से न निकालें। अन्त में गांधीजी इन सबसे सहमत हो गये और कस्तूरबा आश्रम में रहने लगीं।

तीसरा दर्जा देखो

–प्रभूलाल कांवरा

यूं तो मैंने गांधीजी को कई बार देखा, कलकत्ते में उनके समीप मौन बैठने का सौभाग्य भी पाया पर कभी यह हिम्मत न हुई कि कुछ बोलता। बोलता ही क्या? लड़का जो था?

गांधीजी को सर्वप्रथम मैंने मोती बेचने वाले काठियावाड़ी पगड़ी में देखा। दूसरी दफा कालर वाला कुरता, फिर लंगोटी में ही। राजनांदगांव में:–गांधीजी मौ.मोहम्मद अली,शौकत अली,जमनालाल बजाज,केसाथ जब कलकत्ता जा रहे थे तब अपार भीड़ स्टेशन पर उमड़ रही थी। गाड़ी रुकी। गांधीजी हाथ जोड़ कुछ कह रहे थे किन्तु जय जयकार में कुछ भी सुनाई न पड़ा। मौ. मोहम्मद अली बेंच पर बैठ कर कुछ लिख रहे थ। सूत की मालाएं पहिनाई। मौ.शौकत अली को माला पहिनाने का आदेश हुआ। इतना ही सुना चरखा चलाओ, खादी पहनो। गाड़ी खसकी। अतृप्त नयनों से जनता चल पड़ी।

जिस समय व कलकत्त के खास अधिवेशन में जा रहेथे उसी ट्रेन से लोकमान्य तिलक, दादा साहब खापर्डे, डा. मुंजे भी प्रथम दर्जे के डब्बे में यात्रा कर रहे थे। रायपुर में जब गाड़ी रुकी तो जनता गांधीजी के दर्शन करने उमड़ पड़ी। लोकमान्य और उनके साथी चाय पीने नीचे उतरे। जब गांधीजी नहीं दिखाई दिये तो जनता पूछने लगी.–गांधीजी कहां हैं?,:–देखो किसी तीसरे दर्जे में बैठा होगा:–उत्तर था। लोग उल्टे पैर भागे–एक एक डिब्बा निहारने लगे कि एक यात्री ने इशारा किया–यहां हैं। फिर क्या पूछना था, आखिर गांधीजी ने दरवाजा खोला। हाथ जोड़ खड़े हो गये। वे डब्बे में नीचे बैठे थे। आंखें छलक उठीं। कई रोने लगे।

जब गांधीजी रायपुर आये:—

ज्योंही गाड़ी प्लेटफार्म पर लगी, श्री शुक्ल आदि नेतागण सूत की मालायें ले भीड़ चीरते आ रहे थे कि–गांधीजी उतरकर सीधे स्टेशन के बड़े दरवाजे से निकल कार के पास पहुंच गये। दौड़कर मालायें पहिनाई। जनता दर्शन कर प्लेटफार्म से लौटी कि कार चालू हो गई। मणी बहन प्लेटफार्म पर ही थीं। एक-एक सामान को गिन-गिनकर जब देख लिया कि ठीक है तब सीधे शुक्लजी के मकान पर पहुंचीं। सब सामान रखा,बकरी कहां है:–पूछा। डाक्टरी जांच का सर्टिफिकेट? कमरे की सफाई देखी। एक-एक मिनट मीरा बहन के लिये काम का था। गांधीजी का सारा इंतजाम उनके जिम्मे था। दोपहर के बाद लारी हाई स्कूल के मैदान में गांधीजी का भाषण हुआ। वे धीरे-धीरे स्पष्ट बोलते थे। बीच में पानी की घूंट लेते। वह दृश्य देखने लायक था, जब गांधीजी ने हरिजनों के लिए झोली उठाई। स्वयंसेवक घूम पड़े। कभी स्वप्न में भी थोड़ा न देने वालों ने भी, जो कुछ खीसे से निकला दे दिया। बहिनें, महिलाओं न तो सोने चांदी के जेवर व जो कुछ भी उनके पास था, निकालकर ढेर कर दिया।

महात्मा गांधी के साथ छै दिन

—यतियतन लाल जी

दुर्ग से ६ बजे शाम को रायपुर मोटर द्वारा प्रस्थान। कुम्हारी से ही भीड़ और स्वागत भेंट प्रारंभ हो गयी। आमापारा में मिशनरियों की ओर से स्वागत हुआ। आमापारा स्कूल के सामने रायपुर नगर की ओर से अपार उल्लास एवं हर्ष के साथ स्वागत हुआ। वहां से शुक्लजी के घर पहुंचते-पहुंचते तीन घंटे लगे। यहां एक दृश्य अपूर्व था वर्णन करते नहीं बनता था। दीपमालिका की जगमगाहट भी मात हो गई थी। महात्माजी प्रसन्न थे।

दिनांक २३–११–३३ को लगभग चार बजे प्रदर्शनी का उद्‌घाटन हुआ। उस अवसर पर एक लाख से ऊपर ही मानव भेदनी की भीड़ थी। –मानो रायपुर जिला ही उमड़ पड़ा था। जिधर देखो उधर नर मुंड ही नर मुंड दिखाई देते थे। भाग्य से रेडियो भी बेकार हो गया। लोगों की भीड़ कल से भी अधिक थी। महात्माजी को अति कठिनाई के साथ दूसरे रास्ते से ले जाना पड़ा एवं भीड़ का भी सामना करना पड़ा। दिनांक २४–११–३३– को लारी स्कूल (सप्रे स्कूल) में समस्त संस्थाओं की ओर से मानपत्र समर्पित किये गये। इसके पूर्व मंगलाचरण भजन जो मैंने गाया था, वह आगे लिखा है। इस अवसर पर भी मानव भेदिनी उमड़ी थी। यहां से मौदाहापारा हरिजन सभा में भाषण हुआ। सतनामी आश्रम का निरीक्षण अनाथालय का निरीक्षण, तथा शिला लेखों का उद्‌घाटन किया गया।

धमतरी, राजिम, नयापारा, भाटापारा, बलौदा, मुंगेली, बिलासपुर आदि स्थानों पर सर्वत्र एक सी भीड़ दिखाई देती थी। जाते समय रास्ते पर रुकते और चलते थे। जहां भी थैली दिखाई दी–मोटर रुकती थी–तब भीड़ पिल पड़ती थी, सारा शरीर थककर चूर हो जाने पर भी दूसरे दिन वही जोश सारे कार्य सफलता से संपन्न होते थे।

बच्चों के साथ बाल क्रीड़ा होती थी। बच्चों को खाने की सूचना मिलते ही उन्हें एकत्रित कर महात्मा जी के पास ले जाया जाता था। तब बच्चों के खेल होते थे। उन्हें पुचकरना, थपथपाना, खिलाना आदि सब खेल शामिल थ। आज्ञा होते ही बच्चे हंसते-हंसते बिदा होते थे। दर्शनीय दृश्य देखते ही मानव आनन्द मग्न हो जाता था।

हिन्दू महासभा की ओर से आये लोग तथा पंडित गण हरिजन कार्यक्रमों से चिढ़ते थे। धर्म विरुद्ध मानते थे तथा अमंगल अश्लील शब्दावली जो कि न कहने योग्य शब्द कहेते थे। इससे जनता भड़क उठती थी परन्तु इसके विपरीत महात्माजी कहते थे, इनकी रक्षा करो–जनता को समझाओ, इनपर तरस खाओ––इस प्रकार आदर्श करुणार्द्र शब्दावली तथा महात्माजी की प्रशांत मुद्रा से हमलोग द्रवीभूत नतमस्तक हो जाते थे। धन्य हो महापुरुष, धन्य हो वन्दनीय हो। रायपुर इसके पूर्व भी अली बन्धुओं सहित १९२० में आये थे। छत्तीसगढ़ का सौभाग्य तथा बापू का आशीर्वाद छत्तीसगढ़ को रहा है एवं शुक्लाजी का श्रम सदा सफल रहा है,

(शेष पृष्ठ ३० पर)

मैं बनिया हूं

—कन्हैया लाल वर्मा

विदेशी साम्राज्य के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आन्दोलन के प्रारंभिक काल में जब महात्मा गांधीजी की रायपुर पर कृपा हुई तब यहां की जनता ने उनका हर्षोल्लासपूर्ण स्वागत किया हरिजनों में भी आशा और उत्साह की प्रदीप्ति हुई। गांधी चौक में महात्माजी का भाषण श्रवण करने अपार जन समूह एकत्रित हो गया। उनके मंच पर पधारते ही एकदम शांति हो गई। सबकी दृष्टि उनके दर्शन में तल्लीन हो गई। सरल सौम्य शब्दों में गांधीजी ने अपना कार्यक्रम श्रोताओं को समझाया और स्वराज्य प्राप्ति के आन्दोलन में प्रत्येक व्यक्ति से तन, मन, धन की सहायता की याचना की। शीघ्र ही उनकी झोली कई प्रकार की वस्तुओं से भर गई। जब महात्माजी ने कहा कि मैं बनिया हूं, इन चीजों का नीलाम करूंगा तब लोग बहुत प्रसन्न हुए और नीलाम की हरएक चीज मूल से कई गुने अधिक दाम में बिक गई। महात्माजी ने जनता को बहुत धन्यवाद दिया।

रायपुर के स्त्री वर्ग के लिये गांधीजी के भाषण का विशेष आयोजन नयापारा में मछली वाड़े में किया गया। परदे में रहने वाली स्त्रियां बड़ी संख्या में उपस्थित हुई और गांधीजी के प्रवचन से प्रभावित होकर सभी प्रकार की स्त्रियों ने नगदी और आभूषण महात्माजी को प्रदान किये। इस प्रकार संपूर्ण रायपुर का वातावरण उल्लासपूर्ण हो गया।

महात्माजी की प्रातःकालीन और सायंकालीन प्रार्थनाओं में भी स्त्री पुरुष भक्तिभाव से भाग लेते रहे। आत्म-शक्ति की समर्थता पर विश्वास बढ़ गया और महात्माजी पर जनता की श्रद्धा में अतीव वृद्धि हुई।

आनन्द समाज (लाइब्रेरी) पुस्तकालय के पास महात्मा गांधी के साथ रायपुर की जनता ने मौलाना बन्धुओं को भी देखा और सुना। महात्माजी के दाहिने हाथ मौलाना मोहम्मद अली का गंभीर भाषण बहुत प्रभावोत्पादक हुआ। दूसरा भाषण महात्माजी के बाईं ओर के मौलाना शौकत अली का ओजपूर्ण रहा। गांधीजी ने दोनों भाषणों का समन्वय उपस्थित किया।

रायपुर में हिंदू-मुस्लिम एकता सदा से रही आई है मौलाना बन्धुओं के साथ महात्माजी का सत्संग सोने में सुगंध का काम कर गया। महात्मा के दर्शन और श्रवणसे प्रभावित होकर रायपुर में छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े इत्यादि सभी धर्मों और वर्गों के व्यक्तियों ने निश्चय किया कि बुराइयों को दूर करके अपनी आत्मशक्ति बढ़ावेंगे और सत्य और अहिंसा के बल देश की स्वतंत्रता की प्राप्ति में यथेष्ट सहयोग प्रदान करेंगे।

इस वर्ष की होली में रायपुर की जनता ने अपशब्दों का प्रयोग करने के बदले गांधीजी की जय मनाई।

टोपी पहनो खादी की, जय बोलो महात्मा गांधी की॥

गांधीजी के रायपुर आगमन से स्थानीय सरकारी अधिकारी भी प्रभावित हुए। न्यायाधीशों और आरक्षी अधि-

कारियों के घरों में भी चर्खे चलने लगे। अधिकारियों ने जनता को आश्वासन दिया कि यदि लोग शान्तिमय सृजनात्मक कार्य महात्मा गांधीजी के उपदेशानुसार सत्य और अहिंसा की प्रधानता में करेंगे तो अधिकारी भी उनका हार्दिक समर्थन करेंगे और जैसा इन अधिकारियों ने कहा, वैसा ही करके भी दिखा दिया।

सोने का छल्ला

एक बार नयापारा, रायपुर में गांधीजी को स्त्रियों को संबोधित करना था। संबोधित करने के लिये श्री वर्मा का ही घर चुना गया। वहां पर करीब १०० स्त्रियों को गांधीजी ने संबोधित किया। अपने स्वभाव के अनुसार उन्होंने स्त्रियों से दान की मांग की। स्त्रियों ने अपनी हैसियत के अनुसार दान दिया। परन्तु उस जमाने के अनुसार सबसे अधिक दान जेठाभाई नामक सुनार की पत्नी ने किया और वह था एक सोने का छल्ला। शाम को गांधी चौक में संबोधित करना था। मंच पर आते ही गांधीजी कहा कि उन्हें आज दान में एक अंगूठी प्राप्त हुई है। उन्होंने कहा कि मैं तो ठहरा बनिया आदमी और स्वभाव के अनुसार मैं तो इसे बेचूंगा। इस प्रकार उन्होंने उस अंगूठी की नीलामी लगाई। उन दिनों की वह १५) की अंगूठी ५०१) रुपये में नीलाम हुई।

(शेष पृष्ठ २८ का)

(श्री यतिजी का मंगलाचरण)

पधारो, हे शवरी के राम, हमारा सविनय तुम्हें प्रणाम।
हे अखंड सेवा व्रतधारी, हरिजन बन्धु अकाम,
नवजीवन की ज्योति जगाते, आये जग अभिराम॥–॥
नाथ सकल साधन विरहित हैं, हम सब निपट सकाम,
जन चातक की आश तुम्हीं हो, मन मोहन घनश्याम॥–॥
महानदी कृत मंजु मेखला, कौशलभूमि ललाम,
चल कर तव शुभ चरण चिह्न पर, अमर करें निज नाम॥–॥
यह अतीत दंडक वन प्यारा, योग सिद्धि का धाम,
सफल करें तव दिन साधन का, मंगलमय शुभ काम॥–॥
चुका न सकते देव तुम्हारे, जन सेवा का दाम,
ग्रहण करो हे पूज्य अतिथि, यह त्याग सुधा का जाम॥–॥

जब ताले का आतंक भी विफल हो गया

—रामशरण तंबोली

तब मैं शासकीय हाईस्कूल बिलासपुर में ११ वीं कक्षा का विद्यार्थी था और शाला के पीछे बने छात्रावास में ही रहता था। हरिजन आन्दोलन की प्रगति के लिये नवम्बर, १९३३ से दस माह तक गांधीजी ने देश के कोने-कोने तक का दौरा किया। इसी सिलसिले में वे बिलासपुर भी पधारे थे। शनिवार का दिन था। शहर में तिल धरने को जगह नहीं थी। अपने प्यारे बापू के दर्शन के लिये लोग दूर-दूर से दौड़ पड़े थे। शाम को चार बजे शनीचरी पड़ाव में भाषण होने वाला था पर सबेरे दस बजे से ही हमारे छात्रावास के मुख्य द्वारों पर ताले लगा दिये गये और हम कैदियों की भांति सीकचों में झांकने को विवश हो गये। क्रमशः विद्रोह की भावना उठी और चार बजे तक हमारे उपद्रवों ने उग्र रूप धारण कर लिया। वार्डन ने तुरन्त हेडमास्टर साहब को बुलवाया। आते ही वे हमलोगों पर बरस पड़े:— यह सरकारी छात्रावास है तुम्हें सरकारी कानून मानना पड़ेगा, कहते हुए वे बार-बार बेंत चमकाते और रेस्टीकेट करने की धमकी देते रहे। हम लोगों ने उन्हें बहुतेरा समझाया कि जब अन्य सब शासकीय लोग इस प्रकार तालों में बन्द नहीं हैं तो हम कुछ विद्यार्थी ही क्यों यह यातना सहें। उन्हें कोई तर्क प्रभावित न कर सका और इससे गांधीजी के भाषण का समय निकल गया। वे थोड़ी देर में हमारे स्कूल के सामने से ही स्टेशन लौटने वाले थे। मैंने प्रार्थना की कि हमें स्कूल के मैदान में वार्डन की देखरेख में हाकी खेलने दिया जावे जिससे हम उनकी एक झलक तो पा सकें। प्रार्थना मंजूर हुई और ताले खुल गये किन्तु ज्यों ही हमलोगों ने खेल शुरू किया कि मोटरें तेज रफ्तार से निकल गईं और हम दर्शन भी न पा सके।

अब चूंकि गांधीजी स्टेशन जा चुके थे और १५ मिनिट में गाड़ी रायपुर के लिये छूटने वाली थी, इसलिये अधिकारीगण निश्चिन्त हो गये। मेरा मन दर्शन न पाने के कारण बेचैन हो रहा था। एकाएक स्फूरणा हुई कि प्रयत्न करने से अब भी सफलता मिल सकती है और मैं चुपचाप स्टेशन की ओर दौड़ पड़ा। वहां पहुंचकर देखा कि प्लेटफार्म पर अपार भीड़ है। गांधीजी डब्बे के दरवाजे पर झोली लिये खड़े थे और लोग बारी-बारी से झोली में चन्दा डालकर उन्हें प्रणाम कर रहे थे। भाग्य से मेरी जेब में एक दुअन्नी पड़ी थी। अतः मैं भी जोर से आगे बढ़ा। बापू की निगाह मुझपर पड़ गई और उनके संकेत से मेरे लिये रास्ता बन गया। मैंने दुअन्नी उनकी झोली में डाली और पैर छूकर उन्हें प्रणाम किया ही था कि गाड़ी चल पड़ी।

यों तो स्वर्गीय माखनलालजी चतुर्वेदीजी ने १२ मार्च सन् १९२१ को ही बिलासपुर में गांधीजी के सिद्धान्तों का अविस्मरणीय उद्‌बोधन कर दिया था। तथापि गांधीजी के उक्त दोहे से छत्तीसगढ़ में मानो गांधीवाद छा ही गया। गांव-गांव में लोग खादी पहनने लगे और सूत कातते हुए यह गीत गाने लगे—अवतार महात्मा गांधी का भारत का भार उतारन को। जिला बोर्ड के अधिकांश शिक्षकों ने खादी की पोशाक धारण कर गांधीवाद का प्रचार शुरू कर दिया। उन्हें

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

एक कट्टर बनिया

० मुनाफे के लिये नहीं भाषा के लिए....

मुकुटधर पांडे

सन् १९२८ की बात है,कलकत्ते में कांग्रेस का अधिवेशन था। अध्यक्ष पंडित मोतीलाल नेहरू थे। उसी अवसर पर महात्मा गांधी की अध्यक्षता में अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा सम्मेलन भी हो रहा था, जिसकी स्वागत कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष श्री सुभाषचन्द्र बोस और मंत्री पं. बनारसीदास चतुर्वेदी थे। चतुर्वेदीजी तब कलकत्ते में ही रहते थे। श्री रामानन्द चटर्जी के–'माडर्न रिव्यू' कार्यालय से निकलने वाले हिन्दी मासिक पत्रिका–'विशाल भारत' के संपादक थे।

राष्ट्रभाषा सम्मेलन के लिये मैंने एक कविता लिखी थी जिसकी चार पंक्तियां मुझे आज भी याद हैं (कविता तो जाने कहां खो गई)।

स्वतन्त्रता, शिक्षा-कला का कूलिता,
धन, चैतन्य की यह बंग भू,
रत्न, कंचन के सुभग संयोग सा,
आज हिन्दी की बनी है रंग भू॥

चतुर्वेदीजी ने अपनी ओर से छपवाकर इसे सम्मेलन में बंटवाया था। वे चाहते थे कि मैं स्वयं उसे सम्मेलन के मंच से पढ़ूं। सम्मेलन के दिन वे मुझे अपने साथ पंडाल में ले गये। मंच पर केवल तीन कुर्सियां थीं। मध्य की कुर्सी पर गांधीजी बैठे हुए थे, उनकी बाईं ओर सुभाषचन्द्र बाबू थे और दाईं ओर चतुर्वेदीजी थे। मुझे भी आग्रहपूर्वक बैठाया गया।

एकाएक अपने को विश्व-वंद्य गांधीजी के पार्श्व में पाकर मुझे संकोच हो रहा था। यह चतुर्वेदीजी की कृपा थी। वे स्वयं अपनी फाइलों के साथ मंच के फर्श पर बैठे हुए थे। पंडाल में इतनी भीड़ थी कि तिल रखने को जगह नहीं नहीं थी। देश भर के बड़े-बड़े नेता और श्री पुरुषोत्तमदासजी टंडन प्रमुख हिंदी के अनेक धनी व्यक्ति उपस्थित थे।

मैंने कविता पढ़ी। सुभाष बाबू का भाषण हुआ। उसके बाद महात्माजी बोले। व हिंदी में बोल रहे थे। कैसा सरल, सुबोध और सुन्दर भाषण था उनका। मुझे इनके अंतिम कुछ वाक्य याद हैं। उन्होंने कहा था–:मैं हूं बनियां, पैसे का महत्व समझता हूं। मुझे दक्षिणा में हिंदी प्रचार के लिये पैसा चाहिए। उनका कहना था कि रुपयों और नोटों की वर्षा होने लगी। महिलायें अपने आभूषण निकालकर फेंकने लगीं। श्री शिवप्रसाद गुप्ता और श्री जमुनालाल बजाज उन्हें बटोरने लगे। ऐसा था महात्मा गांधीजी का प्रभाव। उनके त्याग और तपस्या का ही यह प्रभाव था

और दूसरे दिन चतुर्वेदीजी मुझे गांधीजी से मिलाने उनके निवास स्थान थियेटर रोड ले गये। वहां बिड़ला जैसे करोड़-पति को मैंने उनके सामने हाथ जोड़े खड़े देखा। वे चरखा कात रहे थे, बीच-बीच में एक दो बातें कर लेते थे।

महात्मा गांधी को निकट से देखने, सुनने का मौका मुझे सन् १९३६ में नागपुर में भी मिला था। उनकी अध्यक्षता में—:भारतीय साहित्य परिषद:—को बैठक विश्वविद्यालय के दीक्षान्त भवन में हुई थी जिसमें देश भर के अनेक गण्य-मान्य साहित्यकारों ने भाग लिया था। परिषद में—:राष्ट्रभाषा:—हिन्दी में हंस नामक एक मासिक पत्र निकालने का निश्चय किया गया था, जिसके संपादक मुंशी प्रेमचंदजी नियुक्त किये गये थे।

जब कुलीन वर्ग की प्रतिष्ठा उपेक्षित

—राज वैद्यजी:

महात्मा गांधी थोड़े ही वस्त्र पहनते थे, पर वे वस्त्र बड़े साफ रहते थे। घुटनों तक की धोती और गले पर से दुपट्टा ही इनका प्राय: वस्त्र होता था, पर दोनों ही विशेष प्रकार से पहने जाते थे। इसके अतिरिक्त छोटा सा कपड़े का टुकड़ा भी साथ रखते थे जो रुमाल का काम करता था। एक बार सभा में जाने के लिये वे तैयार थे, परन्तु रुमाल नहीं मिल रहा था। महात्माजी बड़े अप्रसन्न हुए और सभी लोग रुमाल की खोज में लगे। उन्हें दूसरा रुमाल दिया जाने लगा, पर उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया। कहने लगे:—मेरा सारा समय इस तरह के व्यर्थ के काम में चला जाता है:—।

आखिर रुमाल मिल गया और उन्होंने सार्वजनिक सभा के लिये प्रस्थान किया। यह घटना इस बात को प्रमाणित करती है कि वह अपव्यय के बड़े ही विरोधी थे और सब वस्तुओं को सुव्यवस्थित रूप से रखना और प्रयोग करना पसन्द करते थे। किसी वस्तु को बर्बाद करना, उन्हें बहुत ही नापसन्द था।

१९३३ में गांधीजी ने वर्धा में अपना स्थाई आश्रम बना लिया था। उन्होंने उस आश्रम का नाम "सेवाग्राम" रखा। इसी के पश्चात् वे छत्तीसगढ़ की यात्रा पर निकल आये। सर्वप्रथम वे रायपुर आये। व इनके साथ में स्व. मुख्यमंत्री पं. रविशंकरजी शुक्ला भी आये। उन्होंने अपनी यात्रा रेलगाड़ी के तृतीय वर्ग में ही की। अब उन्होंने यह नियम बना लिया था कि जहाँ जावेंगे रहने के लिये हरिजन मुहल्लों का चुनाव करेंगे। वे एक हरिजन के यहां रुके और सभी लोगों को आनन्द हुआ जो स्वाभाविक है। ये जो अछूत हैं, जिन्हें लोग समाज से अलग मानते हैं, अगर उनके यहां मैं रुक गया तो वे लोग अपने को धन्य समझेंगे। गांधीजी ने हमेशा देश में भेदभाव दूर करने का प्रयत्न किया। उन्होंने ही हरिजनों को मंदिरों में प्रवेश कराया। उन्होंने ही लोगों को समझाया कि हरिजन कोई दूसरा नहीं वरन् अपने ही समाज का एक अंग है। उन्होंने कहा कि छुआछूत को मानना मानवता के दृष्टिकोण से बहुत ही गलत है। छुआछूत हिंदू धर्म का अंग नहीं है। इतना ही नहीं, बल्कि उसमें घुसी हुई सड़न है, बहम है, पाप है और उसका निवारण करना प्रत्येक हिंदू का धर्म है, कर्त्तव्य है।

उपरोक्त बात गांधीजी ने हरिजन मोहल्ले में एक आम सभा को संबोधित करते समय कही थी।

मेहतर से तकली मास्टर

—जयदेव सतपथी

मैं मई ३८ में वर्धा के सेवाग्राम आश्रम में दो माह के लिये गया। जिस दिन मैं वहां पहुंचा मुझे महात्माजी के पास वहां के कार्यकर्त्ता ले गये। महात्माजी ने मुझे कहा कि कल से तुमको "मेहतर" का काम करना है। मैंने हां तो कह दिया लेकिन मेरा दिल मचलने लगा तथा मैं सोच में पड़ गया कि अब कैसा होगा।

वहां पर जो मेहतर का काम करते थे, उनका काम पानी से पैखाना साफ करना व बाल्टी ले जाकर नदी के पास रख देना इसके बाद जो वैतनिक मेहतर थे वे बाल्टी उठाकर ले जाते थे और साफ करके बाल्टी वापस कर देते थे। यह काम मैंने एक सप्ताह तक किया। पहले दिन ही मुझे कुछ घृणा सी महसूस हुई लेकिन बाद में मुझे यह साधारण सा लगने लगा। ठीक ८ बजे दिन मुझे महात्माजी ने बुलाया और कहा कि आज से तुम तकली मास्टर हो और आश्रम में तकली कातना सिखाया करो। इस तरह आठ दिनों के अन्दर ही मैं मेहतर से तकली मास्टर बन गया।

वहां पर भोजन भी बड़ा साधारण रहता था। लाल चावल का भात, उबले आलू और मोटी रोटियां तथा इन सब पर एक-एक चम्मच कच्चा तिल्ली का तेल डाला जाता था। पहले दिन जब मैंने यह भोजन किया तो जहां-जहां तेल पड़ा था वह भाग मैंने अलग कर दिया था क्योंकि यह पहला मौका था जब कच्चा तेल मैंने खाया था। लेकिन दूसरे दिन के बाद से धीरे-धीरे आदत ही बन गई और आज भी मुझे वह भोजन अन्य भोजन से अच्छा लगता है। मैं जब वहां गया था तो मेरा वजन १३२ पौंड था और जब दो माह बाद लौटा तो मेरा वजन १४८ पौंड हो गया था। इस प्रकार वह भोजन मेरे लिये बड़ा ही लाभप्रद सिद्ध हुआ।

धन्य मेरे भाग्य

—कुबेर नाई

सन् १९३०-३१ में गांधीजी जब रायपुर आये थे, उस समय वे पं. रविशंकर शुक्ला के यहां ठहरे थे। वहां पर मैंने गांधीजी के बाल बनाये थे। गांधीजी के बाल बनाते समय एक तरफ शुक्लाजी खड़े थे और दूसरी ओर कोई नेता खड़े थे। मैंने जब बाल बना दिये तब मुझे एक रुपया बाल बनाई का दिया जाने लगा। तो मैंने ने कहा कि धन्य है मेरे भाग्य—जो मुझे भगवान तुल्य पुरुष के बाल बनाने का अवसर प्राप्त हुआ और मैं तो सब कुछ पा गया। मैंने रुपया नहीं लिया। जिस पुरुष को देखने के लिये कई आदमियों को लगातार खड़े होकर बड़ी कठिनाई से देर तक प्रतीक्षा के बाद दर्शन होते हैं, वड़ी देर तक वे मेरे समक्ष बैठे रहे। मैंने देखा कि उनके हाथ बड़े लम्बे और देह स्वर्ण की भांति झलकती थी।

मैंने वे बाल कई दिनों तक अपने सजुए में रखे और बाद में सजुआ पुराना होने के कारण टूट गया।

(शेष पृष्ठ ३१ का)

प्रोत्साहन देने के लिये रायपुर में पं. सुन्दरलालजी शर्मा, स्व. पं. रविशंकर शुक्ला तथा बिलासपुर में स्व. छेदीलालजी बैरिस्टर जैसे नेता मिल गये और इन्होंने जनजीवन में गांधीवाद को ऐसा प्रतिष्ठित करा दिया कि अन्यवाद अभी तक छत्तीसगढ़ में ठीक से पनप नहीं सके। किसानों के हृदय सिहासनों पर गांधी बाबा ऐसे विराजमान हुए कि वे कांग्रेस को छोड़कर अपना वोट दूसरे को देते ही नहीं। छुआछूत की भावना दूर करने के लिये जगह-जगह सभायें हुई और उत्साही स्वर्ण युवकों ने जाति-दण्ड की परवाह न कर भरी सभाओं में हरिजनों के हाथ से पानी पिया। हरिजनों ने अनेक जगह धूमधाम से मंदिरों मेंप्रवेश किया। पंचायत प्रथा का नवजागरण हुआ। क्रांतिकुमार भारतीय जैसे व्यक्तियों ने रामायण प्रवचन के माध्यम से स्वराज्य की ज्योति जगाई और अपढ़ लोगों का सहारा लेकर राष्ट्र प्रेम जागृत किया।

लोक गीतों का नायक

–अद्वैतगिरी जी

शैशवकाल में उस निरंकुश शासन के अत्याचार मेरे ईर्द-गिर्द घट रहे थे और मैं उन्हीं के बीच बढ़ रहा था। इसी बीच गांधीजी का सत्याग्रह आन्दोलन युग का पथ दीप बनकर हमारे सामने आया।

सन् १९२० में गांधीजी रायपुर आये। स्वर्गीय श्री सुन्दरलालजी शर्मा के भांजे श्री कन्हैयालालजी अध्यापक के निवासगृह में उनके ठहरने की व्यवस्था की गई। संध्याकाल उन्होंने एक आमसभा को संबोधित किया। भाषण के मुख्य विषय देश की स्वतंत्रता, एकता और सत्याग्रह थे। उन्होंने कहा कि ध्येय जितना मूल्यवान होगा–प्रयत्न भी इसके अनुरूप, उतने ही मूल्यवान होने चाहिये। स्वतंत्रता को यदि हम प्राण-पण से चाहेंगे तो उसका मिलना निश्चित है।

छत्तीसगढ़ में तब से गांधीजी की प्रतिष्ठा जन-जन में दिन-दिन घर करती गई। स्वतंत्रता, सत्याग्रह, स्वदेशी और गांधीजी परस्पर पर्यायवाची हो गये। सर्वत्र जन जीवन शनैः शनैः इनकी चर्चा करते-करते इनकी ओर झुक गया।

ग्रामीण महिलायें अपने लोकगीतों में गांधी का नाम लेने लगीं। आजादी की मनौतियां मानने लगीं। उनके स्वामी स्वतंत्रता सेनानी हो, ऐसी इच्छायें करने लगीं। चरखा और तिरंगा देहात-देहात और घर-घर में हो गये।

स्वतंत्रता के अमर सेनानी, मोहनदास करमचंद गांधी दूसरी बार सन् १९३३ में छत्तीसगढ़ (रायपुर) आये। इस बार उन्हें कांग्रेस कमेटी की ओर से आमंत्रित किया गया था। स्वर्गीय श्री रविशंकरजी शुक्ल के वे अतिथि बने। उस समय श्री शुक्ला का निवासगृह ही राजनीति के मंच के रूप में स्मरण किया जाता था।

गांधीजी से श्री शुक्लाजी के निवासगृह में हम तमाम कांग्रेसी साथियों की व्यक्तिगत मुलाकात हुई। उनसे प्रश्न किया गया– शक्तिशाली अंग्रेज सत्ता किस प्रकार समाप्त होगी ? गांधीजी ने सरल, सहज मुस्कराहट में कहा–सत्य और अहिंसा के इन अमोघ और अपराजेय अस्त्रों के सामने, कोई कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, ठहर नहीं सकता।

एक बड़ा प्रश्न सरल वाक्य में हल कर दिया उन्होंने।

अपराह्न संध्या प्रहर मोतीबाग में उन्होंने अपार जन समूह को संबोधित किया। दर्शनाभिलाषी जनता का समूह भाषण के पश्चात् उनके साक्षात्कार के लिये उद्यत हुआ। फलतः अपार जन समूह पर नियंत्रण पाना अत्यन्त ही कठिन और असंभव हो गया। तब मोतीबाग की पिछली दीवाल तोड़ी गई और गांधीजी को वहां से निकाला जा सका।

इस समय तक गाँधीजी का प्रभाव छत्तीसगढ़ में काफी हो ही चुका था परन्तु द्वितीय आगमन से उनकी छाप गहरी और अमिट हो गई। इनका प्रभाव छत्तीसगढ़ की ग्रामीण स्त्रियों पर इतना अधिक हो गया था कि एक गांव की सभी स्त्रियां लोटे में पानी और फूल लेकर उसका कलश रखकर सर पर दूसरे निकटस्थ ग्राम में आजादी और गांधी के गीत गाती, आजादी की नवचेतना देती हुई, जाती थीं और फिर दूसरे ग्राम से तीसरे ग्राम में जाने का क्रम दूसरे ग्राम की ही स्त्रियों द्वारा किया जाता था। यह क्रम ऐसा हो गया था कि वह समूचे छत्तीसगढ़ के बच्चे-बच्चे की जिह्वा पर आजादी, गांधी, स्वदेशी, एकता नाम लाने में सफल हुआ। ग्रामीण अपढ़ जनता भी बापू के साथ-साथ स्वतंत्रता का सही अर्थ समझने लगी थी।

कीचड़ भरे रास्ते की कसौटी

—धनीराम वर्मा

पूज्य बापू ने जमनालालजी बजाज के आग्रह पर जब सेवाग्राम में अपना आश्रम रखना स्वीकार कर लिया, तब सेवाग्राम में जो वर्धा से चार मील की दूरी पर है, छोटे-बड़े सभी लोगों का आना-जाना जारी हो गया। महात्मा गांधीजी से मिलने के लिये देश के तथा दूसरे देश के बड़े-बड़े लोग हमेशा मिलने के लिये आया करते थे, परन्तु रास्ते में कुछ दूर तक तक काली मिट्‌टी जमीन के कारण बरसात में मोटरें कीचड़ में फंस जाया करती थीं। अधिकारियों ने तथा कई लोगों ने बापूजी से आग्रह किया कि हम वर्धा से सेवाग्राम तक आपकी आज्ञा होने पर सड़क बनवा देंगे। बापूजी ने कहा जब मैं देहात में रहता हूं तो मेरे यहां आने-जाने का रास्ता भी देहाती ही होना चाहिये ताकि लोगों को ग्रामीणों के दुःख-सुख का अनुभव हो सके। बापू बरसात में स्वयं पैदल आया-जाया करते थे। ४–५ साल के बाद नेताओं और उनके सेवकों के आग्रह पर बड़ी मुश्किल से सड़क बनाने की इजाजत मिली। तब सन्‌ ३९–४० में सड़क का निर्माण हुआ।

मैं दिसम्बर, ३९ में विद्यामंदिर ट्रेनिंग स्कूल के स्काउट (स्वयंसेवक) शिक्षार्थियों को लेकर सेवाग्राम आश्रम को साफ करा रहा था। बापूजी भ्रमण के लिये निकले। उनने कहा कि क्या आप समझते हैं कि इस आश्रम को साफ करा देने से या कर देने से आपको पूरा संतोष हो जावेगा। मैंने कहा– जी हां। तब उनने कहा कि इस आश्रम की अपेक्षा गांवों की गलियों को साफ कराना ज्यादा जरूरी है। बाहर की अपेक्षा अन्दर की सफाई ज्यादा जरूरी है। बाहर और अंदर की सफाई के दो मतलब निकलते हैं। पहला तो मकान के बाहर और भीतरी भाग से तथा दूसरा शरीर के बाहरी तथा शरीर के भीतरी भाग की सफाई वस्त्र तथा कार्य और विचार से। हम अपने वस्त्रादि से दिखने वाले भाग को साफ रखते हैं परन्तु भीतरी भाग की सफाई पर उतना ध्यान नहीं देते। हमारे विचारों और वचनों का भी यही हाल है।

स्काउट कैम्प सेवाग्राम आश्रम के मैदान में लगा हुआ था सवेरे झंडा प्रार्थना में बापूजी शामिल हुए। उस समय स्काउटों का एक अलग झंडा था और गीत भी अलग प्रकार का था।झंडे के अलग प्रकार और अलग गीत को देख सुनकर बापूजी बोले कि हमारे राष्ट्र का एक ही प्रकार का झंडा और एक ही प्रकार का उसका गीत होना चाहिये ताकि हमारी राष्ट्रीय एकता और भावना में किसी प्रकार का भेद न होने पावे। सेवा की भावना बाहर और अन्दर एक ही प्रकार की हो। हमारा संकल्प भी एक हो और वह भी दृढ़ हो।

मैं बनियादी राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र विद्यामंदिर ट्रेनिंग स्कूल वर्धा में ही था। बापूजी ने उस ट्रेनिंग स्कूल का शिलान्यास किया था और बीच-बीच में देखने के लिये भी आते थे। मैं वहां अध्यापक होकर गया था वहां बापूजी ने अपने प्रवचन में कहा था कि बालक की शिक्षा स्वावलम्बी बनाने वाली हो। शिक्षा से बालकों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास होना आवश्यक है। परावलम्बी बनाने वाली शिक्षा दूर कर देनी चाहिए। शिक्षा से बालकों का जीवन सुन्दर ढंग से विकसित हो ताकि वे देश और समाज की सच्ची सेवा कर सकें।

वक्ता से रिपोर्टर

—मालवीय प्रसाद जी श्रीवास्तव

१९३३–३४ में (दिसम्बर-जनवरी) गांधीजी ३ दिन के लिये रायपुर आये थे। यहां श्री गांधीजी रायपुर में बूढ़ापारा के श्री रविशंकरजी शुक्ल के यहां ठहरे थे।

संपूर्ण देश के करीब १लाख लोग गाँधीजी के इस सम्मेलन में आये थे यहां पर गांधीजी ने ३दिन तक अपना भाषण दिया था। इनके भाषण का आयोजन कांग्रेस की ओर से लारी स्कूल के मैदान में किया गया था। उस समय यहां के वरिष्ठ नेताओं में मुख्यत: श्री वामनरावजी लाखे, श्री लक्ष्मणराव उदागिरकर, श्री रविशंकरजी शुक्ला, श्री महंत लक्ष्मी-नारायण दास जी, यति यतनलालजी,प्रभूलालजी लखौटिया,सेठ शिवदास डागा, इत्यादि थे। उस समय श्री रामदयाल तिवारी रिपोर्टिग किया करते थे।

सबसे पहले दिन जब गांधीजी सुबह की सभा को संबोधित करने करने वाले थे, उनकी रिपोर्टिंग के लिए रामदयाल तिवारी को नियुक्त किया गया था। परन्तु जैसे-जैसे समय नजदीक आता गया श्री तिवारीजी बहुत ही घबराने लगे। उन्होंने मुझे आकर कहा कि आप आज की रिपोर्टिग कीजिये। मैं तो महात्माजी की स्पीच की रिपोर्टिंग नहीं कर सकूंगा।

मैं चूंकि एक वक्ता के रूप में गया था। मैंने इस काम को करने से इंकार कर दिया। तिवारीजी अब तो बड़े ही परेशान दिखाई देने लगे। वे दौड़कर शुक्लाजी के पास गये और उन्हें अपना हाल कह सुनाया तथा यह भी कहा कि मालवीय प्रसादजी पीछे बैठे हैं। आप उनसे कहिये कि आज की रिपोर्टिंग वे करें।

श्री शुक्लाजी व श्री लाखेजी दोनों मेरे पास आये और कहने लगे–श्रीवास्तवजी–क्या बात है? आप रिपोर्टिंग क्यों नहीं करते। मैंने तत्काल जवाब दिया कि मुझे पूर्व सूचना नहीं दी गई थी। जबकि सब लोगों को मालूम था कि मैं रायपुर में ही हूं।

उसी समय घोषणा की गई कि गांधीजी १० मिनट में आने वाले हैं। अब तो तिवारीजी और अन्य लोग परेशान होने लगे। शुक्लाजी ने लाखेजी की ओर देखकर कहा कि–देखिये श्रीवास्तवजी इतनी भी बात नहीं मान रहे हैं। मैं लाखे साहब को बहुत अधिक मानता था। उन्होंने मेरी तरफ देखा और कहा श्रीवास्तव तुम आज की सभा की रिपोर्टिंग करो। मैंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मैं अभी की तो रिपोर्टिंग कर लेता हूं परन्तु अन्य सभाओं के लिये आप अपना इंतजाम कर लीजिए इसपर लाखेजी तथा शुक्लाजी राजी हो गये और उस दिन की कार्यवाही की रिपोर्टिंग मैंने की।

सप्रेजी ने मुझे एक बात सिखाई कि रिपोर्टिंग करते समय यह ध्यान में रखना चाहिये कि बोलने वाला जो

(शेष पृष्ट ४० पर)

वे सारा मामला समझ गये...,

–महंत लक्ष्मीनारायण दास जी

सन् १९२१ की घटना है, जब महात्मा गांधी पहली बार रायपुर आये और उन्होंने जैतूसाव मठ को अपनी अविस्मरणीय भेंट दी।

१९२१ में मेरी आयु लगभग २४ वर्ष की थी। महात्मा गांधीजी के साथ उनके दो अनन्य मित्र और अनुयायी स्वर्गीय शौकत अली और स्वर्गीय मोहम्मद अली भी साथ थे ।

स्वर्गीय मोहम्मद अली मठ के नीचे की बैठक कक्ष में जहां आजकल पुस्तकालय और वाचनालय है, बैठ गये और महात्मा गांधी भगवान के दर्शनार्थ मंदिर में प्रवेश करने के लिये जाने लगे। उनके साथ स्वर्गीय शौकत अली भी हो लिये। परन्तु जब महात्माजी मंदिर की सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे, तब उनके पीछे चल रहे स्वर्गीय शौकत अलीजी भी मंदिर की सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे। मैंने तत्काल ही दौड़कर उनका हाथ पकड़ लिया और उनसे आग्रह किया कि चूंकि आप गौ मांस का भक्षण करते हैं, अतः आप मंदिर में प्रवेश करने उत्तराधिकारी नहीं हैं ।

मेरे उपरोक्त कथन पर स्वर्गीय शौकत अली मुस्कराये और ठहर गये । मंदिर में प्रवेश करने के पश्चात् महात्मा गाँधीजी ने मुड़ कर देखा कि स्वर्गीय शौकत अली अचानक कहां नदारत हो गये परन्तु जब उन्होंने मुझे और स्वर्गीय शौकत अली को मंदिर की सीढ़ियों पर एक साथ खड़े हुए देखा तो वे सारा मामला समझ गये और मेरी ओर देखकर मुस्कराने लगे।

मेरी पेशी.....!!!

सन् १९३३ की बात है। महात्मा गांधीजी नागपुर कांग्रेस अधिवेशन के पश्चात् हरिजन उद्धार कार्यक्रम के अन्तर्गत दूसरी बार रायपुर पधारे थे। वे स्वर्गीय पं. रविशंकर शुक्ला जी से बूढ़ापारा स्थित निवास स्थान में ठहरे थे। स्वर्गीय शुक्लजी के निवास स्थान से ही हरिजन उद्धार के कार्यक्रमों के प्रारंभ करने की रूपरेखा तैयार की गई थी। इस समय मेरी अवस्था ३६–३७ वर्ष की थी और मैं कांग्रेस के हर प्रकार के आन्दोलनों में सक्रियरूप से भाग लेता था।

स्वर्गीय पं. रविशंकरजी शुक्ला ने मुझे जानकारी दी कि स्वर्गीय ठाकुर प्यारेलालसिंहजी ने मेरी शिकायत महात्मा गांधीजी से की है कि:––महन्त लक्ष्मीनारायणदासजी ने अपना जैतूसाव मठ हरिजनों के दर्शनार्थ नहीं खोला है। स्वर्गीय शुक्लाजी ने मुझे बताया कि इस शिकायत के आधार पर आपकी पेशी महात्मा गांधीजी के समक्ष होगी।

उपरोक्त तथ्यों की जानकारी होने के उपरान्त उस समय मेरे हृदय में यह विचार उठा कि महात्मा गांधी

जी से मेरे विरुद्ध इस प्रकार की शिकायत राजनैतिक क्षेत्र में मेरी प्रतिष्ठा को आघात पहुंचाने के उद्देश्य से की गई है और महात्मा गांधी तथा अन्य लोगों की नजरों से मुझे नीचे गिराया जा सके।

स्वर्गीय शुक्लाजी ने जब मुझे विचारमग्न मुद्रा में देखा तो उन्होंने मजाक करते हुए कहा कि महन्तजी क्या सोच रहे हैं। पेशी के लिये तैयार रहें।

महात्मा गांधी के समक्ष मेरी पेशी हुई। गांधीजी ने मुझसे प्रश्न किया कि––:महन्तजी हरिजन उद्धार आन्दोलन के संबंध में आपके क्या विचार हैं, तथा हरिजनों के लिये मंदिर के द्वार खोले जाने के प्रति आपके क्या विचार हैं? मैंने महात्मा गांधीजी से कहा कि ––:हरिजन उद्धार आन्दोलन के प्रति मेरी पूर्ण सहानुभूति है और इस दिशा में यथासंभव प्रयास भी करता हूं। जहां तक हरिजनों के लिये मंदिर के द्वारा खोलने का प्रश्न है तो मैं भगवान को पतित पावन मानता हूं वह पतित पावन नाम उसी समय सार्थक हो सकता है, जब कि सवर्ण हिंदू हरिजनों को पतित न समझें और अपने हृदय से यह गलतफहमी दूर कर दें कि हरिजन पतित हैं। जब तक हरिजनों को भगवान केदर्शन नहीं होंगे, तब तक पतित पावन भगवान शब्द सार्थक नहीं हो सकता है। गांधीजी ने कहा कि:––श्रीयुत जमनालालजी बजाज ने तो अपना मंदिर हरिजनों के लिये खोल दिया है, आप भी क्यों नहीं खोल देते हैं? मैंने महात्मा गांधीजी से कहा कि श्री जमनालालजी बजाज अपने मंदिर के मालिक हैं। मैं जैतूसाव मठ का महन्त व सर्वाराहकार हूं। यहां पर यह भी बतला देना चाहता हूं कि मैं सर्वाराहकार के साथ ही साथ गद्दीनसीन महन्त भी हूं। गद्दीनसीन महन्त के नाते से यदि मैं जैतूसाव मठ के द्वार हरिजनों के लिये खोल दूं तो मेरा कोई कुछ भी नहीं कर सकता परन्तु मेरी अन्तरात्मा यह सलाह देती है कि मंदिर का निर्माण जो करते हैं, उसके साथ ही परम्परा का भी निर्माण होता है। यह परम्परा प्राचीनकाल से मंदिर निर्माण के साथ साथ चली आई है और उससे सम्बद्ध है। इस परम्परा में हेरफेर करने का अधिकार या तो जनता को है या फिर शासन को। चूंकि इस समय शासन अंग्रेजों का है अतः यह विदेशी हुकूमत हमारे धार्मिक कार्यों में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं रखती है। स्वदेशी शासन को हस्तक्षेप करने का अधिकार है।

मेरी प्रतिष्ठा !!!

मैंने महात्मा गांधीजी से कहा कि गुरुवाइन में इस तरह का प्रसंग आ गया था और मुझे (महन्तजी) यह जानकारी है कि आपने (गांधीजी) यह व्यवस्था कर दी थी कि यदि उस मंदिर के ७५ प्रतिशत दर्शनार्थी हरिजनों के लिये मंदिर के प्रवेश द्वार खोलने की अनुमति दे दें, तो मंदिर हरिजनों के लिए खोला जा सकता है। मैंने श्री ठाकुर प्यारेलाल सिंह जी को ४१–४२ व्यक्तियों की सूची दी है, जिसमें से ६ व्यक्ति वे हैं जिन्होंने उमाबाई मंदिर का निर्माण करवाया है। (स्व. उमाबाई स्व जैतूसाव जी की धर्मपत्नी थीं) उनकी दो लड़कियां थीं जिनके ३–३ पुत्र हैं। इस तरह कुल मिलाकर ६ पुत्र थे तथा उनके अतिरिक्त जैतूसाव मठ के आसपास रहने वाली अन्य जातियों के प्रमुख व्यक्तियों के नाम भी शामिल थे। यदि वे सब मिलकर सर्वसम्मति से न हो तो एकमत के बहुमत से भी प्रस्ताव पारित कर मंदिर के द्वार हरिजनों के लिये खुलवा सकते हैं। यदि ऐसा कोई प्रस्ताव पारित हो जाता है तो मैं अपना मंदिर हरिजनों के लिये खोल दूंगा।मैंने इस संबंध में मोहल्ले वालों की एक आम सभा भी बुलायी थी। मेरी अध्यक्षता में यह आम सभा हुई। मैंने स्वयं इस आम सभा में मंदिर खोलने के बारे में अपने विचार जोरदार शब्दों में रखे। श्री ठाकुर प्यारेलालसिंह का भी भाषण हुआ। कुछ लोगों ने पक्ष में, कुछ लोगों ने विपक्ष में भाषण दिया।

कुछ दिनों के बाद दूसरी सभा टूरीहटरी में मंदिर से कुछ फासले पर हुई। इस सभा में मैंने ठाकुर प्यारेलाल सिंह से कहा कि मैंने आपको जिन लोगों के नामों की सूची दी है, उनसे सम्पर्क स्थापित करने के लिये में भी आपके

साथ चलने को तैयार हूं और सबको समझा बुझाकर हम ऐसा वातावरण तैयार करें जिससे मंदिर के दरवाजे हरिजनों के लिये खुल जावें। और मेरे बाद आने वाली पीढ़ी को यह सोचने या कहने का अवसर न मिले कि हमारे गुरुजी ने यह कार्य अपनी इच्छा से किया।

मैंने गांधीजी से कहा कि हरिजनों के लिये मंदिर खोलना एक पवित्र कार्य है पर मैं गलत परम्परा डालकर आने वाली पीढ़ी को अपनी मरजी से कोई भी निर्णय लेने की परम्परा नहीं डालना चाहता हूं। मैं सर्वसम्मत से यह कार्य करना चाहता हूं। परन्तु इसके उपरान्त न तो ठाकुर प्यारेलाल सिंह ही किसी व्यक्ति के पास गये और न उन्होंने मुझे चलने को ही कहा।मैंने गांधीजी को आगे बताया कि हरिजनों के लिये मंदिर खोले जाने के पीछे जो वास्तविकता है या वास्तविक उद्देश्य है, वह यह है कि मेरी राजनैतिक प्रतिष्ठा को आघात पहुंचाया जावे।

दूसरी आम सभा के पश्चात जैतूसाव मठ के सामने ३ महापुरुषों को अनशन पर बैठाया गया। मैंने इन महानुभावों को धूप में न बैठने का आग्रह कर उन्हें मंदिर के अहाते में आकर पुस्तकालय कक्ष की इमारत में बैठने के लिये कहा। अनशन के दूसरे दिन मैंने इन अनशनकारियों से कहा कि आपने गलती की है। गलत कार्य करने वालों को परमात्मा सुबुद्धि नहीं देता है। अनशनकारी ब्राह्मण थे। इसमें श्री शालिग्राम की पत्नी पुनिया भी थीं। इनके लिये मंदिर के द्वार खुले हैं। यदि इनमें एक हरिजन भी अनशन पर बैठा होता तो मुझे प्रसन्नता होती और सफलता की भी आशा रहती।२–३ दिनों तक मंदिर के सामने हो हल्ला मचाया गया, उसके बाद अनशनकारी उठकर चले गये।

मेरे विचारों को और तथ्यों को जानने के उपरान्त महात्मा गांधी ने स्व. शुक्लाजी के निवास स्थान पर ठाकुर साहब व अन्य २–४ व्यक्तियों के सामने कहा कि महन्तजी की कार्यवाही न्यायोचित है। महन्तजी मंदिर के द्वार हरिजनों के लिये खोलना चाहते हैं, केवल परम्परा की अड़चन है। इसे तोड़ने में उन्हें आपका सहयोग चाहिये। सबकी रजामंदी से महन्त जी मंदिर के द्वार हरिजनों के लिये अवश्य ही खोल देंगे।

(शेष पृष्ठ ३७ का)

कुछ भी बोलता है, उसे बिना बदले ही प्रेस में आना चाहिये। उनका कहना था कि भाषण में एक शब्द को भी अपने मन से नहीं लिखना चाहिये। ठीक उनके कहने के अनुसार ही मैंने महात्माजी के भाषण की रिपोर्टिंग की।

उसी समय यहां पर विक्टोरिया बगीचा (मोतीबाग) में प्रदर्शनी लगी थी, महात्माजी ने इसका उद्घाटन किया। सारे लोग प्रदर्शनी देखने में लगे थे और मैंने जो कुछ भी रिपोर्टिंग की थी उसको घर में बैठकर ठीक कर रहा था। मुझे प्रदर्शनी देखने तक की भी फुर्सत नहीं थी।

महात्माजी का कोई भी भाषण बगैर उन्हें दिखाये छपने नहीं जाता था। मैंने भी उनके भाषण को ठीक किया और उन्हें दिखाने ले गया। मेरे लिखे भाषण को उन्होंने गौर से देखा व अपने पास ही रख लिया। मुझे यह पता नहीं चला कि वह कहां छपा।

रायपुर में उन्होंने अपनी प्रथम आम सभा को जिस मैदान में संबोधित किया, उसी मैदान को आज "गांधी चौक" के नाम से जाना जाता है।

धमतरी में महात्मा गांधीजी

—डा. शोभाराम देवांगन

पं. सुन्दरलालजी शर्मा, राजिम वाले, महात्मा गांधी को धमतरी में लाने के लिये २ दिसम्बर, सन् १९२० ई. को कलकत्ता गये थे किन्तु वहां उनसे भेंट नहीं हो सकी। इसका प्रधान कारण यह था कि इस अवधि में महात्मा गांधी कलकत्ता कांग्रेस विशेष अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन विषयक जो प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था वह कांग्रेस के अधिवेशन में, जो २६ दिसम्बर, १९२० को नागपुर में प्रस्तुत होने को था, का समर्थन प्राप्त करने के अभिप्राय से भारतवर्ष में सर्वत्र उसके अनुकूल वातावरण उत्पन्न करने को वहां से प्रस्थान कर चुके थे। अतएव शर्माजी को उनके पीछे ही प्रवास करना अनिवार्य हो गया जिसमें उन्हें अधिक दिन लगना स्वाभाविक था। अंत में उनसे दक्षिण भारत के एक नगर में जहां महात्माजी का कार्यक्रम अधिक दिनों के लिये निश्चित था, वहां भेंट होना संभव हुआ। वे गांधीजी को धमतरी तहसील के कंडेल गांव के नहर सत्याग्रह का पूर्ण परिचय कराकर धमतरी में लाने में सफल हुए।

व्यापारी के कन्धों पर

२१ दिम्बर, १९२० ई. को ठीक ११ बजे दिन को महात्मा गांधी मौलाना शौकत अली के साथ, रायपुर होते हुए यहां पधारे। धमतरी में महात्माजी के दर्शन तथा उनके सामयिक भाषण को सुनने के लिये तहसील के प्रत्येक भाग तथा गांवों से असंख्य स्त्री तथा पुरुष नगर के प्रमुख प्रवेश द्वार मकईबन्ध चौक से सभा स्थल तक ही नहीं वरन् नगर के डेढ़ मील लम्बे सड़क के दोनों ओर वन्देमातरम्, भारत माता की जय, तथा महात्मा गांधी की जय आदि ध्वनियों से गुंजाकर उनके धमतरी आगमन के उल्लास में उनका हार्दिक अभिवादन कर, उनके तथा देश के प्रति अपनी सच्ची भावनाओं को प्रकट करते हुए खड़े थे। पूर्व से ही महात्मा गांधीजी के भाषण का प्रबन्ध यहां के एक प्रसिद्ध सेठ हुसेन के वृहत बाड़े में निश्चित हुआ, था इसलिये उनकी खुली कार असंख्य नर-नारियों के झुंड को पार करती हुई सीधी वहां पहुंची किन्तु इस सभा स्थल के प्रमुख प्रवेश द्वार पर भी अपार जन समूह के सामने वहीं पर कार से महात्माजी को उतरना पड़ा फिर भी भीड़ के सबब द्वार पार करना, असंभव देखकर गुरूर निवासी श्री उमर सेठ नामक, एक कच्छी व्यापारी झट महात्माजी को उठाकर और अपने कंधों पर बिठाकर सभास्थल के एक सुसज्जित तथा सुरम्य मंच पर पहुंचाने में सफल हुआ। यह स्थान भी उनके पहुंचने के पूर्व ही असंख्य स्त्री तथा पुरुषों से ठसाठस भरा हुआ था। इससे अधिकांशजनों को निकटवर्त्ती भवनों की छतों पर खड़े होकर अपनी उमंगें पूर्ण करनी पड़ीं। जो मंच महात्माजी के बैठने के लिये निर्मित किया गया था, वह अति सुन्दर तोरणपताकाओं तथा देशभक्त नेताओं के चित्रों और शिक्षाप्रद एवं देशभक्ति सूचक वाक्यों की लिखावट आदि से चहुं ओर से एक कलात्मक ढंग से सुसज्जित किया गया था। महात्माजी के आसन ग्रहण करने के पश्चात् नगर निवासियों की ओर से सर्व प्रथम यहां के

एक बड़े प्रमुख तथा प्रतिष्ठित मालगुजार श्रीमन बाजीराव जी कृदत्त महोदय के हाथ से ५०१) रुपये अंकन पांच सौ एक रुपये की थैली भेंट कर उनका हार्दिक स्वागत किया गया। जिस उद्देश्य तथा भावना से प्रेरित होकर महात्माजी को यहां लाने का प्रयास किया गया था, वह ईश्वर की कृपा से फलीभूत हो गया था। इससे जन साधारण तथा प्रमुख पुरुषों के आनन्द तथा उत्साह में वृद्धि होना स्वाभाविक ही था।

महात्माजी ने देश की सामयिक परिस्थितियों का सुन्दर चित्रण करते हुए हिंदी भाषा में लगभग१घंटे तक भाषण किया जिसमें कंडेल गांव के नहर सत्याग्रह तथा उसके प्रेरक पं. सुन्दरलालजी शर्मा, पं. नारायणरावजी मेघावाले, श्री नत्थूजी जगताप तथा श्री छोटेलाल बाबू आदिजनों का उल्लेख करते हुए उपस्थित जन समुदाय को संबोधित कर कहा कि अन्याय तथा अत्याचार का सामना संगठन दृढ़ता तथा सत्यता के साथ सतत् अहिंसात्मक तथा शान्तिमय नीति का अवलम्बन करने से ही देश का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है और इनमें ही देश की उन्नति सन्निहित है। यह आप लोग निश्चित समझो। इसके पश्चात् लगभग १२॥ बजे दिन को सभा का कार्य समाप्त हुआ। अब यहां से महात्माजी श्री नत्थूजी जगताप के भवन पर फलाहार करने तथा नगर के प्रमुख राजनैतिक तथा प्रतिष्ठितजनों जिनमें श्रीमान् बाजी-रावजी कृदत्त, दाऊ डोमार सिंहजी, नन्द वंशी, गुसाई किशनगीरजी, श्री रघुनाथ रावजी जाधव, सेठ हंसराज तेजपाल जी, सेठ सोहनलाल मुंशीलालजी, श्री वीरजी भाई, मोहम्मद अब्दुल करीमजी, श्री मोहम्मद अब्दुल हकीमजी वकील दाऊ छोटलालजी, श्री भांजी भाई ठेकेदार, श्री वदरुद्दीनजी मालगुजार, श्री सेठ उस्मान अब्बाजी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, को देश की वर्तमान परिस्थिति पर ध्यान देकर उन्हें देश को उद्धार करने विषयक कांग्रेस के कार्यक्रमों में भाग लेने का आग्रह कर गाँधी जी लगभग दो बजे दिन को यहां से रायपुर के लिये प्रस्थान किये। इस तरह तीन चार घंटे के लिये यह नगर महात्माजी के आगमन पर आनन्द विभोर में मग्न रहा।

महात्माजी के इस भाषण का प्रभाव प्रत्यक्ष यह हुआ कि नागपुर कांग्रेस को देखने के लिये कांग्रेस प्रतिनिधियों तथा कांग्रेसी स्वयंसेवकों के अतिरिक्त नगर तथा तहसील के लगभग ५०० व्यक्ति गये और वहां से देश सेवा की एक नई चेतना तथा स्फूर्ति लेकर वापस हुए जिसका परिणाम यह हुआ कि इस नगर तथा तहसील में असहयोग आन्दो-लनों के कार्यक्रमों को प्रगति देने के लिये श्री छोटेलाल बाबू श्रीवास्तव ने अपने ही धमतरी स्थित भवन के एक कक्ष में राष्ट्रीय विद्यालय तथा खादी उत्पादन केन्द्र की स्थापना कर संचालन जुलाई सन् १९२१ ई. में अपने ही द्रव्य से किया जो लगातार सन् १९२५ ई. तक चलता रहा। असहयोग आन्दोलन की गति धीमी होने से बरबस इसे बन्द कर देना पड़ा। इन दोनों कार्यों में श्री छोटेलाल बाबू श्रीवास्तव को लगभग ४० हजार रुपयों की क्षति हुई फिर भी ये देश के कार्य करने में सदा अग्रसर रहे। सन् १९३० ई. के जंगल सत्याग्रह आन्दोलन में मेघावाले के गिरफ्तार होने के पश्चात वे द्वितीय सर्वाधिकारी नियुक्त होकर जेल गये।

१९३३ में महिलाओं के बीच

महात्मा गांधीजी के उपवास से प्रभावित होकर दलित जाति एवं अछूतों के एक प्रसिद्ध नेता तथा निष्णात कानूनविद् श्री भीमरावजी अम्बेदकर बार एट लाको अछूतों को सवर्ण हिंदुओं से सर्वथा पृथक नहीं होने की एक साम-यिक तथा ऐतिहासिक घोषणा करने से कोई शक्ति नहीं रोक सकी। इस तरह महात्माजी के निर्विघ्न उपवास समाप्त होने पर अछूत जाति को हरिजन शब्द से सम्बोधित करने के एक नवीन नामकरण का जन्म हुआ और अपने प्रिय साप्ताहिक पत्र को गांधीजी ने नवजीवन के बदले हरिजन के नाम से प्रख्यात किया जिसका परिणाम यह हुआ कि महात्मा जी उन्हें हिन्दुओं का एक अविभाज्य अंग बनाये रखने में न केवल सफल ही हुए किन्तु उनकी उन्नति तथा उन्हें सामाजिक

अधिकार प्रदान करने केहे तु तथा सवर्ण हिंदुओं को समयानुसार अपने व्यवहार में परिवर्तन करने के उद्देश्य से तथा उसमें प्रेरणा देने के हेतु उन्होंने भारत में सर्वत्र तदनुकूल वातावरण निर्माण करने के लिये पर्यटन करना आवश्यक समझा।

सर्वप्रथम धमतरी नगर में ही महात्मा गांधीजी का पुनः आगमन २४ या २७ नवम्बर, सन् १९३३ को प्रातःकाल ८ बजे रायपुर से कार द्वारा सुलभ हुआ। तहसील में सर्वत्र महात्मा गांधी जी के इस ऐतिहासिक आगमन की सूचना पूर्व से ही प्रसारित होने के सबब, उनके दर्शन करने तथा सामयिक उपदेश सुनने के लिये असंख्य नर तथा नारी का एक वृहत्त समूह धमतरी के प्रवेश द्वार मकईबन्ध नामक चौक पर उनके आगमन की प्रतीक्षा हे तु एकत्रित हुआ। इस शुभ अवसर पर नगर तोरण पताकाओं तथा वंदनवार द्वारों से सुसज्जित होने के सबब, स्थानीय तथा अभ्यागत-जनों के हृदयों में आनन्द एवं उल्लास की उमंगों का होना स्वाभाविक था। इस तरह धमतरी नगर का वातावरण महात्मा गांधी के इस आगमन पर पूर्णतः आनंदप्रद दृष्टिगोचर हो रहा था। ज्योंही महात्मा गांधी की कार मकईबन्ध चौक के पास आयी, त्योंही सर्वप्रथम कांग्रेस कमेटी की ओर से महात्माजी को पंडित नारायण राव जी मेघावाले ने तथा नगर-पालिका समिति की ओर से श्री नत्थू जगताप अध्यक्ष, नगरपालिका आदि अनेक संस्थाओं के प्रमुखजनों ने पुष्प माला पहना कर हार्दिक स्वागत किया। वहां से अब महात्माजी एक खुली कार में बैठकर नगर के प्रमुख सड़क से होकर पूर्व निश्चित कार्यक्रमानुसार सर्वप्रथम दाजी कन्या मराठी पाठशाला की सभा में भाषण करने गये। तदुपरान्त श्री छोटेलाल बाबू श्रीवास्तव के भवन के सामने वाले चौक पर पूर्व निश्चित महिलाओं की एक वृहत आम सभा में भाषण करने को पहुंचे जहां उनके शिक्षाप्रद सामयिक भाषण से प्रभावित होकर सभा में उपस्थित महिलाओं में से अनेक महिलाओं ने अपने-अपने अंग से सोने तथा चांदी के आभूषणों को निकालकर हरिजनों के उद्धार विषयक कार्यों के लिये सहर्ष महात्माजी को समर्पण कर इस नगर तथा तहसील के पुरुषों के साथ महात्मा गांधी तथा देश के कार्य में पूर्ण सहयोग देने की भावना को प्रत्यक्ष प्रमाणित कर देश के प्रति अपनी एक अनुपम श्रद्धा को प्रकट करने में कोई त्रुटि नहीं की। उनमें से कतिपय महिलाओं के नाम जहां तक मैं स्मरण करने में समर्थ हो सका हूं, नीचे दिये जाते हैं। शेष महिलाओं के नाम स्मरण नहीं होने के सबब अंकित करने में सर्वथा असमर्थ रहा अस्तु उसके लिये क्षमाप्रार्थी हूं।

(१) श्रीमती यशोदाबाई जी कृदत्त–सोने का आभूषण।

(२) श्रीमती सावित्रीबाईजी देवांगन–पत्नी श्री चन्दूलालजी साव देवांगन–सोने का आभूषण।

इस अवसर पर सभा में उपस्थित प्रायः सभी महिलाएं जिनसे जो हो सका, महात्माजी को पूर्व वर्णित कार्य के लिये रुपये पैसे से दान करने से नहीं चूकीं।

भारत की बारडोली

अब लगभग १० बजे दिन को नगरपालिका के मिडिल स्कूल के प्रांगण में एक सुसज्जित सभा मंडप में महात्मा गांधीजी के भाषण का प्रबन्ध किया गया था। वहां महात्माजी के पहुंचने तथा एक उच्च चित्ताकर्षक सुरम्य मंच पर आसन ग्रहण करने के पश्चात् सर्वप्रथम पं. नारायण राव जी मेघावाले ने महात्माजी को नगर निवासियों की ओर से पांच सौ एक रुपये की एक थैली भेंट की। तदुपरान्त नगरपालिका (धमतरी) की ओर से उसके अध्यक्ष श्री नत्थूजी जगताप ने महात्माजी को अभिनन्दन पत्र समर्पित किया। इसी तरह स्थानीय लोकल बोर्ड,श्री नाथूरामजी मोतीलाल, संस्कृत पाठशाला तथा गौशाला आदि संस्थाओं की ओर से उन्हें अभिनन्दन पत्र समर्पित किये गये। इन सब अभिनन्दन पत्रों के उत्तर देने के साथ ही साथ महात्माजी ने देश की वर्त्तमान परिस्थिति पर भाषण करते हुए धमतरी तहसील को स्वराज्य

प्राप्त करने विषयक प्रत्येक आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के सबब उनके श्रीमुख से यह तहसील वस्तुतः भारत की एक दूसरी बारडोली ही है, यह वाक्य उच्चरित हुआ। लगभग ११॥ बजे दिन को महात्माजी के भाषण समाप्त होने पर वे श्री नत्थूजी जगताप के भवन पर फलाहार करने गये जहां उन्होंने उपस्थित स्थानीय प्रतिष्ठित कांग्रेसी तथा अन्य गण्य-मान्य व्यक्तियों को देश की वर्तमान परिस्थिति पर विषद रूप से प्रकाश डालते हुए तदनुकूल कार्य करने का परामर्श दिया।

'जय' में आत्मसन्तोष

महात्माजी के दर्शनार्थ बाहर से आये हुए असंख्य नर-नारियों के समूह के कारण जगताप साहब के भवन नें वस्तुतः एक तीर्थ स्थल का रूप ग्रहण कर लिया था। किन्तु वे उन्हें देखने में असमर्थ जान बाहर से ही केवल महात्माजी की जै ध्वनि लगाने में ही संतोष करते हुए खड़े थे। ऐसी अवस्था में महात्माजी इस परिस्थिति को अधिक समय तक कैसे टाल सकते थे। अतः मानवता के पुजारी ने सहसा अपने आसन से उठकर उस जन समूह को दर्शन देने एवं उनका दर्शन करने के हेतु भवन की चांदनी पर हाथ जोड़ कर मुस्कुराहट के साथ सर्वप्रथम जनता-जनार्दन का अभिनन्दन किया जिसके उत्तर में नीचे खड़ी हुई जनता महात्मा गांधी के जय के तुमुल घोष के साथ नभमंडल को गुंजारकर अपनी हार्दिक भावनाओं को उनके प्रति प्रकट कर अपने आप को धन्य समझने लगी।

सतनामी शिष्ट मंडल के बीच

तत्पश्चात् ही महात्माजी ने पुनः अपने आसन पर विराजमान होकर यहां के हरिजनों के एक शिष्टमंडल के प्रमुख श्री चरणजी सतनामी, श्री बिसालजी सतनामी तथा श्री लालरामजी सतनामी से भेंट की। वे महात्माजी को अपने मोहल्ले में ले जाने की प्रार्थना कर उनके चरण रज से उसे पवित्र करने की भावना से लालायित थे। हरि-जनों के उद्धारक महात्माजी उनकी इस प्रार्थना को कैसे स्वीकार कर सकते थे? अतः वे तत्पर वहां आने को उद्यत हो ही गये किन्तु नगर का समस्त भाग स्त्री तथा पुरुषों के समूह से परिपूर्ण था। ऐसी अवस्था में महात्माजी को वहां पहुंचाना स्थानीय तथा रायपुर निवासी अभ्यागत राजनैतिक पुरुषों के लिये एक कठिन समस्या हो गई। किन्तु महात्माजी की इस बलवती इच्छा को जानकर वे उन्हें नगर के बाह्य मार्ग से उस मोहल्ले में पहुंचाने का प्रबन्ध करने में सफल हुए महात्माजी उस मोहल्ले को प्रत्यक्ष देखकर ऐसे प्रभावित हुए कि उन्हें अपने श्रीमुख से यह कहना पड़ा कि यह मोहल्ला वस्तुतः हरिजन मोहल्ला जैसा तो नहीं जान पड़ता है। उसका प्रधान कारण यह है कि यहां के प्रायः समस्त वर्गों में घर तथा गली कूचों को नित्य स्वच्छ करने की एक सनातन परम्परा प्रचलित है। तदनुसार इस मुहल्ले में भी स्वच्छता का भान होना स्वाभाविक था। अतः महात्माजी को उपयुक्त उद्‌गार निकालना पड़ा और हरिजनों (सतनामियों) से इस परम्परा को सदा बनाये रखने तथा उसमें और अधिक सुधार करने तथा सवर्ण हिंदुओं के साथ ही साथ समस्त संप्रदाय के पुरुषों के साथ संपर्क बढ़ाकर देश के कार्य में हाथ बंटाने का उपदेश देकर वे लगभग ३बजे दिन को यहां से रायपुर के लिये प्रस्थान किये। इस तरह यह नगर चार पांच घंटे के लिये महात्माजी के इस आगमन का पुण्य लूटने में समर्थ रहा।

जब आप रायपुर पधारे तब आपने यहां के समस्त कार्यक्रमों में सम्मिलित होने साथ ही साथ सतनामी आश्रम को भी भेंट दी जिसकी स्थापना पं. सुन्दरलाल जी शर्मा, राजिमवाले की प्रेरणा तथा प्रयत्न से संभव हुई थी। स्व. शर्माजी ने छत्तीसगढ़ में सतनामियों (हरिजनों) को ऊपर उठाने में कोई कसर नहीं रखी थी जिसे देखकर उनके मुख से यह शब्द निकला कि हरिजनों के उद्धार विषयक कार्य में पं. सुन्दरलालजी शर्मा, राजिमवाले मेरे से दो वर्ष बड़े हैं जिन्होंने देश के इस महत्वपूर्ण कार्य को मेरे इस मिशन के पूर्व संपादित कर संचालित करने में एक आदर्श उपस्थित किया है।

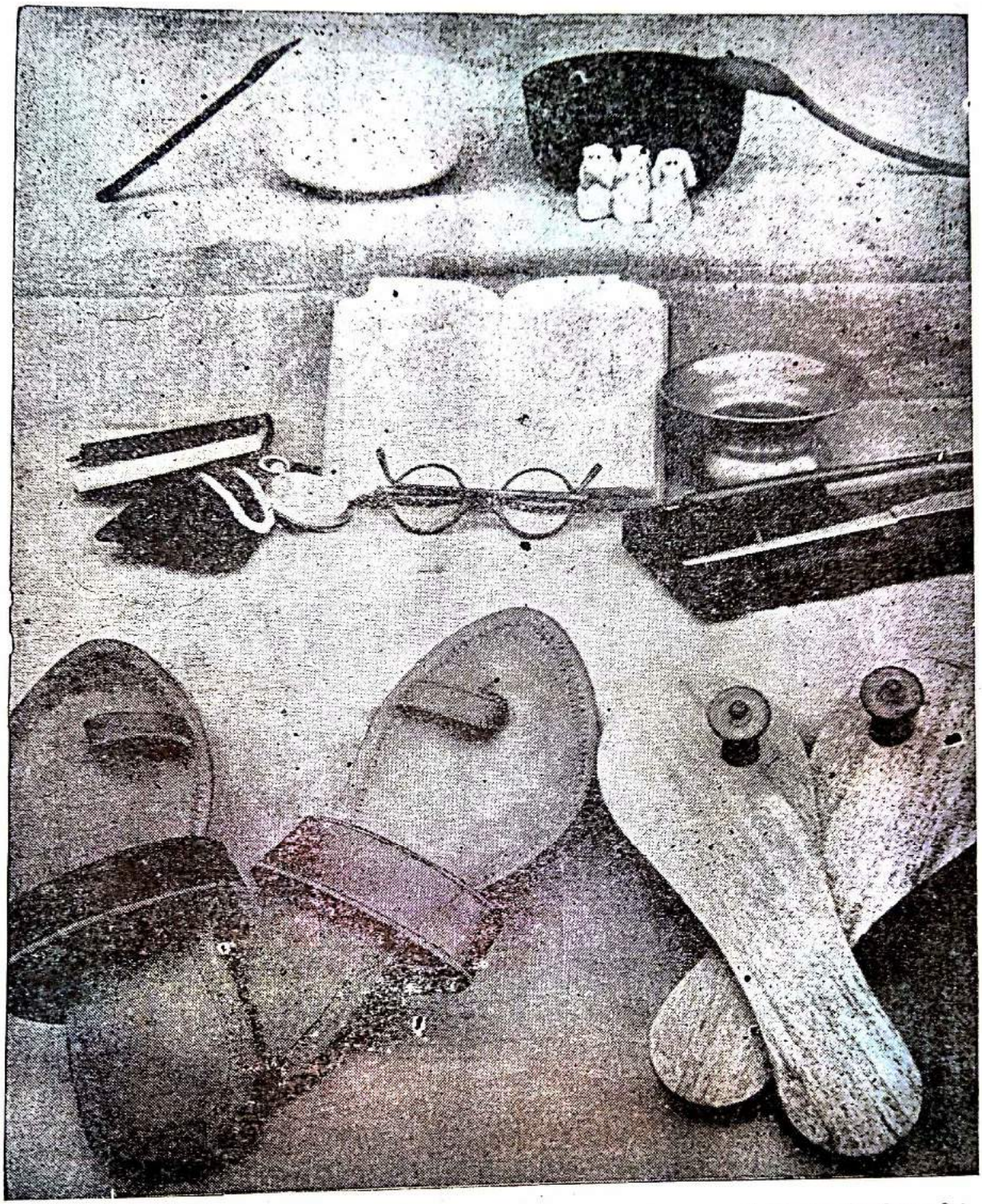

बापू के स्मृति-चिन्ह

(नवभारत के सौजन्य से)

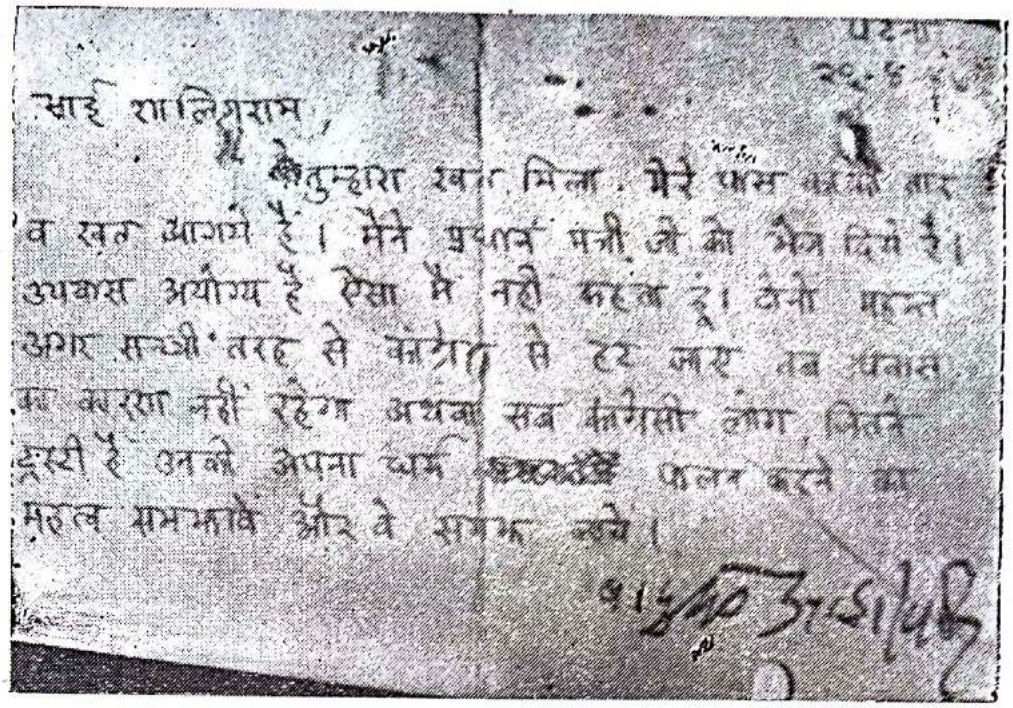

रायपुर के भाई शालिग राम जी को लिखा गया महात्मा गांधी जी का पत्र। (पत्र श्री मानिक लाल चतुर्वेदी के सौजन्य से)

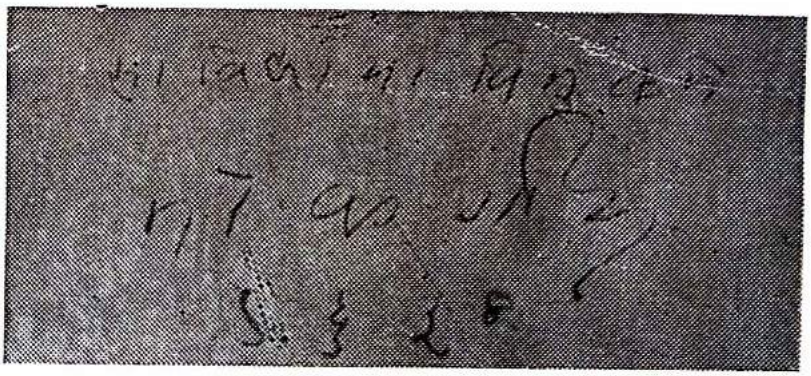

बिलासपुर के श्री नागेश्वर राव द्वारा १९३८ में गांधी जी से लिया गया हस्ताक्षर। हस्ताक्षर के ऊपर सा विद्या या विमुक्तये लिखा हुआ है।

लोक साहित्य
एवं
काव्य खंड

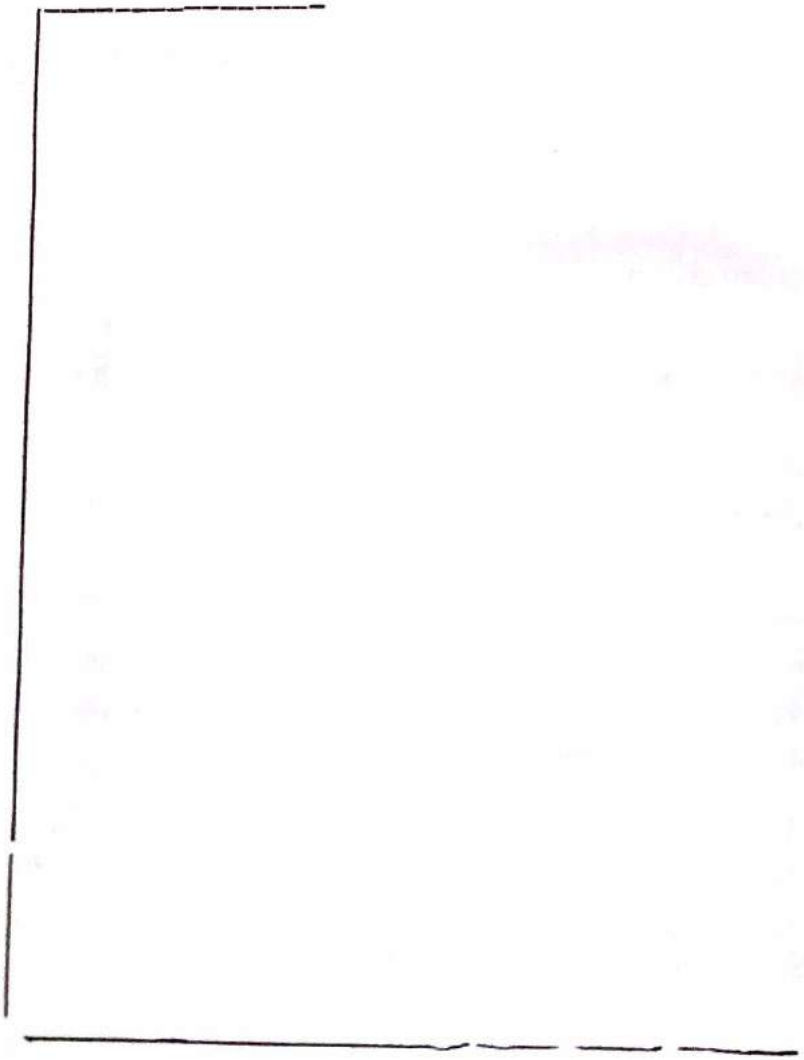

लोक गीतों में गांधीजी

—नारायण लाल परमार

लोक गीतों में जनभावना को मूर्त्त करने की अद्भुत क्षमता होती है। भारतीय लोकगीतों का एक पक्ष जहां प्रतिदिन के दुख-सुख, मिलन-मान, मनुहार एवं करुणा के मार्मिक चित्र प्रस्तुत करता है वहीं दूसरा पक्ष राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में उपस्थित होता है। प्राचीन और नवीन के समन्वय पर आस्था रखने वाली, अनगढ़ गीतों की यह अजस्र धारा आज भी अंकुठ रूप से वह रही है।

भारतीय लोक मानस में गांधीजी का अद्वितीय स्थान रहा है। यही कारण है कि लोकगीत उन्हें आश्रय बनाकर धन्य हुए हैं। गांवों में ये गीत आज भी गाये जाते हैं और इस तरह मानवता के उस अमर पुजारी के नाम-स्मरण से लोगों की संघर्षों से जूझने को प्रेरणा सहज ही मिल जाती है।

जिन दिनों आजादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी, लोग यह मान बैठे थे कि हमें गांधीजी के नेतृत्व में आजादी मिलकर ही रहे गी और तभी स्वतंत्रता—आन्दोलन के उस प्रारम्भिक युग में किसान यह अनुभव करता था कि आज उसका सिर अभिमान से ऊंचा उठ रहा है, अब उसकी मर्यादा को कोई ठेस नहीं पहुंचा सकता। चूंकि वह एक स्वतंत्र देश के स्वतंत्र वातावरण में सांस लेने वाला निर्भीक किसान है। वीर अजीत सिंह के स्वरों में उस किसान की आत्माभिव्यक्ति आज भी मन-प्राणों को झनझना देने का सामर्थ्य रखती है, वह कहता है——

पगड़ी सम्हाल, ओए जट्टा, पगड़ी सम्हाल ओए।

भारत में पददलित मानवता अपनी मुक्ति के चिर पोषित स्वप्न को साकार होते देख रही थी। लोगों में अपार सामूहिक शक्ति काम कर रही थी। देश, जहां गांधीजी को स्वतन्त्रता रूपी गंगा का भागीरथ मानकर उनकी जयजयकार कर रहा था, वहां लंदनवासियों के हाथों से तोते उड़ रहे थे। उनका भय, उनकी निराशा, लोक कवि दुलीचंद के शब्दों में इस प्रकार मुखरी हुई है:——

घर-घर लेडी लंदन रोवे, गांधी बनो गले का हार,
घुटवन कर गई गवर्मेंट, अब बांके थोथे बाजे हथियार।
वर्र ततइया जैसे चिपटन लागे, बेड़ा कौन लगाये पार।
हाहाकार मचो लंदन में, मैना अब रूठ गयो करतार।
बाजी नांय पाये या लंगोटी वाले से, हाथ याके सत्याग्रह हथियार
लंदन कंपा गांधीबब्बा संग में और जवाहरलाल,

स्पष्ट है कि लोक कवि की जागरूकता को चुनौती नहीं दी जा सकती। जनभावना अपनी विशुद्ध-तीव्रता से उसकी पंक्तियों में मुखर हुई है।

भोजपुरी जनमानस ने भी गांधीजी के प्रति अपनी आस्था प्रकट की है। स्वतंत्रता-आन्दोलन के संदर्भ का लोक

कवि मानों अंग्रेजों को अंतिम चुनौती ही दे रहा है--

गांधीजी की लरइया, नाहीं जितब रे फिरंगिया,
चाहे करइ कितनो उपाय, भलभल मजे कर लेहे फिरंगिया।
अब जइहें कोठियां बिकाय।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद लोगों के आनन्द की सीमा नहीं थी। उन्हें यह विश्वास था कि रामराज्य में कोई दुखी नहीं होगा। कुमाऊं प्रदेश के झोड़ा गीत में अभिव्यक्त यह खुशी कितनी निश्चल है--

गौं गौं में खुशी के नडारा बाजा, आब चली गा पचेत राजा,
गांधी ले अपणों मंत्र चलायो, सितिया देश फिरी जगायो।
बांधि बोरिया अंग्रेज भाजा, आब चली गो पचेत राजा।।।।

सच तो यह है कि गांधीजी के प्रजाराज्य की कल्पना भी यही थी कि जनता सत्य का आचरण करे, चारित्रिक दृष्टि से वह दृढ़ बने। सहनशीलता के प्रति नवीन आस्था बनी रहे। इससे बढ़कर स्वराज्य भला और क्या हो सकता है? लोग निर्बल की रक्षा करें। शक्तिशालियों से न डरें। यही स्वराज्य की सही मनोभूमि है।

राष्ट्रीय आन्दोलन के समय कुमायूं प्रदेश के ही एक और लोक कवि गोर्दा द्वारा रचित चांचरी गीत की कुछ पंक्तियां इस प्रकार है:--

आओ यारो, गांधी संग मिल लो स्वराज्य रे,
गांधी का सिपाही बणों बीछ सरताज रे
चरख को तोप रे, काती बुणी चलूं लात,
उड़ि जाली टोप रे।।

जनमानस में गांधीजी की अमरता का एक कारण यह भी है कि उन्होंने जनजीवन के विभिन्न पक्षों को अलग-अलग मानकर कभी नहीं देखा किन्तु इस संदर्भ में वे इन सारे पहलुओं में एक जलधारा जैसी अविभाज्यता ही देखने के आदी थे। अपनी उद्देश्यपूर्ण विराट जीवन-यात्रा में उन्होंने सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक पक्षों की एक नवीन एवं बोधगम्य व्याख्या प्रस्तुत की है। जो कि जनजीवन के बहुत करीब है। सच्चे जीवन का मूलमंत्र देने वाले, देश को पराधीनता के पाश से मुक्त करने वाले विश्व वंद्य गांधी का स्मरण करते हुए एक उड़िया लोक कवि का अपने साथियों को दिया गया उद्‌बोधन दृष्टव्य है:--

गांधी महात्मा आसीले, कले देश स्वाधीन,
कर्ण-मंत्र देई गले है, का ताहार आन,
रखीबा ताहार आन है, आस करीबा सेवा,
मद निशा सब छाड़ आन है, आस सांगेर जीवा।

भारतवर्ष के घर-घर में प्रेम के तेल से सत्य का दीप जलाकर मनुष्य के अंधेरे मन-मंदिर को प्रकाशित करने वाले गांधी देवता के प्रति छत्तीसगढ़ी का एक लोक कवि कहता है--

ते घर-घर सत दीया बारे, प्रेम के ओमा तेल ला डारे,
मन मंदिर के अन्धियारी मा, जोत जगाये तें भारत मा, गांधी देवता।।

(शेष पृष्ठ ५२ पर)

बस्तर के बनवासी गीतों में गांधीजी

–डा. हीरालाल शुक्ल

(१)

मध्यप्रदेश के दक्षिण छोर में 'वंशतरि' के सघन वनों में आज भी आदिम जीवन धारा उद्दाम वेग मे प्रवाहित हो रही है। लगभग पन्द्रह हजार वर्गमील में विस्तृत दंतेश्वरी के 'वस्त्र' का प्रतीक बस्तर शालवनों का वह भू-भाग है, जहां कभी वनवासी राम ने विचरण किया था। शताब्दियों की विस्मृति के पश्चात् इस वनस्थली का इतिहास चौथी शताब्दि में नल वंश की स्थापना से प्रारम्भ होता है। राष्ट्रकूट, चाकुत्य, चोल, तथा गंग आदि राजाओं के संघर्ष-काल के अनन्तर यहां नागवंशी राजाओं का आधिपत्य हुआ। चौदहवीं शताब्दि के मध्य में यह काकतीय नरेशों के अधिकार में आया, तथा उन्होंने पांच सौ वर्षों तक यहां शासन किया। अंग्रेजी शासन-काल में बस्तर के वनवासियों ने अपनी स्वायत्तता के लिये दो बार रक्तक्रांति की थी। सन् १९४८ में इस भू-भाग के भारत-गणराज्य में विलय के साथ वनवासियों के स्वप्न तथा बलिदान सार्थक हुए। १९६८ ई. में "बैलाडीला-लौह-अयस्क-परियोजना' के साथ बस्तर के विकास का नया अध्याय प्रारम्भ हुआ।

आज बस्तर जिले में एलविन तथा ग्रिग्सन के समय के बस्तर के साथ कांकेर राज्य भी सम्मिलित है। भारत गणराज्य के विविध प्रान्तों के सम्पूर्ण जिलों में बस्तर बृहत्तम जिला है तथा विस्तार में केरल राज्य से भी अधिक विस्तृत। इसके पूर्व में उड़ीसा का कोरापुट जिला, दक्षिण पश्चिम में आंध्र का गोदावरी जिला, पश्चिम में महाराष्ट्र का चांदा जिला, व उत्तर पश्चिम में मध्यप्रदेश के रायपुर तथा दुर्ग जिले हैं।

(२)

दण्डकारण्य का भू-भाग बस्तर, भिन्न-भिन्न जातियों का संगम है। यहां अनुमानतः नौ लाख वनवासी जातियां रहती हैं–जिले की बहत्तर प्रतिशत जनसंख्या। इनमें अबूझमाड़िया, दंडामी माड़िया,राजमुरिया,मुरिया, दोर्ला, परजा, गदबा, हलबा, भतरा, धाकड़, पनरा, महरा, गंडा, पनका, घसिया, परधान तथा कलार आदि प्रमुख हैं। ओरावं कोर्कू व खड़िया का उल्लेख सन् १९६१ की जनगणना के पूर्व कभी नहीं मिलता। अतएव ये जातियां सम्भवतः उड़ीसा की ओर से हाल ही में जाकर बस्तर में बसी होंगी। यों तो देखने में इन सबमें अलग-अलग रहन-सहन, वेश-भूषा, रीति-रिवाज, आचार-विचार, उत्सव-संस्कार, नृत्य-गीत, कला-कौशल के भिन्न-भिन्न प्रकार हैं–सब अलग-अलग दिखाई देते हैं–पर 'सूत्रे मणिगणा इव' एक ऐसा सूत्र है, जिसमें इन सब मणिगणों की एक ही माला पिरोई हुई है।

बस्तर के वनवासियों का जीवन सभ्यता के अन्तर्द्वंद्वों में, राग-द्वेषजनित समस्याओं में कभी उलझा नहीं है। फलतः उनके जीवन में आज भी एकांतता और शान्ति विद्यमान है। वे आज भी पक्षियों के साथ उठते हैं, सिंह-शावकों के साथ खेलते हैं,तथा चांद और सूरज के साथ हंसते और गाते हैं। उनकी हंसी से वन में वसन्त छा जाता है और उच्छवास से पतझड़। वेदना से अंतरिक्ष में लहर उठतीहै और विरह से आसमान में काली घटा मंडराती है। प्रकृति और उनके बीच कोई व्यवधान नहीं, कोई रुकावट नहीं। उनमें कृत्रिमता नहीं है। वे प्रकृति के भांति अकृत्रिम हैं।

उनके अंदर मानवी भावों की लहरें अपने अछूते रूप में आती हैं और जीवन के सभी क्षेत्रों में फैल जाती हैं। अपने को छिपाने की कला उन्होंने अभी तक नहीं सीखी। वे न आंसू पीते हैं, न हंसी चुराते हैं।

(३)

इन जनजातियों की बोली भी अलग-अलग है। भतरी, हलबी अथवा छत्तीसगढ़ी आर्य-बोलियां हैं, तो अत्यल्प प्रयुक्त खड़िया, गदबा व कोर्कू मुंडा-बोलियां। द्रविड़ परिवार की उपशाखा गोंडी की छः बोलियां हैं:—झोरिया, माड़िया, दंडामी माड़िया, अबूझमाड़िया, मुरिया, दोर्ली तथा प्रजी या धुर्वी।

बस्तर की बोलियों पर ग्रियर्सन महोदय को जो सामग्री पटवारियों के माध्यम से मिली थी, वह मुझे अप्रामाणिक लगती है। उनके विचार से हलबी मराठी की बोली है, किन्तु मैंने अनेकानेक साक्ष्यों के आधार पर यह सिद्ध किया है कि हलबी पूर्वी हिंदी की एक बोली है। ग्रियर्सन को बस्तर में गोंडी का एक ही स्वरूप मिला था तथा वे इसका स्वरूप उत्तर-भारत की इतर गोंडी जैसा मानते हैं। किन्तु तथ्य यह है कि बस्तर की गोंडी अन्य क्षेत्रों की गोंडी से पर्याप्त भिन्न होने के साथ ही साथ अनेकानेक बोलीगत विभेदों से युक्त है। बस्तर के उत्तर-पूर्व कोने से लेकर पश्चिम-दक्षिण व दक्षिण-पूर्व तक एक वृत्त-खंड है, जिसमें गोंडी की विविध छः बोलियां बोली जाती हैं।

हलबी बस्तर की सम्पर्क-भाषा है। अबूझमाड़ तथा तेलगू-प्रभावित क्षेत्रों को छोड़कर यह पूरे बस्तर में बोली व समझी जाती है। अंग्रेजों के शासन-काल में बस्तर के वनवासियों के निमित्त जो विज्ञप्तियां निकला करती थीं, वे हलबी में ही होती थीं। आज भी मध्यप्रदेश शासन के बस्तरस्थ कर्मचारियों के लिये हलबी का ज्ञान आवश्यक है। हलबी एक प्राणवंत बोली है तथा बस्तर के वनवासियों के जागरण में इसका महत्वपूर्ण योग रहा है और अब भी है।

बस्तर के लोकगीतों में दण्डकारण्य-प्रकृति के उद्‌गार हैं। लोक-जीवन इन लोकगीतों से ओतप्रोत है। बस्तर के गांव-गांव में, गांव की गली-गली में, गली के घर-घर में, घर के कंठ-कंठ में ये गीत युग-युगान्तर और कल्प-कल्पान्तर से हवा-पानी की तरह, सूरज-चांद की तरह विकसित, सुरक्षित और संरक्षित हैं। समय और दूरी को पार कर सम्पूर्ण पन्द्रह हजार वर्गमील में व्याप्त ये स्वर वेद की तरह अपौरुषेय, गीता की तरह अर्थपूर्ण, एवं राम-कृष्ण की तरह प्रचलित हैं।

इन गीतों का विषय जन्म से लेकर मृत्यु तक की कोई भी वस्तु हो सकती है। ये घोटुल-गुड़ी (प्रमोद-मुदिर) में चेलिक (घोटुल का युवा सदस्य) व मोटियारी (घोटुल की युवती सदस्या) के द्वारा गाए जाने वाले गीत हो सकते हैं या विविध 'परब' या 'करसना' (खेल) के गीत।

वनवासियों में प्रचलित गीतों (गोंडी-पाटा, कुरुख-डण्डी) के अनेक रूप हैं:—छेरता, तारा, कोटनी, लेजा, धनकुल व लक्ष्मीजगार। ये हलबी के अपने गीत हैं, तथा 'चइतपरब' शुद्ध रूप से भतरी का। रावनावेलो, रावना-पाटा, रीलो, करसना, लिगो आदि पाटा गोंडी की छहों बोलियों में मिलते हैं। आर्य तथा द्रविड़ दोनों ही परिवारों की बोलियों ने एक दूसरे की गीत-शैली का अनुकरण किया है। मुंडा-परिवार की बोलियों में गीत की शैली इन दोनों से अलग-थलग है तथा उनमें बस्तर के अन्य गीतोंकी भांति संजीदगी न हीं मिलती।

(४)

बस्तर के लोक-जीवन के उजले दर्पण में गांधीजी के जीवन का प्रत्येक पक्ष प्रतिबिम्बित मिलता है। दुर्गमवनों में रहने वाले वनवासियों ने भारत की स्वाधीनता तथा उसके उद्‌गाता के चित्र संजोए हैं। वनवासी बोलियों में हलबी ही एक प्रमुख बोली है, जिसमें युग की धड़कनों को निकट से सुना जा सकता है; क्योंकि यह अधिकांश बस्तर की सम्पर्क बोली है। इसके अतिरिक्त समय-समय पर अन्य बोलियों ने भी गांधी-दर्शन को अपने लोकगीतों का विषय बनाया है, किन्तु संख्या में अपेक्षाकृत कम।

रक्त क्रान्ति के स्वर

अंग्रेजी शासन-काल में वनवासियों को अत्यन्त सताया गया था। उनका संत्रास जब-जब सहन-शक्ति से परे हो गया, उन्होंने तब-तब अंग्रेजों के विरुद्ध रक्तक्रांति की। सन् १९१० की रक्तरंजित क्रांति के स्वर आज भी बस्तर के वनों में गूंजते हुए 'झुमकाल गीत' में सुने जा सकते हैं:—

सुना सुजन हो, सान सियान हो,
झुमकाल गीत गाइबि, सुनाइबि ॥ (भतरी)
(बड़े लोग सुनें, मैं विप्लव -गीत गाकर सुना रहा हूं।)

कितने ही वर्ष इस त्याग और बलिदान के गीत को सुनते हुए निकल गए। देश में एकता न रही। शक्ति क्षीण हो गई। स्वतंत्रता के अनेकानेक पुजारी (अंग्रेजों के छल के कारण) मातृभूमि के लिये मर मिटे:—

कितरो बरख असन गेली, देस चो टूटली बल।
देस लो कितरो फांसी गेला, करुन थाकला छल ॥ (हलवी)

गाँधी का अवतार

ऐसी स्थिति में गांधी का देवता के रूप में अविर्भाव हुआ। यह वह काल था, जब अंग्रेज हमारे देश के अन्न-धन को लूट रहे थे। भारतवासियों में फूट डाल रहे थे, कलह उत्पन्न कर रहे थे। गांधी देवता ने हमारी आंख खोल दी। उनकी भेद-नीति का रहस्य प्रकट कर दिया:—

देवता बन के आये गांधी, देवता बन के आये।
हमरे देश के अन ला धन ला, जम्मा-जम्मों लूटिन।
परदेशियन के लड़वाए ले, भाई से भाई छूटिन ॥
देश ला करके निचट निहत्था, उल्टा मारैं शेखी।
बोहे गुलामी करत रहे न हम, उंकरे देखा-देखी ॥
तैं आंखी ला हमार उधारे, जम्मो पोल बताए।
गांधी देवता बन के आए ॥ (छत्तीसगढ़ी)

और गांधी देवता का अवतार हुआ था 'काठियावाड़' राज्य के दीवान करमचन्द गांधी के घर। मनुष्य धर्म का उन्होंने पाठ पढ़ा था, अतएव अंग्रेजों की बातों को सुनकर उन्हें अत्यन्त कष्ट हुआ। देश के दुख को देखकर वे अत्यन्त चिन्तित थे:—

काठेयावाड़ राज चो देवान रलो, गांधी करमचन्द।
हुनचो घरे बेटा जनमलो, गांधी मोहनचन्द—
हो गांधी मोहनचन्द ॥ छेर छेर ॥
बाढ़लो उड़लो पाठ पढ़लो, मनुज धरमकारी।
साहे ब मन चो गोठ सुनुन, धक्का लागली भारी—
हो धक्का लागली भारी ॥ छेर छेर ॥
देस भर चो दुख के दखुन, गांधी फिरलो घरे।
पेट भितरे चिन्ता ढापली, आइग असन बरे—
हो आइग असन बरे ॥ छेर छेर ॥ (हलवी)

गाँधी जी का सत्याग्रह

भारतवर्ष के दुःख-दैन्य को समाप्त करने के लिए उन्होंने अहिंसा का सहारा लिया। उपवास के द्वारा सम्पूर्ण समस्याओं को सुलझाया। पत्थर मन अंग्रेज भी पिघल गये। ऐसे गांधी मानव नहीं देवता है। उनके कार्यों की चर्चा भला वनवासी कवि कैसे कर सकता है। उसमें सामर्थ्य भी तो नहीं है:—

तोर करनी ला कतेक बतावों, सक्ति नइए भारी।
देस विदेस अउ गांव-गांव मां, तोरेच चरचा-चारी॥
तैं उपास कर-करके मऊनी बनके करे तपस्या।
अंगरेजी चौगुन ला मेटे, टोरे सबो समस्या॥
साल बछरले धरे अहिंसा, पथरा ला पिघलाए॥
गांधी देवता बन के आए॥(छत्तीसगढ़ी)

गांधीजी के द्वारा प्रदर्शित सत्य मार्ग ही इन वनवासियों का प्रेय है, क्योंकि ये जानते हैं कि:—

सत ने रले भात मिरेदे, सत ने होएदे जीत।
सत मारग ने रलू जाले, बयरी होयदे मीत—
हो बयरी होयदे मीत॥छेर छेरा॥(हलवी)

सत्य धर्म के 'धनुष्काण्ड' को इन्होंने सदैव धारण किया है तथा उसके उद्‌गाता की एक स्वर से जय बोलते रहे हैं:—

जय जय भारत माता चो, जय जय बलुक इया हो।
महात्मा गांधी बाबा चो, सपाय जय बलुक दिया हो॥
हामी हिन्दुस्थानी भाई, नी जानूं लन्द-फन्द काई।
सत धरम चो धनुकाण्ड के धरुन होलुसे ठीया हो॥(हलवी)

तभी तो एक गीतकार गांधी को 'सत्य तथा अहिंसा का प्रसाद बांटने वाला' मानता है:—

बांधली द्रौपदी तुमके आंसू धार ने, कुब्जा बांधन पकाली फूलहार ने॥घोपा॥
साग खोआउन बिदुर तुमके बांधले, बांधली सबरी तुमके बेरचार ने।
दीला नु हो सत्त अहिंसा चो परसाद, भारत बांधलो गांधी अवतार ने॥हलवी॥

अर्थात् हे परमेश्वर, द्रौपदी ने तुम्हें अश्रु की धाराओं से बन्दी बनाया। कुब्जा ने फूलों की मालाओं से बन्दी बनाया। तुम्हें बिदुर ने साग खिलाकर अपने वश में किया। जंगल के बेरचार खिलाकर सबरी ने तुम्हें अपने बन्धन में जकड़ लिया और तुम्हें इस गरीब भारत ने बन्दी बनाया सत्य और हैं अहिंसा का प्रसाद बांटने वाले गांधी के अवतार से।

राष्ट्र प्रेम : महात्माजी के विचारों से प्रभावित होकर वनवासियों के कंठ से जो स्वर निकले हैं, वे देश-विदेश सेवा व एकता की भावना से ओत-प्रोत हैं। देश-सेवा के लिये कवि धर्म की ढाल व तलवार लेता है।:—

गांधी दखलो अस्तीर होलो, बल्लो जय जय जय भगवान।
तुइ महाप्रु सदा होलिस, राखालिस सत चो लाज।
देस सेवा काजे धरलू, धरम चो ढाल सत चो तलवार॥(हलवी)

राष्ट्र प्रेम, धर्म और आध्यात्मिकता

'हम सब भाई-भाई हैं, एक ही देश के निवासी हैं यह कहकर वह संपूर्ण कलहों को समाप्त करने की सलाह देता है:--

आमी सबे भाई-भाई, गोटकि देस चो लोग।
छियालाता झगड़ा मेंटू, सपाके भारी रोग॥(हलवी)

तथा गांधी के द्वारा दिखाये गये सत्य, अहिंसा और प्रेम के मार्ग का अनुसरण करने के लिए अनुरोध करता है--:

सवंसार चो निको काजे, गांधी महात्मा दखालो तीन बाट।
सत ने रलो ने सुख मिरेदे, धन लक्ष्मी न होय घाट॥
अहिंसा के सिखा सबे, काचोय जीवके नी जारा।
दया करा सबरे जीव उपरे, कोनी जीव के नी मारा॥(हलवी)

गांधीजी की लड़ाई असत्य और अधर्म से थी। अंत में सत्य की जीत हुई। उनकी यह गाथा युग-युगान्तर तक चलने वाली कविता बन गई। प्रत्येक युग में अवतार जन्म लेते रहे हैं। गांधी भी एक अवतार थे। कृष्णावतार ने महाभारत युद्ध में गीता का उपदेश दिया था। गांधी–अवतार ने भी सत्य व अहिंसा के शान्तिमय पाठ का उपदेश दिया है। बस्तर की जनता उनके प्रति श्रद्धावान है:--

धरम अधरम लड़ाई होली, सत चो होली जीत।
देव सवंसार कहनी लिखेदे, जुग-जुग चो होली गीत॥
जय भगवान जय परमेसर, बिन्ती काय करुंदे आमी।
युग-युग ने तुइ होलिस, एइ आय भारत भूमि॥
कृष्णावतार धरुन दुआपर ने, सांगलिस गीता चो गिआन।
धरम लड़ई महाभारत लड़ली, मारे गोला अधरमी सिआन॥
बउद चोला तुचो ए कलंजुग ने, समदुर कठा कठा दुआर।
जानु लोक के तुइ सबे ठाने, करे से गांधी तुके जोहार॥(हलवी)

तथा उसके गीतों में सत्य धर्म की उद् घोषणा के साथ निर्भयता की ध्वनि सुनने को मिलती है:--

होएदे सत्त धरम चो जीत, बसेदे बैरी मन चो बेर।
काहाँले खाद हुनमन पाक, रोपते बीज आत कनेर।
दखानू धान मिरी चो झार, गंवरिया भारत चो रखवार।
नी डरूं आवत खंगार॥(हलवी)

बस्तर के मड़िया 'लिंगो' देव के उपासक हैं तथा उनके प्रत्येक अविदित 'पाटा' 'लिंगो' की अर्चना से प्रारंभ होते हैं:--

वायवा पाटा वाई रा लिंगो, वायवा डाका वाई रा लिंगो,
पहाले पाटा नियरा लिंगो, माड़िया पाटा लायोर रा लिंगो,
वायुरा लिंगो वायुरा॥(अबुझमाड़िया)

अर्थात् : अविदित गीत हमें प्राप्त हो, अविदित कदम हमें मिले।
प्रथम गीत तुम्हारा है, माड़िया गीत हमारा है, लिंगो, आ जावो, आवो॥

वनवासी गीतों में शरीर की नश्वरता तथा प्राण की चंचलता का चित्रण इस बात का द्योतक है कि ये आध्यात्म-जगत में भी विचरण करते हैं:—

होय जिवी होय हो, हासा होड़मो, हे साक साकाम लेका हिपिड़ हिपिड़!
सारु साकामदाक लेका जिवे मा ठोल, ठोल नोआ सेताक सिसिर वांगताहे ना॥ (गदबा)

भावार्थ : 'ये प्राण क्या है? हवा है, शरीर क्या? मिट्टी है। पीपल के पत्तों से डोलने वाले ये प्राण, अरुई के पत्तों पर पड़े जल-कण की तरह, ढुलक पड़ने वाले हैं, प्रातःकालीन शिशिर की नाईं क्षण भंगुर॥'

जीवन की क्षणभंगुरता से व्याकुल होकर जन-मानस ने जिस जगत् की कल्पना की है, वह आठ खूंटों वाला है। उसके चौथे से लेकर आठवें खूंटों के संरक्षक राम, सीता, गाय, सिंह व गांधी बाबा हैं:—

आंठ ठन खुट, आंठ ठन खुट, माकोड़ा चो जाली।
कुदुन-भांदुन माकोड़ा दखा, एके बनाली॥
गोटक खुंट चटक-मटक, गोटक खुते रीता।
गोटक खुंटे राम रहू आत, गोटक खुटे सीता॥
गोटक खुटे गऊ, रहू आत, गोटक खुटे नाहर।
गोटक खुटे गांधी बाबा, गोटक खुटे जवाहर॥ (हलबी)

(शेष पृष्ठ ४६ का)

पन्द्रह अगस्त १९४७ को जब आजादी मिली तो छत्तीसगढ़ का किसान फूला नहीं समाता। हृदय के समस्त उछाह के साथ वह गा उठता है:—

गांव के गंवइहां मैं पहिरे हौं खादी।
हमला आजादी देवाइस महात्मा गांधी॥

पड़ोसी राष्ट्रों द्वारा किये गये आक्रमणों के संदर्भ में भी लोक कवि गांधीजी का स्मरण करता है। आज बापू नहीं रहे। एकता का वातावरण छिन्न-भिन्न हो गया। प्रेम पाठ पढाने वाला अब कोई नहीं रहा। यही कारण है कि दुश्मन अब हम पर आक्रमण करने का साहस कर रहे हैं।

नावा रे सड़क मा परे है खपरा।
तोर गये ले बापू, दुश्मन, मारथे थपरा॥

दरअसल गांधीजी न केवल भारत को बल्कि संपूर्ण संसार को एक नया रूप देना चाहते थे, काश. मानव मात्र उनके उपदेशों को ग्रहण कर उनकी अपेक्षित ऊंचाई पर पहुंच पाता तो आज दुनिया का नक्शा ही कुछ और होता। आज दुनिया में इतने असुन्दर विचार न होते। हिंसा का दारुण वातावरण न होता। किन्तु अब धीरे-धीरे दुनिया यह महसूस कर रही है कि गांधीजी के आदर्शों पर चल कर ही इस धरती पर स्वर्ग उतारा जा सकता है। एक गुर्जर ग्राम–कवि के शब्दों में—

बापू तें दीघा रे देह नादान, अहिंसा अमर थई,
तारा प्रेम नी जोत अखंड, के जड़त नाशी गई॥

अर्थात् हे बापू। तेरी देह का बलिदान पाकर अहिंसा अमर हो गई। तूने जो प्रेम की अखण्ड ज्योति जलाई है उससे मानव-मन की समस्त जड़ता नष्ट हो गई।

अस्तु लोक मानस में गांधीजी का प्रभाव इतना अमिट है कि उसका मिटाया जा सकना असंभव है। उनका नाम आने वाली पीढ़ियों को जीवन की नवीन प्रेरणा देता रहेगा।

मद्य निषेध आंदोलन

बस्तर के अधिकांश वनवासी मदिरा-प्रिय है। सुरा उनकी चिरसंगिनी है तथा किसी भी स्थिति में उसका वियोग उन्हें सहय नहीं है किन्तु महात्मा गांधी के मद्य-निषेध आन्दोलन से वे अछूते नहीं रहे। प्रचार-गीत, लेजा, छेरता तथा तारा गीत के युवक और युवतियों ने तो जैसे आज इसके विरुद्ध अभियान शुरू कर दिया है:—

गांधी बाबा बल्लो सुना हो गंवरेया
मद के छांड़ा तुमी
नंगत गोठ के धरा हो गंवरेया
मंद के छांड़ा तुमी ॥घोपा॥
करेजा फोफसा जरुन जाएसे, देहें के चटपट चरुन खएसे,
धन सरेसे धरम जाएसे, मंद के छांड़ा तुमी ॥ । ॥
मंद चो जोर ने धरा-धरी, मंद चो जोर ने मारा-मारी,
मंद चेघाए से तुमके कछेरी मंद के छांड़ा तुमी ॥५॥
गांव चो झगड़ा गांए टूटे, कछेरी जातोर तुमचो छुटो,
उकील मन चो संगत छूटो मंद के छांड़ा तुमी ॥ ॥ ॥(हलबी)

भावार्थ : गांधी बाबा ने कहा है 'ग्रामीण भाइयो शराब को छोड़ दो और अच्छी बात सीखो। इससे कलेजा तथा फेफड़ा जल जाता है। शरीर क्षीण हो जाता है धन तथा धर्म दोनो ही जाते हैं। शराब के कारण पकड़ा-पकड़ी व मार-पीट होती है। लोग अदालत जाते हैं।५। शराब पीना बन्द करो जिससे गांव का झगड़ा गांव में ही निपट जाये तथा वकीलों की संगत से बच सको। ॥ ।

'लेजा' के गायक घसिया तथा महरा आदि भी इस आन्दोलन में पीछे नहीं हैं। निम्नलिखित गीत में वे मंद-प्रेमियों को सावधान कर रहे हैं।:—

लेजा, लेजा, लेजा, टोरा तेल पठेरानी घीव,
मंद-सुर के निचे छांडस,
परलो तुमचो जीव ॥
लेजा, लेजा, लेजा रे पापा। परलो तुमचो जीव ॥(हलबी)

परजा तथा माड़िया के अतिरिक्त सम्पूर्ण वनवासियों द्वारा पूप महीने की चांदनी रातों में मनाए जाने वाले छेरछेरा-उत्सव में गाए जाने वाले युवकों के छेरता-गीतों में गांधीजी के मद्य-निषेध की भावना भरी हुई है। लीजिए, नवयुवकों की टोली इधर ही आ रही है:—

मंद सुर के छांड़ते छांड़ा नीको नो हांय मंद।
भाटी बाटे जाउन दखा, खूबे लंद फंद–
हो खूबे लंद फंद।छेर छेर॥
धरा-झूमा लोढ़ा-पारा, आउर मारा पेटा।
बारा बाखना कुकड़ी चाखना, बाप के मारलो बेटा–
हो बाप के मारलो बेटा।२।(हलबी)

अर्थात् : शराब पीना छोड़ दो, शराब पीना अच्छी बात नहीं है। नशे में कुछ नहीं सूझता। भट्ठी के पास जाकर

देखो, कितना लंद-फंद होता है ।।। धर-पकड़ व छीना-झपटी और मार-पीट का अशोभनीय दृश्य हो जाता है। मांस भी चलता है। बाप को बेटा ही पीट देता है।२।

और अब बारी है तारा-गीत की गायिकाओं की, जो अपने नारी-समाज को सावधान कर रही है:—

पैसा जाउ-आय री, पैसा जाउ-आय, मंद सल्फी खाद ले पापा, इजत जाऊ आय री–इजत जाऊ आय ।।?।।
बण्डा कडरा री बण्डा कडरा, बाबलेमन वो मंद खातोर, बड़े अडरा री बड़े अडरा ।।२।।

अर्थात : पैसे बरबाद होते है री, पैसे बरबाद होते है।
सल्फी-शराब पीने पर इज्जत चली जाती हैरी, इज्जत चली जाती है।?।
बंडा कडरा है री, बंडा कडरा है, स्त्रियों का शराब पीना बड़ा बुरा है री, बड़ा बुरा है।२।

भला बताइए, गांधीजी की मद्य-निषेध की भावना को सार्थक करने के लिए घर-घर में घूमकर जितना कार्य युवक और युवतियों की ये टोलियां कर रही हैं, उतना कहीं अन्यत्र निःस्वार्थ भाव से हो रहा है? ये मौन साधक और साधिकाएं है, जिनका जीवन ही आज जैसे गांधीमय हो रहा है:—

विपन्न वनवासियों के देवता गांधी :--

अंग्रेजी शासन ने वनवासी जनता को कंगाल बना दिया था। चावल महंगा हो गया। वस्त्रों के भाव बढ़ गए। भूख-अकाल में इनका पेट छटपटाता रहा। कंदमूल भी नहीं मिलते। एक रुपये का एक सोली चावल ये कहां से खरीदते:–ए.....मांहांग चाउर, माहांग फटई, एक पाहारिया रांधा, रे एक पाहारिया रांधा।

भूख अकाल ने पेट छटपट, जंगल कड़वा रांधा ।।
अंग्रेज राज कंगाल होली, गोटक रुपिया चाउर सोली ।।(हलबी)

राम की सीता भूख की ज्वाला में जल रही थी। पेज व मड़ेया ही उसके जीवन के सहारा थे:—

परजा चो सुख गरीब चो दुख, परले दुख ने जीवसत।
गोटक सीता मंडेया संगे, ढंगल पेज के पीवसत–
हो ढंगल पेज के पीवसत।छेर छेर। (हलबी)

बस्तर के वनवासियों का जीवन जब इस प्रकार विपन्नताओं से घिरा हुआ था। उनकी सीता 'राम-बन'में भटक रही थी। वैसी स्थिति में गांधीजी के सतत प्रयास से भारत का भाग्योदय हुआ। घर-घर के दुख-दैन्य समाप्त हो गए। बस्तर के निवासी गांधी देवता को भला कैसे भुला सकते हैं:—

तैं भारत के भाग ला फेरे, अपन के साहिबी बाना फेरे, – गांधी देवता।
घर-घर दुख दरिद के मारे, निचट घुनागे रिहिस गा देवता–गांधी देवता।
तैं जिनगानी देए सबन ला, तोला भुलावों कइसे देवता–गांधी देवता ।।(छत्तीसगढ़ी)

भावार्थ : तूने भारत के भाग्य को पलटा। अपनी साहिबी बाना छोड़ दिया। दुख दारिद्र्य से प्रत्येक घर में घुन सा लग गया था। तूने तो सबको नई जिंदगी दी। हे गांधी देवता, तुझे हम कैसे भुला सकते हैं?

खादी आंदोलन :--

गांधीजी ने सम्पूर्ण भारतीय मानवता की एकता तथा उसकी आर्थिक स्वतंत्रता और समानता की प्रतीक जिस खादी के उपयोग पर बल दिया, वह शीघ्र ही निर्धन, किन्तु स्वावलम्बन-प्रिय बस्तर की जनता में लोकप्रिय होने लगी:—

नानमून छोकरा पहिरें ला पागी, गांधी बाबा के कहे पहिनबो खादी। (छत्तीसगढ़ी)

अर्थात : छोटे से बच्चे ने वस्त्र पहन लिया है, महात्मा गांधी के कथनानुसार हम खादी ही पहनेंगे। इसकी लोकप्रियता का श्रेय छेरता-युवकों को है। उन्होंने गांव-गांव में जाकर एकात्मकता सूचक खादी की वेश-भूषा पर बल दिया:—

भारतवासी ग्रामी सबे, भारत ग्रामचो देस।
खादी टोपी खादी कुड़ता, बनाऊं, ग्रामचो भेस–
हो बनाऊं ग्रामचो भेस।छेर छेर। (हलबी)

तभी तो आज भारत माता, गांधी, तथा खादी की "जयजयकार" सम्पूर्ण बस्तर में सुनने को मिलती है:—

जय जय भारतमाता चो, जय जय बलुन इया हो।
महात्मागांधी बाबा चो, सपाय बलुन दीया हो॥
सपाय पिधवा फटई खादी, एमन महात्मा चो आय गादी।
धन धन हामचो ए भारत, जाय जाय चो धुन भरुन दीया हो॥
जय जय भारत माता चो, जय जय बलुन दीया हो।
महात्मा गांधी बाबा चो सपाय बलुन दीया हो॥ (हलबी)

अर्थात : भारत माता की जय बोलना, महात्मा गांधी की जय बोलना,
सब जन खादी के कपड़े पहनेंगे, धन्य हमारे देश भारत को
इसकी जय की धुन से वातावरण को भर दो।

प्रजातंत्र और पंचायत :–

सत्य, अहिंसा और प्रेम के देवदूत महात्मा गांधी के प्रताप से भारतीय जनता स्वतंत्र हुई। बस्तर की युवतियां खुशी से झूम उठीं:—

सोली ते सोली, चाउर नापा सोली,
गांधी बाबा चो परताप ने रइयत राज होली री
रइयत राज होली॥ (हलबी)

युवक उद्‌बोधन गीत गाने लगे:—

रैयतवारी राज होली, पीला पढ़ावा।
पढ़ुक लिखुक सिखुन तुमी, राज के चलावा–
हो राज के चलावा॥छेर छेर॥ (हलबी)

तथा ईर्ष्या-द्वेष आदि की भावना को समाप्त करने के लिए, व झगड़ा-फसाद के निपटारे के लिये गांधीजी की 'पंचायत-राज की भावना का प्रसार करने लगे:—

इरखा कुचुर बाहिर डाला, सबके मिलावा,
गांव चो झगड़ा गांव टूटो, पंच वसावा–
हो पंच वसावा॥छेर छेर॥ (हलबी)

इनके प्रयास सार्थक हुए। गांव-गांव में पंचायत हो गई। दरी पर बैठकर पंच लोग न्याय करने लगे:—

गांव-गांव ने पंचायत होला, दरी उपरे बसुन गेला,
नानी-सुनी निआव एवं, गांव ने टूटे से।
दरवा हामचो बस्तर कितलो सुन्दर, पुरे हिंडेसे॥(हलबी)

पंचायतराज की एक मनोरम झांकी प्रस्तुत है:--

सुना हो गांव चो सिआन, पंचायत राज होली के।
गंवरिया गोहार करसत, पंच मन विचार करसत,
नियाव चो उजर दखा, पंच परमेसर दखा,
पाहाली तुमचो बिहान, पंचायत राज होली बे॥(हलबी)

अनेकता में एकता :--

आज बनवासी सजग हैं। उन्हें एलविन आदि विदेशी अब बहका नहीं सकते। धोखा नहीं देसकते । वे देश के लिये जीना जानते हैं तथा देश के लिए धर्म का चोला पहनकर प्राण निछावर करना भी उन्होंने सीखा है:-

देस काजे जिउक सिखा, देस काजे मरा।
आपलो देस के बचालो, कोजे, धरम बाना धरा॥
हो धरम बाना धरा॥छेर छेरा॥ (हलबी)

उनमें अब कोई फूट नहीं डाल सकता, क्योंकि फूट के परिणाम को वे अन्य भारतवासियों के साथ भुगत चुके हैं

गोंदा गोंदा तुमी होलास, टूटली देस चो सोर। :—
अलग-अलग जात होली, घटली तुमचो जोर–
हो घटली तुमचो जोर॥छेर छेरा॥(हलबी)

गांधीजी की हर बात को वे सत्य मानते हैं। स्वराज्य ही उनका नारा रहा है तथा भारतमाताकी पुकार को सुनने की उन्होंने प्रतिज्ञा की है:--

गोरी के अंचरा झुहिंहा में लूरे।
गांधीजी के झंडा दुनिया में फिरे॥
लाए ला माटी बनाए मरका।
गांधी बाबा के कहे ठोंका ठोंका॥
पावो सुराज मजा करबो।
भारतमाता के पुकार सुना करबो॥(छत्तीसगढ़ी)

भावार्थ :— स्त्री का आंचल झूही में फंस गया। गांधीजी का झंडा समस्त संसार में घूम रहा है। मिट्टी के मटके का निर्माण किया गया। गांधीजी की हर बात सत्य है। स्वराज्य हमारा नारा है। भारत माता की पुकार सुना करेंगे।

समर्पण समापन :--

यद्यपि नवीन सभ्यता के अनेकानेक आकर्षण हैं, फिर भी बस्तर के वनवासी जीवन में गांधीजी के आदर्श जादू की तरह छाये हुए हैं। कौन कहता है कि बस्तर पिछड़ा हुआ है ? जब तक बस्तर के लोकगीतों के माध्यम से गांधीजी की वाणी वनवासियों में प्राण-संचार रही है, बस्तर पिछड़ नहीं सकता। यह वह स्वर है जो लोगों में अहिंसा, सत्य, प्रेम, तथा निश्छलता की भावना का संचार करता है उन्हें महान बनाता है।

छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में गांधीदर्शन

कृष्ण कुमार भट्ट (पथिक)

लोक गीतों में व्यक्त संस्कृति विचार दर्शन इतिहास और परम्परा की लयवद्ध तान में जीवन के समय की धरोहर है। छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में जहां विचारों का दर्शन, श्रृंगार की झांकी, वियोग के सावन और इतिहास की लोक गाथा है वहीं उसके आंचलिक जीवन को गढ़ने वाले महापुरुषों के जीवन का संघर्ष है। संघर्ष के क्षणों का दर्शन है और इस दर्शन को अपने आंचल में समेट कर जीवन का संगीत छेड़ने वाले लोक कवि के जीवन की समस्याओं के बीच गूंजती राष्ट्रप्रेम के रणभेरी की ध्वनि में संस्कृति की आत्मा आने वाली पीढ़ी के इतिहास के लिए अपने वर्तमान का श्रृंगार कर रही है। भावनाओं के कोण जब समाज की सभ्यता के त्रिभुज के घेरे में बन्द हो गये तब लोक गायक ने उन्हीं रेखाओं के सुर की तानों पर अपने जीवन की विचारधाराओं का रास रचा। इस रास का निर्देशन कभी बुद्ध ने किया कभी गांधी ने और उनकी भावनाएं श्री कृष्ण बनकर नाचती रही।

परतंत्र छत्तीसगढ़ की सांस ने गांधीजी के प्रथम दर्शन में स्वतंत्रता की गंध देखी थी। बन्धनयुक्त कैदी की तरह छत्तीसगढ़के खेतों का श्रृंगार विदेशी शासन की समृद्धि की कोठरी में बन्द था और उसकी भावनाएं खाली खलिहानों में अपने मुक्त जीवन का स्वप्न देखती थी। गांधीजी के नेतृत्व की शिक्षा पर छत्तीसगढ़ के चिन्तन ने विदेशी शासन की फैलती लताओं को पानी देना बन्द कर दिया और वह इस असहयोग के परिणाम में अन्याय का प्रतिकार करने के लिए अन्यायी शासन के जेलों के प्रवेश द्वार पर खड़े होने लगी--

धुंकी साही अंग्रेज, भुइया छाइगे, सोना के चिरइया माटी के होइगे।
तिवरा के दार मा बनाये भाजी, फिरंगी होगे राजा नंदागे खाजी।

दिया मांगे बाती, बाती मांगे तेल, सुराज लेबो अंग्रेज कतेक देबे जेल॥

(इस धरती पर अंग्रेज हैजे की बीमारी की तरह फैल गये है। हमारी मातृभूमि जो सोने की चिड़िया कहलाती थी आज मिट्टी की हो गई है। तिवरा के दाल के साथ मैंने भाजी का साग बनाया है अंग्रेजों के राजा होने के कारण खाने पीने की चीजें ही नहीं मिल पातीं। दिये को बाती की जरुरत होती है और बाती को तेल की। हे अंग्रेज हमको भी स्वराज्य की आवश्यकता है। तू हमें कितना जेल देगा।)

गांधीजी की अहिंसा नपुंसक पीढ़ी के सर्वेक्षण का इतिहास नहीं है। जो कहती है जाओ इस बार माफ किया' और प्रत्येक बार वह यही गीत दुहराती है, अहिंसा अभिमन्यु के उस साहस का वरदान है जो टकराने का सामर्थ्य रखकर विजयी होने के बाद में भी वह देती है-'जाओ क्षमा करता हूं। छत्तीसगढ़ का ग्रामीण जीवन जो अपने अदर्श में कबीर और तुलसी के बोल दुहराता है अहिंसा के सही अर्थ में विश्वास करता है, अपनी जीवन का मूल्य पहचानता है:'

शंख बाजे तो साधु जागे, बम बाजे रजपुत,
ओतको बाजे मा तैं नहीं जागे रे, तोर आठो अंग कपूत।

कुकरी के पिलवा रनबन बगरे, घर-घर खाय बिलार,
होवे बेटा क्षत्री के रे, तय कै दिन रहीबे लुकाय।

गयेंव बजार बिसायेंव बीही, चार दिन के है जिंदगानी रे भैया फेर कौन मरही कोन जीही।

(शंख के स्वर से साधु जगता है बम के स्वर से राजपूत, इतना स्वर होने पर भी यदि तुम नहीं जागते तो तुम्हारी आठों इन्द्रियां कपूत हैं। मुर्गी के बच्चे इधर उधर बिखरे हुए हैं जिन्हें बिलार पकड़-पकड़ कर खा रहा है, यदि तू क्षत्रिय पुत्र है तो निश्चित ही अधिक समय तक घर के अन्दर नहीं रह सकेगा। मैं बाजार गया और वहां मैंने बीही खरीदी, यह जिंदगी सिर्फ चार दिनों की है, कुछ पता नहीं कौन जीता है कौन मरता है।)

छत्तीसगढ़ी लंगोटी

जिस समय देश 'गांधी शरणम् गच्छामि' के साथ अपने जीवन का नया इतिहास लिखने को आतुर था, छत्तीसगढ़ का सामर्थ्य स्वतंत्रता की तलवार पर अपने शौर्य का परीक्षण कर रहा था और गांधी दर्शनकी कसौटी पर अपने को खरा प्रमाणित करने के लिए इस अंचल के यौवन ने जवानी के खेल नहीं खेले। बुढ़ापे ने आराम छोड़ दिया और शैशव ने पालने से स्वतंत्र होने में अपना बचपन बिता दिया। स्वतन्त्रता के लिये 'छत्तीसगढ़ी लंगोटी' चरखे के समीप बैठ गयी और उसने कहा:--

गोरी के अंचरा भुइयां में लूरे, गांधीजी के झंडा दुनिया मा फिरे।
लाए ला माटी, बनाये मटका, गांधी बाबा के कहे ठोंका ठांका।
पाबो सुराज मजा करबों, भारत माता के पुकार सुने करबों।
नानमून छोकरा पहिरे ला पागी, गांधी बाबा के कहे पहिनबों खादी॥

(स्त्री का अंचल झूही में फैल गया गांधीजी का झंडा संसार में झूम रहा है। मिट्टी लाकर मटका का.निर्माण कर लिया गया है। गांधीजी की हर बात सत्य है। भारत माता की पुकार हम हमेशा सुनेंगे, स्वराज्य पाना हमारा आनन्द है। छोटे से लड़के ने धोती पहन लिया है, महात्मा गांधी के कथनानुसार खादी ही पहिनना चाहिये।)

गांधीजी की राजनीति ने स्वतंत्रता संघर्ष में अपनी परम्परा का उत्तराधिकारी जवाहरलाल नेहरू को नियुक्त किया था। छत्तीसगढ़ जो खादी पहनता था अहिंसा को गांधी दर्शन के अभिमन्यु की धरोहर समझता था और जो गांधी संकेत पर अपने देश का भावी इतिहास रच रहा था। गांधीजी की आस्था पर विश्वास रखता था उसने अपने आराध्य नेता के कथन में नेहरु का भविष्य देख लिया था और उसने घोषणा की थी:--

नवा घर मां गड़ाये थुनिहा, नेहरू बाबा के कहे मा चलथे दुनिया॥

(नये घर में खम्भा गड़ा दिया गया है, जवाहरलाल नेहरु की बात दुनिया मानती है।)

सभास्थल में गांधीजी की मृत्यु, मृत्यु नहीं युग पुरुष की हत्या छत्तीसगढ़ चौंक गया था क्या इतिहास की भी हत्या हो सकती है ? पं. जवाहरलाल नेहरू सरदार पटेल क्या इनका घेरा,कोई भी इस हत्या को नहीं रोक सका ? उस बन्दूक की मृत्यु क्यों न हो गई जिसने युग के सीने को घायल कर दिया। मां भारती को विश्वास ही नहीं हुआ कि स्वतंत्र होने के बाद भी कोई उसके प्रिय पुत्र की हत्या कर सकता है--

चला हां ओ गांधी तैं कइसे जुझ गये सभा मां,
अरे तैं कईसे जूझ गये सभा मां, गांधी,

तोर मंत्री, तोर मंत्री, तोर मंत्री जवाहरलाल,
गांधी तैं कइसे जूझ गये सभा मा।

(गांधीजी तुम किस प्रकार सभास्थल में जूझ गये ? तुम्हारा मंत्री तो जवाहरलाल नेहरू थां न। फिर तुम कैसे सभास्थल में मार डाले गये।)

स्वतंत्रता के बाद की परिस्थितियां, अपने पैरों की नींव पर खड़े होने की देश की कोशिश परतंत्रता के बाद स्वतंत्र चिन्तन, गांधीजी का अभाव और उनके सपनों के निर्माण में लगी। भारत कुछ कहने के लिये छटपटा रहा था। परतंत्रता से लड़ते हुए लंगोटी वाले बापू ने गुलामी से संघर्ष ही नहीं किया उनका दर्शन इस बीच अपने गृह कलह की समस्याओं से भी संघर्ष करता रहा। छत्तीसगढ़ को लगा वह गांधीजी के अभाव में उनकी आत्मा से चेतना प्राप्त कर रहा है--

हिन्दु ला राम राम, पठान ला सलाम,
बाँबा ला बन्दगी, सतनामी ला सतनाम।
नवा सड़क मा दसाये गिट्टी, मैं तो पढ़ लियेंव संगी लिखथंव चिट्ठी।
सेसन मा हां रेव कहिसे वकील, जबलपुर मां जाके करदे तैं अपील।

(मैं हिन्दुओं को राम राम, मुसलमानों को सलाम बाबा को वन्दगी और सतनामियोंको सतनामकहने में विश्वास रखता हूं नई सड़क पर गिट्टी डाल दी गई है। आज मैं पढ़ने लिखने के बाद चिट्ठी लिख रहा हूं। सेशन जज के न्यायालय में मुकद्दमा हारने के बाद तुम जबलपुर जाकर उच्च न्यायालय में अपील कर दो। वकील के ऐसा कहने में सही तथ्य है।)

'भारतमाता के लाड़ले पुत्र एवं हमारी आत्म संस्कृति के सचेतक गांधी की हत्या हो गई हमारी ही हथेलियों में से किसी की हथेली ने उस युग पुरुष के इतिहास का गला दबा दिया। आज हमारे अनाथ मस्तिष्क के पास उनका चिन्तन ही बचा है। सोचता छत्तीसगढ़ का कृषक अपने देश की धरती पर अपना कर्त्तव्य सोचता है अपनी माटी की जीवन का अंतर्द्वंद्व अपनी समस्याओं के जंगल के बीच खड़े कृषक को लगता है कि गांधी बाबा जो कह गय हैं के वही हमारे जीवन का सत्य है और उनकी आत्मा की राह पर चलते हुए हम अपनी फसलों के भगवान से अपनी मेहनत के पसीने का मूल्य मांगेंगे--

नहाये खारे खाये पकवान, हमर धरम के लड़ाई बर लड़े भगवान।
खादी ला पहिना अउ चरखा ला काता, सुराज के झगड़ा ला सब झन बांटा॥

(जंगल में स्नान कर मैंने पकवान खा लिया है, हमारी इस धर्म की लड़ाई के लिए तो भगवान भी लड़ेंगे। तुम सब चरखा कातो और खादी पहिनो, अपने स्वराज्य की समस्याओं के झगड़े को हम सब आपस में बांट लेंगे।)

और वह गांधीजी के चिन्तन को अपने कर्मों में दुहराता हुआ देश के इतिहास पर आगे बढ़ जाता है।

गांधीजी एक साहित्यकार की स्मृति में

– (बन्दे अली फातमी)

गांधीजी को मैंने पहली बार रायगढ़ में रेलवे स्टेशन पर देखा था, जब वे हरिजनोत्थान के दौरे पर कलकत्ता की ओर जा रहे थे। मैंने उनका स्वागत एक कविता के द्वारा किया था, जिसका पहला बंद यह है:--

असहयोग के सहयोगी हे,
सत्याग्रह के हठयोगी हे,
दीनबन्धु हे परमोदार,
स्वागत, स्वागत है अवतार।

पूज्य बापू ने कविता स्वीकार कर, उसे महादेव भाई या प्यारेलालजी को दे दिया था। प्लेटफार्म पर खड़ी भीड़ ने, 'महात्मा गांधी की जय' का नारा लगाया। इसपर उन्होंने अपनी विशिष्ट शैली में कहा था' जय जय क्या चिल्लाते हो–हरिजन भाइयों के लिये पैसा दो' और हाथ फैला दिए। लोगों ने जो कुछ हो सका दिया भी।

इसके बाद नागपुर में स्व. राजेन्द्र बाबू की अध्यक्षता में होने वाले अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन के अवसर पर उन्हें देखा था, जहां गांधीजी 'भारतीय साहित्य परिषद' की अध्यक्षता करने के लिये आये हुए थे। छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व करने वालों में मैं भी एक था। अन्यों में रायपुर के स्व. रामदयाल तिवारी और राय-गढ़ के ही एक श्री मुकुटधर पांडेय के सिवा और किसी का स्मरण नहीं आ रहा है।

सम्मेलन के खुले अधिवेशन में एक दिलचस्प घटना घटी थी। एक नवजवान कोई पर्चा बांट रहा था। जब वह पं. जवाहरलालजी के पास पहुंचा और उन्हें वह पर्चा दिया, तो उन्होंने उन्हें बहुत जोर से डांटा। नवयुवक बेचारा कांपने लग गया। उससे सारे पर्चे छिना लिये गये। नेहरूजी ने खड़े होकर कहा कि "जिनके हाथों पर्चा पहुंच चुका है वे उसे न पढ़ें।" सबने मोड़कर पर्चा अपने जेब में रख लिया। पर्चा में भगत सिह की फांसी का जिक्र था,जिसमें गांधीजी पर आरोप लगाए गये थे। पंडितजी ने कुछ स्पष्टीकरण भी दिया था। बापू की शान्ति एवं जवाहरलालजी का तमतमाना देखते ही बनता था। मैं मंच के सामने ही नवीनजी के पास बैठा था। बाद में इसी मंच में कवि सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जिसमें मेरी निम्नांकित गीत-पंक्तियां बहुत पसन्द की गई थीं:--

कसक थी दिल में यही, क्या हूं भला किस काम का हूं,
शब्द हूं या नाम हूं, अपदार्थ या बेनाम का हूं।
द्वैत का चोला पहन यों ऊब एकाकार आया।
देखने निज रूप में सजकर यहां शृंगार आया।

इसी जमाने में जबकि अंग्रेजी शासन के अंतर्गत यू. पी. में भी पं. गोविन्द वल्लभ पन्त के नेतृत्व में कांग्रेस ने अपना प्रथम मंत्रिमंडल बनाया था, लखनऊ में मदहे-सहाबा और तबर्रा का झगड़ा शुरू हुआ। जब गांधीजी ने ऐलान

किया कि तबर्रा वालों का पक्ष उनकी समझ में नहीं आया तो उन्हें मैंने एक पत्र में उस पक्ष का औचित्य बतलाते हुए भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र की एक छोटी सी किताब 'पंचपात्र' भी सबूत में भेजी। उस विस्तृत पत्र में 'कुरआनी तबर्रा' क्या होता है यह भी स्पष्ट किया गया था।

मुझे बड़ा गर्व अनुभव हुआ जब तत्काल गांधीजी ने मौलाना अब्दुल कलाम आजाद को लखनऊ भेजा और अहरारियों ने अपना आन्दोलन वापस ले लिया। तबर्रा भी सार्वजनिक रूप से बन्द कर दिया गया था। मुझे महसूस हुआ कि इसका अप्रत्यक्ष श्रेय मुझे ही मिल गया है। और इस तरह राष्ट्रीय कांग्रेस एक पूरी की पूरी कौम; जो सदा से राष्ट्रवादी रही है, के खिलाफ फैसला देने की बदनामी से बच गई।

इसके आसपास एक रियासती कार्यकर्त्ता के नाते मैंने गांधीजी को लिखा था कि हमें भी अपने यहां कांग्रेस कमेटी कायम करने की इजाजत दी जाय। इसका जवाब यह आया कि मैं इस विषय में जवाहरलालजी से संपर्क साधूं। वे आल इंडिया पीपुल्स कांफ्रेंस के प्रेसीडेंट हैं। पंडितजी ने सूचित किया कि कांग्रेस की नीति फिलहाल देशी रियासतों में सीधे हस्तक्षेप करने की नहीं है। इसलिये आप अपने यहां प्रजा मंडल बनायें।

रायगढ़ बनाम अन्यायगढ़ :--

आखिर मैंने 'छत्तीसगढ़ राज्य प्रजा मंडल की आवश्यकता' शीर्षक एक लेख 'कर्मवीर' में लिखा और 'प्रताप' के माध्यम से मुक्त क्रांतिकारियों को छत्तीसगढ़ की पिछड़ी रियासतों में काम करने का निमंत्रण दिया जिससे समूचे छत्तीसगढ़ रजवाड़ों में विशेषकर रायगढ़ के शासकों में तहलका मच गया और कर्मवीर के रियासत प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगाने के साथ-साथ मेरी बुरी तरह पिटाई की गई जिसकी दर्दनाक खबरों से तड़पकर दादा माखनलाल चतुर्वेदी ने अपना प्रसिद्ध मार्मिक अग्रलेख 'रायगढ़ या अन्यायगढ़' लिखा था।

खैर, इसी दरम्यान रायपुर में मेरे प्रस्ताव पर मध्यप्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने निश्चय किया कि बिलासपुर निवासी हिन्दी के पिंगलावतार बी. जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' को अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया जाय। विचार था कि यह अभिनन्दन ग्रंथ एक ऐसा हो जो भानुकवि द्वारा बीजारोपित वृक्ष के पल्लवित, पुष्पित एवं फलित रूप का प्रतीक बन सके। मैंने इसी दृष्टि से ग्रंथ की एक सर्वांग पूर्ण रूपरेखा तैयार कर ली थी। सामयिक पत्र पत्रिकाओं में अनेक लेख लिखे थे और देश भर के साहित्यिकों से पत्र व्यवहार किया था। परन्तु खेद है सम्पादन में मेरा हाथ न होने अथवा किन्हीं अज्ञात कारणों से ग्रंथ जैसा चाहिये था वैसा नहीं बन पाया और मेरे द्वारा एकत्रित सामग्री का भी पूरा उपयोग नहीं हो सका।

मैं इसी सिलसिले में बापू का आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु वरदा-सेवाग्राम भी पहुंचा था, जहां काका साहब कालेलकर का मेहमान रहा था। वहीं संयोग से 'भारत में अंग्रेजी राज के लेखक सुन्दरलालजी से भी मुलाकात हो गई जिन्होंने मुझसे कहा था कि आपका स्थान रायगढ़ में नहीं 'विश्ववाणी' में है। बाद में भाई मंगलदेव शर्मा जर्नलिस्ट के जरिये मुझे इलाहाबाद आने के लिये भी कहला भेजा था।

संभवतः इसी यात्रा में डा. रामकुमार वर्मा भी मिल गये थे। वे बड़े तपाक से मुझसे लिपट गये। उन्होंने बताया कि जब वे रायगढ़ दरबार में 'चक्रधर पुरस्कार' ग्रहण करने के लिये आये हुए थे–किसी प्रकार मुझसे मिलना चाहते थे परन्तु इच्छा रहते हुए भी न मिल सके। जब मैं रियासती अत्याचार का शिकार हुआ था–वे रायगढ़ में ही उपस्थित थे। उन्होंने जब वे दीवान साहब के साथ कार में जा बैठे–मेरे दुखी पिता द्वारा कार रोके जाने की बात भी बतलाई।

"बैथो-बैथो" :--

वर्धा में वर्माजी की किसी आश्रमवासी से झड़प हो चुकी थी। उनपर इसकी अच्छी प्रतिक्रिया नहीं प्रतीत होती थी। वे वापस जाकर अखबारों में मनकी भड़ास निकालना चाहते थे। मैंने उनसे कहा था–वर्माजी आप तो तीर्थ-राज (प्रयाग) से आए हैं। इस राष्ट्र-तीर्थ (वरदा) में देवता दर्शन पाकर आप यह सब कुछ भूल जायेंगे। जब वे दुबारा मिले तो उन्होंने मेरी तस्दीक की।

यहां मैं एक अलौकिक दृश्य का उल्लेख करूं तो अप्रासंगिक न होगा, जिससे मैं बहुत ज्यादा प्रभावित हुआ था और जिसकी मुझपर जबर्दस्त छाप पड़ी थी। गांधीजी विलासपुर आए हुए थे। सभास्थल पर दर्शनार्थियों का जन-समूह उमड़ पड़ा । सभी स्थानीय नेता बैरिस्टर छेदीलाल, डा. शिवदुलारे और अमरसिंह सहगल आदि उसको शांति एवं नियंत्रित करने में असमर्थ थे। बापू मंच पर खड़े हो गए। उनके चिकने सिरोभाग पर सूर्यकिरणें सीधी पड़ रही थी जिससे उसमें एक अजीब सी चमक पैदा हो गई थी। देखने वालों की आंखें झंप रही थीं। उनके पोपले मुंह से 'बैथो बैथो' निकलते ही सारी सभा ऐसी शांत हुई कि जैसे सब पत्थर के बन गये हों या वहां कोई भी न हो सिवाय बापू के। सारा वातावरण बापूमय। जब तक बापू बोलते रहे यही स्थिति रही। ऐसा मालूम होता था जैसे कोई जादूगर मंत्र पढ़ रहा हो और सब लोग मंत्रमुग्ध हो गये हो। न हिलना न डोलना, बस चुपचाप सुनते रहना। भाषण समाप्त कर बापू जब मंच से उतरने लगे तभी जन समूह में फिर हलचल पैदा गई।

अब आइए फिर वर्धा की ओर। श्रीमन् जी (श्री मन्नारायण अग्रवाल) के यहां से मिलने का समय निश्चित हुआ और मैं दूसरी सुबह गांधीजी से मिलने के लिये चल पड़ा। बापू की कुटिया के दरवाजे पर ही राजकुमारी अमृत कौर मिल गई। वे शायद मेरी ही प्रतीक्षा कर रही थीं। मुझे देखते ही उन्होंने पूछा–क्या आप ही बन्दे अली फातमी हैं? मेरे जी हां कहते ही उन्होंने मुझसे कहा जरा ठहर जाइए मैं अभी बापू को खबर करती हूं और वे अन्दर चली गईं। कुछ पलों में ही बाहर आकर उन्होंने कहा–चलिये बापू बुला रहे हैं। मेरे कुटिया में प्रवेश करते ही बापू ने कहा–मैं तो भानुकवि को जानता नहीं। फिर किस तरह उनको आशीर्वाद दूं। लेख चाहिये तो काका साहब से ले लो। मैंने निवेदन किया–बापू काका साहब से तो लेख पहले ही ले चुका हूं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के एक अध्यक्ष की हैसियत से हमारे प्रयत्नों को आप भी आशीर्वाद दीजिये। उन्होंने कहा–सो तो है। और क्या चाहिए? मैंने सविनय कहा–कि हिंद स्वराज्य के प्रणेता से हिन्दी का हरेक सेवक जिसे वे जानते हों या न जानते हों–आशीर्वाद पाने का हकदार है। कहने लगे–कवि हो न अच्छा जाओ उनको भी आशीर्वाद है। मैंने कहा–यों नहीं। अभिनन्दन ग्रंथ के लिये लिखित रूप में चाहिए।।

इसपर बापू ने कहा–अच्छा तो मैं काका साहब से पूछकर लिख दूंगा। ग्रंथ प्रेस में जाने लगे तो लिखना या एक दफे आ जाना।

उस समय कोई बैठक चल रही थी। वहां काका कालेलकर तपस्वी सुन्दरलाल और कृष्णदास जाजू प्रभृति विद्वान बैठे हुए थे। बापू ने मजाक किया–देखो ये लोग मुंह देख रहे हैं। इनके समय में तुमने कटौती कर दी। अब आओगे तो तुमको ज्यादा समय दूंगा। और मैं हंसकर नमस्कार करता हुआ चला आया।

इसके पश्चात न उनके दर्शन हुए न पत्र-व्यवहार ही जारी रह सका। फिर वह घड़ी आई कि उनकी शहादत से सकते में आ गया जिसके टूटने पर वे साख्ता जबान से एक दोहरा (निकल गया)। जिसको इस पुण्य संस्मरण के अन्त में अवश्य दोहराना चाहूंगा:--

दल-दलदल में हैं, फंसी आज राष्ट्र की देह,
उठो राष्ट्र के प्राण तुम, होकर मुक्त विदेह।।

ग्राम्य गीतों में गांधी

– फूलचन्द श्रीवास्तव

अहो भगवान हमला बनाये तें हर कावर जी किसान।
खेत बनायेन, पार बनायेन, रुख पतेरा काट गिरायेन।
झोरखी. डोंगरी, नरवा, नदिया, पाट पटी के डोली बनायेन॥
ओमा बोथी धान, अहो भगवान हमला

सांप, बिच्छू, टेटका, घिरिया, खोजरा, चांटी., मेकरा, गोहें, छेवुंदिया.
अदरौली, मुसड़ी, दीयां, टिड्डी नीली, मेटो, चिराई, चुरगुन, मुसुवा,
छुछवा, जम्मोले अपन जी वचा के दूटी लूथी धान। अहो भगवान हमला बनायं
बाघ, भालू, हुरें, कोल्हिया, चितवा, तेंदवा, कोटरी, खरहा, हाथी, घमः वेंरा,हरना भैंसा, कोक, साटी बरहा।
जम्मो जन्तु मार भगा के। हमन अन नादान। अहो भगवान हमला बनायें॥

झोरी झोरि मेहा बरसे, घड़धड़ घड़घड़ वादर गरजे। विजली चमके रात छिटके।
बिना छितोरी छाता के हम घाई बांधे जान। अहो भगवान हमला बनाये।

छितका कुरिया चूहत हवे, लोग लइका भीजत हवे। कोनहा कोनहा इहो लुकाथी उहां लुकाथी जीव बचाथी।
तरी गिल्ला उपर हेल्ला, रहे के नइये ठान। अहो भगवान हमला बनाये॥

खटखट खटखट दांत बाजे, मारे जाड़ देहे कांपे। खोर्रा खटिया गोरसी लट्ठी पहिर लंगोटी पैरा भीतरमूठा बांधें गुरमुट के। अपन बचाथी प्राण। अहो भगव.न हमला बनाथी॥

धकधक धकधक घाम झूरे। तीपत भौमरा देहे ध्रूरे। खरी मंझनियाँ में पार बनायी। लहू जराथी, मूड़ पसीना गोड़ बोहाथी। बासी गोंदली, नून, मिरचा खाके हमर दिन चलाथी। अतेक विपत के धान कमाके ओला देथी दान। अहो भगवान हमला बनाये॥

छत्तीसगढ़ का ग्राम्य जीवन महात्मा गांधी से अत्यधिक प्रभावित रहा है। इसका सजीव चित्रण हमें श्री फूलचन्द श्रीवास्तव संगीत मास्टर, रायगढ़ के "ग्राम्य जीवन" की रचनाओं में मिलता है। उनकी रचनाओं को मूल रूप में (छत्तीसगढ़ी भाषा) ही प्रस्तुत किया जा रहा है।

—सम्पादक

गोड़ मूड़ ले चिखला मताथी। खुर्रा, लई, रोपा, जगाथी। नागर कोपर लतपथ होके,गरुवा बैला, सदबद होके। गोबर खातू, राख गिल्ला, माई पिल्ला पेटेस, पेटेस पसीया पीके। बेरा हम बितान। अहो भगवान हमला बनायें। (श्री गांधीजी गांव के खेत के एक तरफ चलीन तो का देखत हवें कि खेत में नागर जोताई होवत हवे। खेत मा चार पांच झन किसान काम करत करत गीत गावत हवें) (अल्पाहार का समय है सबेरे)।

गीत :--

आये पानी झिमिर झिमिर, खेत में नागर हाथ तुतारी। बोले संगी अर्रततातत।
बैला भूमि के धनवान। बोले संगी अर्र ततातत ॥

चलिस नोनी ठुमुक, ठुमुक, कांख में टूरा, भेर धुर्रा, अंग भाते, भभूत पोते, टुकना बोहे धान, रेंगथे बघनिन समान। आयें पानी झिमिर झिमिर॥

मगन होके किसान बोले आगे मोर बासी। चेहरा झलके हांसी। गंगा जमुना मिलन होगे-बसे बीच कांसी। तीरथ प्रधान, अन्नपूर्णा स्थान। नन्दी ऊपर बैला बैठे शिव शक्ति महान।

बैला भूमि के धनवान। झिमिर झिमिर आये पानी।

बाप बेटा दूनो खाय, चार दाँना भात गिराये, मां उठाये बोले हंसा मधुर बोली, एक बरस मा एक दाना जेकर खातिर ताना नाना। हम कमायेन दूसराखाये।कुछु कहे ले डांट देखाये। अबोध जेकर प्राण। बल बुद्धि बिन ये भवसागर अगिन कुण्ड समान। बैला भूमि के धनवान। आये पानी झिमिर झिमिर ।

यहि सब ला देख सुन के श्री गांधीजी के मन में मानवता जाग उठिस और सत्य दया क्षमा और शान्ति के बल में भारत खण्ड के बन्धन काटके स्वराज्य स्वतंत्र कर दिन। गांधीजी सब मनुष्य ला एकच समझत रहिन। ऊंच-नीच के विकार नी रहिस-गांधीजी के मन में। आदमी ला सर्व शक्ति भण्डार समझन रहिन। यह काम ला करके संसार में नाम करके अमर हो गइन। जब गांधीजी–श्री जगन्नाथ पुरी गइन तो वहां के अनन्त बाजार जहां भोजन दार, भात, साग इत्यादि के दूकान है वहां जाके आनन्द हो गइन। कारण वहां ब्राह्मण क्षत्री,वैश्य शुद्र सब समान एक साथ बिन विकार के भोजन करत पाइन। गांधीजी के चार हथियार रहिस, ब्रह्मचर्य व्रत, सत्य, पर हितार्थ सर्वस,तन मन धन त्याग अनसन से सब शुद्धि और किर्तन। यही चारों के बल्ले संसार में अमर नाम प्राप्त करिस। संसार में स्वराज्य बर कितना कष्ट पाइस और विजय पाइस-- देश विदेश में गांधी नीति बर शीश झुकादिन।

गांधीजी जब संसार ला त्याग दिन तब नाथूराम गोडसे कारण बनिस ।

महा–बलिदान

वो पापी वो बैरी रे, गोली काबर तै चलाये।
भारत मां के रतन बेटा, कोरा ले उठाये। गोली काबर तैं चलाये॥
देव लोक में जनम पाके, का बूता कर डारे,
धन के खातिर रावण होके, गांधीजी ला मारे॥१॥
कतेक विपति सह सहके गांधी घर बनाइस,
जुग जुग के भारत माता, बुड़ेला उबकाइस॥
जगत भर के धारन खूंटा काबर तैं उसकाये॥ गोली॥

तीस जनवरी उन्नीस सौ अड़तालिस सांझ बेरा, प्रार्थना में गोली चलिस टूटगे बसेरा।
शनिचर के बिरला घरले चलिस विमान भारी, जमुना तीर चिता देख के रोइन सब नरनारी।
तीन गोली में तीन लोक में नाथू कुल बूड़ाये॥ तैं गोली॥
हिन्दू मुसलमान देखे तोर मन में नाथू, थोथे तो बिचार रथे तैहर आगु पाछू।
महात्मा के चल देहेले का के का होजाही, कौन जानत रहसि चांटी हाथी ला धर खाही।
मोहन गांधी अमर होंगे, जगत नी भुलाय॥ गोली॥

गोली खाके आत्मा बोले ओंकार के बानी, अंतिम बखत राम बोले पीव अमर पानी।
चारो तरफ रेडियो कहै उड़गे गरीबदाता, नवखण्ड पृथ्वी रोय रोय भारत माता।
धन रे विधाता तैंहर एसन दिन दिखाय॥ गोली॥

आहार जीते, भोग जीते, डर, भय ला मारे, धनधन तैं गांधी बाबा नींद संग तैं हारे।
शान्ति माता धीरज धरीहा तूंहर येहर बाना, तूंहर आंसू गीरे ले हो जाय ताना नाना।
कतको लहू पीयले ये पेट नी अघाय॥ गोली॥

पाप के कुल्हरिया नाचिस तोर मन में नाथू, दीन रात तैं भजत रहे मोर बापू बापू।
महात्मा ला बलि देके, तैं बग फल पाय, वो दानव देव संग में, तहूं नाम कमाय॥
आखिर फांसी झूल झूल के तहूं प्राण गंवाय॥ गोली॥

मद्य-निषेध :–

मद के मतवारी जी के काल हवे।
गांजा पीके खांसत भरे, माखुर खाके थूके।
अपन पैसा मंद पीके, कूकूर ऐसन भूके।
मान जाथे इज्जत जाथे, धन मन जन सब खोथै।
दाई माई ला चीहें नहीं, मुरदा कसवन मोथे॥
धन मद में बौराये रथे, अपन पर नहीं जाने।
मोर राज मोर भुइयां कथे, धरम सबो ला साने॥
बल मद होते ऐंठ रेगथें, मेघनाद कस बोले।
बुद्धि फांस में फंसते फसत, केरा पान कस डोले॥
बुद्धि मद में अहंकार में अहंकार बस, कहिथे ए जग मोरेच।
तीन गुन के कोरी परते बुड़िज जाथे सोरेच।
काम मद के पीयते पीयत, अंधवा हो बौराथै॥
दावां धरथे तन के भीतर, जीते जी मर जाथै।
चोरी दारी हत्या मिथ्या, ईकर नीशा भारी॥
मोर तोर के माया मद है, मन राजा भंडारी॥
भक्ति निशा ब्रह्म धाम के, विपती कौन बखाने।
छै रस मद है जिभ्या खातिर, अमृत पीवत जाने॥

पराधीनता :-

मोला निचट नी सुहाय पराधीन के रहाई।
मोर गांधी बाबा आइस, हमला चरखा चलवाइस,
कतक विपत उठाइस, अपन गोठला बताइस,
रहंटा पोनी चरखा कथें, ढेकी धानी हरम भाई॥ मोला॥
तीन रंगिया धजाला फहराइस, कांग्रेस पंच ला बैठाइस,
अपन सुराज कर बताइस, सत के डहर ला दिखाइस।
ऊंकर अहींसा धरम छोड़ के, फूट में होवत है लड़ाई॥ मोला॥
सवो देखा अपना हाल, जम्मो होगेन न कंगाल,
ठोली बोली है, जंजाल, मूड़ में बैठे हवै काल ।
गांजा माखुर मंद कूकरी में, हमर फूंकत थी कमाई॥ मोला॥
ये मोर हिंदुस्तानी भाई, सगा पीरित माई दाई,
लोग लेका ला पढ़ाई, हमर होही जी भलाई।
गांधीजी के आतम बल, जागिन शहर और गंवाई॥मोला॥
अहिंसा सूत के जी सबाना, छोड़ के होवों ताना नाना,
भाई भाई लाला माना, नीति धरम सवो जाना॥
जम्मो जुरमिल के रही भारत मां के गीत गाई॥मोला॥
खादी ओन्हा ला बनाई, धोती पीछोरी चमकाई,
जम्मो मील ला धसकाई, अपन हाथ में कमाई,
अपन बूता ला करेले जग में होही जी भलाई॥मोला॥

बंदना कोशल प्रांत :-

जै जै कौशिल्या के देश।
धोती पगड़ी थाता छितौरी, जेकर भूषा भेष॥ जै जै॥
छल कपट कछु नहिं जाने, ब्राह्मण विष्णु खूविच जाने।
माटी होथे परहित खातिर, पकाये अपन केश॥ जै जै॥
छत्तीसगढ़ के छत्तीस बोली, जोड़ देहे ले ले नवधा गोली।
बौराके जब उठ देहे ले, नहीं देखे अपन शेश॥ जै जै॥
अर्र ततातत गीता गाइन, हलधरजी के मंत्रा पाइन।
अपन खाके परला पोसे, नी जाये विदेश॥ जै जै॥
नून बासी कोंदली संग खाये, भाजी लाला साग बनाये।
भोग बिलास ले मन मार, जोग साधथे अशेस॥ जै जै॥
जोन गरभ राम जनम पाइन, धरम करम के डहर बताइन।
ब्रह्म शक्ति है श्री राम सीता, सपना देश विदेश॥ जै जै॥
राम शबद है सूरज कीरण, सागर लहरा तारन मारन।
जंतर मंतर तंतर भारत, हरथे जीवन कलेश॥ जै जै॥

मोर गांधी बबा आइस

सुनो सुजन माहन, तुमन देखा जी किसान।
ओमन हवे बलवान कुछु नहीं जाने॥
आगी पानी नी डराये, झड़ी झंकर नी पराये।
सहिथे संकट महान, कुछु नहीं जाने॥
सावन भादो के अधियार, जाके बांधथे खेत पार।
रात घिटके सुनसान, कुछु नहीं जाने॥
पहिरे पंचहथ्थी कछोरा, धरे हवे खन्ता सोंटा।
बांस छाता मुड़ में तान कुछु नहीं जाने॥
कुवार कार्तिक पाके धान, हसिया धरे है किसान।
माखुर चोंगी खोंचे कान, कुछु नहीं जाने॥
दू मन किसानिन धान बोहे, लक्ष्मी छत्तर मुड़ में सोहे।
रेंगथे बघनिन समान, कुछु नहीं जाने॥
किसान बोहे दू मन कांवर. देखा इकर जोड़ी जांवर।
ए मन वीरहे महान, कुछु नहीं जाने॥
आगू पाछू लोग लइका, बोहे छोटे छोटे बोझा।
लुसुर लुसुर कुदान, कुछ नहीं जाने॥
कोठार मीसिन धान रास, कांटा कुर्री के खोदास।
सूपा धूकिन धूकान, कुछु नहीं जाने॥
ठेटरी, गुजहा, खुरमा, चीला, बैठे खाथें माई पिल्ला।
आहार, आनन्द विधान, कुछु नहीं जाने॥
नागर कोपर औ अड़भाही, घर के निकलिन टिड्डी शाही।
बैला भैंसा के धनवान. कुछु नहीं जाने॥
माई पिल्ला, गदविद गदबद, चिखला मातिन सदबिद सदबद।
लई रोपा धान जगान, कुछु नहीं जाने॥
मोर गांधी बबा आइस, अहिंसा धरम सिखाइस।
भागिन भूतवा प्रधान, कुछु नहीं न जाने॥
अंग्रेजी रेंगही जोन चाल, हो ही यूरप कस हाल,।
कहहीं जग बेईमान, कुछु नहीं जाने॥
अपन नाम के आधार लाला होही बेड़ा पार।
मौन भजन महान, कुछु नहीं जाने॥

गांधी देवता

—नारायणलाल परमार

तैं भारत के भाग ल फेरे, अपन के सहिबी बाना हेरे ।। गांधी देवता ।
घर-घर दुख दरिद के भार, निचट घुनागे रिहिस गा देवता ।
तैं जिनगानी देये सबन ला, तोला भुलाबों कइसे देवता ।। गांधी देवता ।
गोरिया मन के करत गुलामी, दिन बीतत गा रहिस हमार ।
नंगा के हमरच कौरा हमला, कहे निपोरवा भुकड़ा गंवार ।। गांधी देवता ।।
तैं घर-घर सत दिया ला बारे, प्रेम के ओमा तेल लाहारे ।
मनमंदिर के अंधियारी मा, जोत जगाय तैं भारत मा ।। गांधी देवता ।।
गोठ हमर अपराध रिहिसगा, तब ले बोले के साध रिहिसगा ।
भारत मैया के करेन वन्दना, कोड़ा भइगे हमर कंगना ।
रोयन न खांसेन खिल खिल हांसेन, अनयायी के कतका बल गा;
अमरन कबहूं जगत में छलगा, गोली बारूद बामों सिरागे
बात ला कोन्हूं छुए न पाइन, तैं जस बोले, हम तस बोलेन, ।
तैंजस रेंगे, हम तस रेंगेन, दुनिया जानिस मनखे केगा, अड़बड़ होय अन्तस के बल, ।।गांधी देवता ।।
हममन भुलागे रहे न अपन ला, ग्यान देय ते आइस सुरता ।
तैं हमन ला काम चिन्हाय, ठौर-ठौर में राम-चिन्हाय ।
तोर चरन परसादे मा, दुनिया के आंखी उघरगै ।
धरम ला चिन्हेन प्रेम ला जानन ।। गांधी देवता ।।
मइनसे मइनसे ले दुरिहा रेंगे, चले रिहिस अनियाव गा जैसन ।
देख परोसी, जरे परोसी, देख भर्री के रोड़ा रहिसगा ।
तैं सब्बोचला कहे बरोबर, पाठ पढ़ाय कठिन धरोधर,
धारिन तिरंगा झण्डा सबमन, बोलिन जय जय भारत माता ।। गांधी देवता ।।
चरखा पाइन घर के तिरियन, सुधरगे उन्कर घर के जीवन ?।
बूड़त बेरा पार उतारे ।। गांधी देवता ।।
जीवन के विश्वास ला पायन, हम सुराज के गीत ला गायन ।
अपन एकता अमर धरम ले, पवरित मन ले, बचन करम ले ।
तोरच राग मां राग मिलायन, जानेन देय बर जीवन दान ला ।
अगुवा बन के तैं हर देवता, भारत के मरजाद बचाँय ।।गांधी देवता ।।

सुराज के गीत

-- पं द्वारिका प्रसाद तिवारी, 'विप्र'

देवता बनके आये गांधी, देवता बन के आये।
अड़बड़ अटपट काम करे तै॥
घर-घर अलख जगाये।।गांधी देवता॥

राम कृष्ण अवतार ला जानिन रावण कंस ला मारिन।
हमर देस ला राक्षस मन सों लड़-लड़ दूनों उबारिन॥
चक्र सुदर्शन धनुष बान ला रहिन दूनों झनधारे।
तैं हर सोझे मुह मा कहिके अंगरेजन ला टारे॥
सटका धरके पटकू पहिरे चरखा ला चमकाये॥
गांधी देवता बन के आये॥।२॥

हमर देश के अनला जन ला धन ला जम्मो लुटिन।
परदेशीयन के लड़वाये ले भाई से भाई छूटिन॥
देश ला करके निचट निहत्था उल्टा मारैं शेखी।
बोहे गुलामी करत रहेन हम उखरे देखादेखी॥
तै आंखी ला हमर उघारें जम्मो पोल बताये॥
गांधी देवता बन के आये॥।३॥

पंचम जार्ज तोर दरसन बर तोला बिलायत बलाइस।
गोरी बोकरी संग मा जाके-गोलमेज हो आइस॥
राजा के आगू मा तै फेर बैठे देस के दशा बताए।
अपन जादू के डण्डा फेरे ओहू ल अपन बनाये॥
पटुका पहिरे राजा घलो सो हाथ मा हाथ मिलाये॥
गांधी देवता बन के आये॥॥४॥

सुराज के गीत में श्री विप्रजी की वे समस्त रचनाएं सम्मिलित हैं जो १९४७-४८ में लिखी गईं। इन रचनाओं से यह ज्ञात होता है कि छत्तीसगढ़ के जन मानस पर महात्मा गांधी का गहरा प्रभाव पड़ा है।—

—सम्पादक

तोर करनी ला कतेक बताबो शक्ति नइहे भारी।
देस विदेश, गांव-गांव मा तोर चरखा है भारी॥
तैं उपास कर करके-मौनी-अनके करे तपस्या ।
अंगरेजी अवगुन ला मेटे-टोरे सबो समस्या॥
साठ बछरले धरे अहिंसा पथराला पिघलाये॥
गांधी देवता बन के आये॥॥५॥॥

पोठ रहिस परिवार तोर बालिस्टर घलो रहे तैं।
देस के खातिर धन जन छोड़े-विपत में विपत सहे तैं॥
जहल घलो मा डारिन तोला-अकड़े ऊंहां रहे तैं।
लेके छोड़िहौं मैं सुराज ला अतके ऊंहौं कहे तैं॥
जय जयकार होए तोर गांधी-कलजुगला कल पाये॥
गांधी देवता बन के आये॥॥६॥॥

तैं पन्द्रा अगस्त सैंतालिस-मा सुराज ला पाये।
देत देत मा ओहू ला बांटिन-तभो ले तैं रजियाये॥
कोनो किस्म से लाली मुंह के-बेन्दरन ला भगवाये।
जम्मो जात रहिस तेखर ले-आधा ले जादा बचाये।
ऐती बनाबो जैसन बनही-तैं तो अमर कहाये।
गांधी देवता बन के आये॥॥७॥॥॥॥

सुराज गीत :-

भैया भैगे सुराज-भैया भैगे सुराज।
अब तो दशा ला सुधारा रे॥
गोरा के राज जबर दुख पायेन।
जीयत मरले ठगातेच आयेन॥
धन अउ धरम दूनो ला गवायेन ।
ठल्लक राज ला आखिर पायेन॥
कैसे रहेन अऊ कैसे भयेन अब।
देखा अउ आंखी उघारा रे॥ भैया भैगे॥

बाम्हन के बम्हनौटी बिलागे।
ठाकुर के ठकुराई ठगागै।
बनियन के बैपार बहागे।
शुद्र सरेहन आइन आगे।
ए अंधेर कतेक दिन चलहि,
एखर जुगुत निकाला रे॥ भैया भैगे॥

बाम्हन अपन धरम झन छोड़ै।
ठाकुर रन बर मुंह झन मोड़ै।

बनिया धन बैपार मे जोड़े।
शुद्र थलो बंधेज न तोड़ें।
बिगड़े काम बनाये ले बनथे।
जुरमिल करव गुजारा रे॥ भैया भैंगे ॥

किसिम किसिम दुख भयेन संगी।
खाये पिये के कतेक है तंगी।
चारों डहर ले होथे लफंगी।
अब झन करिहा थेरको ढिलंगी।
देश के डोंगा परे दुख सागर।
डूबे झन मंझधारा रे॥भैया भैंगे॥
घर-घर भाई चारा बढ़ाव।

गांव-गांव मां मेल करावा।
सहर ले सुन्दर सोर लगावा।
देश-विदेश के हाल सुनावा।
परजा के राज ला परजा सम्हारे।
बिन्ती 'विप्र' हमारा रे॥६॥भैया भइगे॥
भैया भैंगे सुराज, अब तो दशा ला सुधारा रे।

सुराज ला नई छोड़ी :-

अब आये है हाथ सुराज-तेला नइ छोड़ी।।।
लाखों मनखे अपन कटायेन,
साठ बछर ले बड़ दुख पायेन॥
देश के खातिर जीव दिहे वर,
मुंह ल अब नइ मोड़ी॥
अब आये हाथ सुराज तेला नई छोड़ी॥

परवश मा जब रहे न तब रहे न,
दुख ला जब ले सहे न तब ले सहे न।
अब तो देस भर अपन कमाई के जोरबोन बोड़ी बोड़ी॥
अब आये है हाथ सुराज-तेला नइ छोड़ी॥

घर-घर के अब झगरा छोड़बो,
गांव-गांव जुरके संगी जोड़बो।
रक्षा करबो अपन देस के,
कभी परन नइ तोड़ी।
अब आये है हाथ सुराज तेला नइ छोड़ी॥

कसरत करबो, दौड़बो कूदबो।
लाठी चलाबो, फरी चलाबो।
मौका मा दस कोस दौड़त जाबो-भुइयो ले कुदब बरेड़ी।
अब आये है हाथ सुराज तेला नइ छोड़ी॥

घर-घर में सब बनब सिपाही,
अब हाथे है अमनेच पाही
कोनो बैरी देस मा आंही-मारे बिगर नइ छोड़ी॥
अब आये हैं हाथ सुराज तेला नइ छोड़ी॥

दीदी सो एक ठन गोठ :--

अब सुनिहा दीदी हमार एक ठन गोठ वो,
अब आये हे घड़ी तुहार-अड़बड़ पोठ ओ ॥ अब सुनिहा ॥
लैकन ला अब बीर बनावा–रोज सुदेशी गीत ला गावा।
अब जयहिंद कहत मा उघरे–तोर लेकन के ओंठ ओ ॥ अब सुनिहा ॥
घर मा चरखा रोज चलावा–लैकन मन ला चलो सिखावा।
ऐखर से लैका आगू चलके–देसला करीह मोठ वो ॥ अब सुनिहा ॥
गांधी देवता के गुन ला गावा–भक्ति लैकन मा उपजावा।
झण्डा तिरंगा पूजा करके–फोरिहा नरियर रोंठ वो ॥ अब सुनिहा ॥
बिगड़ काम बनाये खातिर–देस मा नाव कमाये खातिर।
तुहर मदद के भइस जरूरी–तेखर सेती ये गोठ वो ॥५॥ अब सुनिहा ॥

संवत् २००४ :–

(१)

ए विक्रम संवत दू हजार अउ चार।
जब परजा सो राजा हर मानिस हार ॥
अउ छोड़िस राजा दिल्ली दरबार।
तब भइस देस में कांग्रेस सरकार ॥
राज ल पलटे खातिर चारों जुग मां भइस लड़ाई।
बिगर लड़ाई राज पलट गये–तेला का गोठियाइ ॥

(२)

ये विक्रम संवत दू हजार अउ चार।
अब परजा के परजा भैंगे सरकार ॥
तब धन जन जम्भा भैंगे आज हमार।
आखिर मा हमरेच घर के सरकार ॥
जम्मो मनखे एसो जुरके-एक फैट जब होबो।
तब दुसमन के छाती उपर कोदो ला फेर बोबो।

(३)

ये विक्रम संवत दू हजार अउ चार।
लानिस घर-घर में नवा किसम के तिहार।
फेर गांधी अउ जवाहिर लाल हमार।
जग भर में भैंगे एखेर जयजयकार ॥
ईश्वर जीयत भर संसो नइये-जैसन होही बन ही।
देस सुतंत्र भये हे तेसा-अब जम्मो पतियाहीं ॥

सुराज के सुवा गीत-

चला दिदी देखे जाबो, झण्डा तिरंगा ला,
सुवना हो-पाये है देश सूराज॥ सुवना हो पाये है देस सुराज॥।
अब तो सुतंत्र भये तैं सुवना-रे
तोरेच देस में राजा॥ सुवना हो पाये है देस सुराज॥
पिंजरा के बाहिर-बैठ के गावा रे,
सुवना हो गांधी के जयजयकार॥ सुवना हो॥
पर बस ले तोला-जौन छोड़ाइस,
सुवना हो-तोर करिस उद्धार॥सुवना हो॥
आज सुतंत्र-भये तैं सुवना,
पांखी ल अपन पसार॥ सुवना हो॥
कतेक जवर अब है तोर पिजरा गा,
सुवना हो-देख ले आंखी उघार॥ सुवना हो॥
पर के भरोसा मां–कुछु नइ जाने तैं.
सुवना हो–पिंजरा रहिस संसार॥ सुवना हो॥
गांधी बबा तोला-बाहिर लानिस,
सुवना हो तेखरेच कर परचार॥ सुवना हो॥
उत्तर-दक्खिन-पूरब-पश्चिम॥
सुवना हो चारों डाहार तोर राज॥ सुवना हो॥
उड़ि जा रे सुवना तैं-दिल्ली दुवारी मा,
सुवना हो–छत्र धरे सिर ताज॥सुवना हो॥

सुराज के कर्मा गीत :–

चला नाचा गावा गा-भइया नाचा गावा रे,
अब तो सुराज होगे-नाचा गावा रे॥
अंगरेजी राज रहिस-अड़बड़ दुख पायेन गा।
अब तो सुतंत्र भयेन-जुन्ना ला भुलावा॥ चला नाचा गावा॥
साठ बछर हमर सेती-कंगरेसिहा लड़िन गा,
होहीं जम्मो राज करेला-दिल्ली उपर चढ़िन॥ चला नाचा गावा॥
गांधी जौहर ढाइस भइया-जुगुतला बताइसगा,
दिल्ली के दरबार मां आखिर-झंडा ला फहराइस॥ चला नाचा गावा॥
बड़े-बड़े हमर नेता-राज ला चलाहीं,
देखत-देखत देखलेहा-राम राज ला लाहीं॥ चला नाचा गावा॥
हमर राज हमिच भयेन-घर-घर गोठियावा गा,
जम्मा कोनो आपन अपन-जिवला जुड़ावा॥ चला नाचा गावा॥
पंडित हमर लाल जवाहिर-एसों हैं सरदार गा,
बांधे पागा झन गिरहा-तब्भोच नांव तुम्हार॥ चला॥

सुराज के होरी गीत :–

अरे हां हमारो आये राज सुदेशी है।
चला आवा मनाबो तिहार॥ हमारो आये राज।

अरे हां हमारो कैसे राज सुदेशी है।
फेर कैसे मनाबो तिहार॥ हमारो आये राज॥
अरे हाँ हमारो परजा के परजा राजा,
अउ झंडा तिरंगा तिहार॥ हमारो आये राज।
अरे हां हमारो गांधी के गुन गावागा,
कर दिहिस देश उद्धार॥ हमारो आये राज॥
अरे हां हो गांधी लेके अहिंसा तैं आये,
अऊ खोले स्वतंत्र दुवार॥हमारो आये राज॥
अरे हां सुराज के होरी घर-घर गावा गा,
अउ करा सुदेशी परचार॥ हमारो आये राज॥
अरे हां रे देस को दुसमन अब झन डेरुवावें,
हम कहिबो अब ललकार॥ हमारो आये राज॥

गांधी के गोहार :--

गांधी पारै गोहार–गांधी पारै गोहार।
हिन्दु मुसलमान –माना रे॥
भाई के बेवहार–भाई के बेवहार,
दूनो बरोबर जाना रे॥ गांधी॥
भारतमाता के दुनो बेटा,
लड-लड़ के झन काम ला मेटा।
लटपट देस सुतंत्र भये है–
अड़बड़ दुख ला गांधी सहे है।
जुर मिल ते अब जीया जुड़ावा,
चैन के बंशी बजाना रे॥ गांधी॥
बीपत ऊपर बीपत झेलिस,
हमरेच खातिर सब ला पैलिस।
एक करे बर जीव गंवाइस,
जीयत भर सब ला जुड़वाइस
तौनोला बैरी गोली मां मारिस।
तेला का गोटियाना रे॥ गांधी॥
जात पात के भेद ला टारी,
ओखर काम ला रखिहा जारी।
सुनके सरग मा होही मुखारी।
जम्मोच भिड़ जावा एक्केदारी॥
तब्भोच गांधी ला घर-घर पाबो,
अतकेला पक्का जाना रे॥ गांधी॥

★ शंकरलाल सेन

धमतरी सुराज आंदोलन में गांधी–दर्शन

(आल्हा धुन पर)

दोहा:— गांधी बाबा ला सुमर, सुमरो भारत गाय।
सुमिरों नेहरू वीर ला, जौन सुराज देवाय॥

मात पिता के सुमिरन करके, गुरु गनेश के चरण मनाय।
देवी देवता ला फिर बन्दव, रामकृष्ण के चरण मनाय॥
सुमिरन करके नेतागण ला, अब सुराज के आल्हा गांव॥
तिलक बबा हर मंतर दैगे, जनम सिद्ध अधिकार तुम्हार॥
ये सुराज लेके रहना है, मानिन गांधी बात तुम्हार॥
देश में सब झन ला समझा के, बड़ परचार करिन संसार॥
गांधी बाबा हर मनखे नो है, निचट आय देव अवतार॥
जागिन भैया भारतवासी, होय गांधी के जयजयकार।
धरे तिरंगा हाथ में सुन्दर, बन्दे मातरम् के जयजयकार॥
खटकिस सब ये अंग्रेजन ला, जेल में ठूंसिन बेसुमार।
सभा बैइठका होन देवे कानून के देवे फटकार॥
देश भरे में मचिस लड़ाई, रीता कोन्हों गांव न जाय॥
कहूं मेर कोड़ा मार सुनावे, कहूं मेर गोली आज चलाय॥
जय जयकार करन नई पावें, पकड़ के झंडा लेय नगाय।
जीव छूटत ले मारे पापी, चिटको दया मया नहीं आय॥
सतवादी झण्डा नहीं छोड़िन, कतको प्राण ला देइन गंवाय।
डटगें भइया भारतवासी, हांसत हांसत प्राण गंवाय॥
सत्य अहिंसा के अंगना में डटिगे सारी हिन्दुस्थान।
जीव जाय के चेत भुलागें, उल्टा करे एक जबान॥
लूट रे पापी मार ले हमला, गांधी बबा देहे समझाय।
कतेक मारबे रे हत्यारा, चालीस कोटि जनमते जाय॥
लिखें लड़ाई धमतरी राज के, जतका भोला सुरता आय।
धमतरिहा मन बढ़ चटपटिहा, सन् २० में गांधी ला लाय॥

गांधी के संग शौकत गैया, मोहम्मद अली विराजिन आय।
भाषण काये मन्तर फुंक दिन, धमतरी ल चेला लेइन बनाय॥
बड़े-बड़े नेता सब आइन, जनता दरस करे हरषाय।
डट रहिन सुराज लये बर, कमु धमतरी नइ पछुवाय॥
नारायणराव बबा मेघा के, उनकर पांव में मुड़ मुड़ाय।
इनकर कहना मंत्र इही है, जेला सुनिहो ध्यान लगाय॥
हिम्मत कर आगे बढ़ भाई, विजय अवश्य है संशयनाहीं।
मानिन बात सबै धमतरिहा, अपन पाव ला देइन आय॥
सुन्दरलालजी राजिमवाले, खोलिन दुकान सुदेशी माल।
सन् सात अउ बीस के भीतर, श्री नत्थूजी अउ छोटेलाल॥
चारों मिल के रद्दा खोजें, कैसे कटे देश के पाप।
असहयोग आन्दोलन खातिर, धरिन तिरंगा चरखा छाप॥
सहकारी स्कूल खादी के घर-घर में परचार कराय।
छोटलालजी बाबू साहब पैसा पानी असन बोहाय॥
गांधी स्कूल चरखा संग में, घर बरबाद करिन हरषाय।
भारत में पहिली सत्याग्रह धमतरी तीर कण्डेल बनाय॥
नहर कानून के कर आन्दोलन एक्का के आवाज लगाय।
बाबू साहब जी अगुवा होके, झंडा लेके खड़े तैयार॥
बस्ती भर के गरु गाय ला , कांजी में लेगिन सरकार।
गरुवा कोनो छोड़ाइन नाहीं, नीलाम में बोली बोलिन जाय।
सरकारी नौकर झख मारीन, नुकसानी देय घर पहुंचाय॥
एही बरा गांधी के दरसन खातिर जनता बड़ अकुलाय।
बड़े-बड़े नेता सब आइन, शहर उत्सव कहै न जाय॥
हजारीलालजी जैन ड्राइवर बन गांधीजी ला शहर घुमाय।
डाक्टर मुंजे संगठन देखके करे प्रशंसा कही न जाय॥
धन धमतरिहा हिम्मत वाले सबै जात ला लेइन मिलाय।
नत्थूजी जगताप के इहां नेता मन डेरा देइन लगाय।
गांधीजी के गोठ सुने बर, अनगिनती मनखे जुरियाय।
छुआछूत मिटाओ एक्का करो, देश ला इही बताय।
गांधीजी हर कहिस के, हरिजन हवे देश में पांच करोड़॥
अपन देश में सब हिंदू मन होथन बाइस करोड़।
ईश्वर के उपजाये अन सब रखथे बोहर एक समान॥
तुम काबर इन ला दुरिहाथो सबे हमन एके इंसान।
सब ला एक बरोबर देके सिरजाये हे एक्के भेष॥
कान नाक जिभ चमड़ा हाड़ा पीठ पेट औ लोहू केश।
औ फिर सुरुज चन्दा धरती पानी पवन छांव ओ धाम।

हुवा भेद एहू में नइये, देके करिस न्याय के काम ॥
झण्डा के इज्जत के खातिर, धन जावे अउ जावे जान ॥
पर कुछु हो सुराज लेबर रखबोन हम झण्डा के शान ॥
जयजयकार करिन सब जनता, सुनिन गुनिन सुनके पतियाय।
सुन्ता करके लड़े के खातिर, रोज हजारों किरिया खाय ॥

नगरी जंगल सत्याग्रह १९२२--

सन् इक्काइस नागपुर में झण्डा सत्याग्रह करवाय।
धमतरी ले जत्था बना बना के, नागपुर के जेल में जाय ॥
रामदुलारे मास्टर साहब परदेशीराम अमेठी काय।
सत्याग्रह कर जेल भरिन हैं, दूसर शहर में नाव कमाय ॥
सत्याग्रह कर जेल भरिन सन् बाइस नगरी के मैदान।
जंगल सत्याग्रह में भैया, नौकर शाही भये परेशान ॥
श्यामलालजी सोम डटे जहं, लोगन तितर बितर नइ जाय।
तन मन धन सब अर्पण करके, एक आवाज बुलन्द कराय।
का गति बरनों आन्दोलन के, दाई बहिनी तक कोड़ा खाय।
कतको झन ल जेल में बेड़िन, लाठी मार गनै नहीं जाय ॥
सन् बाइस ले चौबीस उपर सन् उन्तीस हर पहुंचिस आय।
रावी नदी के तीर जवाहर पूर्ण स्वतंत्रा पास कराय ॥
किरिया असहयोग आन्दोलन सन् तीस में करिन करार।
अंग्रेजी हर जिनिस मेटाइन, तब सोचन लागिस सरकार ॥
धमतरी तहसील वाला सोचिन, आश्रम इहां घलो खुल जाय।
फेर हजारों संग जहुंरिया शिक्षा लेन लगिन हरसाय ॥
स्वयं सेवक कांग्रेस के शिक्षा डाक्टर शोभाराम निभाय।
सन् तीस में प्रान्त के नेता, अपन बात ला देइन भेजाय ॥

जंगल सत्याग्रह रुद्री १९३०—

रुद्री के सरकारी जंगल जेहे, महानदी के तीर।
कांदी लुये के काम बनाके, जुरियाइन बस्ती के बीर ॥
नत्थूजी जगताप सेनानी, नारायणराव जी पहिली आय।
गोविन्द रावजी डाभावाले बाबूसाहब जेल में जाय ॥
परथम पकड़ के जेल में ठूंसिन, फेर तो कहू ठिकान नाय।
पांच पांच के टोलि बांधिन जुलूस बनाके जंगल जाय ॥
नौ तारीख सितम्बर महीना, चलिस लुवइ के कारोबार।
कई हजारों भीड़ जीहां है, बतर कीरा असन कतार ॥

झण्डा आगू बाजे बाजा, सुनते मन में जोश हमाय।
भारतमाता के जय बोले, धरती आसमान गुंजाय॥
जय गांधी जय वीर जवाहर, झण्डा ऊंचा रहे हमार।
वन्दे मातरम् के गुन गूंजे, कांपे अंगरेजो सरकार॥
पक्का गठन रहे नेतन के, जंगल कानून देइ बनाय।
टोली बांधे रहिन बरोबर, बेत जेहल में जाय के खाय॥
पं. गिरधारीलाल पुराणिक, छत्तीसगढ़ी में कहे बताय।
कोहका वाले कन्हई ठाकुर, कई बेर ले जेल में जाय॥
जबरा काम रहे सब झन के, इनकर नांव ला कौन भुलाय॥
मुकुन्दराव शिवचरणराव जी, यशवन्तराव के काम सुहाय॥
तन मन धन सब अरपन करके, स्वयं सेवक में नाम गिनाय।
का गति बरनों ओ बेरा के, बादर उमड़ घुमड़ घरराय॥
गरज गरज के पानी बरसे, मुंह लुकवा मन गइन लुकाय।
आ बरसात महीना एइसन पानी पूरा पार बोहाय॥
जंगल कानून टोरे खातिर, घर कुरिया देइन भुलाय।
पोलिस पकड़ हवालात में लाने, बेंत जेल में जाके खाय॥
लाखों भीड़ कछेरी आगू, मार खाय नेता मुस्काय।
सायं सायं जब बेंत उड़े तो, तरुवा में गुस्सा चढ़ जाय॥
देखत रहे सबै जनता मन, आंखि ले आंसू बरसाय।
का बतान जी छटपटाय बड़, बलदा लेके जीव जुड़ाय॥
शान्ति अहिंसा कहि कहि हमला, नेता मन एकदम भुरियाय।
बड़ अनीत के काम करे वो, सहे चुप रहे नीत बताय॥
दाइ माई के जुलूस में, भैया बेंत धड़ाधड़ मारे नीच।
इज्जत हलका कर बेशरम, लेजे तिरत कछेरी बीच॥
लगिस चावालिस धारा भइया, नवांगांव के सरहद आय।
कानून टोरे के तव ले भइया, कई हजार मनखे सकलाय॥
बजे जुझारून बाजा घटके, जीव के मोह कोन्हों गाय।
कतको टोली जंगल भीतर, घुसके करत है जयजयकार।
ऐती भर भर के मोटर में, पल्टन पुलिस करे ललकार।
लाठी चलगे जंगल भीतर, होइस भीड़ में हाहाकार।
सारजेन्ट कप्तान हुकुम पा, पलटन बन्दूक करिन तैयार।
हुए दनादन गोली भइया, खूब मचाइस अत्याचार।
कुछ तो तुरते प्राण गवांइन, कतको हाय हाय गोहराय।
महतारी के ये सपूत माता वर ये तन सौंपे आज।
मीधू जी लमकेमी वाले, होइन शहीद देश के काज।
गोली खाय गिरे रतनूजी, मोटर में जोर जेल पहुंचाय।

लाठी गोली दूनों एक संग बरसेले जत्था भिरराय।
बाबू शंकरलालजी तब्भे, लमकेमी ले जत्था लाय।
ठेमासरा गंगरेल गांव ले कतको मनखे तुरते आय।
ये सुराज बर आन्दोलन में घर दुआर सब देइन भुलाय।
लइका डोकरी डोकरा तक मन, मार खाय बर जुलूस में जाय।
औरत लरिकन डोकरा मन के, जो गति भइस बताय न जाय।
पानी में मुड़मसरा गिरके, उपर परे डण्डा के मार।
उबुक चुबुक होय नारिन के गति, मार में वहे खून के धार।
इन्दिरा प्रसाद अऊ एक ब्रह्मचारी, खूनाखून चले महराज।
देख के इन ला धड़कन होवे है, विधि का करबे तै आज।
पुलिस खेत के मूही उपर पटके मनखे मन ला ठोंक।
निरदई दुसमन लात मार के देखलाय बन्दूक के नोक।
मारके मारे होश बिकट है, काला कहे कौन समझाय।
भागो भागो मचगे भइया, लेदे सब घर में आय।
ढाई तीन सौ स्वयं सेवक मन तन मन धन ला देइन लगाय।
शिवरतनपुरी, ताराचंद जैसे, जालम पुरी जी हाथ बंटाय।
बिसाहूसिंह भखारा वाले, जत्था जगह जगह भेजवाय।
भोपालरावजी, रामभरोसा सोनी, मुकुन्दराव अऊ गोविन्द राव।
गांव-गांव में मंतर फूंके, बाबू साहब नारायण राव।
लाठी पुलिस धमतरी रहिगे, अउ आन्दोलन देइस दबाय।
पुलिस के पहरा सब पारा मा, जनता घर में रहे लुकाय।
हजारों रुपया करे वसूली, और सब लोगन को घबराय।
सत्याग्रह आश्रम के चीज सब कागजात ला, जब्त कराय।
गांधी इरविन ऐक्ट बनिस तब पाछू ओला लेइन छोड़ाय।
कपड़ा, ओढ़ना छोड़ विदेशी, ये आन्दोलन पकड़िस जोर।
होली जलिस विदेशी कपड़ा रायपुर शहर में खोरे खोर।
उहां भाग लेय खातिर कतको गेइन इहां ले कतको लोग।
जीहा बुलावे जावे संगी, कतको दुख सब लेने भोग।
मेघावाले पंडित बाबा तुंहर नाव ला कौन भुलाय।
जयजयकार करव उन सब के जउन धमतरी नांव जगाय।
नत्थूजी जगताप बहादुर, अपन पांव ला देइ अड़ाय।
कांग्रेस के लड़िन लड़ाई लड़ते लड़ते प्राण गंवाय।
शंकर राव गनौद के अगुवा अपन नाव ला देवन जगाय।
जागिस रुख नांव के तुंहरे बरसे फूल न नांव मेटाय।
जब इन भाषण देवें भइया झझकोरे जनता के प्राण।
आज के दिन फिरके कब आहि लोग कहे जाके मैदान।

छत्तिसगढ़िया बोली में बोले पं. सुन्दरलाल सुजान।
अड़हा तक ला समझ में आये, चाहे कतको रहे अजान।
जनता के सेवा में रात दिन अपन समय ल देय लगाय।
बाबू साहब छोटेलालजी रामलालजी त्यागी बीर।
देश के खातिर, चिन्ता करके, देइन दान करेजा चीर।
पेट लुका कोई बात न रखे, खुल्लम खुल्ला देइ बताय।
जम्मे नेतागण के अन्दर बघवा के बल हा मंड़राय।
जौन काम ला करें बरोबर, मुंह देखी इनला न सुहाय।
भोपाल राव पवार अड़े हैं जे रख देइन मराठी बात।
नाव मराठा मन के राखे, धन्य मराठी कुल परभात।
सन् उन्नीस जो तैंतीस में धमतरी देखे बर बापूजी आय।
सबो राज के जनता उमड़िस तिल भर जगा ना खाली जाय।
जुलूस सभा झंडा तोरन सब गली गली घर-घर फहराय।
का हिंदू का मुसलमान एक बरोबर हाथ बढ़ाय।
गांधीजी सब डहर किंजर के हरिजन पारा में बिलमा।
फूलमाला के लेखा नइये, कौन कहां उनला पहिराय।
ठाकुर प्यारेलाल महंतजी बापू संग हांसे गोठियाय।
रविशंकरजी शुक्ल साथ में कतको नेता स्वागत गाय।
झण्डा ऊंचा रहे हमारा, चरखा खादी के गुन गाय।
चरखा घर-घर रहे देश में, खादी के गुन अपरम्पार।
छुआछूत मन से सब मेटो तब सुख आही ये संसार।
गांधी के संदेश सुनिन सब कोइस शहर भर बड़ उत्साह।
कोन्हों जनम के पुण्य जागेंगे, जनता के मन लगिन थाह।
सत्य के खातिर मोह छोड़ दो, तब सुराज इंहां आही जी।
पाप गुलामी के छूट जाहीं नवा सुरुज ऊगाहीं जी।
अमर बोल गांधी के सुन्दर जनता बर अमृत बनगे।
त्याग तपस्या के भुइंया धमतरी शहर बड़ नाव कमाय
ये सुराज आन्दोलन रचना लिखेव तरज आल्हा में गाय।
भूल चूक ला माफी देहू मैं हर नोहो कोन्नों सुजान।
गलती ला सुधार के पढ़िहों आप सबे हो गजब महान।
पांव परत हों भारत मां के जय हो बीर जवाहर लाल।
गांधी बाबा के आशिश चाहे धमतरी रहैया शंकरलाल।
नोटः—(श्री हजारीलालजी जैन सन् १९३३ में जब गांधीजी आये तब उनकी कार के चालक थे।)

"गांधीवाद जैसी किसी चीज का अस्तित्व ही नहीं है और मैं अपने पीछे कोई पंथ अथवा कोई सम्प्रदाय नहीं छोड़ जाना चाहता।"

—बापू

★ (स्व. कुन्जबिहारीलाल चौबे)

गांधी-गउरा

आकास में हां पुन्नी के चन्दा, हो पुन्नी के चन्दा।
अवतरें धरती में हावे गांधी देवता, अवतरे धरती में हावे गांधी देवता।
सत के खातिर ओ दाइ, घरबार छांड़िके, हां छांड़िके।
गरीब गुरबा के करत हावे सेवा, गरीब गुरबा के करत हावे सेवा।
डइकी लुइका ल, घलों तज देहें, कइथे, ओ तज देहे कइथें।
हमरे खातिर ओ दाइ. बन गेहे साधु हमरे खातिर ओ दाइ बनगेहे साधु।
जब ले अंगरेज मन के राज होइस है, ओ राज होइस है।
तब ले हम मन बर, कतक खटागे, तब ले हमर मन बर कतक खटागे।
भइगे अब सपना हां तइहा के जिनगी, हां तइहा के जिनगी।
तइहा के सुख भइगे नोहर ओ दाइ, तइहा के सुख भइगे नोहर ओ दाइ।
रांडी दुखांडी के अब बेचरी बेलागे, ओ टेपरी बेलागे।
दूध दही के अब नावे बुतागे, दूध दही के अब नाव बुतागे।
गांव-गांव में पेरत रहिन हवे घानी, पेरत रहिन घानी।
घर-घर चलत रहिस हवे, रहटा, घर-घर चलत रहीस हवे रहटा।
कइसे मजा के रहिस हवे तइहा के दिन, ओ तइहा के दिन हर।
तइहा के अब सरी चीजे नंदागे, तइहा के सारी चीजे नंदागे।
उही दिन खातिर लड़त हवे कइथे लड़त हवे कइथे।
अंग्रेज के संग गांधी महात्मा, अंग्रेज के संग गांधी महात्मा।
अंग्रेज डहर हवे फउज फटाका, औ फउज फटाका।
बन्दूक भाला के ओरी लगेहे, बन्दूक भाला के ओरी लगेहे।
गांधी डहर नइ है फउज फटाका, औ फ उज फटाका।
बन्दूक भाला कहां पावे दाइ, बन्दूक भाला कहां पावे दाइ।
गांधी ल हवै एक सत के भरोसा, ओ सत के भरोसा।
सत के ओकर हैं परन बड़ भारी, सत के ओकरहैं परन बड़ भारी।
एक दिन जितही ओ गांधी महात्मा हां गांधी महात्मा।
उड़हिं ओ सबो जघा झण्डा सुराज के, उड़हि ओ सबो जघा झण्डा सुराज के।
आ गैहै बहुते आ गैहै अंगरेज के, आ गहे अंगरेज के।
तब तो अघातेच तपथ, हैं दाई, तब तो अघातेच तपथ ओ दाई।
चिन्हीस ठउका हमर दुख पीराला, हमर दुख पीरा ला।
गांधी ला पायेन हमर बड़ भाग, गांधी ला पायेन हमर बड़ भाग।
हो जाहीं सुराज जब हमरे मुलुक में, ओ हमरे मुलुक में।
हो जाही हमरे बर समये सुकाल, हो जाही हमरे बर समय सुकाल।
जुग जुग जीयत रहे गांधी महराज, ओ गांधी महराज।
मुलुक मुलुक में ओखर जस बाढ़े मुलुक मुलुक में ओखर जस बाढ़े।

:(पं०रामदेव शर्मा व्यास):

श्रद्धांजलि

थें तुम्हीं आधार मेरे, थे तुम्हीं आधार मेरे
तुम रहे मन मंदिरों के
मध्य में साकार से
प्रतिमा दया तप की बने
सुख शान्ति के आगार से
विश्व के एक दिव्य ज्योति
एक जगदाधार मेरे।। थें तुम्हीं आधार मेरे।।

तुम रमे तन में हमारे
विश्व था तेरे सहारे
सबके जीवन धन तुम्हीं
सच्चे हृदय के तार मेरे।। थे तुम्हीं आधार मेरे ।।

विश्व को सोते जगाया
दुष्ट दानवता भगाया
सुख शान्ति पथ सबको सिखाया
सत् ज्योति के आगार मेरे।। थे तुम्हीं आधार मेरे ।।

व्रत तथा उपवास जितने
कष्ट अगणित पाके कितने
प्यार पर फिर प्यार इतने
तुम किए उपकार मेरे।। थे तुम्हीं आधार मेरे ।।

मोहवश जग घूमता हूं
मान में पड़ फूलता हूं
कर्त्तव्य पथ को भूलता हूं
अधिकार में आ झूलता हूं
क्या कहूं मुंह कौन सा
लो देख लो व्यवहार मेरे।। थे तुम्हीं आधार मेरे ।।

फिर भी दया की मूर्ति मोहन
विश्व के जीवन अमर धन
भूल मत जाना हमें, यह तर्ज है करतार मेरे।। थे तुम्हीं आधार मेरे ।।

सन् १९३३ में गांधीजी के भाटापारा आगमन पर उनके दर्शनार्थ एकत्रित जनसमूह। छायांकन : श्री अब्बास भाई

महात्मा गांधी जी की भाटापारा यात्रा के अवसर पर उनके स्वागतार्थ बना एक स्वागत द्वार पर जनसमुदाय उत्सुकता से गांधीजी के नगरागमन की प्रतीक्षा करते हुए खड़ा है। छायांकन : श्री अब्बास भाई

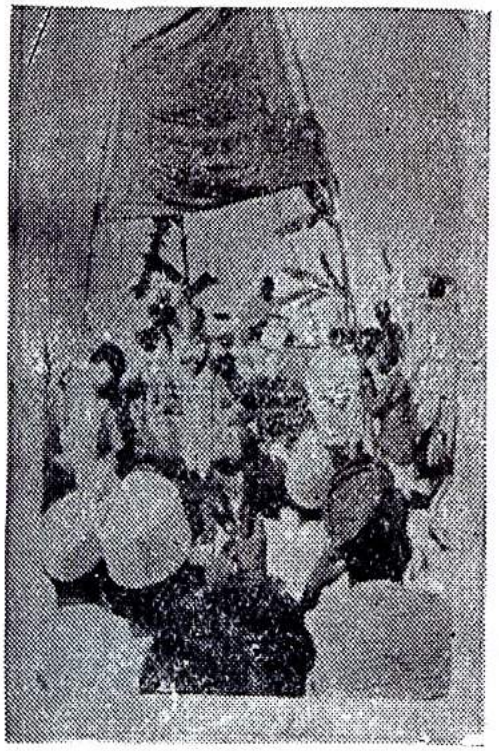

सन १९३३ में राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी के भाटापारा आगमन पर श्री अब्बास द्वारा लिया गया चित्र। गांधीजी मानपत्र का निरीक्षण कर रहे हैं। उनके समीप ही स्व. रविशंकर जी शुक्ल एवं श्री प्रतापचन्द्र जी बैठ हुए हैं।

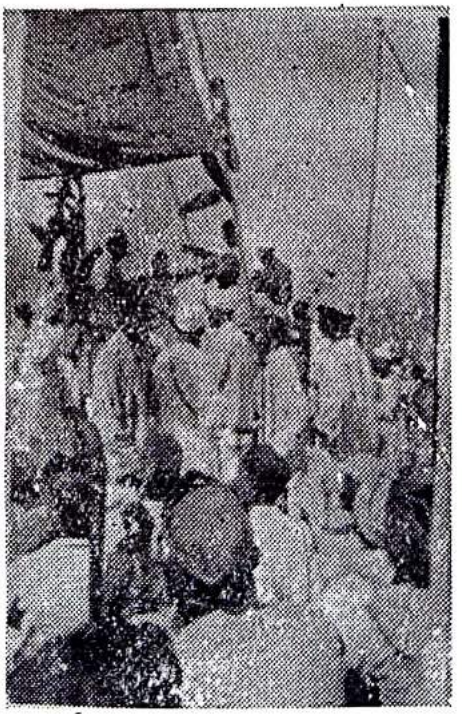

महात्मा गांधीजी के समीप ही श्री प्रतापचन्द्र आदि बैठे हुए हैं। छायांकन : श्री अब्बास भाई

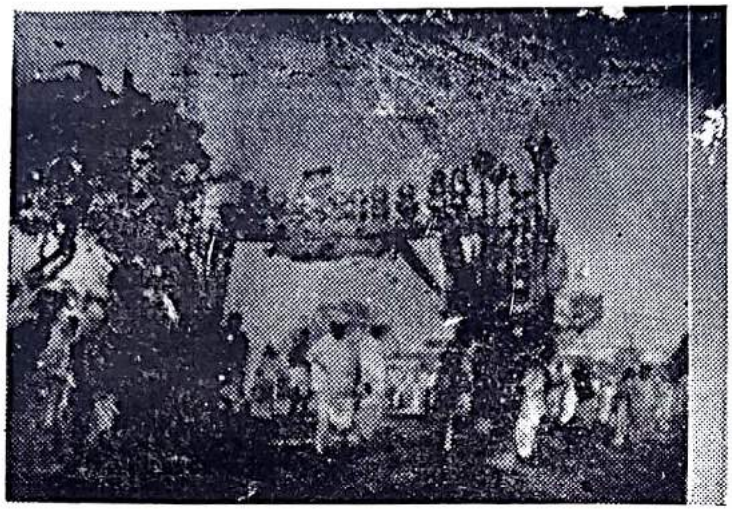

सन् १९३३ में महात्मा गांधी के भाटापारा आगमन पर बनाये गये स्वागत द्वार। फोटो- श्री अब्बास भाई

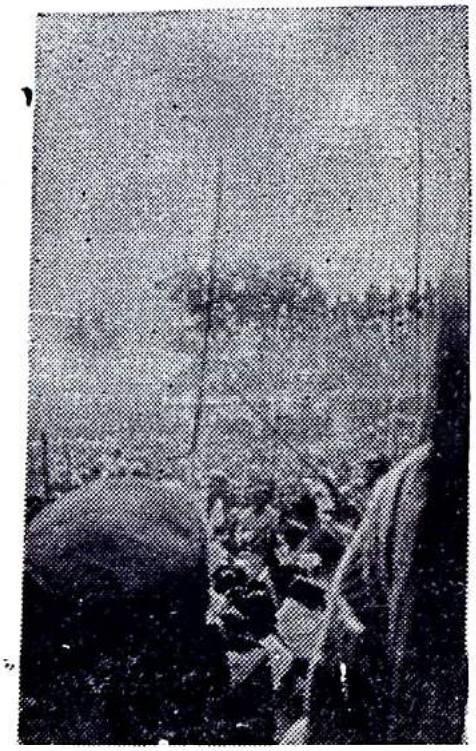

१९३३ मे भाटापारा में आमसभा को सबोधित करते हुए महात्मा गांधीजी। छायाचित्र - श्री अब्बास भाई के सौंजन्य से।

गांधी जी के भाटापारा आगमन पर उनके स्वागतार्थ बनाया गया पीतल के बर्तनों का द्वार। मध्य में तिरंगा लहरा रहा है। छायांकन- श्री अब्बास भाई

मेरी राष्ट्रीय चेतना के प्रणेता महात्मा गांधी जी

श्रीमती प्रकाशवती मिश्र

"जालियान वाला बाग में कत्ल की रात,
रतन बाई की वीरता।"

अप्रैल १९१९ का प्रातःकाल, स्व.माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा संपादित, कर्मवीर के मुख पृष्ठ पर बड़े २ अक्षरों में ये वाक्य देखकर मेरे बाल हृदय में एक अजीब सी खलबली मच गई। केवल स्कूल और घर की चहल-पहल,में विचरण करने वाला मेरा हृदय बाह्य वातावरण से एकदम अनभिज्ञ था। इस समाचार मे एक झटका लगा और जिज्ञासा बढ़ी। पढ़ने पर ज्ञात हुआ कि रौलट ऐक्ट के विरोध में आयोजित एक सभा में जनरल डायर द्वारा सैकड़ों निर्दोष,निहत्थे भारतीयों को मशीनगनों की गोलियों से भून दिया गया। यद्यपि जालियान वाला बाग व रौलट एक्ट का मतलब समझ में नहीं आया परन्तु फिर भी सब कुछ समझने के लिए उत्कट इच्छा जाग उठी। उस समय रेडियो का प्रचलन नहीं था। केवल कर्मवीर से ही कुछ जिज्ञासा शांत होती थी। धीरे २ समझ में कुछ आने लगा कि देश को अंग्रेजों की गुलामी से छुड़ाने के लिये यह एक आन्दोलन है। कुछ समय के पश्चात लोकमान्य तिलक का स्वर्गवास हुआ व स्वाधीनता आन्दोलन का भार गांधीजी के ऊपर आया।

इस दुर्घटना का प्रभाव सारे देश पर पड़ा व स्वतंत्रता प्राप्ति व अंग्रेजी शासन के प्रति विद्रोह की जो चिन-गारी भीतर ही भीतर सुलग रही थी–इस मानव संहार की आहुति से उसने ज्वाला का रूप धारण किया। पंजाब के निरीह व्यक्तियों पर अमानुषिक अत्याचार हो रहे थे। भारतीय जनमानस में इन समाचारों से भयानक विद्रोह की भावना जन्म ले रही थी,।

प्रथम दर्शन

विश्व वंद्य महात्मा गांधी के प्रथम दर्शन मुझे खंडवा में हुए। उस समय वे तिलक स्वराज्य फंड के लिये निधि संग्रह कर रहे थे जिसमें १ करोड़ रुपये इकट्ठे होने थे।

महिलाओं की एक सभा में गांधीजी पधारे। उस समय वे टोपी व कुर्ता पहिनते थे। मंच पर उनकी सौम्य मूर्ति देखकर हृदय एक अनुपम श्रद्धा से भर गया। जुड़े हुए हाथ तो उठे ही किन्तु अन्तःस्वर ने भी मन-मन में उन्हें प्रणाम किया। उन दिनों लाउड स्पीकर नहीं थे।भीड़ अधिक होने के कारण दूरस्थ महिलाओं द्वारा ठीक से उनका भाषण सुना नहीं जा सका। निधिसंग्रह का कार्य स्व. सुभद्रा कुमारी चौहान कर रही थीं जो उस समय खंडवा में नव वधू के रूप में थीं। हल्के नीले रंग की खादी की साड़ी, माथे पर हल्का सा अवगुठन, दीप्त मुखमंडल और महिलाओं के आगे फैला हुआ आंचल । उस छवि को आज भी मैं भूल नहीं सकी हूं। मेरी अवस्था उस समय केवल दस वर्ष की थी।

महिलाओं पर अकल्पनीय प्रभाव पड़ा। उन्होंने अपने गहने उतार-उतार कर आंचल में डालने शुरू किये। मेरी इच्छा हुई कि मैं भी इस आंचल में कुछ डालूं पर दुर्भाग्य से पास में केवल एक पैसा ही था सबकी नजर बचाकर आंचल में डाल दिया। मन में बड़ा संतोष हुआ कि मैंने भी सागर में एक बूंद डाल दिया।

महात्माजी मंच पर विराजमान थे महिलाओं का उत्साह देखने योग्य था। चूड़ियों, नेकलेसों, अंगूठियों और कंगनों का मंच पर ढेर लग गया। ऐसी स्फूर्ति व उत्साह चीन तथा पाकिस्तान के आक्रमण के समय के स्वर्णदान में भी नहीं दिखाई दिया। यह ऐसा दान था जिसके पीछे कोई प्रचार की आकांक्षा न थी। घर के लोगों को भी पता न लगता था और न लगने वाला था, फिर भी मुक्त हस्त से दान हो रहा था आंचल भरता जाता था। अभूतपूर्व दृश्य था। सुभद्राजी की वह सलज्ज भंगिमायुक्त सौम्य मुखमंडल देखकर कौन जानता था कि यही ललना "झांसी की रानी" व "वीरों का कैसा हो वसंत" जैसी मृतक में प्राण फूंकने वाले कविताओं का सृजन करेगी।

महात्माजी के पूरे शब्द सुने न जा सकने पर भी केवल यही जानने पर कि महात्माजी महिलाओं से दान लेना चाहते हैं। आभूषणों की झड़ी लग गई। उसमें किसी को यह चाह न थी कि समाचार पत्रों में उनकी प्रशंसा छपे, न कोई प्रमाण या रसीदें लेने की आकांक्षा थी। यह केवल महात्माजी के प्रति आत्मनिष्ठा व विश्वास का प्रतिफल था।

सभा विसर्जित हुई। एक ओर तो महात्माजी के दर्शन से हृदय आनन्द व उल्लास से परिपूर्ण हो रहा था और दूसरी ओर यह भावना उठती थी कि यह व्यक्ति जो साधारण से कपड़े की टोपी, कुर्ता व धोती में दिखाई देता है अंग्रेजों को खदेड़ कर हमें आजाद करेगा। अवश्य ही इसमें कोई दैवी शक्ति है जिससे भारत अवश्य ही स्वतंत्र होगा।

यही थी महात्माजी के प्रथम दर्शन की झांकी,; जिसमें मेरे हृदय में नवचेतना का प्रथम संचार किया।

दूसरी बार महात्माजी के दर्शन १९२० के दिसम्बर माह में हुए जब रायपुर में उनका आगमन हुआ।

कलकत्ते में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन हुआ। लाला लाजपतराय अध्यक्ष थे। उसके पश्चात अखिल भारत-वर्षीय दौरे पर कांग्रेस का असहयोग आन्दोलन के प्रचारार्थ महात्माजी रायपुर पधारे।

महात्माजी उस समय ठक्कर बैरिस्टर के बंगले में (जो जेल रोड पर है जिसमें वामन रावजी के छोटे भाई अभी भी रहते हैं,)ठहरे थे। स्टेशन पर उनका भव्य स्वागत हुआ स्थानीय नेता स्व. पं. रविशंकरजी शुक्ला व सुन्दरलाल जी शर्मा, ठाकुर प्यारेलाल सिंह, सखाराम दुबे इत्यादि सभी लोग उपस्थित थे। महात्माजी के साथ मौलाना शौकतअली भी खिलाफत आन्दोलन के प्रचार के लिये आये थे।

उपाधियों का परित्याग

उसी दिन स्थानीय गांधी चौक में महात्माजी का भाषण हुआ, उस समय तक इतनी विराट सभा कभी नहीं हुई थी।

जनता पर महात्मा जी का भारी प्रभाव पड़ा। लोगों के मानस में ब्रिटिश शासन से छुटकारा पाने की इच्छा बलवती हो उठी व अंग्रेजों के शासन से एक वितृष्णा जागृत हुई। राय साहिब ठक्कर बैरिस्टर ने अपनी राय साहब की उपाधि छोड़ दी। वे उस समय डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस के अध्यक्ष थे व पब्लिक प्रासीक्यूटर भी थे, उसका भी उन्होंने परित्याग कर दिया। स्व. वामन राव लाखे ने भी राय साहिब की उपाधि का परित्याग किया।

कौंसिल का बहिष्कार

महिलाओं की सभा में महात्माजी का भाषण हुआ व उन्हें उसी स्थान पर रुपये व आभूषण दान में मिले।

नागपुर में कांग्रेस के विशेष वार्षिक अधिवेशन में फिर से पूर्ण रूप से असहयोग आन्दोलन का निश्चय हुआ। कांग्रेस के ही जो विरोधी नेता असहयोग आन्दोलन का विरोध कर रहे थे, उसमें देशबन्धु चित्तरंजनदास भी थे, अब आन्दोलन के समर्थक हो गये थे। गांधीजी ने इसी विशेष अधिवेशन में सत्याग्रह संग्राम की घोषणा की थी। महात्माजी रायपुर के दौरे के समय कुरुद व धमतरी भी गये थे। रास्ते में ग्रामवासियों ने स्थान-स्थान पर महात्माजी का भव्य स्वागत किया। महात्माजी इस सत्याग्रह की चर्चा छत्तीसगढ़ के लोगों से कर चुके थे जिसका भारी प्रभाव पड़ा व सेठ गोपीकिशन, खान साहब काजी शमशेर खां इत्यादि ने भी उपाधियां त्याग दीं। इसी समय कौंसिलों के बहिष्कार का भी निर्णय लिया गया था। बाजीरावजी कृदत्त निर्विरोध चुने गये थे पर इन्होंने भी त्यागपत्र दिया व टक्कर साहिब ने कौंसिल के बहिष्कार में अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली।

गांधीजी ने स्कूल कालेज के विद्यार्थियों को भी आन्दोलन में भाग लेने का आह्वान किया, यद्यपि स्व. मालवीयजी इस पक्ष में नहीं थे कि विद्यार्थी राजनीति में भाग लें परन्तु उनका प्रबल विरोध हुआ जो आज घातक सिद्ध हो रहा है, व स्कूल कालेजों का बहिष्कार भी प्रारंभ हुआ व राष्ट्रीय विद्यालयों पर जोर दिया जाने लगा। रायपुर के राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना भी उसी समय हुई जो अभी भी विद्यमान है।

शिक्षा का माध्यम हिंदी था जिसे वर्त्तमान हिंदी भाषा के मान्यता प्राप्ति का प्रारंभ कहा जा सकता है। साथ ही साथ विद्यार्थियों को स्वावलम्बी बनाने के लिये गृहउद्योग, सूत कातना, बुनाई, व लोहारी व बढ़ई केकार्य की भी व्यवस्था हुई।

कोतवाली का घेराव

गांधीजी के आगमन व भाषणों के प्रभाव से छत्तीसगढ़ के जनमानस में अपूर्व जागृति हुई। स्वदेशी का प्रचार व विदेशी वस्तुओं व विशेषकर विदेशी कपड़ों का बहिष्कार प्रबल रूप से प्रारंभ हुआ। रायपुर के गांधी चौक के मैदान में विदेशी कपड़ों की विशाल होली जलाई गई। लोगों ने हजारों रुपये की कीमत के बहुमूल्य विदेशी वस्त्र इस होली में अर्पण कर दिये। स्व. शुक्लजी ने कई हजार रुपये के वस्त्र इस यज्ञ में स्वाहा कर दिये। एक बार चर्चा करते समय उन्होंने कहा था कि "तब हम मोजे व बनयान भी सिल्क के पहिनते थे"। आपाद मस्तक बहुमूल्य वस्त्रों और बनारसी साफे व हैट में रहने वाले उनके आकर्षक व्यक्तित्व पर अब खादी ही खादी की छटा थी। रायपुर ही क्या छत्तीसगढ़ पर स्व. शुक्लजी का काफी प्रभाव था। उनके सहयोगी थे ठाकुर प्यारेलाल सिंह, पं. सुन्दरलाल जी शर्मा, वामनरावजी लाखे, उदगीरकरजी इत्यादि। उनके ही नेतृत्व में बिलासपुर में डा.शिवदुलारे मिश्र, पं.कुंजबिहारीलाल अग्निहोत्री,श्री राघवेन्द्र राव, बलौदा बाजार से श्री बलभद्र प्रसादजी शुक्ल, अंधियार खोर के पं. भगवती प्रसादजी मिश्र, नारायणरावजी मेघावाले इत्यादि सत्याग्रह संग्राम में कूद पड़े। रायपुर में एक राजनैतिक सम्मेलन आयोजित हुआ। जिसमें पुलिसवालों की कुछ निश्चित पास दिये गये थे परन्तु पुलिस वालों ने बलपूर्वक अधिक संख्या में घुसने की चेष्टा की स्व. रविशंकर जी शुक्ल व श्री वामनरावजी लाखे ने हाथ पकड़कर सामने खड़े होकर रास्ता रोक लिया इसपर तत्कालीन सिटी इंस्पेक्टर मुस्तफा खां ने शुक्लजी को बिना वारंट गिरफ्तार कर लिया व कोतवाली में बन्द कर दिया इसपर रायपुर की जनता में बहुत क्षोभ व्याप्त हुआ हजारों की संख्या में लोगों ने कोतवाली को घेर लिया। सैकड़ों व्यक्तियों व बड़े२ लोगों ने

कांग्रेस सदस्यताग्रहण की।स्व. बालकृष्ण नत्थानी जैसे व्यक्ति कांग्रेस केसदस्य बने ।तीन दिनों तक कोतवाली का घेराव बना लजी को छोड़ दो, महात्मा गांधी की जय' के नारे गूंजते रहे। अंत शासन को झुकना पड़ा व शुक्ल जी बिना शर्त छोड़ दिये गये । हजारों की संख्या में लोगों ने शुक्लजी का भव्य स्वागत किया।

मद्यनिषेध, अछूतोद्धार के कार्यक्रम भी जोरों से जारी हुए। कोई नशीली चीजों की नीलामी में बोली बोलने को तैयार नहीं हुआ इसी प्रकार व्यापारियों में भी अधिकांश ने विदेशी कपड़ा न बेचने की प्रतिज्ञा की।

न भूतो न भविष्यति

इस प्रकार जोरों से आन्दोलन चल ही रहा था कि अचानक चौरीचौरा कांड के कारण महात्माजी ने सत्याग्रह आन्दोलन बन्द करने की घोषणा की। आन्दोलन तो बन्द हो गया फिर भी विद्रोह की अग्नि जनमानस से हटाई न जा सकी। गांधीजी का प्रभाव जल्दी मिटने वाला न था।काश उस समय सत्याग्रह आन्दोलन बंद न किया गया होता तो कदाचित भारत का विभाजन न होता उस समय हिंदू मुस्लिम एकता जिस स्थिति में थी वह "न भूतो न भविष्यति" वही ज सकती थी। सत्याग्रह व खिलाफत आन्दोलन साथ२ चलते थे। कुछ पंक्तियां आज भी मुझे याद हैं "मस्जिद में मुरली बजती हो, मंदिर में हम सब पढ़ें कुरान, मक्का चाहे वृन्दावन हो,हम सब मिल होवेंगे कुर्बान" ।मौलाना मुहम्मद अली, शौकत अली उनकी माताजी भी हिंदू मुस्लिम एकता व स्वराज्य प्राप्ति के लिए आन्दोलन कर रहे थे व दौरे कर रहे थे।

महात्माजी का आश्वासन था कि १ करोड़ रु० व एक करोड़ स्वयंसेवक तैयार होने से १ वर्ष में स्वराज्य प्राप्त हो जावेगा ।इसलिये जनता इसे देववाणी समझकर तन. मन, धन से देश के लिए सब कुछ अर्पण करने को तुली थी परन्तु विधाता को कुछ और ही मंजूर था। उस समय जैसी एकता फिर न आई देश विभाजित होकर रहा।

१९२३ में नागपुर में झंडा सत्याग्रह का आयोजन हुआ। उसमें भी छत्तीसगढ़ के लोग गये व गिरफ्तार हुए आन्दोलनकारी बहुत बड़ी संख्या में गिरफ्तार हुए। जेल में व्यवस्था करना कठिन हो गया। यह था गांधीजी का व विशेष कर उनकी रायपुर यात्रा का प्रभाव जो स्वतंत्रता प्राप्ति तक बना रहा।

५० व्यक्तियों की गिरफ्तारी

लाहौर कांग्रेस में जब पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करने की प्रतिज्ञा ली गई आन्दोलन ने फिर जोर पकड़ा। नमक कानून तोड़ना, शराब की दूकानों के आगे धरना, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार इत्यादि इसके प्रमुख अंग थे। इस अवसर पर रायपुर में एक राजनैतिक सम्मेलन का आयोजन हुआ। श्री जवाहरलालजी नेहरू अध्यक्षता करने वाले थे परन्तु उन्हें नैनी में गिरफ्तार कर लिया गया। पं. शुक्लजी भी जबलपुर में गिरफ्तार कर लिये गये। आन्दोलन और तीव्रता से चल पड़ा। इस समय पूरे देश में आन्दोलन चल रहा था। रायपुर में अभूतपूर्व जागृति थी। स्व. शुक्लजी के बाद ही ठाकुर प्यारेलाल सिंह, महन्त लक्ष्मीनारायण दास, मौलाना अब्दुल रऊफ, यतीयतनलालजी, शिवदास डागा आदि गिरफ्तार कर लिये गये। गांधी चौक में आयोजित सभा में ५० से ऊपर व्यक्ति एक के बाद एक भाषण देने के कारण गिरफ्तार हुए। शहर में पूर्ण हड़ताल थी।

महिलाओं में भी भारी उत्साह था। सबेरे २ प्रभातफेरियां निकलती। पर्दाप्रथा के बावजूद भी अनेक महिलायें दूकानों पर धरना देती थीं। कई एक गिरफ्तार भी हुईं जिनमें एक श्रीमती राधाबाई भी थीं। कई महिलाओं को कोतवाली तक घसीटते हुए लाया गया। इस प्रकार आन्दोलन चलता ही रहा।

१९३३ में गांधीजी पुनः रायपुर पधारे इस समय उनका दौरा हरिजन उद्धार के संदर्भ में था।

महात्माजी स्व. पं. रविशंकरजी शुक्ल के निवासस्थान पर ठहरे थे। उनका कार्यक्रम करीब १ सप्ताह का था। यहीं से धमतरी, बलौंदाबाजार इत्यादि स्थानों को गये थे।

साथ में ठक्कर बाप्पा व मीरा बहन भी थीं। महात्माजी के सामान,भोजन इत्यादि की सारी व्यवस्था वे किया करती थीं। सुबह से शाम तक लोग दर्शनों को आते स्थानीय नेतागण उनसे परामर्श करते थे। गांधीजी शान्तिपूर्वक सबकी बातें सुनते थे।

स्वर्ण बेंदी का दान

स्थानीय मोतीबाग में एक स्वदेशी प्रदर्शनी का उद्घाटन महात्माजी द्वारा हुआ था। उसके पूर्व एक आयोजित आम सभा में गांव २ से हजारों लोग महात्माजी के दर्शन के लिये आये व उनका भाषण सुनने के लिए अपार जनसमूह उमड़ पड़ा था। यह सभा सप्रे हाई स्कूल में हुई थी। महिलाओं की भी एक सभा इसी स्थल पर हुई थी। महात्माजी ने हरिजन फंड के लिय चन्दा भी एकत्रित किया। जब मेरी माताजी श्रीमती कौशिल्या बाई तिवारी का परिचय शुक्लजी ने कराया कि यह मेरी बहिन है तो उन्होंने कहा कि मैं बहिनों को भी ठगने आया हूं व कहा कि जा चंदा इकट्ठा करके ला। माताजी ने उन्हे एक जड़ाऊ स्वर्ण वेदी व अपने हाथ से बनाई हुई मूर्ति भेंट कीं जो उसी समय नीलाम करके उसकी निधि हरिजन उद्धार कोष में दे दी गई।

प्रथम हरिजन मंदिर

उसी समय पुरानी बस्ती में एक मंदिर हरिजनों के लिय महात्माजी द्वारा खोला गया।यह शायद इस क्षेत्र का पहिला मंदिर था जो कि हरिजन बन्धुओं को भगवान की मूर्ति के प्रत्यक्ष दर्शन कराने में सफल हुआ।

महात्माजी की दिनचर्या अत्यन्त नियमित थी। सबेरे ३ बजे व उठ जाते थे,भोजन भी अत्यन्त सीमित व दोपहर में करते थे यह व्यवस्था मीरा बहिन करती थीं व शाम को प्रार्थना होती थी व "वैष्णवजन तो तेणे कहिए जे पीर पराई जाणे रे" की ध्वनि से सारा वातावरण एक अपूर्व उल्लास व श्रद्धा से परिपूर्ण हो उठता था।

इस प्रकार एक सप्ताह गांधीजी यहां रहे।उनके दर्शन व सान्निध्य का सौभाग्य हमलोगों को प्राप्त हुआ जिसका स्मरण कर आज भी हृदय रोमांचित हो उठता है।

महात्माजी यहां पर दुर्ग होते हुए पधारे। दुर्ग की जनता ने भी महात्माजी का भव्य स्वागत किया। दुर्ग में वे श्री घनश्याम सिंहजी गुप्ता के निवास स्थान पर ठहर थे।

यहां से महात्माजी बिलासपुर गये वहां के लोगों द्वारा भी उनका अपूर्व स्वागत हुआ। बिलासपुर में व स्व. पं. कुंज बिहारीलाल अग्निहोत्री के निवास स्थान पर ठहरे थे।

इस प्रकार गांधीजी की छत्तीसगढ़ की यात्रा संपन्न हुई। इसका प्रभाव यहां की जनता परइतना अधिक पड़ाकि स्वतंत्रता संग्राम में रायपुर अग्रणी रहा व प्रान्त का नेतृत्व प्रायः रायपुर के यशस्वी नेता शुक्लजी के हाथ में रहा। रायपुर से अनेकों नेता जेल गये। लोगों ने लाठी प्रहार हंसते २ सहा। कितनों पर जुर्माना हुआ। पं. रविशंकर जी शुक्ल व ठाकुर

(शेष पृष्ठ ८९ पर)

(पृष्ठ १४ का शेष)

में आन्दोलन गांधीवादी हो और उसका दमन भी गांधीवादी के अनुरूप ही हो। फलतः श्री पाटिल को नौकरी से हाथ धोना पड़ा। वे कांग्रेस में सम्मिलित हो गये। पन्द्रह अगस्त १९४७ को स्वाधीनता दिवस के प्रथम पावन पर्व पर राय-- पुर में सर्वप्रथम तिरंगा फहराने का सौभाग्य मिनिस्टर के रूप में श्री आर. के. पाटिल को ही प्राप्त हुआ। यह है छत्तीस गढ़ में गांधीवाद का प्रत्यक्ष प्रमाण।

इसमें संदेह नहीं कि छत्तीसगढ़ में गांधीवाद का मौलिक रूप और शैली मे प्रचार पंडित रविशंकर शुक्ल ने किया। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी "विद्यामंदिर" की योजना मूलतः गांधीवाद की व्यवहारिक शिक्षा की थी। शुक्ल जी वर्धा में गांधीजी के अत्यन्त निकट संपर्क में रहे। वहीं "विद्या मंदिर" शिक्षा योजना का उन्होंने सूत्रपात किया। सन् ३७ के मंत्रिमंडल में पहले शुक्लजी शिक्षामंत्री थे। उसी समय उन्होंने गांधीवादी शिक्षा. योजना "विद्या मंदिर" का प्रयोग किया। इस योजना के द्वारा बालकों के कोमल हृदय और मस्तिष्क पर गांधीवाद की अमिट छाप डालने की व्यवस्था और उद्देश्य था। "विद्या मंदिर" योजना को गांधीजी का पूर्ण समर्थन प्राप्त था। मूलोद्योग पर आधारित "विद्या मंदिर" योजना का प्रयोग क्षेत्र छत्तीसगढ़ ही बना। "बेसिक एजुकेशन" ने गांधीवाद को सुदृढ़ किया। यदि शुक्लजी की "विद्या मंदिर" योजना देश के अन्य भागों में भी अनिवार्यतः लागू कर दी जाती तो गांधीवादी छत्तीसगढ़ ने देश भर में गांधीवाद को पनपने में मौलिक योगदान दिया होता। अस्तु। तात्पर्य यह कि "विद्या मंदिर" योजना ने छत्तीसगढ़ में गांधी-वाद को पनपाने में मौलिक योगदान दिया। गांधीवाद के प्रचार का यह इतना ठोस और सक्रिय कदम था कि कहीं इसका दूसरा कोई जोड़ नहीं है। विद्या मंदिर की शिक्षा योजना बालकों के हृदय से गुलामी की बू निकालकर शनैः शनैः स्वावलम्बन, अहिंसा और शान्ति की ओर अग्रसर होने के प्रयास को प्रश्रय देती थी। दूसरी ओर ठाकुर प्यारेलाल सिंह अपने त्याग के प्रभाव से वयस्कों को सहकारिता का प्रयोग तथा उपयोग सिखाते हुए अपने कार्य कलापों के माध्यम से गांधीवाद का प्रचार करते रहे।

यह सर्व विदित है कि स्वाधीनता प्राप्त होने के पश्चात् गांधीवादियों में से अधिकांश सत्ता के चक्र में फंस गये। समस्त देश के समान छत्तीसगढ़ में भी गांधीवाद दो धाराओं में विभक्त हो गया : एक शासकीय और दूसरी सर्वो-दयी। छत्तीसगढ़ के प्रमुख नेता द्वय पंडित रविशंकर शुक्ल शासकीय धारा के और ठाकुर प्यारेलाल सिंह सर्वोदयी धारा के प्रतिनिधि हो गये। छत्तीसगढ़ में ठाकुर प्यारेलाल सिंह इतने उच्च स्तरीय गांधीवादी थे कि वे "छत्तीसगढ़ का गांधी" कहलाये। पहले दोनों ही राजनीति में रहे। कांग्रेसी शासन में शुक्लजी मुख्यमंत्री और ठाकुर साहब विरोधी दल के नेता थे। गांधीवाद में मोड़ आया। त्यागनिष्ठ यति यतनलाल निष्क्रिय से हो गये। कांग्रेसी और समाजवादी धाराएं स्पष्ट दिखाई देने लगीं जिन दोनों का आधार गांधीवाद ही था। ठाकुर प्यारेलाल सिंह समाजवादी दल का नेतृत्व एवं प्रतिनिधित्व करते रहे। बाद में वे सर्वोदयी नेता के रूप में पैदल यात्रा के दरम्यान कार्यरत रहते हुए योगी की भांति दिवंगत हुए। शासन के रवैये ने स्वार्थ को प्रबलतम किया। गांधीवाद प्रायः दब सा गया। आज की यही विषय स्थिति है। गांधी शताब्दी समारोह कुछ इसी प्रकार का प्रयोग ज्ञात होता है जैसे बौद्ध धर्म की हीनयान और महायान शाखाओं के बीच समन्वय स्थापित करने के लक्ष्य से सभा का आयोजन किया गया था। यदि गांधी शताब्दी समारोह का लक्ष्य छिछला और उथला नहीं है और विश्व का जन मानस और लोक हृदय गांधीवाद में दृढ़तम आस्था रखते हुए उसके माध्यम से ही विश्व शान्ति की संभावना स्वीकार करते हैं तब तो "मानवता" एक बार पुनः जागृत होगी और उस समय निश्चय ही छत्तीसगढ़ "गांधीवाद" में अग्रगण्य होने का प्रयास करेगा क्योंकि अतीत में इस क्षेत्र में गांधीवाद की जड़े अधिकाधिक गहराई तक जम चुकी हैं और सदा की भांति वर्तमान में भी छत्तीसगढ़ का हृदय सरल और निश्छल है।

(शेष पृष्ठ ८७ का)

प्यारेलाल सिंहजी की वकालत का लाइसेंस जब्त हुआ। पं. शुक्ल कीहजारों रुपये कीमाहवार की वकालत थी परन्तु उन्होंन उसकी कोई परवाह न की व सत्याग्रह संग्राम में कूद पड़े। कई वार जेल गये। सिवनी जेल में उनके साथ दुर्व्यवहार भी हुआ व जबर्दस्ती उनसे अंगूठा लगवाने का प्रयत्न किया गया। उनकी माताजी की मृत्यु के समय उन्होंने पैरोल पर छोड़ा जाना अस्वीकार कर दिया। माताजी की मृत्यु हो जाने के बाद गवर्नर की आज्ञा से उन्हें छोड़ दिया गया। १५ दिनों के बाद फिर स्वयं ही जेल वापिस आ गये। हमलोगों ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से आरती कर उन्हें विदा किया । यह कार्य पहिले हमारी नानीजी स्वयं किया करती थीं। उस समय प्राचीन काल का दृश्य उपस्थित हो जाता था, जब वे अपने एक लौते पुत्र को तिलक आरती करके जेल जाने के लिये बिदा करती थी ।

अंत में यही कहना पड़ता है कि यह क्षेत्र १९२० से स्वतन्त्रता प्राप्ति तक महात्माजी से प्रभावित होकर स्वतन्त्रता संग्राम में जूझता रहा। जिससे लोगों में गांधीवाद की चेतना जागी। अनेकों राष्ट्रीय संस्थायें खादी भंडार इत्यादि की स्थापना हुई।

सौभाग्य चिन्ह का बलिदान

हजारों सैनिक स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने आगे आये । महिलायें भी पीछे न रहीं। सवेरे २ सूर्योदय के समय "रणभरी बज चुकी बीरवर पहिनो केसरिया बाना" की ध्वनि लोगों के हृदय में उत्साह व प्रेरणा जागृत कर देती थी। महिलायें दूकानों पर धरना देती थीं। लोगों को शराब, गांजा, अफीम इत्यादि खरीदने से रोकती थीं। इसी प्रकार विदेशी वस्तुओं व विदेशी कपड़ों की दूकानों पर भी धरना देती थीं। एक बार एक दूकानदार ने एक महिला से कहा बहिनजी आप विदेशी कपड़ा बंचने को तो रोकती हैं पर स्वयं विदेशी चूड़ियां पहिने हुए हैं।" उस बहिन ने उसी समय अपना सौभाग्य चिन्ह जिसे नारी अपना सर्वस्व समझती है वहीं पर तोड़ दीं व अत्यन्त मार्मिक दृश्य उपस्थित हो गया। दूकानदार भी ग्लानि से चुप हो गया।

स्व. राधा बाई

स्व. राधाबाई ने भी देश के लिये निस्वार्थ सेवा अर्पण की। कांग्रेस भवन के निर्माण के लिये अपनी बहुत सी सम्पति दान कर दी और स्वयं कड़ाही उठा कर रेजा के रूप में कार्य करके एक अनोखा उदाहरण पेश किया।

प्रभातफेरियों व धरना देने वाली टोलियां में मुझ भी भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था ।

१९४२ में पं. शुक्लजी ने २६ जनवरी को महिलाओं मे खादी बेचने का भार मुझपर सौंपा था । दिन भर में करीब तीन या चार सौ रुपये की खादी बेचने के पश्चात रात्रि मे मैं उनके ही पास गठरी लेकर पहुंची कि "मामाजी आप भी खादी खरीदिये" वेबड़े प्रसन्न हुए व परिवार की महिलाओं के लिये खादी की साड़ियां खरीदी। उनक बायां हाथ मेरी पीठ पर था। मैं गद्‌गद्‌ हो उठी। बालक भी इस संग्राम में पीछे न रहे टोलियां की टोलियां गाते निकलती। कांग्रेस का साहित्य व पर्चे बांटते हुए वानर सेना का एक अपूर्व दृश्य उपस्थित करती। एक बार ये पर्चे बाटते हुए पं, शुक्लजी के द्वितीय पुत्र (जो केवल ११ वर्ष के थे) स्व. भगवती चरण शुक्ल एक सिपाही द्वारा पकड़ लिये गये । उनके हाथ में आपत्तिजनक पर्चा था । बहुत प्रयत्न करने पर भी सिपाही सफल न हो सका । भगवती चरण के हाथों व शरीर में कई खरोचें आई,गौरवपूर्ण शरीर पर रक्त की रेखायें उभरने लगीं अंत में उन्होंने

उस पर्चे को मुंह में रखकर चबा डाला पर पुलिस के हाथ न लगने दिया। यह था गाँधीजी का व्यक्तित्व जो क्या पुरुष, क्या स्त्री नन्हे बालकों को भी वह इस प्रकार प्रभावित कर गया।

देश स्वतंत्र हुआ। मध्यप्रदेश का नेतृत्व पं.शुक्लजी के हाथों आया। १९५६ में नये मध्यप्रदेश का निर्माण हुआ व वर्ष के अंतिम दिन स्वतन्त्रता का यह सेनानी भी देश की सेवा में लगा हुआ निर्वाण को प्राप्त हुआ।

आज हम गांधी शताब्दी मना रहे है। पर क्या हम छाती पर हाथ रखकर कह सकते है कि हम गाँधी शताब्दी मना रहे हैं। सब ओर अंहिसा के स्थान पर हिंसात्मक घटनायें सत्य के स्थान पर भ्रष्टाचार फैल रहा है व हम कहते है कि हम गांधी शताब्दी मना रहे है। हम राष्ट्र पिता के चरणों में अपराधियों की तरह नतमस्तक है हमने गांधी जी के सत्याग्रह को विकृत कर दिया। आज सत्याग्रह दूराग्रह साबित हो रहा है। आज निस्वार्थ के बदले स्वार्थ का बोलबाला है।

फिर भी हम राष्ट्रपिता के चरणों में अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

(शेष पृष्ठ १२ का)

गई। यहां यह उल्लेखनीय है कि इस अवधि में अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस का एक विशेष अधिवेशन विदेश प्रवासी देशभक्त पंजाब केशरी लाला लाजततरायजी की अध्यक्षता में कलकत्ता में संपन्न हुआ। अधिक दिन भी नहीं व्यतीत हुए थे और असहयोग आन्दोलन विषयक प्रस्ताव स्वीकृत होने के पश्चात् लोकमान्य बाल गंगाधरजी तिलकजी की मृत्यु के पश्चात् कांग्रेस की बागडोर महात्मा गांधीजी के हाथ में आने से, शासन की इन कार्यवाहियों की कोई चिन्ता स्थानीय नेताओं को नहींथी। प्रत्युत इसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने इस सत्याग्रह को व्यापक तथा सर्वदेशीय रूप प्रदान करने के हेतु यहां से पं. सुन्दरलालजी शर्मा राजिमवाले को २ दिसम्बर सन् १९२० ई. को महात्मा गांधीजी के पास कलकत्ता इस परिस्थिति का ज्ञान कराने तथा उन्हें धमतरी लाकर आशीर्वाद प्राप्त करने के अतिरिक्त इस सत्याग्रह का संचालन सूत्र उनके हाथ में देने की अपेक्षा कर रवाना किया।

अब इस वृहत्त कार्यक्रम की रूपरेखा की जानकारी प्राप्त होने से शासन केवल चौकन्नी ही नहीं हुई किन्तु वह वस्तुस्थिति की पूरी सच्ची जानकारी प्राप्त करने के लिये तथा तदनुसार कार्य करने का पूर्ण अधिकार प्रदान करने हेतु रायपुर जिला के जिलासाहब को कंडेल गांव को भेजने में तत्पर हुई।अब इस जिलाधिकारी के कंडेल पहुंचने पर लोगों से मिलने तथा जांच पड़ताल करने से उन्हें यह स्पष्ट ज्ञात हो गया कि गांव के किसानों के लिये वर्षा होने के बावजूद नहर की नाली काटकर पानी बहाकर ले जाना, तथा अपने खेतों में सिंचाई करना सर्वथा संभव नहीं है और इस आरोप में सत्यता का कोई भी अंश प्रमाणित नहीं हो सकता है। वस्तुतः यह कार्य किसी एक कुत्सित मनोवृत्ति से प्रेरित होकर किया गया निश्चित जान पड़ता है। यह स्पष्ट ज्ञात होने पर भी वे भी शासकीय कोष में द्रव्य संचित करने अथवा कौतूहल एवं मनोरंजन तथा किसानों की दृढ़ता की परीक्षा करने के दृष्टिकोण से निर्धारित लगान की आधी या चौथाई रकम गांव वालों से वसूल करने का एक भीषण प्रयास अथवा एक नाटकीय कार्य कर रहे थे किन्तु गांव वालों की दृढ़ता तथा सत्यता के समक्ष उन्हें कोई सफलता जब नहीं हो सकी, तब अन्त में उन्हें इस अविवेकपूर्ण ढंग से मिथ्या लगाये गये समूचे लगान को माफ करने की शासकीय घोषणा करनी पड़ी। इस तरह यह नहर सत्याग्रह, महात्मा गांधी के धमतरी आगमन के पूर्व ही पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

गांधीवाद

स्व. रामदयालतिवारी

हमें यह निश्चय करना है कि जिसे हम–:गांधीवाद:– कहते हैं, उसमें किन किन विचारों की संगति विद्यमान है। प्रत्येक धर्मोपदेशक तथा महापुरुष के साथ कुछ खास खास विचारों तथा सिद्धान्तों का विशेष संबंध रहा करता है। जब कभी हम गौतम बुद्ध का नाम लेते हैं, हमारे मन में –:अहिंसा परमो धर्म :– का सिद्धान्त-वाक्य जाग्रत हो जाता है; क्योंकि इस महापुरुष के उपदेशों का सारांश अहिंसाधर्म ही है। जैन सम्प्रदाय के आचार्य महावीर स्वामी के साथ भी यही विचार संगति विद्यमान है। योगेश्वर कृष्ण का नाम लेते ही गीता–प्रतिपादित कर्मयोगी जीवन का चित्र हमारी आंखों के सामने अंकित हो जाता है। रामचन्द्रजी की पावन स्मृति के साथ कर्त्तव्यनिष्ठमर्यादाशील जीवन की रूप रेखा हमें दृष्टिगत होने लगती है। स्वामी शंकराचार्य हमारे कानों में वेदान्त-प्रतिपादित "सोऽहं" की अद्वैत-ध्वनि सुना जाते हैं। ईसा मसीह के नाम के साथ नम्रता और त्याग की भावना जाग्रत होती है। उसी प्रकार हजरत मुहम्मद इस्लामी बन्धुत्व की आवाज बुलन्द करते हुए हमारी कल्पना की आंखों के सामने खड़े हो जाते हैं। तात्पर्य यह कि ऐसा कोई धर्मोपदेशक अथवा सम्प्रदाय निर्माता नहीं, जो लोगों के मन में किसी सिद्धान्त विशेष का विकार जाग्रत न करता हो। महात्मा गांधी की गणना राम और कृष्ण के समान प्रागैतिहासिक पुरुषों के साथ तो नहीं, पर गौतम बुद्ध और महात्मा ईसा के साथ कर सकते हैं। सम्भव है कि इसपर किसी को कोई आपत्ति हो परन्तु हमें विश्वास है कि यदि उनके समकालीन लोग नहीं तो आने वाली जन-सन्तति गांधीजी की गणना इन धर्मोपदेशकों के साथ जरूर करेगी।

गांधीवाद के अर्थ गौरव को ठीक-ठीक समझने के लिये हमें उनके पूर्व कथित सिद्धान्तों का दिग्दर्शन करना होगा। गांधी का जन्म पूंजीवाद और युद्धवाद से आक्रांत युग में हुआ है, ये दोनों "वाद" मिलकर इस समय मानव समाज के अभिशाप-स्वरूप हो रहे हैं। बीसवीं सदी को यदि यदि हम एक बड़े शैतान का रूप दे डालें तो हमें उपर्युक्त दोनों वादों को उसके दो पैर मानना पड़ेगा, जिसके पंजों के नीचे इस समय का अधिकांश जन-समाज कुचला हुआ अश्रुपात-पूर्वक औंधा पड़ा हुआ है। जिस समय इस पृथ्वी के मानव-समाज की ऐसी दुर्दशा या दुरवस्था हो रही है, उसी समय महात्माजी जीवन के कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण हुए हैं। ऐसी हालत में यदि उनके उपदेश-वचनों में उपर्युक्त दो बड़ी-बड़ी सार्वजनिक कठिनाइयों को दूर करने का कोई उपाय न हो, तो फिर गांधीजी के जीवन का कोई महत्व नहीं रह जाता परन्तु बात ऐसी नहीं है। महात्माजी ने लोगों को जो कुछ शिक्षा दी है, उसके द्वारा उन्होंने उपर्युक्त शैतान के दोनों पैर–पूंजीवाद और युद्धवाद-उखाड़ने का ही प्रयत्न किया है। इसमें उन्हें भविष्य में सफलता प्राप्त होगी या नहीं–इस समय पर विचार करके ही हम इस ग्रंथ (गाँधी मीमांसा) को समाप्त करना चाहते । अभी तो हम इसी बात पर विचार करेंगे कि गांधीवाद क्या है।

विचारशील पाठकों से यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि पूंजीवाद और युद्धवाद दोनों का आधार–आधेय संबंध है। पूंजीवाद पिता है और युद्धवाद उसका प्यारा औरस पुत्र है। ये दोनों पिता-पुत्र मिलकर पृथ्वी के सिंहासन पर इस समय विराजमान हैं और अपनी उद्दण्डनीति का शासन स्वेच्छापूर्वक चला रहे हैं। इन दोनों की जन्म कथा इस प्रकार

है। पश्चिमी दुनिया के जन्मना दरिद्र और क्षुधार्त जन समाज के लक्ष्य में अपनी भौतिक हीनता की एक कसक पैदा हुई। हृदय की इस पीड़ा ने उन्हें उद्योगशील बनाया। उनकी धरित्री रत्नगर्भा साबित नहीं हुई। इस कारण वे नाना प्रकार के उद्योग धंधों में लग गये, साथ ही वे पृथ्वी के इतर खण्डों की ओर लालच की निगाह से देखने भी लगे। इसी बीच में उनकी अनुभूत आवश्यकताओं ने वैज्ञानिक आविष्कारों को जन्म दिया। वाष्प शक्ति उनके हाथ लगी। इस शक्ति का उपयोग उन्होंने दो प्रकार के यन्त्रों के द्वारा किया। एक के द्वारा उन्होंने इस शक्ति से कल-कारखानों में अनेक प्रकार की चीजें बनाई। दूसरे के द्वारा इन चीजों को बाहर विदेशों में ढोने के लिये बड़ी-बड़ी वाष्पनौकायें और लम्बी-लम्बी रेल-गाड़ियां बनाई। दोनों यंत्रों के मेल ने पश्चिमी संसार को थोड़े ही दिनों में मालामाल कर दिया। पृथ्वी की अधिकांश पूंजी पश्चिमी पूंजीपतियों के पास इकट्ठी हो गई पर उनके बीच में भी अधिकांश जन-समाज दरिद्र ही रहा। पूर्वी गोलार्द्ध इस प्रकार खोखला हो चला और पश्चिमी भाग के पूंजीवाले श्रीमान् अपनी अर्थ-विपुलता के कारण उन्मत्त और पागल हो चले। पृथ्वी का पूर्वार्द्ध जहां-जहां आबादी से सघन और खनिज पदार्थों से परिपूर्ण है, वहां वहां उन्होंने अपनी दाल गलाने का प्रयत्न किया। उन्होंने सोचा कि कुछ स्थान उनके लिये ऐसे जरूर होने चाहिये, जहां वे अपने यंत्रों के उपयोग के लिये कच्चा माल निकाल सकें और अपनी बनाई हुई चीजों की खपत भी कर सकें। इस विचारधारा ने—स्थाई व्यवसाय व्यवस्था स्थापित करने की इच्छा ने—साम्राज्यवाद को जन्म दिया। यह वाद पूंजीवाद का पुत्र और युद्धवाद का सगा भाई है।

महात्मा गांधी के सारे उपदेश-वचनों से हमने दो शब्द निकाले हैं वे हैं अहिंसा और चरखा सिद्धान्त। चर्खा न कहकर हम चर्खा सिद्धान्त कहना अधिक उपयुक्त समझते हैं। चर्खा घरेलू उद्योग धंधों का प्रतीक है। घरेलू धंधे केन्द्रित व्यवसायों के जानी दुश्मन है। इस दृष्टि से गांधीजी का चर्खा वर्तमान कल-कारखानों का कट्टर से कट्टर विरोध है। वह यथार्थ में पूंजीवाद के विनाश के लिये चक्र सुदर्शन है। यदि इस चक्र से पूंजीवाद आहत हुआ, तो उसके दोनों औरस पुत्र युद्धवाद और साम्राज्यवाद आप ही नष्ट हो जायेंगे। सुना जाता है कि दैत्यों के प्राण कभी पैर में, कभी हाथ की कनिष्ठ अंगुलियों में और कभी पुराने वृक्षों की खोल में भी रहते हैं। इसी प्रकार हम कह सकते हैं कि उपर्युक्त दोनों दैत्य-पुत्रों के प्राण उनके पिता पूंजीवाद की भीषण काया में ही सन्निहित हैं। इस कारण पिता के मरते ही दोनों पुत्र भी आप ही आप मर जावेंगे, इसमें संदेह नहीं। मनुष्यों में ऐसा नहीं होता। इस योनि में पिता के मरने के बाद पुत्र उत्तराधिकारी हुआ करते हैं। सारांश यह है कि चर्खा सिद्धान्त को कार्यरूप में परिणित करने का परिणाम पूंजीवाद, युद्धवाद और साम्राज्यवाद तीनों का विनाश होगा। जब कल कारखाने ही न रहेंगे, तो इतना अधिक माल विदेशों के लिये कौन और किस तरह तैयार करेगा? जब बिक्री के लिये माल ही नहीं, तो बाजारों की जरूरत ही क्या। बाजारों की जरूरत नहीं, तो साम्राज्य ही व्यर्थ होंगे। लाभ के बिना दूसरों पर शासन करने का अर्थ उत्तरदायित्व कौन अपने मत्थे ले? फिर जब साम्राज्य ही नहीं, तो युद्ध और खूनखराबी की बला कौन मोल ले? इस तरह विचारशील पाठक देखेंगे कि महात्मा गांधीजी का चर्खा सिद्धान्त और अहिंसा धर्म दोनों परस्पर सम्बद्ध विचार हैं। अतएवं जिसे हम गांधीवाद कहते हैं उसके मूल में अहिंसा का सिद्धान्त सर्व प्रथम है, यानी गांधीवाद प्रथमतः अहिंसामूलक है।

परन्तु ध्यान रहे कि अहिंसा की भावना को हृदयंगम करने के लिये मानसिक संयम की आवश्यकता होती है। द्वेष, घृणा और क्रोध के भावों पर अधिकार प्राप्त करना पड़ता है, अन्यथा बाहरी हिंसा के न होते हुए भी मानसिक हिंसा तो होती ही रहेगी। अतएवं मन के विकारों पर विजय प्राप्त करने के लिये खान पान, रहन-सहन एवं आचरण में सादगी की आवश्यकता अनिवार्य है। स्वयं गांधीजी का जीवन भी सादगी और संयम का प्रत्यक्ष उदाहरण है। अतएव जिसे हम गांधीवाद कहते हैं, वह द्वितीयतः संयमप्रधान है।

परन्तु गांधीवाद की पूर्णता केवल अहिंसा और संयम से ही नहीं हो जाती। ये दोनों मानव-हृदय की नैतिक अवस्थायें हैं। जब तक इन दोनों का प्रकटीकरण और परिसमाप्ति जीवन के भौतिक कर्म-क्षेत्र में नहीं हो जाती, तब तक जन-समाज के लिये उनका कोई उपयोग नहीं। हम पहले ही कह चुके हैं कि अहिंसा धर्म और चर्खा सिद्धान्त दोनों परस्पर सम्बद्ध विचार हैं। पूंजीवाद, अहिंसा-धर्म और संयम दोनों का घातक है। अतएव घरेलू उद्योग-धंधों के द्वारा ही इन दोनों नैतिक गुणों की रक्षा और विकास संभव है। कल-कारखानों के मालिक अपनी अर्थ-विपुलता के कारण अपना मन संयम खो बैठते हैं और उनके मजदूर अपनी अतिशय दरिद्रता के कारण पतित हो जाते हैं। परन्तु घरेलू उद्योग धंधों में व्यस्त रहने वाले मनुष्य को न तो इतना द्रव्य ही प्राप्त हो सकता कि जिससे वह मिल मालिकों के समान विलासी जीवन व्यतीत करे, न फिर वह मजदूरों के समान इतना दरिद्र ही हो सकता कि उसे भरपेट भोजन के भी लाले पड़ें। इस तरह वह अर्थ-विपुलता और एकान्त दरिद्रता दोनों के दुष्परिणामों से सुरक्षित रहता है। इसी एक बात पर घरेलू उद्योग धंधों का नैतिक महत्व है। इसी कारण महात्माजी चर्खे के द्वारा लोगों को यह उपदेश देना चाहते हैं कि वे अपनी आवश्यक वस्तुओं के लिये स्वावलम्बी बनें और कल-कारखानों का अवलम्ब लेना अपने नैतिक और आर्थिक जीवन के लिये घातक समझें। ऐसा स्वावलम्बी उद्योग गांधीजी को अत्यन्त प्रिय है और ऐसे ही उद्योगी जीवन का उपदेश वे चर्खे के द्वारा जन-समाज को दे रहे हैं। अतएव गांधीवाद की जो व्याख्या हमने "अहिंसा-मूलक" और "संयम-प्रधान" इन दो शब्दों से की थी, उसकी पूर्णता उद्योगवाद से हो जाती है। सारांश यह है कि गांधीवाद जीवन के उस सिद्धान्त का नाम है जिसे हम अहिंसामूलक, संयम-प्रधान उद्योगवाद कह सकते हैं।

गांधीवाद की इस संक्षिप्त व्याख्या के बाद हमें यह देखना है कि उसका भविष्य क्या है। इस वाद के हिमायती इस आशा और विश्वास से प्रेरित होकर काम कर रहे हैं कि एक दिन ऐसा जरूर आवेगा कि इस पृथ्वी पर अथवा कम से कम भारतवर्ष में गांधीजी की अहिंसा और रामराज्य का प्रसार होगा तथा ऐसी अहिंसा-पूर्ण व्यवस्था में लोग शान्ति-पूर्वक स्वावलम्बन-शील जीवन व्यतीत करेंगे। कल-कारखानों का मूलोत्पाटन हो जावेगा और ग्रामीण उद्योग धंधों की बदौलत न तो कोई विशेष श्रीमान् ही होगा न अत्यन्त दरिद्र। वर्त्तमान सामाजिक व्यवस्था की विषमता दूर हो जावेगी और लोग आत्म-संयमी होकर बाह्यान्तर स्वराज्य का उपभोग कर सकेंगे। इस धारणा के संबंध में किसी भी समझदार मनुष्य को कुछ भी शिकायत नहीं हो सकती। हम भी यही चाहते हैं कि परमात्मा करे कि वह शुभ घड़ी शीघ्र आवे और गांधीजी तथा उनके अनुगामियों के सुख-स्वप्न जाग्रत जीवन में चरितार्थ हो।

परन्तु हमें यह लिखते हुए अत्यन्त खेद होता है कि हमारा विवेक गांधी-पथ के पथिकों की आशा से प्रेरणा प्राप्त नहीं करता। जिस समय हम वर्त्तमान जन-समाज के मनो-विकास की ओर दृष्टिपात करते हैं और जब हम यह देखते हैं कि लोगों की मनोवृत्ति रामराज्य स्थापित करने के लिये आज सर्वथा असमर्थ है और ऐसा सामर्थ्य प्राप्त करने के लिये उसे हजारों वर्षों की जरूरत है, तब हमारा हृदय घोर निराशा का निःश्वास लेता हुआ विवश होकर कहता है, अफसोस, हमें गांधी और गांधीवाद दोनों की परिसमाप्ति एक साथ ही देखनी पड़ेगी।

हम पहले लिख चुके हैं कि गांधीवाद का निचोड़ केवल दो शब्दों में निकाला जा सकता है, अहिंसा-धर्म और चर्खा-सिद्धान्त। अब हम पहले यही देखें कि अहिंसा का भविष्य कैसा है? उज्ज्वल अथवा मलिन। इस प्रश्न पर विचार करने के पहले हमें स्मरण रखना चाहिये कि अहिंसा आर्य-सभ्यता का बड़ा प्राचीन सिद्धान्त है। वैदिक धर्म के अनुसार अहिंसा परम धर्म है। परन्तु वेदों ने इस धर्म को तर्क और मनोविज्ञान की दृष्टि से देखा और यह निश्चय किया कि अहिंसा कोई ऐसा सिद्धान्त नहीं है जो त्रिकालाबाधित हो और जिसके पालने में देश, काल तथा पात्र पर विचार करने की आवश्यकता न पड़े। धर्म के अन्यान्य अंगों के जिस प्रकार अपवाद हो सकते हैं और परिस्थिति विशेष में उनके परिवर्तित रूपों को

स्वीकार करना पड़ता , है, उसी प्रकार प्रसंग विशेष में हिंसा भी धर्म का रूप धारण कर लेती है और अहिंसा अधर्म में परिणित हो जाती है इसी कारण उन्होंने कहा कि, "वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति ?" वैदिकी हिंसा का आशय है, यज्ञार्थ की गई हिंसा। ध्यान रहे कि यहां पर यज्ञ का संकुचित अर्थ अभिप्रेत नहीं है। संसार के जितने पुण्य कार्य हैं, वे सब यज्ञ ही हैं। भगवद्गीता में यज्ञ की जो व्यापकता प्रदर्शित की गई है, उसी दृष्टि से हमें उसका आशय समझना चाहिए।' इस दशा में हमें मानना पड़ेगा कि वैदिक मत के अनुसार सदुद्देश्य से की गई हिंसा सर्वथा धर्म संगत है। इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन योगेश्वर कृष्ण ने गीता में भी किया है और इसी के अनुसार कुरुक्षेत्र के मैदान में दुर्योधनादक आततायियों को मारने के लिये उन्होंने अर्जुन को कटिबद्ध किया और सारांश में यह कहा कि "अर्जुन, लोक-संग्रह तथा क्षात्र-धर्म की दृष्टि से दुष्टों का विनाश करना सर्वथा उचित है; इसलिये समबुद्धि से धर्म-संस्थापनार्थ तू इन दुष्ट कौरवों का वध कर, तेरे लिये यह बड़े पुण्य का काम होगा।

कालान्तर में वैदिक-यज्ञ-योगों का रूप विकृत हो गया और वैदिकी हिंसा के नाम पर जिह्वा-लोलुप ब्राह्मण पशुओं का अत्यधिक और अनुचित बलिदान करके अपनी वासना तृप्त करने लगे। गौतम बुद्ध ने इस विकृत वैदिकी हिंसा का विरोध किया और "अहिंसा परमो धर्मः" की आवाज देश-देशान्तरों में बुलन्द की परन्तु गौतम-बुद्ध की अहिंसा प्रति-क्रियात्मक थी। जिस प्रकार वेद मतावलम्बी ब्राह्मण अहिंसा-धर्म के वैज्ञानिक रूप से पराङ्मुख हो चुके थे, यानी यज्ञ के नाम पर अनावश्यक हिंसा कार्य में प्रवृत्त थे, उसी प्रकार बौद्ध-धर्म ने भी प्रतिक्रियात्मक रूप से निरपवाद अहिंसा-धर्म का उपदेश जन-समा को दिया यानी जहां वेद मतानुसार हिंसा-कर्म धर्म संगत माना जाता था वहां भी गौतम-बुद्ध ने उसे वर्जित ठहराया। बौद्ध-भिक्षुओं ने भारतवर्ष के बाहर देशान्तरों में भी इस अहिंसा-धर्म का प्रचार किया। उन दिनों में भी वे दक्षिण में सुमात्रा, जावा, बोर्नियो और उत्तर और पश्चिम में चीन, जापान तथा पेलेस्टाइन तक पहुंच गये थे। हजरत ईसा को अहिंसा-धर्म की दीक्षा बौद्ध-भिक्षुओं से ही मिली। परन्तु योरोप के बर्बरताग्रस्त और हिंसक जन-समाज में अहिंसा-मूलक ईसाई मत का कुछ भी प्रभाव न पड़ सका। ईसा-मसीह ने बौद्ध-भिक्षुओं से जिस अहिंसा-धर्म की दीक्षा ली थी, वह भी वैदिकी अहिंसा का बिगड़ा हुआ प्रतिक्रियात्मक रूप ही था। यदि कोई दुष्ट तुम्हारे बायें गाल में थप्पड़ मारे, तो दाहिना गाल उसकी ओर फेर दो' ऐसा उपदेश वेद-मत को मान्य नहीं है। उसके मतानुसार तो आततायियों का विनाश करना पवित्र क्षात्र-धर्म है। अहिंसा के नाम पर आत्महत्या करने का आदेश वैदिक धर्म हर्गिज नहीं देता। महात्मा गांधी अहिंसा के जिस रूप को पाकर प्रसन्न हैं और जिसका प्रचार वे इस समय जन-समाज में कर रहे हैं, वह वैदिक-धर्म प्रतिपादित अहिंसा-धर्म नहीं है, बल्कि ईसाई मजहब से लिया हुआ वैदिकी अहिंसा का विकृत बौद्ध रूपान्तर है जो हिंदू नीतिशास्त्र की वैज्ञानिक दृष्टि से सर्वथा अग्राह्य है। अतएव हमें तो इस बात पर जरा भी सन्देह नहीं है कि हिंदू-समाज की तर्क-मूलक धार्मिकता को गांधीजी की अहिंसा कभी मान्य नहीं हो सकती। बल्कि हमें तो इस बात का अन्देशा है कि जिस रूप में और जिस उत्साह के साथ वे इस समय अहिंसा का प्रचार कर रहे हैं उसका परिणाम निकटवर्त्ती भविष्य में कदाचित् विपरीत हो और एक प्रति-क्रियात्मक आन्दोलन का सूत्रपात होगा। ईश्वर न करे, ऐसी परिस्थिति कभी आवे।

मानव सभ्यता के प्रातःकाल से आज तक अहिंसा सिद्धान्त के चार बड़े-बड़े प्रवर्त्तक हो गये हैं। सबसे पहले जैन सम्प्रदाय के आचार्य महावीर स्वामी हुए। उनके बाद गौतम बुद्ध हुए। गौतम बुद्ध के बाद ईसा मसीह और ईसा के बाद महात्मा गांधी हुए।प्रथम तीन धर्मोपदेशकों की अहिंसा शिक्षा का जन-समाज पर क्या परिणाम हुआ ? कहने योग्य कुछ भी नहीं। महावीर स्वामी एक ऐसे सम्प्रदाय की रचना करके चले गये जिसके मानने वाले हिंसा से बचने का कुछ उपहास-जनक और निरर्थक प्रयत्न करते हुए अब भी देखने में आते हैं। गौतम-बुद्ध की अहिंसा और भी अधिक निष्फल साबित हुई। चीन, जापान और ब्रह्मदेश के बौद्धमतावलम्बियों की दैनिक जीवन-चर्या, रहन-सहन तथा खान-पान का कोई निरीक्षण करेगा तो उसे अनायास प्रतीत होगा कि इन देशों में जीव हिंसा का बाजार कितना गर्म है। इन देशों के लोग पृथ्वी के

सभी कीड़ों-मकोड़ों का अचार बनाकर खा जाते हैं। बौद्ध-धर्म का स्वाभिमानी जापान आज सिर से पैर तक शस्त्र-सन्नद्ध है और पशुबल के द्वारा चीन को हड़प जाने पर तुला हुआ है। हजरत ईसा का अहिंसा-धर्म तो और भी अधिक निष्फल साबित हुआ। ईसा-मतावलम्बी योरोपीय राष्ट्र आज अपने शस्त्र-बल के द्वारा सारी पृथ्वी पर आतंक जमाये बैठे हैं। उनकी हिंसक मनोवृत्ति को देखकर किसी को ऐसा अनुमान भी नहीं हो सकता कि वे हजरत ईसा के समान किसी अहिंसावादी के अनुगामी और भक्त हैं।

अब इस भौतिकता-ग्रस्त वर्त्तमान युग में अहिंसा धर्म की वही पुरानी आवाज गांधीवाद के रूप में फिर भी कर्णगोचर हो रही है। महात्मा गांधी और प्रथम तीन धर्मोपदेशक की अहिंसा में महत्वपूर्ण अन्तर यह है कि अभी तक इस धर्म का अक्षरशः पालन करने में वे ही लोग प्रयत्नशील रहते आये हैं, जो आध्यात्मिक मोक्ष के अभिलाषी थे। प्रथम तीन आचार्यों ने अहिंसा का उपदेश धर्म मंच से ही दिया और वह भी मुमुक्षुओं को।परन्तु गांधीजी की अहिंसा संबंधी शिक्षा-दीक्षा जन-समाज के उन सर्व-साधारण लोगों को दी जा रही है, जिनका दृष्टिकोण सांसारिक है और जो राजनैतिक स्वतंत्रता के हिमायती हैं। "अहिंसा-धर्म" शीर्षक प्रकरण में हमने हिंदू-धर्म शास्त्र की दृष्टि से इस शिक्षा के औचित्य-अनौचित्य पर अच्छी तरह विचार किया है। यहां पर हमें केवल परिणाम की दृष्टि से यह देखना है कि महात्मा गांधी के इस व्यापक और निरपवाद अहिंसा-धर्म का असर जन-समाज पर क्या होगा। हम तो यही समझते हैं कि धर्म मंच से दी हुई अहिंसा की दीक्षा का परिणाम पारलौकिक धर्मपथ पर आरुढ़ रहने वाले मोक्षार्थियों पर जहां कुछ न हुआ, वहां राजनैतिक क्षेत्र में स्वराज्य के लिये लड़ने वाले संसारी लोगों पर उसका स्थायी प्रभाव कुछ भी नहीं पड़ सकता। अनादृत, पराधीन और अशक्त भारत की अन्तरात्मा इस रूप में अहिंसा-धर्म को स्वीकार नहीं कर सकती। जब कभी वह सामर्थ्यवान होकर राष्ट्रीय योग्यता प्राप्त करेगी, तब तक वह अपने वैदेशिक अहिंसा-धर्म को ही स्वीकार करेगी। वह गांधीवाद की नहीं योगेश्वर कृष्ण-प्रतिपादित गीता-धर्म की अहिंसा होगी।

गांधीवाद की अहिंसा के भविष्य पर संक्षेप में विचार करने के बाद अब हमें यह देखना है कि महात्माजी के ग्रामीण तथा घरेलू उद्योग-धंधों का भविष्य क्या होगा। हम पहले अनेक बार इस बात को मुक्तकंठ से स्वीकार कर चुके हैं कि गांधीजी का चरखा-सिद्धान्त वर्तमान पूंजीवाद की बुराइयों के लिये एक रामबाण उपचार है। हम यह भी बतला चुके हैं कि साम्यवादी सामाजिक व्यवस्था को चिरस्थायी बनाने के लिये गांधीजी की प्रतिपादित की हुई यह युक्ति सर्वथा उपयुक्त और उपादेय है। आज उनके भगीरथप्रयत्नों की बदौलत घरेलू उद्योग-धंधों का यंत्किंचित् प्रचार भी इस देश में हो रहा है। उनके द्वारा स्थापित किये हुए अखिल भारतीय चरखा-संघ की प्रेरणा से खादी भी कुछ लोक-प्रियता प्राप्त कर चुकी है। परन्तु हमें तो ऐसा प्रतीत होता है कि इस दिशा में जो कुछ राष्ट्रीय क्रियाशीलता दृष्टिगत हो रही है, वह सब महात्माजी के व्यक्तित्व तथा आत्म-विश्वास की प्रेरणा का ही परिणाम है। उनके बाद हमें इस बात की आशा नहीं है कि खादी का महत्व हिन्दुस्तान के अबूझ जन-समाज में वैसा ही बना रहेगा, जैसा कि कुछ-कुछ आज है। वैज्ञानिक आविष्कारों की बदौलत जिन यंत्रों का निर्माण हो चुका है, उनका सर्वथा नष्ट हो जाना संभव नहीं है। वे तो अभी बहुत दिनों तक चलते रहेंगे और केन्द्रित व्यवसाय प्रणाली के प्रवर्त्तक सिद्ध होंगे। जब तक इस पृथ्वी पर यह प्रणाली प्रचलित रहेगी, तब तक घरेलू उद्योग धंधों का भविष्य निराशा-जनक ही रहेगा। यदि हिन्दुस्तान का नव-निर्मित साम्यवादी दल इस संबंध में महात्माजी के समान ही उत्साह-प्रदर्शन करता, तो इस देश में चरखा कदाचित् चल जाता परन्तु हमारे साम्यवादी नौजवान कार्ल मार्क्स की भौतिकता-मूलक शिक्षा से दीक्षित हो चुके हैं। वे पूंजीवाद को छिन्न-मूल करने पर तुले हुए हैं, परन्तु अर्थ-विभाग की विषमता को दूर करने के लिये वे मार्क्स प्रतिपादित उपायों को ही श्रेयस्कर समझते हैं। वे केन्द्रीभूत व्यवसाय के संचालक यंत्रों को पूंजीपतियों के नियंत्रण से छीनकर मजदूर शासन के सुपुर्द कर देना चाहते हैं। यंत्र वे ही रहेंगे, व्यवसाय प्रणाली वही रहेगी और मजदूर भी वही रहेंगे, केवल यंत्रों का स्वामित्व पूंजी वाले व्यक्तियों से छूटकर मजदूर-संघ के हाथ

चला जावेगा। परन्तु जैसा कि हम पहले बतला चुके हैं इस परिवर्तन से जन-समाज का कोई विशेष लाभ न होगा। मजदूरों को मजदूरी संभवतः अधिक मिल जावेगी, काम करने के घंटे कम हो जावेंगे, रहने के लिये साफ सुथरे मकान भी उन्हें मिल जावेंगे, मजदूर बच्चों के लिये शिक्षा-दीक्षा का उचित प्रबंध भी हो जावेगा। सब कुछ होगा परन्तु मजदूरमजदूर ही रहेंगे। अपने दैनिक जीवन में उन्हें स्वतंत्र मनुष्य का स्वामित्व कभी प्राप्त न होगा। यंत्रों के समान ही उन्हें प्रतिदिन काम करना पड़ेगा ऐसी व्यवस्था मानवी संस्कृति के विकास में कदापि सहायक नहीं हो सकती।

परन्तु हिन्दुस्तान के नवोदित साम्यवादी दल को महात्माजी का उपर्युक्त दृष्टिकोण हृदय से मान्य नहीं है। आज वे अपने विरोधी विचारों को मन में ही दबाये बैठे हैं। उन्हें महात्माजी की अहिंसा भी मानवीय प्रतीत नहीं होती, क्योंकि कार्ल मार्क्स के साम्यवाद में पूंजीपतियों की वही सेना है, वे ही शस्त्र हैं और पशु-बल का वही संगठन है। अन्तर केवल इतना ही है कि अभी वह सैन्य-बल पूंजीपतियों के संकेत पर अपना काम कर रहा है और साम्यवादी जमाने में वह मजदूर-शासन की आज्ञा को शिरोधार्य मानेगा। तात्पर्य यह है कि प्रश्न-सिद्धान्त परिवर्तन का नहीं है, स्वामित्व परिवर्तन का है। आम तौर पर लोग इस बात को मानने लगे हैं कि इस देश के राजनीतिक भविष्य का सूत्र उदीयमान साम्यवादी दल के हाथों में होगा। यदि लोगों की यह धारणा सच है तो कोई भी निःसंकोच होकर यह कह सकता है कि आने वाले दिन गांधीवाद के लिये अनुकूल नहीं हैं, न तो गांधीजी के द्वारा प्रतिपादित किया हुआ अहिंसा-धर्म ही हमारे भावी साम्यवादी नेताओं को मान्य होगा, न फिर उनका साम्यवादी चर्खा सिद्धान्त ही किसी तरह अमल में लाया जा सकेगा। बुराइयां ज्यों की त्यों ही रहेंगी, केवल उन बुराइयों के प्रवर्त्तक बदल जावेंगे। आज पूंजीपति हैं, कल मजदूर होंगे। जन-समाज के भविष्य पर इस दृष्टि से विचार करने वाले को सहज ही प्रतीत होता है कि हमारे उत्कर्ष की दिल्ली अभी बहुत दूर है। अभी लोगों को अपनी नासमझी के बहुत से कड़ुवे फल चखने हैं। मानव-समाज का विकास नैसर्गिक गति से अनुभव के आधार पर ही संभव है। महात्मा न जाने कितने हुए और होंगे परन्तु केवल इन महात्माओं के उपदेशों का जन-समाज पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ता लोगों को अपने विकास पथ पर अग्रसर होने के लिये पग-पग पर अनुभव का ही आधार चाहिये। यदि अहिंसा बुरी है तो वह गौतम-बुद्ध या महात्मा गांधी के कहने से बुरी सिद्ध नहीं हो सकती। स्वयं जन-समाज सदियों तक उसका उपयोग करेगा, उसके भले-बुरे परिणामों को भोगेगा और फिर कहीं अन्ततोगत्वा स्वयं अर्जित अनुभव के आधार पर वह पशु-बल का परित्याग करेगा।

यदि यन्त्र सार्वजनिक दरिद्रता के प्रवर्त्तक और थोड़े से पूंजी वालों के पोषक है तो गांधीजी के समान एक दो विचारवान् पुरुषों की बातें कारगर न होंगी। मजदूर लोग भी यंत्रों का सर्वथा नाश कर देना पसन्द न करेंगे। वे वर्तमान पूंजीवालों के स्थानापन्न होकर उन्हें मालिक की हैसियत से खुद चलावेंगे। देश-देशान्तरों में अपने व्यवसाय-वाणिज्य का प्रचार करके आर्थिक राष्ट्रीयता से प्रेरित होकर वे अपने देशी मजदूरों की भलाई पहले सोचेंगे और करेंगे। इस प्रयत्न में उन्हें यदि आवश्यकता प्रतीत हुई तो मजदूर साम्राज्य भी स्थापित कर देंगे। कोई ऐसा न सोचे कि पश्चिमी राष्ट्रों में साम्यवाद का यथेष्ट प्रचार होते ही पृथ्वी पर अन्तर्राष्ट्रीय बन्धुत्व आप ही आप स्थापित हो जावेगा। पश्चिम का साम्य-वाद यथार्थ में मजदूरों का आर्थिक स्वार्थवाद है। वह कोई दूध से धुली हुई बिल्कुल निर्दोष चीज नहीं है। राष्ट्रों के साम्य-वादी शासक ही आर्थिक राष्ट्रीयता के नाम पर लड़ेंगे, मरेंगे और दुनिया की बेढंगी रफ्तार अभी सदियों तक यही रहे गी। काल की गति बड़ी प्रबल होती है। उसे रोकने में आज तक कई महापुरुषों की आजन्म और आमरण चेष्टायें विफल हो चुकी हैं। फिर किस आधार पर कहें कि जहां गौतम और ईसा विफल हो चुके हैं, वहां महात्मा गांधी सफल होंगे। हमारी धारणा तो यही कहती है कि जन-समाज अभी अपने वर्त्तमान कंटकाकीर्ण कुपथ पर ही आरुढ़ रहेगा और अपने समय पर ही वह अपने पूर्ण विकास की अवस्था को प्राप्त होगा। जन-समाज को सहसा ऊंचा उठाने वाला लिफ्ट अभी किसी ने तैयार नहीं किया। महापुरुष तथा महात्मा लोग ठीक दिशा की ओर संकेत मात्र ही किया करते हैं और चले जाते हैं।

शुरू से वह इसी तरह चला आया है। महापुरुषों के प्रयत्नों से उसमें क्षणिक चेतनता जरूर आ जाती है, परन्तु सर्व साधारण लोगों में स्थायी जागृति अनुभव की प्रेरणा से ही उत्पन्न होती है।

गांधीवाद की व्याख्या और उसके भविष्य का अनुमान हम संक्षेप में कर चुके हैं अब इस संबंध में हमें विशेष कुछ भी कहना नहीं है। महात्माजी के प्रियतम सिद्धान्तों का निकट भविष्य चाहे कैसा भी निराशाजनक क्यों न हो, परन्तु इसमें संदेह नहीं कि जन-समाज का उत्कर्ष जब कभी होगा, अहिंसा और विश्व-बन्धुत्व की उदार भावना से ही संपादित हो सकेगा। शिक्षा बहुत पुरानी है। लोगों ने यही उपदेश कई महापुरुषों से सुने हैं परन्तु अबूझ मानव समाज अभी पशुता पाश में ही आबद्ध है। उसकी आत्म–जागृति अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में ही है। अभी उसमें तीन चौथाई पशुता विद्यमान है। इसी कारण उसके अधिकांश व्यवहार पाशविक प्रवृत्ति से ही प्रेरणा प्राप्त करते हैं। वर्त्तमान की इस विषम परिस्थिति में स्वार्थी, कलहशील और अनात्मवादी राष्ट्रों के सामने सत्य और अहिंसा की शिक्षा देना शूकरों के सम्मुख मोती बिखेरना है। अतएवं गांधीजी की उदार भावनायें इस समय अरण्यरोदन के समान ही हैं। फिर भी यदि जन-समाज का कल्याण अवश्यम्भावी है तो किसी न किसी दिन सुदूरवर्त्ती भविष्य में गांधीवाद का पौधा पल्लवित होगा, उसमेंफू ल व फल भी लगेंगे। सन्ताप सागर में डूबते हुए निराश जन-समाज के लिये इतनी भी आशा क्या कम है ? यही आशा तो गांधी जी के संकटमय जीवन को सान्त्वना दे रही इसी आशा और विश्वास की संयुक्त प्रेरणा से वे अनन्य मनसाक्रियाशील हैं और जन-कल्याण व जन-समाज की दुरवस्था के कारण विषाद विपन्न होते हुए भी शांत और प्रसन्न रहते हैं। यह आशावाद ही तो मानव-जीवन का मूलाधार है। भोजन के बिना मनुष्य कई दिनों तक जी सकता है, पानी के बिना भी दो चार दिन जीना संभव है, हवा प्राणों के लिये अत्यन्त आवश्यक है फिर भी उसके बिना भी मनुष्य दो चार पस जीवित रह सकता है। परन्तु आशा के बिना उसके लिये पल भर भी जीना संभव नहीं। आशा ऐसी प्राणप्रद वस्तु है। मनुष्य जितना महान होता है,उतना ही बड़ा वह आशावादी भी होता है। महात्मा गांधी का आशावाद भी उनकी महत्ता के अनुरूप है। इसी कारण वे जन-समाज के नीरस, स्वार्थी और हिंसापूर्ण हृदय में भी आसन मारकर इस आशा से बैठे हैं कि कभी न कभी इस मध्यप्रदेश में आत्मा का अविच्छिन्न सोता फूटकर निकलेगा और प्रिय–दर्शन के प्यासे प्राणों को कभी न कभी परितृप्ति मिलेगी। यही आशा उनको जिला रही है।

"यहि आशा अटक्यो रहै, अलि गुलाब के मूल।
अइहैं बहुरि बसंत ऋतु, इन डारिन वे फूल॥

इन ठूठी डालियों पर बसन्त ऋतु का नव विकास फिर भी होगा और वे फूल फिर भी खिलेंगे–जरूर खिलेंगे। इसी आशा से बैठा हुआ प्रेमी भ्रमर पत्र–पुष्प–शून्य डालियों का सेवन कर रहा है। परमात्मा करें हिंसा और स्वार्थ की भयंकर लू चलाने वाली वर्तमान ऋतु का अन्त हो। आत्मोदय के निर्मल कौमुदी से मानव समाज कय हृदय उद्‌भासित हो और सद्‌भावना रूपी बसन्त ऋतु की बासन्ती बहार में पृथ्वी के प्रतिस्पर्धी राष्ट्र एक-दूसरे से प्रेमपूर्वक मिलें, स्वयं सुखपूर्वक जीवें, दूसरों को भी शान्तिपूर्वक जीने दें और इस तरह अपने मनुष्यत्व को सार्थक बनाते हुए विश्व विधाता के मन्तव्य में सहायक हों। महात्माजी के इस स्वर्ण स्वप्न को परमात्मा जाग्रत जीवन में शीघ्र ही चरितार्थ करे।

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः

नोटः–प्रस्तुत लेख छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध गांधीवादी स्व. रामदयाल तिवारी द्वारा सन् १९४१ में रचित "गांधी मीमांसा ग्रंथ से लिया गया है। इस लेख में विद्वान लेखक ने विशद् रूप से गांधीवाद की व्याख्या की है। "गांधी मीमांसा" ग्रंथ के अन्य लेख भी पठनीय हैं।

—सम्पादक

रायपुर में महात्मा गांधी

का आगमन

रायपुर जिले के निवासियों,

महात्मागांधी रायपुर में ता० २२ नवंबर अर्थात् अगहन सुदी पंचमी बुधवार को रात के आठ बज दुर्ग से मोटर द्वारा आवेंगे, नगर प्रवेश के समय उनका अपूर्व स्वागत होगा। दूसरे दिन वे स्वदेशीमेला तथा प्रदर्शनी खोलेंगे जिसमें सब प्रकार का देशी माल तथा अनेक शिक्षाप्रद तथा मनोरंजन की सामग्री रहेगी,उसी दिन म्युनिस्पल कमेटी आदि की ओर से महात्मा जी को मानपत्र दिया जायगा। तीसरे दिन रात्रि को सातबजे गांधी चौक में आमसभा होगी। महात्मा जी रायपुर में ता० २२।११।३३ से २८।११।३३ तक रहेंगे। ता० २८।११।३३ को ९ बजे मेल से बालाघाट जायेंगे ऐसे सुअवसर पर रायपुर जिले के निवासियों का कर्त्तव्य है कि वे उनका हृदय से स्वागत करें तथा उपदेश सुनने का असीम लाभ उठावें।

रायपुर
ता० ६।११।३३

निवेदक
रविशंकर शुक्ल
सभापति
स्वदेशी मेला तथा प्रदर्शनी

नोट:– सन १९३३ में महात्मा गांधीजी के नगरागमन के अवसर पर उपरोक्त परचा नगर में वितरित किया गया था ।

–सम्पादक

अभिनन्दन पत्र

सत्य तथा अहिंसा की मूर्ति, स्वतंत्रता प्रेमी, शांति उपासक हरिजनोद्धारक, अनन्य देशभक्त, भारत हृदय सम्राट, माननीय महात्मा श्री मोहनदास करमचंदजी गांधी के कर कमलों में सादर समर्पण–

महानुभाव,

आपके इस द्वितीय शुभागमन पर धमतरी निवासियों की प्रतिनिधि स्वरूप इस म्यूनिस्पल संस्था को आपकी उत्कट देशभक्ति, त्याग वीरता, कष्ट-सहिष्णुता, धार्मिकता, राजनैतिकता और हरिजनोद्धारिकता प्रभृति अनेक सद्‌गणों तथा सत्कार्यों से मुग्ध एवं प्रभावित होकर अभिनन्दन करने का जो सौभाग्य प्राप्त हुआ है उसे इस मानपत्र द्वारा प्रदर्शित करना यह संस्था अपना परम कर्त्तव्य तथा गौरव समझती है।

साम्प्रत में इस म्यूनिस्पल की आयु लगभग ५२ वर्ष की होगी। यद्यपि प्रान्त की इस तरह अन्य संस्थाओं की समता में इसकी केवल बाल्यावस्था ही है, तथापि वह इस नगर की जो कुछ सेवा कर सकी है वह उत्साहहीन नहीं है।

इस संस्था की वार्षिक आय गत वर्ष ५८०००) थी जिनमें से १४६११) शिक्षा, ४५८४) रोशनी, १७५१५) स्वच्छता और ७४२१) अन्यान्य सार्वजनिक कार्यों में व्यय किया गया। छत्तीसगढ़ विभाग की अन्यान्य म्यूनिस्पाल्टियां शिक्षा के निमित्त जो व्यय करती हैं उसमें धमतरी म्यूनिस्पिल को द्वितीय स्थान मिलता है। इस संस्था का लक्ष्य सदा सत्कार्यों तथा देशोन्नति की ओर रहा है।

कांग्रेस द्वारा संचालित कार्यों तथा आन्दोलन में यह नगर सदा अन्य स्थानों की अग्रसर ही रहा है। हिं मुसलमानों की एकता पर देश का कल्याण समझ उसके लिये सदा प्रयत्नशील है। सन् ३० के सत्याग्रह संग्राम में इस नगर ने अपने यहां सत्याग्रह आश्रम स्थापन कर उसके द्वारा नगर तथा ग्राम केलगभग४०००सत्याग्रही स्वयंसेवक शिक्षित कियेहैं, जो कार्य इस जिले में कहीं नहीं हुआ जिसमें से लगभग एक सौ नागरिक स्वयंसेवकों ने धमतरी तहसील कांग्रेस कमेटी द्वारा संचालित जंगल सत्याग्रह आन्दोलन में सम्मिलित हो कारावास, बेंत, तथा जुर्माने की सजा भुगत अपनी उत्कट देशभक्ति

का परिचय दिया है, वह सदा स्मरणीय हो गया है। सरकार ने आन्दोलन को दबाने के लिये इस नगर में अतिरिक्त पुलिस बैठालकर करीब १३हजार रुपये वसूल किये। कई लोगों ने यह रकम अपने हाथ से नहीं दिया वरन सरकार को कुर्की द्वारा वसूल करनी पड़ी। अधिकांश रकम गांधी–इर्विन समझौते के कारण छोड़ दी गई।

अछूतोद्धार की जटिल समस्या को जिस दिन से कांग्रेस तथा आपने अपने प्राणों की बाजी लगाकर हल करने का बीड़ा उठाया है तब से हमारी यह संस्था उसकी पूर्ति करने में न केवल प्रयत्नशील ही है वरन कार्य रूप में परिणित कर देने का उसे सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है। सितम्बर सन् १९२९ से इस म्यूनिस्पल क्षेत्र के अन्तर्गत अनिवार्य शिक्षा का कार्य अमल में लाया जा रहा है। अन्य स्थानों की नाईं कथित हरिजनों के बालकों के लिये अलग पाठशाला की योजना न कर सवर्ण बालकों के साथ उन्हें भी शिक्षा देने की व्यवस्था यह संस्थागत ४ वर्षों से कर रही है। प्राचीन तथा प्रसिद्ध विंध्य-वासिनी देवी, शिव मंदिर, राम मंदिर और भक्तेश्वर महादेवजी के मंदिर में हरिजनों के लिये कोई प्रतिबन्ध नहीं है। अन्य प्रमुख मंदिरों के लिये प्रतिबन्ध हटाने का उद्योग चालू है। हरिजनों की निस्तार निमित्त सम्प्रति में इस संस्था ने सात कुयें जारी किये हैं जो उनकी आबादी की दृष्टि से पर्याप्त है।

धमतरी की जनता में स्वराज्यांकुर रोपण कर्त्ता, त्यागवीर देशभक्त, जेलप्रवासी, पं. नारायण रावजी मेघा वालेके साथ अन्यान्य सज्जनों ने हरिजनों के यहां सन् ३१ से पानसुपारी ग्रहण कर उनके प्रति सच्ची सद्भावनाओं को प्रदर्शित कर अस्पृश्यता को दूर करने में कोई कसर नहीं रखी है। इसी तरह यह नगर आपके निर्दिष्ट पथ के अनुसरण करने तथा राष्ट्रीय ध्येय को पहुंचने और प्रजातंत्र शासन स्थापन करने के कार्य में सदा तत्पर रहेगा।

आपके पदार्पण से हमारे नगर को जो आनन्दोत्साह प्राप्त हुआ है उसे हम किन शब्दों में वर्णन करें। ईश्वर आपको दीर्घायु करे। आपका नेतृत्व सदा देश को प्राप्त रहे तथा आपके द्वारा स्वतंत्रता की ध्वजा फहराते हुए हम देखें ऐसी उस सर्व शक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना है।

धमतरी
ता. २४–११–१९३३

विनीत
हम हैं आपके
अध्यक्ष, तथा सदस्यगण
म्यूनिस्पल कमेटी, धमतरी

उपरोक्त मानपत्र धमतरी के डा. हजारीलाल जैन ने महात्मा गांधीजी से नीलामी के अवसर पर प्राप्त किया था और यह राशि हरिजनोद्धार कार्य में समर्पित की गई थी। नीलाम की राशि स्वीकार करते समय महात्मा गांधी ने डा. जैन की पीठ थपथपाते हुए यह आशीर्वाद दिया कि....“देश सेवा में हमेशा लगे रहना।”

–सम्पादक

अभिनन्दन पत्र

त्यागवीर देशभक्त शांति मूर्ति भारत हृदय सम्राट माननीय महात्मा श्री मोहनदास करमचंदजी गांधी की सेवा में सादर समर्पण

महानुभाव,

आपके इस शुभागमन पर धमतरी तहसील के ग्रामीणजनों को प्रतिनिधि स्वरूप इस लोकल बोर्ड संस्था को आपकी उत्कट देशभक्ति कर्मवीरता, धीरता, स्वदेशप्रियता, दयाशीलता प्रभृति सदगुणों से प्रेरित होकर स्वागत करने का जो सुअवसर प्राप्त हुआ है उसे इस मानपत्र द्वारा व्यक्त करना यह संस्था अपना परम क र्त्तव्य समझती है।

ज्ञापन में इस लोकल बोर्ड के आधीन संपूर्ण तहसील में सात सड़कें तथा २४ कुयें हैं। पाठशालाओं में सवर्ण हिंदू तथा कथित हरिजनों के बालकों को एक साथ शिक्षा दी जाती है। लोकलबोर्ड के एक प्रस्तावानुसार इन कुओंसे पानी निकालकर पीने का सबको समानाधिकार प्राप्त है। इस संस्था के अन्तर्गत स्पृश्य तथा अस्पृश्यता का कोई भेदभाव नहीं है। इस तरह हमारी यह लोकल बोर्ड प्रान्त के अन्य लोकल बोर्ड से राष्ट्रीय कार्यों तथा हरिजनोद्धारक कार्य में किसी कदर पीछे नहीं है।

वर्तमान सदस्यों के उद्योग से इस संस्था ने ग्यारह और प्राइमरी शालायें जो सन् ३०ई. में डिस्ट्रि. कौंसिल के सुपरसीट होने से बन्द हो गई थीं पुनः खोली हैं और अन्य बन्द शालाओं को खोलने का आयोजन बजट में रखा गया है।

शिक्षा, ग्रामीणों की दशा सुधारने तथा राष्ट्रीय कार्यों में यह संस्था अग्रसर होकर स्वदेश भक्ति का एक उच्च आदर्श रखा है। सन् ३० ई. के सत्याग्रह संग्राम में राष्ट्रीय ध्येय की पूर्ति करने के लिये इस लोकल बोर्ड ने धमतरी सत्याग्रह आश्रम में तहसील के ग्रामीण सत्याग्रही स्वयंसेवकों को भेजकर शिक्षित करने को प्रेरित कियाजिनमेंसेलगभग१०० धमतरी, महासमुन्द जिला कांग्रेस कमेटी के आदेशानुसार रुद्री नवागांव के जंगल सत्याग्रह में सम्मिलित हो कारावास, बेत तथा जुर्माने की सजा भुगत कर एवं देशभक्ति का परिचय देकर भारत माता का मुख उज्वल करने में कोई कमी नहीं किये हैं। इस तरह उनके अदम्य उत्साह तथा निर्भीकता का अवलोकन कर उनपर आतंक जमाने के अभिप्राय से धारा १४४ को तोड़ने के अवसर पर निरंकुश नौकरशाही सरकार ने निहत्थे अपार जनसमुदाय पर गोली चलाई। जिससे अनेक व्यक्ति

घायल हुए और इस प्रहार में मीदू नामक एक सत्याग्रही स्वयंसेवक भारतमाता की गोद में सहर्ष सदा के लिये सो गया। इस स्वतंत्रता के युद्ध तथा ग्रामीण जनता की देशभक्ति का परिचय पाकर सरकार ने उनकी भावनाओं को सदा के लिये कुचलने के हेतु तहसील में एक अतिरिक्त पोलिस बैठाकर उनके द्वारा अनेक जघन्य कृत्यों का प्रदर्शन कराया।

सन् ३१–३२ के रायपुर में संचालित पिकेटिंग आन्दोलन में भी इस तहसील में लगभग दो सौ स्वयंसेवक जेल जाकर तहसील के स्थान को ऊंचा रखने में कोई कमी नहीं किये हैं। इस तरह यह तहसील कांग्रेस तथा आपके निर्दिष्ट पथ के अनुसरण करने तथा राष्ट्रीय ध्येय को पहुंचने और प्रजातन्त्र शासन स्थापन करने के कार्य में सदा तत्पर रहेगा। ईश्वर आपको चिरायु रखे, आपका नेतृत्व देश को सदा प्राप्त र हे तथा आपके द्वारा स्वतंत्रता के ध्वजा फहराते हुए हम देखें ऐसी उस सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना है।

धमतरी
दिनांक २७–११–३३ ई.

हम हैं आपके विनीत
अध्यक्ष तथा सदस्यगण
लोकल बोर्ड धमतरी

(पांडु लिपि से उद्धृत प्रेषक :-- शोभाराम देवांगण भिषगाचार्य धन्वन्तरि धमतरी)

महात्मा गांधीजी ने अपनी छत्तीसगढ़ की यात्रा के दौरान धमतरी नगर को दो बार अपने चरणों से पवित्र किया था। महात्मा गांधीजी को उनकी दूसरी धमतरी यात्रा (१९३३) के अवसर पर धमतरी के नगरवासियों की ओर से दो मानपत्र दिये गये थे। ये मानपत्र यहां प्रकाशित किये गये हैं।

—सम्पादक

Dear Friend

I thank you for your letter. This is wholly unconvincing. Your letter contains nothing new. My argument was & is that a custom which is against public morals or public interest can have no religion. You yourself admit that it has given way to wealth

influence. In other words poverty is a bar to redress of wrongs. This reflection is fortified by a letter just received by Deenabandhu Andrews. I enclose the letter for your perusal & return. If the facts are as stated in the letter they present a damnable state of affairs.

I know that the Amritsar case can be dealt with by way of appeal

Appeal has been lodged I wrote to you to see if what appears to me to be to be a manifest wrong would be redressed administratively.

I may mention that in this case an exemplary fine was imposed on the Kurmi as if he had committed a minor offence.

Segaon Wardha
20-11-36

Yours sinly
M K Gandhi

नोट– महात्मा गांधी द्वारा २०–११–१९३६ की स्व. ई. राघवेन्द्र राव को उनके पत्र के प्रत्युत्तर में लिखा गया पत्र।

–सम्पादक

SEGAON, WARDHA

2-6-38

Dear Rajkumari,

I must thank you for your frank letter. As you must have seen so much of your objections as have force have been anticipated by the working committee. But it seems to me that you are judging

a big unit which
by the shortcomings
of individual members
the Congress has to
be judged by its
capacity of resisting
to the foreign
exploitation of the
country. In that
test I hope that
even the present
ministry will
be found wanting

SEGAON. WARDHA

I invite you to
return to the
Congress politics
& fight impurity
wherever you see
it with all your
might.

Yours sincerely,

M. K. Gandhi

नोट : प्रस्तुत पत्र में महात्मा गांधी जी ने श्री ई. राघवेन्द्र राव को कांग्रेस में वापस आकर अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के लिये आमन्त्रित किया है।

—सम्पादक